भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा

ओ. पी. शर्मा



आर बी एस ए पब्लिशर्स
एस. एम. एस. हाईवे
जयपुर - 302 003



प्रकाशक
दीपक परनामी
आर बी एस ए पब्लिशर्स,
एस एम एस हाईवे,
जयपुर - 302 003
दूरभाष - (0141)-563826

प्रथम सस्करण 2001

ISBN

शब्द सयोजक
आइडियल कम्प्यूटर्स
जवाहर नगर
जयपुर - 302 004
दूरभाष - 651967

भूमिका



मुझे "भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा" पुस्तक आपके हाथो मे सौंपते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। पिछले पाच वर्षो मे अर्थव्यवस्था पर लिखी पाच संदर्भ पुस्तको का पाठको ने उत्साह से स्वागत किया उसके लिए मैं सभी पाठको का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

भारत को स्वतंत्र हुए पचास वर्ष से अधिक का समय बीत चुका है। विकास को गति देने हेतु पचवर्षीय योजनाओ का मार्ग और आर्थिक उदारीकरण की नीतियो को आत्मसात किया गया। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भारी पूजी विनियोजन किया गया। इससे भारत मे आर्थिक विकास का वातावरण बना है। विकासशील देशो मे भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति मे सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है, किन्तु विकास के अनेक सूचकों मे विकसित देशो की तुलना मे भारत की स्थिति बहुत कमजोर है। वर्ष 1995 मे जापान की प्रति व्यक्ति आय 39,640 डॉलर तथा अमरीका की 26,980 डॉलर थी। इसके विपरीत भारत की प्रति व्यक्ति आय 340 डॉलर ही थी। चीन और भारत विश्व के सर्वाधिक जनसख्या वाले देश हैं। वर्ष 1990-95 के बीच सकल घरेलू उत्पाद की औसत वार्षिक वृद्धि दर चीन मे 12.8 प्रतिशत तथा भारत मे केवल 4 6 प्रतिशत थी।

भारत मे योजनाए तो खूब बनी। विकास सूचको के ऊचे-ऊचे लक्ष्य निर्धारित किए गए, किन्तु नीतिगत पहल और प्रभावोत्पादक कदमो के अभाव में योजनाओ का क्रियान्वयन और ऊचे लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सके। गरीबी उन्मूलन और बेरोजगारी हटाओ के लक्ष्य अनेक बार निर्धारित किए गए। प्राय सभी पचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्यो मे गरीबी और बेरोजगारी दूर करने की बात सम्मिलित की गई, किन्तु स्थिति जस की तस है। एक अरब की आबादी के लिए खाद्यान्न की व्यवस्था और अर्थव्यवस्था की मजबूती

वास्ते निर्यात वृद्धि हेतु कृषि पर बड़ी जिम्मेदारी है। किन्तु कृषिगत उत्पादन में ठहराव है। आर्थिक उदारीकरण मे अपेक्षाकृत कम पूजी निवेश से कृषि क्षेत्र विकास की गति नहीं पकड सका। कृषि उत्पादन वृद्धि दर 1997-98 में नकारात्मक 6 प्रतिशत तथा 1998-99 में केवल 3 प्रतिशत (प्राविजनल) रही। उद्योगों की स्थिति भी कुल मिलाकर अच्छी नहीं है। भारत में शोध एवं अनुसधान पर कम ध्यान दिया गया। आधुनिक तकनीक आत्मसात करने के मामले में भारत के उद्योग पिछडे रहे परिणामस्वरुप वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पा रहे हैं। भारत की निर्यात वृद्धि दर डॉलर में 1997-98 में 1.5 प्रतिशत तथा अप्रैल–दिसम्बर 1998-99 में ऋणात्मक 2.9 प्रतिशत थी। वैश्विक अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था में दिशाहीनता दृष्टिगोचर होना चिन्ताप्रद बात है।

पुस्तक में अर्थव्यवस्था की दिशा को दर्शाने वाले घटकों को अठारह अध्यायों में सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है जिनके नाम इस प्रकार है -

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति, घटते रोजगार बढते गरीब, सकटग्रस्त अर्थव्यवस्था, बढता व्यापार घाटा और बिगडता भुगतान सतुलन, अर्थव्यवस्था की दिशाहीनता, विदेशी सहायता और संभावित खतरे, जनाधिक्य की समस्या, कृषि की भूमिका में बदलाव, हरित क्रांति में बदलाव की आवश्यकता, आर्थिक उदारीकरण का बदलता स्वरूप, विश्व व्यापार संगठन का भारतीय कृषि पर प्रभाव, परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य, कारगिल संकट, केन्द्रीय बजट, रेल बजट, राजस्थान का बजट, दयनीय औद्योगिक स्थिति और सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश, साक्षरता से ही विकास की गति में वृद्धि संभव।

पुस्तक लेखन में पूजनीय डा. जे. के. टण्डन से मिली प्रेरणा के लिए हृदयक आभार प्रकट करता हूँ। इनके अलावा आदरणीय भैया रमेश शर्मा, धर्मपत्नी श्रीमती मंजू शर्मा, श्रीमती मंजू दीक्षित (सवाईमाधोपुर), सुश्री नीलम जोशी (अजमेर) श्री प्रेम शकर शर्मा एडवोकेट, श्रीमती उम्मेद कवर (दाता रामगढ) का उत्साहवर्द्धन उल्लेखनीय रहा।

पुस्तक प्रकाशन के समय पूज्य गुरुवर स्व. डॉ. सी. आर. कोठारी, पूजनीय पिताजी स्व. भैरु लाल शर्मा एवं पूजनीया माताजी स्व. श्रीमती शांति शर्मा का स्मरण करता हूँ जिनके आशीर्वाद से मेरा लेखकीय जीवन पल्लवित हो रहा है।

पुस्तक लेखन में गुरुजन, विद्वान व्याख्याताओं, मित्रों तथा निकट

सम्बन्धियो से मिली प्रेरणा के लिए आभार प्रकट करता हूँ। मैं पुस्तक के प्रकाशक आर. बी. एस एस ए पब्लिशर्स के श्री सुरेन्द्र परनामी तथा इनके विनम्र पुत्र दीपक परनामी के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होने अत्यल्प समय मे पुस्तक को सुन्दर आकार मे प्रकाशित कर आपके समक्ष प्रस्तुत कर दी है।

आशा है यह पुस्तक प्रबुद्ध व्याख्याताओ, शोधार्थियो, विद्यार्थियो तथा प्रतियोगी परीक्षाओ में सम्मिलित होने वाले अभ्यार्थियो के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।

शाति–दीप
जटवाडा मानटाउन
सवाईमाधोपुर – 322001

ओ. पी. शर्मा

पूजनीय दादाजी
श्री राम गोपाल शर्मा
की स्मृति में सादर समर्पित

विषय-सूची

1

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति

भारत के सन्दर्भ मे यह कहा जाता रहा है कि भारत एक धनी देश है, लेकिन भारत मे निर्धन लोग निवास करते हैं। यह बात बडी सीमा तक सही भी है। प्रकृति ने भारत को उपहार उदारतापूर्वक दिए हैं। भारत में प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों की बहुतायत है। किन्तु इनका विवेकपूर्ण उपयोग नहीं हो पाने के कारण भारत आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्र रहा है। प्रकृति संसाधनो के आवटन मे भेदभाव नहीं करती है। प्राकृतिक संसाधनों का अच्छा उपयोग करने वाले देश आज आर्थिक प्रगति के शिखर पर हैं। इसके विपरीत भारत सरीखे कई विकासशील देश ऐसे भी हैं जिन्होंने प्रकृति प्रदत्त संसाधनो का पूर्ण विदोहन, उपयोग और सरक्षण नहीं किया है। परिणामस्वरूप इन देशो मे आर्थिक विकास गति नहीं पकड सका। भारत में गरीबी राष्ट्रीय समस्या के रूप मे उभरी। गरीबी की समस्या इतनी विकट हो चुकी है कि सरकार की लाख कोशिशो के बावजूद गरीबों की संख्या बढती ही जा रही है। विकास की सुनियोजित व्यूहरचना के अभाव मे विश्व के देशो की तुलना मे भारत पिछड गया है। वर्ल्ड डवलपमेन्ट रिपोर्ट, 1997 के अनुसार विश्व की जनसख्या 1995 के मध्य मे 5,673 मिलियन थी जिसमे भारत की जनसंख्या 929 मिलियन थी। विश्व की कुल जनसंख्या मे भारत का भाग 16 4 प्रतिशत था। जबकि भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.5 प्रतिशत है। स्पष्ट है कम भू–भाग मे बडी जनसंख्या निवास करती है। चीन का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 7.2 प्रतिशत है और विश्व की जनसख्या मे चीन का भाग 21 2 प्रतिशत है। विकसित देशो की जनसंख्या वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे बहुत कम है। विश्व की कुल जनसख्या मे आस्ट्रेलिया का भाग 0 31 प्रतिशत, कनाडा का भाग 0 52 प्रतिशत, फ्रास का

भाग 1 प्रतिशत तथा अमरीका का भाग 4.63 प्रतिशत है। आज विश्व का हर छठा आदमी भारतीय है। भारत मे जनसंख्या के अधिक होने से ढेरो समस्याए उभरीं जिनके कारण भारत की जनसंख्या का बड़ा भाग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहा है।

भारत मे प्रति व्यक्ति आय विकसित देशो की तुलना मे ही नहीं अपितु विकासशील देशो की तुलना में भी कम है। भारत की प्रति व्यक्ति आय चीन, घना, पाकिस्तान, श्रीलका, जाम्बिया आदि विकासशील देशों से कम है।

विश्व के देशों की प्रति व्यक्ति आय, 1995 में

(डालर मे)

देश	प्रति व्यक्ति आय
भारत	340
चीन	620
श्रीलका	700
जाम्बिया	400
ब्राजील	3640
आस्ट्रेलिया	18720
फ्रास	24970
जापान	39640
अमरीका	26980

स्रोत *वर्ल्ड डवलपमेन्ट रिपोर्ट, 1997*

विश्व की प्रति व्यक्ति आय 1995 मे 4,880 डॉलर थी। अल्पविकसित और विकासशील देशों की प्रति व्यक्ति आय विश्व की प्रति व्यक्ति आय से बहुत कम है। भारत की प्रति व्यक्ति आय 340 डॉलर के मुकाबले जापान की प्रति व्यक्ति आय 39,640 डॉलर आर्थिक विषमता का परिचायक है।

भारत मे औसत वार्षिक वृद्धि दर कम होने के कारण लोग गरीब हैं। वर्ष 1990–95 की अवधि में औसत वार्षिक वृद्धि दर के मामले मे भारत एशियाई देशों से पीछे रहा। भारत मे 1990–95 की अवधि में औसत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत, कृषि वृद्धि दर 3.1 प्रतिशत, औद्योगिक वृद्धि दर 5.1 प्रतिशत, सेवा क्षेत्र वृद्धि दर 6.1 प्रतिशत, निर्यात वृद्धि दर 12.5 प्रतिशत थी। गौरतलब है 1990–95 की समयावधि में विकसित देशों की वार्षिक वृद्धि दर बहुत कम रही जबकि एशिया के कुछ देशों की वार्षिक

वृद्धि दर तेजी से बढी और ये देश एशियन टाइगर्स के रूप मे उभरे। किन्तु भारत की अर्थव्यवस्था "एशियन टाइगर्स" की भाति विकास की गति नहीं पकड़ सकी। लेकिन एशियन टाइगर्स की आर्थिक दशा शीघ्र ही अर्थात् 1998 मे धराशाई हुई जबकि भारत की स्थिति उन देशों की भाति नहीं बिगडी। कुछ देशों की वार्षिक वृद्धि दर का तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका मे दर्शाया गया है।

कुछ देशों की आर्थिक वृद्धि दर

देश	ओसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत मे)			1990-95	
	सकल घरेलू उत्पाद	कृषि	उद्योग	सेवा	निर्यात
भारत	4 6	3.1	5 1	6.1	12 5
चीन	12.8	4.8	18 1	10 0	15.6
इण्डोनेशिया	7.6	2.9	10 1	7 4	10.8
मलेशिया	8.7	2.6	11 0	8.6	14 4
थाइलैण्ड	8.4	3.1	10.8	7 8	14.2
जापान	1.0	-2.2	0 0	2 3	3.4
अमरीका	2 6	3.6	1.2	2.1	7.3

भारत में श्रम शक्ति चीन के बाद सबसे अधिक है। वर्ष 1995 मे भारत की श्रम शक्ति 398 मिलियन तथा चीन की 709 मिलियन थी किन्तु श्रम शक्ति वृद्धि दर भारत की अधिक है। वर्ष 1990–95 के बीच श्रम शक्ति की औसत वार्षिक वृद्धि दर भारत मे 2 प्रतिशत तथा चीन मे 1 1 प्रतिशत थी। भारत और चीन दोनो जनाधिक्य वाले देशो मे श्रम शक्ति का बडा भाग कृषि क्षेत्र मे लगा हुआ है। जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र मे कम श्रम शक्ति नियोजित है। विकसित देशो मे श्रम शक्ति और उसकी वृद्धि दर कम है तथा श्रम शक्ति का बडा भाग कृषि क्षेत्र की तुलना मे सेवा और उद्योग क्षेत्र मे अधिक नियोजित है। भारत मे श्रम शक्ति के अधिक होने तथा बडे भाग का कृषि क्षेत्र में नियोजित होने के कारण निर्धन जनता की बहुतायत है।

भारत मे गरीबी की समस्या सदैव मुहबाए खडी है। देश की लगभग 30 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। बडी सख्या में लोग भूखे पेट रात बिताते हैं। भारत मे लोगो

को प्रतिदिन 2,230 कैलोरिज भोजन मिलता है जो विकासशील देशों की तुलना में भी कम है। चीन में लोगों को प्रतिदिन 2,640 कैलोरिज भोजन मिलता है। यह अर्जेन्टीना में 3,070 कैलोरिज, ईरान में 3,020 कैलोरिज, मारीशस में 2,900 कैलोरिज, मैक्सिको में 3,060 कैलोरिज, दक्षिण अफ्रीका में 3,130 कैलोरिज है। गरीबी के कारण भारत में भिखारियों की संख्या बहुत अधिक है। वर्ष 1971 की जनगणना के अनुसार भारत में 7.5 लाख भिखारी थे।

बढ़ती बेरोजगार निर्धनता को दर्शाती है। रोजगार के अवसरों के घटने से गरीबी बढ़ी है। जनाधिक्य और आर्थिक पिछड़ापन बेरोजगारी का कारण है। आर्थिक उदारीकरण के दौर में पूंजी प्रधान तकनीक को प्राथमिकता देने से बेरोजगारी मुखर हुई। सार्वजनिक उपक्रमों का विकास थम सा गया है। इस कारण भी बेरोजगारी बढ़ी है। दिसम्बर 1997 में रोजगार कार्यालयों में रोजगार चाहने वालों की संख्या 380 लाख थी। बेरोजगारों में प्रतिवर्ष 1.18 करोड़ की वृद्धि हो रही है।

भारत में बचत और पूंजी निर्माण की दर अनेक देशों की तुलना में कम है। बचत और पूंजी निर्माण की दर कम होने से भारत विकास की दौड़ में पिछड़ा। आर्थिक पिछड़ेपन के कारण भारत में निर्धनता बढ़ी। भारत में बचत व पूंजी निर्माण की दर बढ़ी है किन्तु अभी भी यह विकसित देशों की तुलना में कम है। भारत में 1995–96 में सकल घरेलू पूंजी निर्माण दर 25.8 प्रतिशत तथा सकल घरेलू बचत दर 24.1 प्रतिशत थी। वर्ष 1995 में सकल पूंजी निर्माण दर चीन में 40 प्रतिशत, इण्डोनेशिया में 38 प्रतिशत तथा जापान में 29 प्रतिशत थी।

भारत बड़ा ऋणी देश है तथा मूलधन तथा ब्याज अदायगी का भारी बोझ है। विकासगत जरुरतों को पूरा करने के लिए आज भी विदेशी ऋण पर निर्भरता बनी हुई है। मई 1998 में परमाणु विस्फोट के कारण बाद में विदेशी ऋण प्राप्त करने में कठिनाई आई। परमाणु परीक्षण के कारण भारत के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंधों के बाद भारत ने 6 जुलाई 1999 को विश्व बैंक से 38.6 करोड़ डॉलर का बड़ा ऋण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। प्राप्त ऋण का उपयोग महिला एवं बाल विकास परियोजना तथा राजस्थान जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना पर खर्च किया जाएगा। भारत का कुल विदेशी ऋण सितम्बर 1998 में 95,195 मिलियन डॉलर था। कुल विदेशी ऋण में अल्पावधि ऋणों का भाग 3.7 प्रतिशत तथा रियायती ऋणों का भाग 37.7 प्रतिशत था। भारत का विदेशी ऋण सकल घरेलू उत्पाद का 22.9 प्रतिशत था। भारत वर्ष 1994 में विश्व का चौथा बड़ा ऋणी देश था। भारत

से अधिक ऋणी देश ब्राजील, मैक्सिको तथा चीन थे। वर्ष 1994 मे ब्राजील का विदेशी ऋण 151 बिलियन डॉलर, मैक्सिको का विदेशी ऋण 128 बिलियन डॉलर, चीन का विदेशी ऋण 101 बिलियन डॉलर तथा भारत का विदेशी ऋण 99 बिलियन डॉलर था।

भारत मे चिकित्सा सुविधाओ का अभाव है। लोगो की प्रति व्यक्ति आय बहुत कम है। गरीबी मे जीवन बसर करने के कारण भारतीयो की औसत आयु विश्व के अन्य देशो की तुलना मे कम है। औसत आयु आस्ट्रेलिया मे 77 वर्ष, फांस मे 78 वर्ष, जापान मे 80 वर्ष, अमरीका मे 77 वर्ष है। जबकि भारत मे औसत आयु 62 वर्ष है।

भारत में जन्म दर, मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर, औसत जनसख्या वृद्धि दर अधिक है जो भारत मे गरीबी की पुष्टि करते हैं। वर्ष 1993 मे भारत मे प्रति हजार जन्म दर 29, मृत्यु दर 10, शिशु मृत्यु दर 1995 मे प्रति हजार 68 थी जबकि अमरीका में जन्म दर 16, मृत्यु दर 9 तथा शिशु मृत्यु दर [redacted] ही थी।

भारत मे लोगो को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा नहीं है। गांवो मे चिकित्सा सुविधाओ के अभाव मे लोग दम तोड देते हैं। टयूबरक्लोसिस तथा मलेरिया से देशवासियो को निजात नहीं मिला है। एड्स रोगियो की सख्या तेजी से बढती जा रही है। भारत मे प्रति लाख जनसंख्या पर 122 लोग टयूबरक्लोसिस से, 242 लोग मलेरिया से 0 1 लोग एड्स से पीडित हैं। उपचार के लिए चिकित्सकों तथा नर्सो का अभाव है। 1988–91 की अवधि मे 2,439 लोगो पर एक डाक्टर तथा 3,333 लोगों पर एक नर्स थी। भारत मे चिकित्सा सुविधाओ पर कम राशि खर्च की जाती है। वर्ष 1990 मे भारत मे स्वास्थ्य पर सार्वजनिक खर्च सकल घरेलू उत्पाद का केवल 1.3 प्रतिशत था जबकि यह थाइलैण्ड मे 4.1 प्रतिशत था।

कुल मिलाकर भारत प्राकृतिक और मानवीय ससाधनो की दृष्टि से बहुत समृद्ध देश है किन्तु वित्तीय संसाधनो के अभाव में संसाधनो का अनुकूलतम विदोहन नहीं कर पाने के कारण विकास की दौड मे दुनिया के देशो की तुलना मे पिछड गया। भारत का विदेशी कर्ज बढता गया। कर्ज चुकाने के लिए भी कर्ज लेने की नौबत आई। प्राप्त विदेशी ऋण का पूरा उपयोग विकास मे नहीं हो सका नतीजतन गरीबो की दशा सुधर नहीं सकी। भारत मे लोगों के गरीब होने के बात सही चरितार्थ होती है। आज भारत न केवल विकसित देशों यथा अमरीका, जापान, फ्रास, जर्मन, ब्रिटेन आदि देशो से पिछडा हुआ है बल्कि विकासशील देशो जैसे चीन, इण्डोनेशिया, मलेशिया,

थाइलैण्ड, दक्षिणी कोरिया आदि से भी विकास की दौड में पीछे है। हाल के (1998-99) वैश्विक आर्थिक संकट मे अनेक देशों की अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगडी किन्तु भारत की अर्थव्यवस्था विकासशील देशों की बजाय बेहतर स्थिति मे है। इसका कारण अर्थव्यवस्था का व्यापक आधार, बेहतर प्रबन्धन तथा अल्पावधि के पूजी प्रवाह पर कम निर्भरता है।

2

घटते रोजगार बढ़ते गरीब

भारत में स्वतंत्रता के प्रारम्भिक वर्षों मे गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, आर्थिक पिछडापन आदि समस्याए मुखर थीं। विकास को गति देने वास्ते आर्थिक नियोजन का मार्ग चुना गया। सभी पचवर्षीय योजनाओ के लक्ष्यो मे रोजगार सृजन को प्राथमिकता दी गई। नियोजित विकास के दौरान अरबों रुपयों का विनियोजन सार्वजनिक और निजी क्षेत्र मे किया जा चुका है। पचवर्षीय योजनाओं मे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो का तीव्रता से विकास हुआ। सार्वजनिक उपक्रमो मे बेरोजगारो की बडी सख्या को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यकता से अधिक रोजगार के अवसर मुहैया कराए गए जो सार्वजनिक उपक्रमो के घाटे का कारण भी था। नियोजन काल के पिछले पचास वर्षो मे भारत ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रो मे प्रगति अर्जित की है। आर्थिक पिछडापन बडी सीमा तक दूर हुआ है। आज भारत विकासशील राष्ट्रो मे अग्रिम पंक्ति मे खडा है। किन्तु बेरोजगारी की समस्या विकट बनी हुई है। देशवासियो को रोजगार के पर्याप्त अवसर मुहेया नहीं हो सके हैं।

भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था मे नियोजन काल के चालीस वर्षो (1951-90) मे सार्वजनिक उपक्रमो के साथ निजी क्षेत्र भी रोजगार सृजन मे सहायक सिद्ध हुआ। वर्ष 1991–92 से आर्थिक उदारीकरण का दौर जारी है। अर्थव्यवस्था मे आर्थिक सुधारो को आत्मसात किए एक दशक पूरा हो चुका है। उदारीकरण के दौर मे विकास के क्षेत्र मे सरकार की भूमिका घटी है। सार्वजनिक उपक्रमो का विकास थम सा गया है। उल्टा इन उपक्रमो में विनिवेश प्रक्रिया जारी है। सार्वजनिक उपक्रमो का विकास नहीं होने से देश मे रोजगार के अवसर सीमित हो गए हैं। अब अर्थव्यवस्था मे निजी क्षेत्र की भूमिका तुलनात्मक रूप से अधिक है। किन्तु भारत का निजी क्षेत्र देश को

तीव्र विकास की राह दर्शाने मे अधिक सामर्थ नहीं है। निजी उद्यमी नियोजन काल मे सरकार की संरक्षणात्मक रीति के कारण फले-फूले। उनमे प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति का अभाव है। आज निजी क्षेत्र को उदारीकरण के दौर मे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों को सामने खुली प्रतिस्पर्धा मे छोड दिया गया। भारतीय उद्यमियों मे आधुनिक तकनीक के अभाव मे विदेशी निवेशको से प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता नहीं है। आर्थिक सुधार लागू करने के बाद निजी क्षेत्र के अनेक उद्योग घाटे की समस्या से ग्रसित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त अनेक उद्योग रुग्णता के शिकार हैं। भारत मे नए उद्योगों की स्थापना नहीं होने से और चालू उद्योगों के बन्द पड़े होने से बेरोजगारी की समस्या मुखर हो गई है।

भारत जनाधिक्य वाला देश है। यहा की परिस्थितियां श्रम प्रधान तकनीक के अनुकूल है। किन्तु आर्थिक उदारीकरण से पूजी प्रधान तकनीक को गति मिली है। विदेशी पूजी निवेशकों द्वारा आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाता है। इससे देश मे रोजगार के अवसर घटे हैं। आर्थिक उदारीकरण का लाभ दीर्घकाल से दृष्टिगोचर होगा। उदारीकरण के अल्पकालिक परिणामो में अर्थव्यवस्था में उद्योग मंदी की चपेट से ग्रसित हुए तथा बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण किया।

बेरोजगार : भारत में प्रत्येक वर्ष रोजगार चाहने वालों की संख्या की तुलना में रोजगार के अवसर बहुत कम बढ पाते हैं। जनसंख्या मे हरेक वर्ष डेढ से दो करोड लोग बढ जाते हैं और रोजगार के अवसर मुश्किल से 60 से 70 लाख तक ही बढ पाते हैं यानी प्रत्येक वर्ष रोजगार चाहने वाले सवा करोड तक बढते हैं। जनसंख्या और श्रम शक्ति की तीव्र वृद्धि से बेरोजगारी बढी है। रोजगार कार्यालयो में पजीकृत आवेदकों की संख्या भयावह गति से बढ रही है। रोजगार कार्यालय मुख्यत शहरी क्षेत्रों मे होते हैं। इन कार्यालयों में सभी बेरोजगार अपने नाम पजीकृत नहीं करवाते हैं। रोजगार कार्यालयो मे रोजगार के इच्छुक व्यक्तियों के दर्ज नामो की सख्या 31 दिसम्बर, 1981 तक 178.36 लाख थी, जो 31 दिसम्बर 1992 तक बढकर 368 लाख हो गई।,[1] सरकारी आंकडो के अनुसार दिसम्बर 1996 से दिसम्बर 1997 की अवधि म रोजगार कार्यालयों में रोजगार चाहने वालों की सख्या 374 लाख से बढकर 380 लाख हो गई। सरकारी अनुमान के मुताबिक नौवीं पचवर्षीय योजना अवधि (1997-2002) में जनसंख्या 94 करोड 98 लाख से बढकर एक अरब 2 करोड होने का अनुमान है। इनमे से काम करने वालों की सख्या 39.72 करोड से बढकर 45.2 करोड होगी जबकि बेरोजगारो की सख्या इस अवधि मे 5.90 करोड तक बढने का अनुमान है अर्थात् बेरोजगारों

मे 1 18 करोड की वृद्धि प्रतिवर्ष होगी। वर्ष 1990–2000 के लिए योजना आयोग द्वारा किया गया बेरोजगारी के प्रक्षेपण अनुसार 1990 के प्रारम्भ मे बेरोजगारी का ढेर 280 लाख लोग, 1990–95 के दौरान श्रम शक्ति में नये प्रवेशार्थी 370 लाख लोग, आठवीं योजना के लिए कुल बेरोजगार 650 लाख लोग, 1995–2000 के दौरान श्रम शक्ति मे नये प्रवेशार्थी 650 लाख लोग तथा नौवीं योजना के लिए कुल बेरोजगार 1,060 लाख लोग होगे।[3] रोजगार के अवसर सृजित नहीं होने से नौवीं योजना मे बेरोजगारी विकराल रूप धारण कर लेगी।

घटते रोजगार – भारत मे रोजगार वृद्धि दर विगत वर्षों मे घटी। रोजगार की औसत वार्षिक वृद्धि दर (सगठित और असगठित दोनो क्षेत्र) 1972–78 अवधि में 2.75 प्रतिशत थी जो घटकर 1977–83 में 2.36 प्रतिशत तथा 1983–88 में और घटकर 1 77 प्रतिशत रह गई। रोजगार वृद्धि दर 1987–94 की अवधि में बढकर 2.37 प्रतिशत हो गई। संगठित क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि दर 1977 से 1994 की अवधि मे निरन्तर घटी। सगठित क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि दर 1977–83 अवधि मे 2 48 प्रतिशत थी जो घटकर 1983–88 की अवधि मे 1.38 प्रतिशत तथा 1987–94 अवधि मे और घटकर 1.05 प्रतिशत रह गई। संगठित क्षेत्र-के सार्वजनिक क्षेत्र-मे जहां रोजगार वृद्धि दर घटी वहीं निजी क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि दर बढी। सगठित क्षेत्र के सार्वजनिक क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि 1977–83 मे अवधि मे 2 99 प्रतिशत, 1983–88 मे 2.17 प्रतिशत तथा 1987–94 अवधि मे 1.00 प्रतिशत थी। संगठित क्षेत्र के निजी क्षेत्र में रोजगार वृद्धि 1977–83 अवधि मे 1 41 प्रतिशत, 1983–88 अवधि मे 0 43 प्रतिशत थी। 1987–94 अवधि मे सगठित क्षेत्र के निजी क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि दर 1 18 प्रतिशत थी जो पहली बार सार्वजनिक क्षेत्र से अधिक थी।

रोजगार वृद्धि दर

(प्रतिशत मे)

अवधि	रोजगार वृद्धि दर	सगठित क्षेत्र मे रोजगार वृद्धि दर		
		सार्वजनिक	निजी	कुल
1972-73 से 1977-78	2.75	—	—	2 45
1977-78 से 1983	2.36	2 99	1 41	2 48
1983 से 1987-88	1.77	2 17	0.43	1 38
1987-88 से 1993-94	2 37	1.00	1 18	1.05

स्रोत : *इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99, पृष्ठ 147

आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भिक पाच वर्षों (1991-95) में सगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि दर निरन्तर घटी। वर्ष 1996 और 1997 में रोजगार में थोडी वृद्धि हुई। सगठित क्षेत्र के सार्वजनिक क्षेत्र में 1991 में रोजगार वृद्धि की दर 1.52 प्रतिशत थी तथा निजी क्षेत्र में यह 1.24 प्रतिशत थी। उसके बाद 1993 तक दोनों क्षेत्र में यह दर एक प्रतिशत से नीचे आ गई लेकिन 1993 के बाद सरकारी क्षेत्र में लगातार घटती गई तथा निजी क्षेत्र में 1996 तक लगातार बढती चली गई। वर्ष 1996 में सार्वजनिक क्षेत्र में जहा एक तरफ रोजगार वृद्धि नकारात्मक हो गई तथा दूसरी तरफ निजी क्षेत्र में यह 5.62 प्रतिशत की ऊचाई पर पहुंच गई। वर्ष 1997 में सरकारी क्षेत्र में यह वृद्धि दर 0.67 प्रतिशत रही जबकि निजी क्षेत्र में यह 5.62 प्रतिशत की वृद्धि दर से नीचे आकर 2.04 प्रतिशत रह गई। स्वातन्त्र्योत्तर पहली बार सगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि की दर ने सार्वजनिक क्षेत्र की रोजगार वृद्धि दर को पीछे छोडा है। आर्थिक उदारीकरण से निजी क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं।

संगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि दर

(प्रतिशत में)

वर्ष	सार्वजनिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र	कुल संगठित क्षेत्र
1991	1.52	1.24	1 44
1992	0 80	2.21	1.21
1993	0 60	0.06	0 44
1994	0 62	1 01	0.73
1995	0.11	1 63	0.55
1996	-0.19	5 62	1.51
1997	0 67	2 04	1 09
1998	-0 09	1.72	0 46

स्रोत : *इकोनॉमिक सर्वे*, 1999-2000, पृ स 168.

बढते गरीब : रोजगार के अवसर पर्याप्त मात्रा में मुहैया नहीं हो पाने के कारण देश में गरीबों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। शहरों की तुलना में गावों में गरीबी की समस्या भीषण है। शहरों में तो जैसे–तैसे लोग रोजी–रोटी की व्यवस्था कर लेते हैं किन्तु गावों में गरीबों का मरना है। गांवों में लोगों को गरीबी से तो जूझना पड ही रहा है इसके अलावा गांवो में बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवन कष्टप्रद हो गया है। भारत में जनसख्या का बडा भाग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने के लिए

अभिशप्त है। गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर करने वाले लोगों की संख्या 1973–74 में 321 मिलियन थी जो 1977–78 में बढ़कर 329 मिलियन हो गई। बाद के वर्षों में गरीबों की संख्या में थोड़ी कमी आई। गरीबों की संख्या 1983 में 323 मिलियन तथा 1987–88 में 307 मिलियन रह गई। किन्तु गरीबों की संख्या 1993–94 में फिर बढ़कर 320 मिलियन हो गई। वर्ष 1973–74 में कुल जनसंख्या में 54.9 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे थे। वर्ष 1993–94 में गरीबी जनसंख्या के 36 प्रतिशत रह गई। वर्ष 1993–94 में गांवों में गरीबों की संख्या 244 मिलियन थी जो ग्रामीण जनसंख्या का 37.3 प्रतिशत थी। शहरों में गरीबों की संख्या 76 मिलियन थी जो कुल शहरी जनसंख्या का 32.4 प्रतिशत थी। वर्ष 1996–97 में गरीबी 29.18 प्रतिशत, ग्रामीण गरीबी 30.55 प्रतिशत तथा शहरी गरीबी 25.58 प्रतिशत थी। स्पष्ट है आज भी गरीबी की समस्या भयावह है।

भारत में गरीबी रेखा से नीचे की जनसंख्या

वर्ष	ग्रामीण क्षेत्र		शहरी क्षेत्र		सम्पूर्ण भारत	
	संख्या (मिलियन)	गरीबी अनुपात (प्रतिशत)	संख्या (मिलियन)	गरीबी अनुपात (प्रतिशत)	संख्या (मिलियन)	गरीबी अनुपात (प्रतिशत)
1973-74	261	56.4	60	49.0	321	54.9
1977-78	264	53.1	65	45.2	329	51.3
1983-84	252	45.7	71	40.8	323	44.5
1987-88	232	39.1	75	38.2	307	38.9
1993-94	244	37.3	76	32.4	320	36.0
1996-97	—	30.5	—	25.6	—	29.2

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे, 1998-99, पृष्ठ 146.*
इकोनॉमिक टाइम्स, 2 मार्च 1998.

विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन ने गरीबी से निपटने के मामले में भारत से अच्छी प्रगति की। वर्ष 1975 में चीन में 59.5 प्रतिशत और भारत में 54.9 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे थे। दो दशक बाद चीन में गरीबों की संख्या घटकर 22.2 प्रतिशत रह गई जबकि भारत में 36 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे थी। चीन में तीव्र आर्थिक विकास से लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठे। चीन में औसत सकल घरेलू उत्पाद

वृद्धि दर 1980–1985 के बीच 11.1 प्रतिशत थी जबकि यह भारत में केवल 5.6 प्रतिशत रही। तीव्र विकास से चीन 1975–95 के बीच गरीबी में प्रतिवर्ष 1.9 प्रतिशत की कटौती करने में सफल रहा जबकि भारत प्रतिवर्ष 0.9 प्रतिशत की ही कटौती कर सका। भारत में आज गरीबी एशियाई देशों यथा इण्डोनेशिया, कोरिया, मलेशिया, फिलीपिन्स, थाईलैण्ड, चीन आदि से अधिक है।

भारत में गरीबी उन्मूलन की योजनाएं खूब बनीं, पंचवर्षीय योजनाओं में गरीबों के वास्ते भारी भरकम पूंजी का प्रावधान किया गया। आज भी ग्रामीण और शहरी गरीबों के लिए हरेक वर्ष नई–नई योजनाओं की घोषणा की जाती है। किन्तु गरीबों के नाम पर बनी योजनाओं की राशि का बडा भाग भ्रष्टाचार की बाढ में बह जाने के कारण गरीबों की दशा में सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं हुई। सरकारी आंकडों के हिसाब से अवश्य गरीबों की संख्या घटी है। किन्तु गरीबों का जीवन बद से बदतर है। वाशिंगटन स्थित एक नीति विचारक संस्थान "द वर्ल्ड वॉच इंस्टीट्यूट" ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि अकेले भारत में करीब 20 करोड लोग हर रात भूखे पेट सोते हैं अर्थात पांच में से एक भारतीय हर दिन भूखे पेट सोता है। भारत सहित दक्षिण एशिया में विश्व के भूख से पीडित बच्चों की आधी आबादी रहती है। शरीर की बुनियादी जरूरतों को संतुष्ट करने के लिए नितांत जरूरी कैलोरी और प्रोटीन के अभाव में उत्पन्न होने वाला कुपोषण भारत और दक्षिण एशिया में मानव स्वास्थ्य पर भीषण कहर ढाता है।[9]

रोजगार सृजन के राजकीय प्रयास : सरकार ने नियोजन काल और आर्थिक उदारीकरण के वर्षों में गरीबी उन्मूलन और रोजगार वृद्धि के प्रयास किए हैं। यह अलग बात है कि उद्देश्यों की पूर्ति में अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। श्रम मंत्रालय के आंकडों के मुताबिक 31 मार्च 1997 की स्थिति के अनुसार सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उपक्रमों में कुल मिलाकर 2 करोड 42 लाख 45 हजार कर्मचारियों को रोजगार मिला हुआ है। इसमें सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में 2 करोड और निजी क्षेत्र के संगठित क्षेत्रों में करीब 85 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध है।

वर्तमान में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन और गरीबी उन्मूलन के अनेक कार्यक्रम क्रियान्वयन में हैं। जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों के लिए जवाहर रोजगार योजना (जे. आर. वाई.), रोजगार आश्वासन योजना (ई. ए. एस.), समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई. आर. डी. पी.), ट्राइसेम, दवाकरा, इंदिरा आवास योजना (आई. ए. वाई.), दस लाख कुएं योजना (एन. डब्ल्यू. एस.), राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एन. एस. ए. पी.)

तथा शहरी क्षेत्रो के लिए नेहरू रोजगार योजना (एन. आर वाई) इनके अलावा अन्य कार्यक्रमो मे प्रधानमत्री रोजगार रोजगार (पी एम आर वाई) एव स्वर्ण जयती शहरी रोजगार योजना (एस जे एस आर वाई) मुख्य हैं। ग्रामीण क्षेत्र के रोजगार और गरीबी उन्मूल कार्यक्रमों की 1997–98 मे प्रगति (प्राविजनल) इस प्रकार रही – जवाहर रोजगार योजना मानव दिवस रोजगार सृजन 3,883 7 लाख, रोजगार आश्वासन योजना मानव दिवस रोजगार सृजन 4,717 7 लाख, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम परिवार सहायता 17.1 लाख, ट्राइसेम युवक प्रशिक्षित 2.5 लाख, इदिरा आवास योजना मकान निर्मित्त 7.2 लाख, दस लाख कुए योजना कुए निर्मित्त एक लाख।

शहरी क्षेत्र की नेहरू रोजगार योजना को 1997–98 मे स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना मे सम्मिलित कर दिया गया। नेहरू रोजगार योजना मे 1996–97 मे 0 6 लाख परिवारो को सहायता दी गई। इसके द्वारा 44 6 लाख मानव दिवस रोजगार सृजन किया गया तथा 0 4 लाख व्यक्तियो को प्रशिक्षण दिया गया। स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना दिसम्बर 1997 मे अस्तित्व मे आई। इसमे शहरी स्व–रोजगार योजना (यू एस. ई. पी) तथा शहरी मजदूरी रोजगार कार्यक्रम (यू डब्ल्यू ई पी.) सम्मिलित है। प्राप्त सूचना के अनुसार दिसम्बर 1998 के अन्त मे शहरी स्व–रोजगार योजना मे लाभार्थियो की सख्या 0.2 लाख तथा प्रशिक्षित व्यक्तियो की संख्या 0 2 लाख और शहरी मजदूरी रोजगार कार्यक्रम मे 12 9 लाख मानव दिवस रोजगार सृजित किया गया। प्रधानमत्री रोजगार योजना मे 1997–98 मे 2 6 लाख मानव दिवस रोजगार सृजन किया गया।[4]

बेरोजगारी के कारण : राजकीय प्रयासों के बावजूद बेरोजगारी की समस्या से निजात नहीं मिला। देश मे बेरोजगारी की समस्या "सुरसा के मुंह" की तरह बढती जा रही है। विगत वर्षो मे बेरोजगारी ग्रामीण औद्योगीकरण का अभाव, कृषि की उपेक्षा, पूंजी प्रधान तकनीक की प्रधानता, सार्वजनिक उपक्रमो मे कम पूजी निवेश, श्रम शक्ति नियोजन का अभाव आदि कारणो से बढी। तीव्र गति से बढती जनसख्या और धीमा विकास बेरोजगारी के मुख्य कारण है। बढती जनसंख्या से अर्थव्यवस्था मे श्रम शक्ति के आधिक्य की समस्या उत्पन्न हो गई है। वर्ष 1991 मे भारत की जनसख्या 846 3 मिलियन थी जो बढकर 1 मार्च 1996 को 934 2 मिलियन हो गई। जनसख्या 1981–91 के दशक मे प्रतिवर्ष 2 14 प्रतिशत की गति से बढी। भारत की सकल घरेलू वृद्धि दर एशियाई देशो से भी कम है। वर्ष 1980–95 की

अवधि मे औसत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर भारत मे 5 6 प्रतिशत रही जबकि यह चीन मे 11 1 प्रतिशत, कोरिया मे 8 7 प्रतिशत तथा थाईलैण्ड मे 7 9 प्रतिशत थी। धीमे आर्थिक विकास के कारण भारत बेरोजगारी से निपट नहीं सका।

विकास की आवश्यकता · भारत मे बेरोजगारी को कम करने के लिए तीव्र गति से बढ रही जनसख्या को नियत्रित करना होगा। जनसख्या के नियत्रण मे शिक्षा का विकास कारगर भूमिका निभा सकता है। मगर दुनिया के सर्वाधिक निरक्षर भारत मे है। शैक्षिक विकास तो दूर की बात, सभी को साक्षर करना जटिल बना हुआ है। ऐसी स्थिति मे तीव्र आर्थिक विकास ही बेरोजगारी निवारण मे सहायक सिद्ध हो सकता है। किन्तु भारत मे सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि तेजी से नहीं बढ पा रही। वर्ष 1993–94 के मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1997–98 मे 5 प्रतिशत (त्वरित अनुमान) तथा 1998–99 मे 5 8 प्रतिशत (अग्रिम अनुमान) थी। नौवीं योजना के अंतिम वर्ष 2002 मे बढती बेरोजगारी पर काबू पाने के लिए विभिन्न क्षेत्रो मे वृद्धि दर बढानी आवश्यक है ताकि 7 प्रतिशत जी डी पी वृद्धि प्राप्त की जा सके और बेरोजगारी दर 1 9 प्रतिशत से कम होकर 1 47 प्रतिशत पर आ जाए। इसके लिए नौवीं योजना (1997 से 2002) में कृषि क्षेत्र मे 4 5 प्रतिशत, निर्माण क्षेत्र मे 10 6 प्रतिशत, सेवा क्षेत्र में 6 प्रतिशत तथा बीमा, वित्त, भू–सपत्ति में 10 10 प्रतिशत की वृद्धि आवश्यक है। वर्ष 1999–2000 के प्रारम्भ मे अर्थव्यवस्था मे सुधार के सकेत मिले। शुरुआती माह से औद्योगिक उत्पादन मे वृद्धि हुई। सीमेन्ट उत्पादन मे 27 प्रतिशत तथा इस्पात क्षेत्र मे 1 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किन्तु इस वर्ष राजनीतिक अस्थिरता, कारगिल मे सैनिक कार्यवाही तथा भुगतान सतुलन की स्थिति के ठीक नहीं होने के कारण भारत मे निवेश मे बढोतरी की सभावना कम है। कारगिल समस्या के लम्बा खींचने से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पडेगा। भारत का बुनियादी ढाचा अपेक्षाकृत कम विकसित है। आर्थिक विकास के लिए बुनियादी ढाचा आवश्यक है। बुनियादी ढाचे के विकास बिना 7-8 प्रतिशत आर्थिक वृद्धि दर प्राप्त करना कठिन काम है।

सन्दर्भ

1 *भारत*, 1994

2 *तथ्य भारती*, मई 1999

3 *राजधानी डाइजेस्ट*, नई दिल्ली 14–21 जून 1999

4. *इकोनोमिक सर्वे*, 1998-99 पृ 149

3

संकटग्रस्त भारतीय अर्थव्यवस्था

भारत को आजाद हुए पांच दशक पूरे हो चुके हैं। स्वातन्त्र्योत्तर विकास वास्ते पंचवर्षीय योजनाओं का मार्ग चुना जिसने आठ पंचवर्षीय योजनाएँ तथा छह वार्षिक योजनाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। वर्तमान में नौवीं पंचवर्षीय योजना क्रियान्वयन में है जिसके मसौदे को 9 जनवरी 1999 को मंजूरी दी गई। बीते वर्षों में राजनीतिक सत्ता के बार-बार परिवर्तन के कारण नौवीं पंचवर्षीय योजना निर्धारित समय पर प्रारम्भ नहीं की जा सकी। नौवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भिक दो वर्ष बिना योजना क्रियान्वयन बीत गए। नियोजन काल में अरबों-खरबों रुपए का पूंजी विनियोजन सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत किया जा चुका है। निजी क्षेत्र को भी विकास में भूमिका निभाने की छूट दी गई। *विकास के मार्ग में वित्तीय संसाधनों की कमी की* स्थिति में भारी मात्रा में विदेशों से कर्ज लिया गया। भारत दुनिया के बड़े ऋणी देशों में बदल गया। इसके बावजूद भी भारत विकास के क्षेत्र दुनिया के अनेक देशों की तुलना में पीछे है जबकि भारत में प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता है। मानव संसाधनों की कमी नहीं है। भारत में आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए सभी परिस्थितियां विद्यमान हैं। आर्थिक पिछड़ापन भारत के लिए गंभीर चिन्ता का विषय है। विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करने वास्ते भारत ने नब्बे के दशक में आर्थिक संरचना में परिवर्तन का मार्ग आत्मसात किया। वर्ष 1991-92 से आर्थिक उदारीकरण का दौर जारी है। केन्द्र में सत्तारूढ़ विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने न्यूनाधिक आर्थिक उदारीकरण को गति दी। भारत में आर्थिक उदारीकरण के दस वर्ष पूरे हो चुके हैं। किन्तु उदारीकरण के संतुलित प्रभाव अर्थव्यवस्था में दृष्टिगोचर नहीं हुए।

प्रतिशत तथा 1998–99 मे 1.5 प्रतिशत (प्राविजनल) थी। भारत कृषि प्रधान देश है। अर्थव्यवस्था कृषि पर टिकी हुई है। कृषि वृद्धि दर का ऋणात्मक होना अथवा अत्यल्प वृद्धि चिन्ताप्रद बात है। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे कृषिगत क्षेत्र में कम पूजी निवेश कृषि की धीमी प्रगति का कारण है। ग्रामीण परिवेश के सामाजिक पिछडेपन का प्रभाव भी कृषि विकास पर पडता है। गांवो मे आधारभूत सरचना का भी अभाव है। केन्द्र सरकार द्वारा हाल ही के वर्षों मे पेश किए गए बजटों में कृषि व ग्रामीण परिवेश पर अधिक वित्तीय आवटन के बावजूद गांवो की दशा मे सुधार न होना वित्तीय ससाधनो का सदुपयोग नहीं होना की बात दर्शाता है।

उद्योगो क्षेत्र मे विश्व व्यापी मंदी का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर पडा। औद्योगीकरण क्षेत्र में गिरावट के कारण आर्थिक वृद्धि दर भी गति नहीं पकड सकी। निवेशकों का पूजी बाजार पर विश्वास बहुत कम हो गया। प्राथमिक पूंजी बाजार निर्गमो की सख्या और गतिशील राशि (Amount Mobilised) मे भारी गिरावट आई है। प्राथमिक पूजी बाजार में निर्गमो की संख्या 1995–96 में 1,726 थी जो घटकर 1997–98 में 111 और अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में केवल 41 ही रह गई। गतिशील राशि 1995–96 मे 20,804 करोड रुपए से घटकर 1997–98 मे 4,570 करोड रुपए तथा अप्रेल–दिसम्बर 1998–99 मे केवल 3,927 करोड रुपए रह गई। नतीजन औद्योगिक उत्पादन सूचकाक मे तीव्र वृद्धि नहीं हो सकी। औद्योगिक उत्पादन सूचकाक 1997–98 मे 137.6 था जो अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में बढकर 139 ही हो सका। वर्ष 1995–96 मे 12.8 प्रतिशत औद्योगिक वृद्धि दर उल्लेखनीय थी। बाद के वर्षो मे औद्योगिक उत्पादन मे गिरावट जारी रही। औद्योगिक वृद्धि दर 1996–97 में 5.6 प्रतिशत तथा 1997–98 मे 6.6 प्रतिशत थी। गत वित्तीय वर्ष अप्रेल–दिसम्बर 1998–99 में औद्योगिक वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत रसातल तक पहुंच गई। कोर एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र की वृद्धि दर बहुत गिर चुकी है। इस क्षेत्र की वृद्धि दर 1994–95 मे 9.1 प्रतिशत थी जो घटकर 1997–98 में 4.8 प्रतिशत (प्राविजनल) तथा अप्रेल–दिसम्बर 1998–99 मे 2 प्रतिशत रह गई। अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 मे विद्युत उत्पादन वृद्धि दर 6.6 प्रतिशत, कोयला उत्पादन वृद्धि दर शून्य, बिक्री योग्य इस्पात ऋणात्मक 2.6 प्रतिशत, कच्चा तेल ऋणात्मक 3.6 प्रतिशत, रिफाईनरी 3.2 प्रतिशत, सीमेंट वृद्धि दर 3.7 प्रतिशत रही।

मुद्रास्फीति के इकाई अंक में बने रहना अर्थव्यवस्था के लिए राहत की बात है। थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति दर 1995–96 मे 4.4 प्रतिशत, 1996–97 मे 6.9 प्रतिशत, 1997–98 मे 5.3 प्रतिशत तथा

अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में 4.6 प्रतिशत थी। किन्तु औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक वृद्धि दर दिसम्बर 1998 में 15.3 प्रतिशत था। बढ़ता राजकोषीय घाटा अर्थव्यवस्था की विकट समस्या बन चुका है। वर्ष 1998–99 के संशोधित अनुमानों में राजकोषीय घाटा 1,03,737 करोड़ रुपए तक जा पहुंचा जो कि सकल घरेलू उत्पाद का 4.5 प्रतिशत बैठता है। एक मार्च 1999 को रिजर्व बैंक द्वारा सी. आर. आर. में की गई 1/2 प्रतिशत कमी से मुद्रास्फीति में वृद्धि होगी। एक अप्रैल 1998 से 15 जनवरी 1999 के बीच मुद्रा आपूर्ति (एम-3) वृद्धि 15.3 प्रतिशत थी।

भारत की अर्थव्यवस्था के संकटग्रस्त होने का कारण निर्यात के मोर्चे पर विफलता है। वर्ष 1998–99 (अप्रैल–दिसम्बर) में डॉलर में निर्यात वृद्धि दर का ऋणात्मक होना अर्थव्यवस्था के लिए खतरे की घंटी है। चालू मूल्यों पर निर्यात 1995–96 में 31,797 मिलियन डॉलर था जो बढ़कर 1996–97 में 33,470 मिलियन डॉलर, 1997–98 में 33,980 मिलियन डॉलर हो गया। अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में निर्यात 24,287 मिलियन डॉलर था। मूल्यों में निर्यातों में बढ़ने की प्रवृत्ति दिखती है किन्तु निर्यात वृद्धि हाल के वर्षों में उत्तरोत्तर कम हुई। निर्यात वृद्धि दर डॉलर में 1995–96 में 20.7 प्रतिशत अर्थव्यवस्था के लिए शुभसंकेत था किन्तु यह खुशी अल्पकालिक रही। डॉलर में निर्यात वृद्धि दर घटकर 1996–97 5.3 प्रतिशत, 1997–98 में और घटकर 1.5 प्रतिशत रह गई। अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में निर्यात वृद्धि दर ऋणात्मक 2.9 प्रतिशत तक जा गिरी। निर्यातों में वृद्धि नहीं होने की स्थिति में केन्द्र सरकार की नींद उड़ सकती है। रुपए में भी निर्यात वृद्धि नहीं बढ़ सकी। भारत का निर्यात 1997–98 में 1,26,286 करोड़ रुपए तथा अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में 1,01,850 करोड़ रुपए था। रुपए में निर्यात वृद्धि दर 1995–96 में 28.6 प्रतिशत थी जो गिरकर 1997–98 में केवल 6.3 प्रतिशत रह गई। अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में निर्यात वृद्धि दर 11.7 प्रतिशत रही।

अर्थव्यवस्था की आयातों पर निर्भरता बनी हुई है। हाल के वर्षों में रुपए और डॉलर दोनों में आयात वृद्धि दर निर्यात वृद्धि दर से अधिक बनी हुई है। इससे व्यापार घाटे में वृद्धि हुई है जिसका प्रभाव विदेशी विनिमय कोष पर पड़ा है। आयात 1997–98 में 40,779 मिलियन डॉलर तथा अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में 31,583 मिलियन डॉलर था। डॉलर में आयात वृद्धि दर 1995–96 में 28 प्रतिशत, 1996–97 में 6.7 प्रतिशत, 1997–98 में 4.2 प्रतिशत तथा अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 में 7.1 प्रतिशत थी। रुपए में भारत का आयात 1997–98 में 1,51,553 करोड़ रुपए तथा

अप्रेल–दिसम्बर 1998–99 मे 1,32,447 करोड रुपए था। रुपए मे आयात वृद्धि दर 1996–97 मे 36 4 प्रतिशत, 1996–97 मे 13 2 प्रतिशत, 1997–98 मे 9 प्रतिशत तथा अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 मे 23 2 प्रतिशत थी। आयातो मे कमी से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ है। निर्यातो के तेजी से नहीं वढने के कारण व्यापार घाटा बढा। व्यापार घाटा 1995–96 मे 4,881 मिलियन डॉलर था जो बढकर 1997–98 मे 6,799 मिलियन डॉलर तक जा पहुंचा। अप्रेल–दिसम्बर 1998–99 मे व्यापार घाटा 7,296 मिलियन डॉलर था। रुपए मे व्यापार घाटा 1997–98 मे 25,267 करोड रुपए था।

सकटग्रस्त स्थिति म विदेशी विनिमय कोप अर्थव्यवस्था को सभाले हुए है। मार्च 1991 के बाद विदेशी विनिमय कोप मे वृद्धि की प्रवृत्ति जारी है। मार्च 1996 मे थोडी कमी अवश्य हुई। भारत का विदेशी विनिमय कोप 1990–91 मे 4,388 करोड रुपए था जो बढकर 1995–96 में 58,446 करोड रुपए तथा 1997–98 मे और बढकर 1,02,507 करोड रुपए हो गया। जनवरी 1999 में विदेशी विनिमय कोष 1,16,515 करोड रुपए था। डालर मे जनवरी 1999 मे विदेशी विनिमय कोप 27,429 मिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की संतोपप्रद स्थिति दर्शाते है। विदेशी विनिमय कोषों की पर्याप्तता भारत के लिए सकट की स्थिति से निपटने मे सहायक है। रुपए की विनिमय दर मे भी स्थयित्व है। डॉलर के मुकावले रुपए का अवमूल्यन 1995–96 मे 6 1 प्रतिशत, 1996–97 मे 5 8 प्रतिशत, 1997–98 मे 4.5 प्रतिशत तथा अप्रैल–जनवरी 1998–99 मे 11 5 प्रतिशत था। हाल के वर्षों मे रुपए का अवमूल्यन पूर्वी एशियाई देशो की मुद्राओ के अवमूल्यन की तुलना मे कम है।

भारत के रुपए का अवमूल्यन अप्रैल–दिसम्बर 1998–99 मे विगत वर्षों की तुलना मे अधिक हुआ। किन्तु अन्य देशों द्वारा मुद्राओ के प्रतिस्पर्धी अवमूल्यन के कारण भारत के निर्यातो में वृद्धि नहीं हो सकी। अवमूल्यन से भारत का विदेशी ऋण भी बढा। वढता विदेशी ऋण अर्थव्यवस्था के लिए विकट समस्या वन चुका है। भारत की गिनती दुनिया के वडे ऋणी देशो मे है। भारत का विदेशी ऋण 1996–97 मे 93 47 विलियन डॉलर था जिसमे लघु अवधि ऋण 86 74 विलियन डॉलर तथा दीर्घावधि ऋण 6 73 विलियन डॉलर था। सितम्बर 1999 मे विदेशी ऋण 95 20 विलियन डॉलर तक जा पहुचा जिसमे लघु अवधि ऋण 91 66 बिलियन डॉलर तथा दीर्घावधि ऋण 3 53 बिलियन डॉलर था। देश के आन्तरिक ऋण की स्थिति भी विषम है। ऋणो के मामले मे अर्थव्यवस्था की स्थिति इस कदर बिगड गई कि ऋण चुकाने के लिए विदेशो से ऋण लेना पडता है। केन्द्रीय वजट मे एक रुपए का 27 प्रतिशत भाग ब्याज पर खर्च होता है।

वर्ष 1998–99 मे सकटग्रस्त स्थिति मे पहुच चुकी अर्थव्यवस्था को वापस पटरी पर लाने के लिए नीतिगत कदम उठाने की आवश्यकता है। ताजे केन्द्रीय बजट 1999–2000 मे अर्थव्यवस्था की दशा सुधारने के प्रयास दृष्टिगोचर हुए है। लघु निवेशको के हितो को ध्यान मे रखा गया है। रिजर्व बैंक ने भी केन्द्रीय बजट पेश किये जाने के कुछ घटो बाद महत्त्वपूर्ण कदम उठाये है। रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दर, सी आर आर, बैंक दर आदि मे परिवर्तन किया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा किए गए प्रयासो से मार्च 1999 से पहले सप्ताह मे शेयर सूचकाक मे तेजी देखने को मिली। बीते कुछ वर्षो में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति दक्षिण–पूर्व एशियाई देशो से बेहतर रही है। किन्तु अब एशियाई आर्थिक सकट के बादल छटने लगे हैं। पूर्वी एशियाई देशो में आधारभूत सरचना मजबूत है। सकट से उभरने के बाद इन देशो की आर्थिक स्थिति भारत से मजबूत होगी। अर्थव्यवस्था मे मजबूती वास्ते भारत को आधारभूत ढाचा खड़ा करने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। आज इस बात पर चिन्ता करने की आवश्यकता है कि लम्बे नियोजन काल मे भारी विनियोजन के बावजूद गरीब तबकों की आर्थिक स्थिति क्यो नहीं सुधर सकी। आज गरीबों के निमित्त बनी योजनाओ का कारगर मूल्याकन आवश्यक है।

4

भारत में बढ़ता विदेशी व्यापार घाटा और बिगड़ता भुगतान संतुलन

अतीत मे भारत व्यापार शेष के अनुकूल होने के कारण एक समृद्ध देश था। गुलामी के दिनो मे भारत की अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय हो गई थी। कृषि तथा उद्योगो की दृष्टि से भारत बहुत पिछड गया था। इसके अलावा ढेरो समस्याए विरासत मे मिली थी। स्वातन्त्र्योत्तर अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान की आवश्यकता थी, इसलिए आयातो पर निर्भरता बढी। भारत ने विकास के लिए नियोजित विकास का मार्ग चुना। सार्वजनिक उपक्रमो को विकास का दायित्व सौंपा गया, किन्तु सार्वजनिक उपक्रम विकास लक्ष्यो की प्राप्ति मे अपेक्षित सहयोग नहीं दे सके। कुछेक को छोडकर अधिकाश उपक्रम घाटे की समस्या से ग्रसित रहे। सार्वजनिक उपक्रम सरकार पर भार सिद्ध हुए। निजी क्षेत्र के लिए पर्याप्त अवसर था और आज भी है। किन्तु निजी क्षेत्र देश मे ही बडे बाजार का लाभ उठाता रहा, निजी उद्यमियो ने निर्यात व्यापार मे विशेष रुचि नहीं ली। वर्तमान मे आर्थिक उदारीकरण के दौर में विकास के क्षेत्र में सरकार की भूमिका नियोजित विकास के दौर की तुलना मे कम हो गई है। आज भारत परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल कर रहा है। नई आर्थिक नीतियो में सरचनात्मक बदलाव किया गया है। उदार आयात नीति का अनुसरण किया जा रहा है। इन सब प्रयासो की परिणति व्यापार शेष की प्रतिकूलता के रूप मे ही दृष्टिगोचर हुई। निर्यातो मे अवश्य वृद्धि हुई, किन्तु केवल दो वर्षो को छोडकर आयात सदैव निर्यातो से अधिक रहे परिणामस्वरूप व्यापार घाटा उत्तरोत्तर बढा।

भारत का व्यापार घाटा 1950-51 मे 2 करोड रुपए था जो बढकर 1960-61 मे 480 करोड रुपए तथा 1965-66 मे और बढकर 599 करोड

रुपए हो गया। 1970-71 में व्यापार घाटा 99 करोड़ रुपए रहा। व्यापार शेष 1972-73 में 104 करोड़ रुपए तथा 1976-77 मे 68 करोड़ रुपए अनुकूल रहा। यह भारत की अर्थव्यवस्था विशेषकर विदेशी व्यापार के क्षेत्र मे उल्लेखनीय बात थी। आठवें दशक मे व्यापार घाटे मे भारी वृद्धि हुई जो नौवें दशक मे भी जारी है। वर्ष 1980-81 मे व्यापार घाटा 5,838 करोड़ रुपए था जो बढ़कर 1989-90 में 7,670 करोड़ रुपए हो गया। वर्ष 1990-91 मे राजनीतिक अस्थिरता तथा खाड़ी युद्ध का विदेशी व्यापार पर विपरीत प्रभाव पड़ा। 1990-91 में व्यापार घाटा 10,645 करोड़ रुपये को छू गया जो अब तक सर्वाधिक व्यापार घाटा था। आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भ में रुपए का अवमूल्यन किया तथा आयातो को नियन्त्रित किया गया। इससे व्यापार घाटे को कम करने में मदद मिली। 1991-92 में व्यापार घाटे केवल 3,810 करोड़ रुपए रहा जो 1980-81 के बाद सबसे कम था। किन्तु आयातो को नियन्त्रित करने से औद्योगिक विकास की दर घटी और अवमूल्यन से ऋणभार में तीव्र वृद्धि हुई। अगले ही वर्ष अर्थात् 1992-93 में अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी राष्ट्रों द्वारा मुद्राओ के अवमूल्यन के कारण रुपए का अवमूल्यन का प्रभाव कम हो गया और व्यापार घाटा 1992-93 में फिर बढ़ कर 9,687 करोड़ रुपए तक जा पहुचा।

वर्ष 1996-97 मे आर्थिक सुधारो का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ। केन्द्र मे सयुक्त मोर्चा सरकार ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की आर्थिक नीतियों को अत्यल्प फेर बदल के साथ लागू किया। वर्ष 1996-97 तथा 1997-98 राजनीतिक अस्थिरता के वर्ष रहे। इसका भारत के विदेशी व्यापार पर प्रभाव पड़ा है। व्यापार घाटा 1994-95 में 7,297 करोड़ रुपए तथा 1995-96 मे 16,325 करोड़ रुपए था। व्यापार घाटा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 मे 30,597 करोड़ रुपए (प्राविजनल) रहा।

अमेरिकन डॉलर मे व्यापार घाटा 1960-61 में 1 007 अरब डॉलर था जो बढ़कर 1980-81 मे 7 383 अरब डॉलर तथा 1990-91 मे 5 932 अरब डॉलर हो गया। व्यापार घाटा 1997-98 मे 6 799 अरब डॉलर था। अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपए की गिरावट और आयात के मुकाबले कम होते निर्यात से व्यापार घाटे पर दबाव बढ़ा है। दिसम्बर 1997 मे राजनीतिक अनिश्चितता के कारण रुपए की विनिमय दर में भारी गिरावट आई है। यह दर प्रति डॉलर 39 रुपए से भी अधिक हो गई थी। अवमूल्यन से आयात महंगे होंगे। तेल पूल घाटे मे और वृद्धि होगी। अवमूल्यन से मुद्रास्फीति मे भी वृद्धि होगी। विनिमय दर मे गिरावट को रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने करोड़ों अरबों डॉलर की बाजार में बिकवाली की। अवमूल्यन से रुपए के

लिहाज से निर्यात आय मे बढत हो सकती है किन्तु डॉलर के लिहाज से निर्यात आय पर दबाव बना है। अप्रेल-अक्टूबर 1997-98 मे व्यापार घाटा पिछले वर्ष की इसी अवधि के मुकाबले 40 करोड 13 लाख डॉलर बढा। अप्रैल-अक्टूबर 1996-97 मे व्यापार घाटा 2 अरब 27 करोड 52 लाख डॉलर था जो अप्रैल अक्टूबर 1997-98 मे बढकर 2 अरब 67 करोड 65 लाख डॉलर हो गया। अप्रैल-अक्टूबर 1997-98 मे निर्यात से आयात की भरपाई 88 13 प्रतिशत रही जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 89.25 प्रतिशत की तुलना मे कम है। निर्यात से आयात की भरपाई का प्रतिशत जितना कम होगा उतना ही व्यापार घाटा बढेगा और उसका सीधा असर विदेशी मुद्रा भंडार पर पडता है।

विदेशी व्यापार की मात्रा

(करोड रुपए)

वर्ष	निर्यात (पुन निर्यात सहित)	आयात	कुल विदेशी व्यापार	व्यापार शेष	परिवर्तन दर प्रतिशत मे	
					निर्यात	आयात
1950-51	606	608	1214	-2	24.9	-1.5
1955-56	609	774	1283	-165	2.7	10.6
1960-61	642	1122	1764	-480	0.3	16.8
1965-66	810	1409	2219	-599	-0.7	4.4
1970-71	1535	1634	3169	-99	8.6	3.3
1972-73	1971	1867	3838	104	22.6	2.3
1976-77	5142	5074	10216	68	27.4	-3.6
1980-81	6711	12549	19260	-5838	4.6	37.3
1985-86	10895	19658	30553	-8763	-7.2	14.7
1990-91	32553	43198	75751	-10645	17.7	22.3
1991-92	44041	47851	91892	-3810	35.3	10.8
1992-93	53686	63375	117063	-9687	21.9	32.4
1993-94	69751	73101	142852	-3350	29.9	15.3
1994-95	82674	89971	172645	-7297	18.5	23.1
1995-96	106353	122678	229031	-16325	28.6	36.4
1996-97	118817	138920	257737	-20103	11.7	13.2
1997-98	130101	154176	284277	-24073	9.5	11.0
1998-99 (प्रा)	141604	176099	317703	-34493	8.8	14.2
1999-2000 (अप्रैल-दिसम्बर)	118638	149087	267725	-30449	16.5	12.6

स्रोत इकोनॉमिक सर्वे, 1999-2000, S-81 प्रा - प्रोविजनल।

कुल विदेशी व्यापार

स्वातन्त्र्योत्तर भारत के कुल विदेशी व्यापार मे उल्लेखनीय वृद्धि हुई। कुल विदेशी व्यापार 1950-51 मे 1,214 करोड रुपए था जो बढकर 1960-61 मे 1,764 करोड रुपए, 1970-71 मे 3,169 करोड रुपए, 1980-81 मे 19,260 करोड रुपए तथा 1990-91 मे 75,751 करोड रुपए हो गया। कुल विदेशी व्यापार 1994-95 मे 1 72,645 करोड रुपए रहा। वर्ष 1950-51 से 1994-95 तक 44 वर्षो म कुल विदेशी व्यापार मे 142 गुना तीव्र वृद्धि हुई। 1997-98 मे कुल विदेशी व्यापार 2,84,277 करोड रुपए तथा अप्रैल-दिसम्बर 1999-2000 मे 2,67,725 करोड रुपए (प्राविजनल) रहा।

निर्यात व्यापार · निर्यात सवर्द्धन के बावजूद निर्यात व्यापार मे अपेक्षित वृद्धि नही हुई। ऊँची कीमत तथा निम्न किस्म के कारण भारतीय उत्पाद अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की गलाकाट प्रतिस्पर्धा में नहीं टिक पाते। भारतीय उत्पाद आधुनिकतम तकनीक से सुसज्जित नहीं है। निर्यात 1950-51 मे 606 करोड रुपए था जो बढकर 1960-61 मे 642 करोड रुपए, 1970-71 मे 1,535 करोड रुपए, 1980-81 मे 6,711 करोड रुपए तथा 1990-91 मे 32,553 करोड रुपए हो गया। निर्यात 1994-95 मे और बढकर 82,674 करोड रुपए हो गया। चवालीस वर्षों मे भारत के निर्यात व्यापार मे 136 गुना वृद्धि हुई। भारत का निर्यात 1997-98 मे 1,30,101 करोड रुपए तथा अप्रैल-दिसम्बर 1999-2000 मे 1,18,638 करोड रुपए (प्राविजनल) था।

भारत की निर्यात सवृद्धि मे उच्चावचन की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। अनेक वर्षो मे निर्यात सवर्द्धन दर ऋणात्मक रही। निर्यातो मे गिरावट 1952-53 मे 19 3 प्रतिशत, 1953-54 मे 8 1 प्रतिशत, 1956-57 मे 0 7 प्रतिशत, 1957-58 मे 7 3 प्रतिशत, 1965-66 मे 0 7 प्रतिशत, 1985-86 मे 7 2 पतिशत रही। भारत के निर्यातो मे 1966-67 में सर्वाधिक 42 9 प्रतिशत की वृद्धि उल्लेखनीय है। भारत मे आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत के साथ निर्यात सवृद्धि दर मे वृद्धि हुई। निर्यात सवृद्धि दर 1991-92 म 35 3 प्रतिशत, 1992-93 मे 21 9 प्रतिशत, 1993-94 मे 29 5 प्रतिशत, 1995-96 में 28 6 प्रतिशत सतोषप्रद कही जा सकती है। वर्ष 1997-98 मे 9 5 प्रतिशत निर्यात वृद्धि अवश्य चिन्ताप्रद रही। अप्रैल-दिसम्बर 1999-2000 मे निर्यात सवृद्धि दर 16 5 प्रतिशत थी। भारत की ग्यारहवीं लोकसभा राजनीतिक अस्थिरता की शिकार रही। महज अठारह महीनों मे तीन प्रधानमत्री बदले। राजनीतिक अस्थिरता का भारत की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पडा है। आर्थिक सक्रमण काल मे राजनीतिक अस्थिरता भारत के लिए चिंतनीय पहलू है। जहा पूर्ववर्ती आर्थिक सवृद्धि दर को बनाए रखना कठिन हो गया

है वहीं आर्थिक उदारीकरण की नीतियों को धक्का लगा है। ऐसी स्थिति में विदेशी पूंजी निवेश के घटने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। 4 दिसम्बर 1997 को राष्ट्रपति ने ग्यारहवीं लोकसभा भग की। फरवरी-मार्च 1998 में बारहवीं लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। बारहवीं लोकसभा भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। सितम्बर-अक्टूबर 1999-2000 में तेरहवीं लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। भारत के गरीब लोगों को केवल सत्रह महीनों में लोकसभा चुनाव का सामना करना पडा। आर्थिक विकास के लिए राजनीतिक स्थायित्व आवश्यक है। राजनीतिक स्थायित्व से विकासशील देश की गरीब जनता की पसीने की कमाई को खर्चीले चुनाव में व्यय से रोका जा सकता है। बार-बार सत्ता परिवर्तन से तथा लोकसभा में किसी राजनीतिक पार्टी को स्पष्ट बहुमत के अभाव में वित्तीय ससाधनों की बर्बादी तथा दुरुपयोग होता है। राजनीतिक स्थायित्व आर्थिक विकास की सही दिशा निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होता है। गत दो वर्षो (1996-97 तथा 1997-98) में भारतीय अर्थव्यवस्था की बदतर हुई स्थिति को नजरअदाज नहीं किया जा सकता।

आयात व्यापार : भारत विश्व का एक बडा देश है। यहा की बहुसख्यक आबादी जीवन बसर के लिए कृषि पर निर्भर है। भारत दीर्घावधि तक उपनिवेश रहा है। इस लिए स्वतत्रता उपरान्त विकासगत जरुरतों की पूर्ति के लिए आयात व्यापार पर निर्भरता बनी हुई है। विगत वर्षों में आयात व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। आयात 1950-51 में 608 करोड रुपए था जो बढकर 1960-61 में 1,122 करोड रुपए, 1970-71 में 1,634 करोड रुपए, 1980-81 में 12,549 करोड रुपए तथा 1990-91 में 43,198 करोड रुपए हो गया। वर्ष 1994-95 में आयात और बढकर 89,971 करोड रुपए हो गया। 1950-51 से 1994-95 तक चवालीस वर्षों में आयात व्यापार में 148 गुना वृद्धि हुई। वर्ष 1997-98 में आयात 1,54,176 करोड रुपए तथा अप्रैल-दिसम्बर 1999-2000 में 1,49,087 करोड रुपए रहा।

आयात सवृद्धि दर 1950-51 में ऋणात्मक 1.5 प्रतिशत थी जो बढकर 1960-61 में 16.8 प्रतिशत, 1970-71 में घटकर 3.3 प्रतिशत, 1980-81 तीव्र गति से बढकर 37.3 प्रतिशत तथा 1990-91 में 22.3 प्रतिशत हो गई। वर्ष 1970-71 के बाद के वर्षो में केवल 1976-77 को छोडकर आयात संवृद्धि दर में गिरावट की प्रवृत्ति नहीं देखी गई। आर्थिक उदारीकरण के बाद के वर्षो में उदार आयात की नीति का अनुसरण के कारण आयात संवृद्धि दर में तीव्र वृद्धि हुई। आयात संवृद्धि दर 1992-93 में 32.4 प्रतिशत थी जो घटकर 1993-94 में 15.3 प्रतिशत तथा 1994-95 में

23.1 प्रतिशत रह गई। वर्ष 1995-96 में आयात सवृद्धि दर मे 36.4 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि हुई। आठवे और नवे दशक मे आयात सवृद्धि दर मे इतनी वृद्धि पूर्व मे कभी नहीं हुई। ऊँची आयात सवृद्धि दर ने 1995-96 मे व्यापार घाटे की स्थिति को भयावह बना दिया। अप्रैल-दिसम्बर 1999-2000 मे आयात सवृद्धि दर 12.6 प्रतिशत रही।

प्रतिकूल व्यापार शेष के कारण

(1) निर्यातों मे कमी : निर्यातो में अपेक्षित वृद्धि नहीं होना प्रतिकूल व्यापार शेष का प्रमुख कारण है। भारत के निर्यात सदैव आयातो से कम रहे। अनेक वर्षों में निर्यात सवृद्धि दर ऋणात्मक रही। वर्ष 1985-86 मे निर्यात 7.2 प्रतिशत घटा। वर्ष 1994-95 मे निर्यात संवृद्धि दर 18.5 प्रतिशत थी जबकि आयातो मे 23.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आधुनिकतम तकनीक के अभाव में भारतीय उत्पाद अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की प्रतिस्पर्धा मे नहीं टिक पाते हैं।

(2) आयातों की बहुलता : नियोजित विकास के अनेक वर्षों बाद भी भारत की आयातो पर निर्भरता बनी हुई है। कृषि के पिछड़ेपन तथा जनसख्या की बहुलता के कारण खाद्यान्न आयात करना पडा। भारत को आज बडी मात्रा में पेट्रोल, तेल, लुब्रिकेंट्स का आयात करना पडता है। खनिज तेल की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मे कीमतें बढने के कारण तेल आयात बिल काफी बढ गया है।

(3) निर्यातों से आयातों की कम भरपाई : भारत के निर्यात आयातों की तुलना मे कम है। निर्यातों से आयातो की भरपाई कम है। निर्यातो से आयातो की भरपाई का प्रतिशत जितना कम होता है। व्यापार घाटा उतना ही अधिक बढता है। वर्ष 1994-95 मे निर्यातो से आयातो की भरपाई 91.8 प्रतिशत थी। वर्ष 1990-91 में यह प्रतिशत केवल 75.3 प्रतिशत ही था।

(4) रुपए का अवमूल्यन : निर्यात वृद्धि के वास्ते रुपए के अवमूल्यन का सहारा लिया गया। सितम्बर 1949 मे रुपए का डॉलर मे 30.5 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया। इसके बाद 6 जून 1966 को रुपए का 36.5 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया। भारत ने जुलाई 1991 के प्रथम सप्ताह मे रुपए की विनियम दर मे दो बार कमी की। रुपए को विश्व की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले यथा पौण्ड स्टर्लिंग 21.014 प्रतिशत, अमरीकी डॉलर 23.07 प्रतिशत, जर्मन मार्क 20.78 प्रतिशत, जापानी येन 22.23 प्रतिशत तथा फासिसी फ्राक 21 प्रतिशत सस्ता कर दिया। भारत ने यह गम्भीर कदम,

आर्थिक सकट से उबरने के लिए उठाया था। रुपए के अवमूल्यन के परिणामस्वरूप आयात व्यापार महगा हुआ है। अन्य राष्ट्रो द्वारा भी अवमूल्यन करने के कारण भारत से निर्यात मे अधिक वृद्धि नहीं हो सकी नतीजन व्यापार घाटा तीव्रता से बढा।

(5) युद्ध सामग्री का आयात : भारत को चीन तथा पाकिस्तान से बडे युद्धो का सामना करना पडा। आज सुरक्षात्मक कारणों से बडी मात्रा मे युद्ध सामग्री का आयात करना पडता है। भारत विभाजन का भी विदेशी व्यापार पर विपरीत प्रभाव पडा है।

अनुकूल व्यापार शेष का विकासशील अर्थव्यवस्था मे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अनुकूल व्यापार शेष अर्थव्यवस्था की सुदृढता का परिचायक है। इससे देश के विदेशी विनिमय कोषो मे वृद्धि होती है तथा विनिमय दर पक्ष में बनी रहती है। इसके अलावा भुगतान असतुलन की स्थिति को साम्य में लाने में मदद मिलती है। भारत के व्यापार शेष की सतत् प्रतिकूलता चिंताप्रद है। इसे आयात नियत्रण, निर्यात सवर्द्धन, राशिपातन, अवमूल्यन आदि से पक्ष में किया जा सकता है।

बिगडता भुगतान संतुलन

विश्व के देशों की आर्थिक स्थिति बहुत कुछ सीमा तक भुगतान संतुलन पर निर्भर करती है। विकसित देश अनुकूल भुगतान सतुलन के कारण तीव्र विकास की ओर अग्रसर हुए हैं। इसके विपरीत विकासशील देशो की आर्थिक स्थिति भुगतान संतुलन के मोर्चे पर विफलता के कारण दयनीय रही है। भुगतान संतुलन मे विदेशी व्यापार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। भारत सरीखे अनेक विकासशील देश ऐसे हैं जिनका व्यापार संतुलन अधिकांशत प्रतिकूल रहा। परिणामस्वरूप इन देशो मे भुगतान सकट सदैव मुहबांए खडा है। भुगतान सतुलन सामान्यतया संतुलित होता है क्योकि विदेशी मुद्रा की सम्पूर्ण मांग और सम्पूर्ण पूर्ति के अन्तर को स्वर्ण के आयात-निर्यात द्वारा अथवा ऋण समझौतो के द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। भुगतान संतुलन के चालू खाते मे व्यापार संतुलन और अदृश्य मदें सम्मिलित की जाती हैं तथा पूंजी खाते मे विदेशी निवेश, विदेशी सहायता, वाणिज्यिक उधार, बैंकिग पूंजी, रुपए ऋण सेवा, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से पुन. खरीद, त्रुटियां व भूल-चूक आदि को सम्मिलित किया जाता है। भुगतान संतुलन का पूजी खाता अर्थव्यवस्था की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है। अर्थव्यवस्था की सुदृढता अथवा दुर्बलता भुगतान सतुलन से ज्ञात की जा सकती है।

भारत का भुगतान सतुंलन (मिलियन डालर)

मदे	1990-91	1997-98	1997-98
1 आयात	27915	51126	47544
2. निर्यात	18477	34849	34298
3. व्यापार शेष	-9438	-16277	-13246
4 अदृश्य मदे	-242	9804	9208
5 चालू खाता	-9680	-6473	-4038
6 पूँजी खाता			
(i) विदेशी निवेश	103	4993	2312
(ii) ऋण			
(अ) विदेशी सहायता शुद्ध	2204	877	799
(ब) वाणिज्यिक उधार शुद्ध	3329	3914	3619
(iii) बैंकिंग	682	-893	1480
(iv) रुपए ऋण सेवा	-1193	-767	-802
(v) अन्य पूजी	1931	3800	1157
(vi) भूल और सुधार	132	-940	-305
7 कुल पूजी (I....VI)	7188	10984	8260
8 कुल भुगतान शेष (5+7)	-2492	4511	4222
9 मौद्रिक आवागमन			
(अ) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	1214 (क्रय)	-618 (पुन क्रय)	393 (पुन क्रय)
(ब) विदेशी विनिमय कोष में कमी (+) वृद्धि (-)	1278 (कमी)	-3893 (वृद्धि)	-3829 (वृद्धि)
10 कुल (अ+ब)	2492	-4511	-4222

स्रोत इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे, 1998-99, 1999-2000, एस–73

आर्थिक सुधारों को लागू करने के बाद भुगतान के मोर्चे पर स्थिति मे सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है। वर्ष 1990-91 मे भारत की अर्थव्यवस्था खाडी युद्ध जनित आर्थिक सकट की चपेट मे थी। वर्ष 1990-91 मे आयात 27,915 मिलियन डॉलर था जबकि निर्यात 18,477 मिलियन डॉलर [redacted] थे परिणामस्वरुप व्यापार घाटा 9,438 मिलियन डॉलर जा पहुँचा। इस वर्ष अदृश्य मदों मे भी 242 मिलियन डालर का घाटा था। नतीजतन 1990-91 मे चालू खाते का घाटा 9,680 मिलियन डॉलर को छू गया। पूजी खाते की शुद्ध प्राप्तिया 7,188 मिलियन डॉलर थी जिसके चालू खाते के घाटे का प्रभाव थोडा कम हुआ। वर्ष 1990-91 मे भुगतान शेष 2,492 मिलियन

डॉलर प्रतिकूल था जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 1,214 मिलियन डॉलर क्रय तथा विदेशी विनिमय कोष मे 1,278 मिलियन डॉलर की कमी से पाटा गया। भुगतान शेष की बिगडी स्थिति को सुधारने के लिए केन्द्र सरकार के द्वारा प्रयास किए गए। आर्थिक सुधारो की प्राथमिकताओ मे भुगतान शेष पर बल दिया गया। सशोधित निर्यात-आयात नीति की घोषणा की गई। चालू खाते के घाटे को भी कम करने का प्रयास किया गया। किन्तु चालू खाते मे व्यापार घाटे को बढने से रोका नहीं जा सका। वर्ष 1997-98 मे व्यापार घाटा 16,277 मिलियन डॉलर तक जा पहुचा जो 1990-91 की तुलना मे 72 प्रतिशत अधिक था। वर्ष 1997-98 मे अदृश्य मदो से शुद्ध प्राप्ति 9,804 मिलियन डॉलर उल्लेखनीय रही इससे चालू खाते के घाटे को कम करने मे मदद मिली। चालू खाते का घाटा कम होकर 6,473 मिलियन डॉलर रह गया जो 1990-91 की तुलना मे 3,207 मिलियन डॉलर अर्थात 33 प्रतिशत कम था। वर्ष 1997-98 मे पूजी खाते मे शुद्ध प्राप्तियां 10,984 मिलियन डॉलर थी। पूंजी खाते की प्राप्तियो से चालू खाते के घाटे को पाटा जा सका। भारत का भुगतान शेष 1997-98 में 4,511 मिलियन डॉलर अनुकूल स्थिति मे आ गया। इससे भारत अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 618 मिलियन डॉलर का पुन. क्रय किया तथा विदेशी विनिमय भण्डार मे 3,893 मिलियन डॉलर की वृद्धि हुई। गौरतलब है अनुकूल भुगतान शेष की स्थिति दृश्य और अदृश्य मदों के निर्यात के कारण नहीं अपितु वाणिज्यिक उधार के कारण बनी है जो कि चिंताप्रद बात है। चालू खाते के घाटे को कम करने मे मदद मिली है, किन्तु अभी भी यह चिन्तनीय बना हुआ है।

चालू खाते का घाटा

(मिलियन डालर)

वर्ष	चालू खाता घाटा	चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत मे
1990-91	-9680	-3 2
1991-92	-1178	-0.3
1992-93	-3526	-1.7
1993-94	-1158	-0.4
1994-95	-3369	-1.0
1995-96	-5899	-1.6
1996-97	-4494	-1.1
1997-98	-6473	-1 6
1998-99	-4038	-1.0
1999-2000 (*अप्रैल–सितम्बर*)	-3458	-1.5

स्रोत : *इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99, पृष्ठ 76, 1999-2000, पृष्ठ 87.

आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भिक वर्ष 1991-92 में भुगतान शेष के चालू खाते का घाटा नियंत्रित था। इस वर्ष यह 1,178 मिलियन डॉलर था जो सकल घरेलू उत्पाद का 0.3 प्रतिशत था। इसके बाद 1993-94 मे भी चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 0.4 प्रतिशत नियंत्रित था। उदारीकरण के शेष सभी वर्षों में चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद के एक प्रतिशत से अधिक था। भुगतान शेष के चालू खाते का घाटा 1996-97 मे 4,494 मिलियन डॉलर था जो सकल घरेलू उत्पाद का 1.1 प्रतिशत था। बढकर 1997-98 में 6,473 मिलियन डॉलर तक जा पहुचा जो कि सकल घरेलू उत्पाद का 1.6 प्रतिशत था। इससे पूर्व चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 1992-93 में 1.7 प्रतिशत तथा 1995-96 में 1.6 प्रतिशत था। वर्ष 1997-98 मे चालू खाते के घाटे का बढने का मुख्य कारण निम्न निर्यात वृद्धि था। अप्रैल-सितम्बर 1998-99 मे चालू खाते का घाटा 3,088 मिलियन डॉलर था।

बीते वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक और वित्तीय बाजार में दयनीय स्थिति के बावजूद भारत में भुगतान शेष की स्थिति संभालने योग्य स्थिति है। वर्ष 1996-97 और 1997-98 में मजबूत निजी पूजी प्रवाह के कारण भुगतान शेष की स्थिति सुविधाजनक है और लगातार दो वर्षों में विदेशी विनिमय भंडार में वृद्धि हुई। भुगतान शेष से विदेशी विनिमय भण्डार में 1996-97 में 5,818 मिलियन डॉलर तथा 1997-98 में 3,893 मिलियन डॉलर की वृद्धि हुई।

विदेशी विनिमय कोष भुगतान शेष से प्रभावित होता है। भारत का विदेशी विनिमय कोष 1990-91 में रसातल स्थिति में था। विदेशी विनिमय कोष 1980-81 मे 5,850 मिलियन डॉलर था जो घटकर 1990-91 में केवल 2,236 मिलियन डॉलर रह गया। गौरतलब है वर्ष 1990-91 में भुगतान सकट के कारण 1,278 मिलियन डॉलर विदेशी मुद्रा भण्डार कम हुआ। इस वर्ष विदेशी सहायता और वाणिज्यिक उधार से स्थिति बिगडने से बची। भारत को विदेशों मे स्वर्ण भी गिरवी रखना पडा था। इसके बाद भुगतान के मोर्चे पर भारत की स्थिति 1995-96 में भी दयनीय थी। वर्ष 1995-96 में विदेशी मुद्रा भडार 17,044 मिलियन डॉलर रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 18.1 प्रतिशत कम था। वर्ष 1995-96 में भुगतान शेष सकट के कारण विदेशी विनिमय भंडार में 2,936 मिलियन डॉलर की कमी हुई। चालू खाते के अत्यधिक घाटे के कारण भुगतान शेष की स्थिति बिगडी। शुद्ध विदेशी सहायता नहीं बढने से स्थिति सुधर नहीं सकी। वर्ष 1998-99 में भुगतान शेष की स्थिति को सुधारने का प्रयास नहीं किया गया

तो भुगतान संकट के कारण विदेशी विनिमय भण्डार में कमी आने की संभावना है। विदेशी विनिमय भण्डार जनवरी 1999 मे 27,429 मिलियन डॉलर संतोषप्रद स्थिति मे है। किन्तु चालू खाते का घाटा अप्रैल-सितम्बर 1998-99 में 3,085 मिलियन डॉलर (प्राविजनल) था जबकि शुद्ध पूजी खाता बचत 3,000 मिलियन डालर ही था। ऐसी स्थिति मे सितम्बर 1998 तक विदेशी विनिमय भण्डार मे 82 मिलियन डॉलर की कमी होगी। अप्रैल-सितम्बर 1998-99 मे भुगतान शेष की स्थिति बिगड़ने का कारण चालू खाते का अधिक घाटा तो है ही इसके अलावा शुद्ध विदेशी सहायता प्रवाह ऋणात्मक 135 मिलियन डॉलर भी है। शुद्ध वाणिज्यिक उधार 4,605 मिलियन डॉलर के बावजूद स्थिति मे सुधार दृष्टिगोचर नहीं हुआ। इसका कारण पूजी खाते की अन्य मदो की भूमिका घटी। अप्रैल-सितम्बर 1998-99 मे शुद्ध अप्रवासी जमा ऋणात्मक 393 मिलियन डॉलर तथा शुद्ध विदेशी निवेश 707 मिलियन डॉलर ही रहा।

भारत मे भुगतान संतुलन की स्थिति को बेहतर बनाने की आवश्यकता है किन्तु चालू खाते का बढता घाटा चिन्ताप्रद है। निर्यातों मे अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई इसके विपरीत आयातों में तेजी से वृद्धि हुई। आयातों में पेट्रोल, ऑयल और लुब्रिकेंट्स का भाग अधिक है। डॉलर में भारत की निर्यात वृद्धि दर 1997-98 में केवल 1.5 प्रतिशत थी। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में निर्यात वृद्धि दर ऋणात्मक 2 9 प्रतिशत तक गिर गई। जबकि आयात वृद्धि दर 1997-98 मे 4 2 प्रतिशत तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 मे 7.1 प्रतिशत थी। इस कारण व्यापार घाटा 1997-98 मे 6,799 मिलियन डॉलर तक जा पहुंचा जो नब्बे के दशक का अब तक सर्वाधिक घाटा था। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में व्यापार घाटा 7,296 मिलियन डॉलर को छू गया। पेट्रोल, ऑयल और लुब्रिकेंट्स का आयात 1996-97 में 10,036 मिलियन डॉलर (कुल आयात का 20 5%) तथा 1997-98 मे 8,217 मिलियन डॉलर (कुल आयात का 16%) था। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में भी निर्यातो की तुलना मे आयात अधिक है। वर्ष 1997-98 में सकल ,घरेलू उत्पाद में निर्यातों का भाग 8 3 प्रतिशत तथा आयात का भाग 12 2 प्रतिशत था। व्यापार घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 3.9 प्रतिशत था। व्यापार घाटे के कारण चालू खाते का घाटा बढा। चालू खाते का घाटा 1997-98 में सकल घरेलू उत्पाद का 1.6 प्रतिशत था जो गत वर्ष के 1.1 प्रतिशत की तुलना में अधिक था। चालू खाते के घाटे के बढने से विदेशी विनिमय भण्डार मे अधिक वृद्धि नहीं हो सकी। वर्तमान में जो विदेशी विनिमय भण्डार है यह विदेशी ऋण को देखते हुए अधिक नहीं है। विदेशी ऋण सकल घरेलू

उत्पाद के प्रतिशत मे कम हुआ है। फिर भी वह अधिक बना हुआ है। विदेशी ऋण सकल घरेलू उत्पाद का 1991-92 मे 37 7 प्रतिशत था जो घटकर 1995-96 मे 26.3 प्रतिशत तथा 1997-98 मे 23 8 रह गया। सकल घरेलू उत्पाद का लगभग एक-चौथाई भाग विदेशी ऋण देश पर बडा बोझ है। ऋण सेवा भुगतान सकल घरेलू उत्पाद का 2 7 प्रतिशत है।

भुगतान सतुलन की दशा सुधारने वास्ते निर्यातो मे वृद्धि बहुत आवश्यक है। भारत ने इस दिशा मे प्रयास भी किया किन्तु विश्व के देशो मे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र मे बढती प्रतिस्पर्धा के बीच भारत को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। गौरतलब है निर्यात वृद्धि के लिए 1949, 1966 और 1991 मे रुपए का भारी अवमूल्यन किया गया। उदारीकरण के वर्षों में नयी निर्यात आयात नीति की घोषणा की गई और उसमे अनेक बार संशोधन किया गया। विश्व के देशो से द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते किये इसके अलावा डकल प्रस्तावो को भी स्वीकार किया गया। इन सब प्रयासो के बावजूद भी विश्व के निर्यातो मे भारत की भूमिका नहीं बढ सकी। भुगतान सतुलन की स्थिति को सुधारने के लिए निर्यातो मे वृद्धि करनी होगी। इसके लिए भारतीय उत्पादो को उच्च गुणवत्ता, निम्न लागत, आकर्षक पैकिंग आदि गुणो से सुसज्जित करने की आवश्यकता है।

5

अर्थव्यवस्था की दिशाहीनता

अतीत मे विश्व की अर्थव्यवस्था मे भारत का गौरवपूर्ण स्थान था। भारतीय उत्पाद विश्वविख्यात थे। चहुंओर खुशहाली थी। भारत सोने की चिडिया के नाम से जाना जाता था। भारत की समृद्धि पर विदेशी आतताईयो की लालचभरी दृष्टि पडी। अंग्रेज व्यापारी की हैसियत से भारत आए और हमें राजनीतिक रूप से गुलाम बना दिया। भारत दीर्घावधि तक ब्रिटेन का उपनिवेश रहा। अंग्रेजों ने भारत की अर्थव्यवस्था का मनमाफिक शोषण किया। भारत के कच्चे उत्पादों पर इंग्लैण्ड के औद्योगीकरण की नींव रखी। भारतीय बाजारों को इंग्लैण्ड मे बने निर्मित उत्पादों से पाट दिया। गुलामी के दिनो मे अंग्रेजो ने भारत के विकास के लिए कारगर प्रयास नहीं किए। भारत समृद्धि से गरीब देश में परिवर्तित हो गया। कृषि और उद्योगो के क्षेत्र में भारत बहुत पिछड गया। अंग्रेजो की प्राकृतिक और मानव संपदा के शोषण की प्रवृत्ति सीमा लाघ गई। अन्ततः भारतीयों ने अंग्रेजों को देश से उखाड फेंकने की सोची। असख्य बलिदानों की कीमत पर भारत को 1947 मे स्वतंत्रता मिली।

पिछडी अर्थव्यवस्था भारत को विरासत मे मिली। अब राजनीतिक बागडोर भारतीयों के हाथों में थी। गुलामी के दिनो मे बिगडी अर्थव्यवस्था की दशा सुधारने वास्ते पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा विकास का मार्ग चुना। भारत की अर्थव्यवस्था पर देश विभाजन का विपरीत प्रभाव पडा। प्रमुख उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान मे चले गए। भारत की आजादी के पचास साल बीत चुके हैं। भारत विश्व मे शाति का पक्षधर रहा है। भारत की प्रगति कुछ देशो को नही सुहाती। स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान ने भारत पर 1947, 1965 और 1971 मे तीन बडे युद्ध थोपे। अनेक बार भारत को आन्तरिक

रूप से कमजोर करने का प्रयास किया। वर्ष 1962 मे चीन ने भारत पर आक्रमण किया।

स्वतत्रता के पचास वर्षों मे भारत को चार बडे युद्ध और कारगिल मे सीमित युद्ध का सामना करना पडा। युद्धो से भारत की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पडना स्वाभाविक था। भारत विकासशील देश है। यद्यपि युद्धो मे शत्रु देश को मात खानी पडी। किन्तु भारत को विकास के ससाधन युद्धो में झोकने पडे। भारत को रक्षा खर्च मे बढोतरी करनी पडी। भारत वर्तमान (1999) में नियोजन काल के अडतालीस वर्ष पूरे कर चुका है। इस दौरान आठ पचवर्षीय योजनाएं तथा छह वार्षिक योजनाए सम्पन्न हो चुकी। नौवीं पचवर्षीय योजना के भी चार वित्त वर्ष बीत चुके। तृतीय पचवर्षीय योजना (1961-66) मे दो बडे युद्धों के कारण वित्तीय संसाधनों के अभाव की समस्या थी। नतीजतन चतुर्थ पचवर्षीय योजना से पूर्व 1966-69 तीन वार्षिक योजनाए क्रियान्वित की गईं।

नब्बे के दशक मे विश्व आर्थिक सक्रमण के दौर से गुजरा। भारत ने विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करने वास्ते 1991-92 में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत की। उदारीकरण के प्रारम्भिक पाच वर्षों मे भारत की अर्थव्यवस्था मे संरचना सम्बन्धी मूलभूत परिवर्तन किए गए। वर्ष 1996-97 से 1999-2000 तक भारत में राजनीतिक अस्थिरता का दौर रहा। बार-बार केन्द्र मे सरकारें बदली। किन्तु केन्द्र मे सत्तारूढ सभी सरकारो ने न्यूनाधिक आर्थिक सुधारों को गति दी।

वित्त वर्ष 1999-2000 की शुरुआत अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी नहीं रही। अर्थव्यवस्था पहले से ही मदी की चपेट मे थी। वर्ष 1998-99 की आर्थिक समीक्षा मे महत्वपूर्ण विकास शीर्षों मे गिरावट थी। चालू वित्त वर्ष (1999-2000) की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) मे केन्द्र में काम चलाऊ सरकार थी। भारत को कारगिल मे पाकिस्तान के साथ घुसपैठियों को खदडने के कारण युद्ध करना पडा। इन सब घटनाक्रमो के चलते अर्थव्यवस्था के अच्छे प्रदर्शन की सभावना दृष्टिगोचर नहीं हुयी। राजनीतिक अनिश्चितता और कारगिल समस्या के चलते विदेशी पूजी निवेश की गति धीमी पड गयी थी। निर्यात के मोर्चे पर भी सफलता कम मिली। कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था सकट की चपेट मे थी। अनेक आर्थिक घटक अर्थव्यवस्था की दिशाहीनता को दर्शाते हैं।

जनसंख्या : पचास वर्षों की प्रगति का बडा भाग तेज गति से बढ रही जनसख्या हडप कर गई। जनसख्या 1950-51 मे केवल 361 1 मिलियन

थी जो बढकर 1995-96 मे 934 2 मिलियन हो गई। जनसख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1981-91 के बीच 2.14 प्रतिशत रही। यदि जनसख्या वृद्धि दर यही बनी रही तो भारत अगले कुछ दशको मे जनसख्या के आकार मे चीन को पीछे छोड देगा। जनसख्या के तेजी से बढने से जनसख्या घनत्व 274 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तक जा पहुचा। देश मे हर जगह भीड-भाड नजर आती है। सबसे दुखद पहलू यह है कि देश के 47 8 प्रतिशत लोग पढ लिख नहीं सकते। महिलाओ मे निरक्षरता चौंकाने वाली है। गौरतलब है महिलाओ मे निरक्षरता 60 7 प्रतिशत है। लोगों मे गुणात्मकता का अभाव देश के विकास में बाधक सिद्ध हो रहा है। आर्थिक विकास के क्षेत्र मे भारत एशियाई देशो से भी पिछडा हुआ है। मानव संसाधन विकास के क्षेत्र मे भी भारत की स्थिति दयनीय है। वर्ष 1997 मे प्रति हजार शिशु मृत्यु दर 71, मृत्यु दर 8 9 तथा जन्म दर 27 2 थी। भारतीयों की औसत आयु 60 3 वर्ष है। जनसख्या की बहुलता तथा मानव संसाधन की दयनीय स्थिति से देश के सामने अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं।

बेरोजगारी : जनसख्या के तीव्रता से बढने से बेरोजगारी की समस्या उभरी। आज देश मे लोगो को रोजगार के पर्याप्त अवसर मुहैया नहीं हैं। बेरोजगारी से अपराध प्रवृत्ति को बढावा मिला। जनजीवन असुरक्षित और कष्टप्रद हो गया है। गावो मे बेरोजगारी की समस्या अधिक जटिल है। कृषि क्षेत्र में आवश्यकता से अधिक व्यक्ति काम पर लगे हुए हैं। नियोजन काल मे ग्रामीण औद्योगीकरण को बढावा नहीं मिलने से रोजगार के अवसर सृजित नहीं हो सके। शहरो मे उद्योग धन्धो के बन्द पडे होने के कारण श्रमिक बेकार बैठे हैं। बेरोजगारो के लिए रोजी-रोटी जुटाना मुश्किल काम हो गया है। वे परिवार पर भार बने हुए हैं। शिक्षितो मे बेरोजगारी के कारण उनकी बौद्धिक क्षमता का उपयोग राष्ट्र के विकास मे नहीं हो पाता है। गरीबो को काम नहीं मिलने से उनमे भिक्षा प्रवृत्ति बडी है। भिखारियो की सख्या तेजी से बढ रही है। हर जगह लोगो को भीख मांगते देखा जा सकता है। गरीब माता-पिता अपने बच्चो को स्कूल भेजने के स्थान पर कमाई के लालच मे कामकाज पर भेज देते हैं महिलाएँ जो मजदूरी पर जाती हैं अनेक के साथ शोषण की घटनाए होती है उनको पुरुषो की तुलना मे कम मजदूरी दी जाती है। भारत मे बेरोजगारी के आकडे चौंकाने वाले हैं। दिसम्बर 1997 मे रोजगार कार्यालयो मे रोजगार चाहने वालो की सख्या 380 लाख थी। बेरोजगारो की संख्या नौवीं योजना मे 590 लाख तक पहुचने की सभावना है। बेरोजगारो मे प्रतिवर्ष 118 लाख की वृद्धि हो रही है।

गरीबी : बहुतेरे लोगों के हाथो मे काम नहीं है। लोगो के पास आय

के स्रोत नहीं हो पाने के कारण गरीबो की सख्या तेजी से बढ रही है। गरीबो की बढती सख्या के बीच सरकार की गरीबी उन्मूलन और रोजगार परख योजनाए कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही हैं। गरीबो को भरपेट रोटी नहीं मिल पाती है। अनेक गरीब भूखे सोते हैं। रुपयो-पैसे के अभाव मे बीमारी का इलाज नहीं करा पाते। थोडी बहुत जमा राशि होती है उसे रूढिवादिता मे खर्च कर देते हैं। गरीबी मे लोग तडपते दम तोड देते हैं। आज गरीबी व्यक्ति का सबसे बडा शत्रु है। गरीब व्यक्ति का हर तरह से मरना है। गरीब परिवार मे जन्म लेने वाला बच्चा भी सामान्यतया गरीब ही रहता है। वह पढ लिख नहीं पाने के कारण पैरों पर खडा नहीं हो पाता। वह या तो भीख मागेगा या फिर इधर-उधर मजदूरी करके जीवन बसर करेगा। भूखे पेट रहकर मजूदरी से अर्जित आय भी गरीब दुर्व्यसनो पर खर्च कर देते हैं। गरीबी का ऐसा ताण्डव नृत्य सामान्यतया दृष्टिगोचर होता है। केन्द्र सरकार ने नियोजन काल के प्रारम्भिक वर्षों से ही गरीबी उन्मूलन के खूब प्रयास किए और आज भी गरीबो के लिए रोजगार कार्यक्रमों की घोषणा की जाती है। किन्तु विडम्बना है कि न तो देश मे गरीबो की सख्या कम हुई और न ही गरीबो की बिगडी दशा सुधर सकी। गरीबों की दुर्दशा विकास योजनाओ पर प्रश्न चिन्ह है। वर्ष 1993-94 मे 320 मिलियन लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहे थे जो कुल जनसख्या का 36 प्रतिशत था। ग्रामीण क्षेत्र मे 244 मिलियन तथा शहरी क्षेत्र मे 76 मिलियन गरीब थे। वर्ष 1996-97 मे सम्पूर्ण देश में 29 2 प्रतिशत लोग गरीबी मे जीवन जीने के लिए अभिशप्त थे। गरीबी ग्रामीण क्षेत्र मे 30 5 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र मे 25 6 प्रतिशत थी।

देश मे गरीबो की बहुतायत है। विगत वर्षों मे भारतीयो की प्रति व्यक्ति आय बढी है। किन्तु अभी भी अन्य देशो की तुलना मे बहुत कम है। भारत मे लोगों की आय कम होने के कारण जीवन स्तर अच्छा नहीं है। बहुत कम लोग सतुलित आहार पाते हैं। अनेक लोग आय पर्याप्त होने के बावजूद आहार पर कम खर्च करते हैं। औसत भारतीय को जीवन के लिए आवश्यक कैलोरीज युक्त भोजन नहीं मिल पाता है। वर्ष 1997-98 मे उपभोग के कुछ महत्त्वपूर्ण पदार्थो की प्रति व्यक्ति उपलब्धता इस प्रकार थी - खाद्य तेल 7 6 किलोग्राम, वनस्पति 1 किलोग्राम, चीनी 14 5 किलोग्राम, कपडा 30 9 मीटर, चाय 636 ग्राम, काफी 58 ग्राम। उपभोग की वस्तुओ की प्रति व्यक्ति निम्न उपलब्धता सुखी जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है।

महगाई : बढती महगाई का आम लोगो पर बुरा प्रभाव पडा है। गरीबो की तो महगाई ने कमर तोड दी। कैलोरीजयुक्त भोजन कम होने का

कारन मंहगाई भी है। बढती मंहगाई का कारन काला बाजारी, कृषि की मानसून पर निर्भरता, उत्पादन का अभाव, अधिक मांग आदि है। तथाकथित कारनों से 1998 में प्याज की कीमतें इतनी बढी कि आम लोगों की पहुंच से प्याज दूर चला गया। देश में कालाबाजारी के कारन आम उपभोग की वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति की दर (पाइंट-टू-पाइंट) 1993-94 में 10.8 प्रतिशत, 1994-95 में 10.4 प्रतिशत तथा 1996-97 में 5.3 प्रतिशत थी। वर्ष 1998-99 में मुद्रास्फीति नियंत्रन में रही। 30 जनवरी 1999 को मुद्रास्फीति की दर 4.6 प्रतिशत थी। जून 1999 में मुद्रास्फीति 3 प्रतिशत के आस-पास थी जो केन्द्र सरकार के लिए सन्तोष की बात थी। किन्तु उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति अधिक बनी हुई है। औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य आधारित मुद्रास्फीति 1997-98 में 8.3 प्रतिशत तथा दिसम्बर 1998 में 15.3 प्रतिशत थी।

राजकोषीय घाटा बढती मुद्रास्फीति क कारन रहा है। केन्द्र सरकार को राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने में अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। राजस्व घाटे के बढने से राजकोषीय घाटा बढा है। सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश से प्राप्त राशि का उपयोग कर लेने के बाद भी राजकोषीय घाटे में कमी नहीं आ सकी। वित्त वर्ष 1999-2000 में कारगिल में पाक घुसपैठियों को खदेडने में भारी राशि खर्च करनी पडी परिनामस्वरुप राजकोषीय घाटा बढा। राजकोषीय घाटा 1990-91 में 44,632 करोड रुपए था जो बढकर 1996-97 में 66,733 करोड रुपए तथा 1999-2000 में और बढकर 79,955 करोड रुपए (बजट अनुमान) था। गौरतलब है कि 1998-99 में राजकोषीय घाटा 1,03,737 करोड रुपए (संशोधित अनुमान) तक जा पहुंचा, जो आर्थिक उदारीकरन लागू होने के बाद सर्वाधिक था। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रुप में राजकोषीय घाटा कम हुआ है। राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 1990-91 में 7.7 प्रतिशत था जो घटकर 1996-97 में 4.7 प्रतिशत रह गया। यह फिर बढकर 1997-98 में 5.5 प्रतिशत (संशोधित अनुमान) तथा 1998-99 में 5.1 प्रतिशत (बजट अनुमान) तक पहुंच गया।

व्यापार घाटा : स्वतन्त्रोत्तर एक-दो वर्षों को छोडकर शेष सभी वर्षों में व्यापार शेष प्रतिकूल रहा। व्यापार घाटे के बढने से अर्थव्यवस्था में मजबूती नहीं आ सकी। इसके अलावा भुगतान के मोर्चे पर भी स्थिति बिगडी। रुपए के भारी अवमूल्यन के बावजूद भी निर्यात वृद्धि में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। निर्यात संवर्द्धन का अभाव और उत्पादों का प्रतिस्पर्द्धी नहीं होना व्यापार घाटे का प्रमुख कारन माने जा सकते हैं। व्यापार घाटा

1950-51 मे केवल 4 मिलियन डॉलर था जो बढकर 1997-98 में 6,799 मिलियन डॉलर (प्राविजनल) हो गया जो नब्बे के दशक का सर्वाधिक व्यापार घाटा था। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में व्यापार घाटा तेजी से बढकर 7,296 मिलियन डॉलर जा पहुचा। निर्यातो के नहीं बढने से व्यापार घाटे की स्थिति विषम हुई। निर्यात वृद्धि डॉलर मे 1997-98 में केवल 1.5 प्रतिशत (प्राविजनल) तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 मे ऋणात्मक 2.9 प्रतिशत (प्राविजनल) थी।

विदेशी ऋण : सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र मे विकास के गति नहीं पकडने के कारण अर्थव्यवस्था की विदेशी ऋण पर निर्भरता बढती गई। बीते वर्षों मे विदेशी ऋण में भारी वृद्धि हुई। नतीजतन विदेशी ऋण के मूल और ब्याज अदायगी की समस्या मुखर हो गई है। स्थिति इतनी बिगड गई कि अनेक बार ऋण चुकाने के लिए ऋण लेना पडा। भारत का कुल विदेशी ऋण मार्च 1991 में 83,801 मिलियन डॉलर था जो बढकर मार्च 1998 मे 93,908 मिलियन डॉलर तथा सितम्बर 1998 मे और बढकर 95,195 मिलियन डॉलर का (प्राविजनल) हो गया। भारत दुनिया का बडा ऋणी देश है। ऋण और ब्याज का भारी बोझ है। बढते विदेशी ऋण की समस्या से निपटने के लिए भारत को आन्तरिक ससाधनो से विकास का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। इसके अलावा निर्यात वृद्धि वास्ते प्रभावोत्पादक कदम उठाने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर भारत की अर्थव्यवस्था की स्थिति अच्छी नहीं है। लम्बे नियोजन और आर्थिक उदारीकरण के काल के बावजूद भारत विकास के मामले मे अनेक एशियाई देशो से भी पीछे है। खाद्यान्न उत्पादन मे आत्मनिर्भरता का ढिढोरा पीटा गया। किन्तु कृषि अर्थव्यवस्था को अपेक्षित मजबूती नहीं दे सकी। जनसख्या का बडा भाग गरीबी की रेखा से नीचे है तथा बहुत से लोग भूखे पेट रात बिताते हैं। गाव और गरीबो की बिगडी दशा अर्थव्यवस्था की दिशाविहीनता को दर्शाते हैं। अर्थव्यवस्था को सही दिशा देने के लिए कृषि अर्थव्यवस्था मे सुधार की महत्ती आवश्यकता है। आर्थिक उदारीकरण मे ग्रामीण परिवेश उपेक्षित रहा है। भारत की खुशहाली आज कृषि विकास मे निहित है। आर्थिक विकास के लिए कृषिगत क्षेत्र मे पूजी निवेश बढाने की आवश्यकता है। गावों मे कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना से लोगो के लिए रोजगार के अवसर मुहैया होंगे जिससे गरीबी की समस्या से निपटने में मदद मिलेगी।

6

विदेशी सहायता और संभावित खतरे

विश्व के प्रायः सभी देश विदेशी पूंजी निवेश से विकास की ओर अग्रसर हुए हैं। आज के सर्वाधिक विकसित कहे जाने वाले देशों को किसी न किसी सीमा तक विदेशी पूंजी निवेश पर निर्भर रहना पड़ा है। अमरीका ने उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप से पूंजी प्राप्त की। दो शताब्दी पूर्व इंग्लैण्ड ने हालैण्ड से विदेशी सहायता प्राप्त की। अमरीका ने सोवियत संघ के आर्थिक विकास में मदद की। विघटन के बाद रूस आर्थिक सहायता के लिए अमरीका तथा अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं की ओर मुखातिब हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध में-आर्थिक रूप से जर्जर हो चुके जापान व जर्मनी को अमरीका, ब्रिटेन व रूस ने सम्बल प्रदान किया। विदेशी सहायता का महत्त्व इसके विवेकपूर्ण उपयोग में निहित है। इन सभी देशों ने प्राप्त विदेशी सहायता का उपयोग सर्वांगीण विकास के लिए किया और आज ये सर्वाधिक विकसित देशों की श्रेणी में है। भारत सरीखे विकासशील देश आर्थिक विकास के लिए बड़ी सीमा तक विदेशी पूंजी निवेश पर निर्भर है। किन्तु विदेशी पूंजी के कारगर उपयोग के अभाव में विकासशील देशों की आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।

भारत अतीत में सम्पन्न देश था। गुलामी के दिनों में अंग्रेजों की विद्वेषपूर्ण नीति के कारण भारत पिछड़े देश के रूप में परिवर्तित हो गया। स्वातन्त्र्योत्तर देश में वित्तीय संसाधनों का अभाव था। ढेरों आर्थिक समस्याएं विरासत में मिली थीं। *अतः नियोजित विकास के* प्रारम्भिक वर्षों में भारत को अधिक विदेशी सहायता की आवश्यकता थी। भारत को विदेशी सहायता से आर्थिक पिछड़ेपन से उभरने में मदद मिली। बाद के वर्षों में भारत विदेशी सहायता का विवेकपूर्ण उपयोग करने में सफल नहीं हो सका। विदेशी सहायता का पूरा उपयोग नहीं होने से भारत बढ़ते विदेशी ऋण की समस्या

से ग्रसित हो गया। आज भारत आर्थिक विकास के लिए, विदेशी ऋणों और उस पर ब्याज के भुगतान के लिए तथा बढते आयातों से उत्पन्न स्थिति का मुकाबला करने के लिए विदेशी पूजी निवेश और विदेशी सहायता पर निर्भर है।

विदेशी सहायता : विदेशी सहायता विदेशी पूंजी निवेश का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। भारत की अर्थव्यवस्था के विकासशील होने के कारण विदेशी सहायता की महती आवश्यकता रही है। नियोजनकाल तथा आर्थिक उदारीकरण के दौर में केन्द्र सरकार की उदार नीति के कारण विदशी सहायता में वृद्धि हुई।

नियोजनकाल में प्राप्त कुल विदेशी सहायता
(वर्ष 1951-52 से 1997-98 तक)

(करोड रुपए)

पचवर्षीय योजनाएं	योजना परिव्यय	प्राप्त कुल विदेशी सहायता	प्राप्त कुल विदेशी सहायता का योजना परिव्यय में भाग
चतुर्थ योजना के अन्त तक (1951-52 से 1973-74)	37612 7	11922 1	31.7
पाचवी योजना (1974-79)	39426 20	7259.3	18 4
वार्षिक योजना (1979-80)	12176 50	1353.1	11.1
छठी योजना (1980-85)	109291 70	10903.9	9.9
सातवीं योजना (1985-90)	218729 62	22699 8	10.4
वार्षिक योजना (1990-91)	58369 30	6704 3	11.5
(1991-92)	64751 20	11615 0	17 9
आठवीं योजना (1992-97)	434100.00 (अनुमानित)	56644 0	13 0
वित्त वर्ष 1997-98	139625.90 (स अ)	11744 7	8 4
कुल योग (1951-52 से 1997-98 तक)	1114083.1	140846 2	12.6

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे*, 1992-93 तथा 1998-99 से सकलित।

भारत ने पचवर्षीय योजनाओं में विदेशी सहायता का खूब उपयोग किया। भारत ने 1951-52 से लेकर 1997-98 तक 1,40,846 करोड रुपए की कुल विदेशी सहायता प्राप्त की। नियोजन काल के प्रारम्भिक वर्षो में

योजना परिव्यय का बडा भाग विदेशी सहायता के रूप मे प्राप्त किया गया। बाद के वर्षो मे विदेशी सहायता पर निर्भरता मे कमी हुई। चतुर्थ पचवर्षीय योजना के अन्त तक 11,922 करोड रुपए की कुल विदेशी सहायता प्राप्त की गई जो योजना परिव्ययो का 31 7 प्रतिशत था। सातवीं पचवर्षीय योजना मे 22,699 8 करोड रुपए की कुल विदेशी सहायता प्राप्त की गई जो सातवीं योजना परिव्यय 2,18,729 8 करोड रुपए का 10 4 प्रतिशत था। वर्ष 1991-92 मे विदेशी सहायता मे तीव्र वृद्धि हुई। गौरतलब है इस वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था खाडी युद्ध जनित आर्थिक सकट से ग्रसित थी। वर्ष 1991-92 मे योजना परिव्यय के 17 9 प्रतिशत कुल विदेशी सहायता प्राप्त की गई। आठवीं पचवर्षीय योजना मे प्राप्त कुल विदेशी सहायता 56,644 करोड रुपए थी जो आठवीं पचवर्षीय योजना के अनुमानित योजना परिव्यय 4,34,100 करोड रुपए के 13 प्रतिशत बैठती है। आठवीं पचवर्षीय योजना का वास्तविक योजना परिव्यय आने पर विदेशी सहायता के प्रतिशत मे थोडी कमी होगी। सयुक्त मोर्चो सरकार के कार्यकाल मे विदेशी सहायता मे कमी की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई। वर्ष 1997-98 मे 11,744.7 करोड रुपए की कुल विदेशी सहायता प्राप्त की गई जो इस वर्ष के सशोधित योजना परिव्यय 1,39,625 9 करोड रुपए का 8 4 प्रतिशत है। कुल मिलाकर विभिन्न पचवर्षीय योजनाओ मे योजना परिव्यय का बडा भाग विदेशी सहायता के रूप मे प्राप्त किया गया।

आर्थिक उदारीकरण और विदेशी सहायता : भारत मे आर्थिक उदारीकरण के दस वर्ष बीत चुके हैं। आर्थिक उदारीकरण मे भारत की अर्थव्यवस्था की विदेशी सहायता पर निर्भरता बनी हुई है। प्राप्त होने वाली विदेशी सहायता मे अनुदान का प्रतिशत बहुत कम है। विदेशी सहायता मे ऋणो का भाग अधिक होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था ब्याज के बोझ तले दबी हुई है। इसके अलावा कुल अधिकृत विदेशी सहायता और कुल प्रयुक्त विदेशी सहायता मे भारी अतराल है। विदेशी सहायता का पूरा उपयोग नहीं हो पाने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था विकास की तेज गति नहीं पकड सकी।

आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भिक सात वर्षो मे विदेशी सहायता की प्रवृत्ति में विशेष बदलाव नहीं आया। कुल अधिकृत विदेशी सहायता 1991-92 मे 12,707 6 करोड रुपए थी जो बढकर 1997-98 मे 16,966 करोड रुपए हो गयी। इस प्रकार कुल अधिकृत विदेशी सहायता मे 1997-98 मे 1991-92 की तुलना मे 33 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कुल अधिकृत विदेशी सहायता मे तो वृद्धि हुई किन्तु कुल प्रयुक्त विदेशी सहायता मे वृद्धि लगभग नगण्य रही। कुल

भारत सहायता क्लब (Consortium Members) - विश्व बैंक ने भारत को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 1958 में भारत सहायता क्लब की स्थापना की। विश्व के विकसित देश तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं भारत सहायता क्लब के सदस्य हैं। भारत सहायता क्लब के सदस्यों में आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, नीदरलैण्ड्स, स्वीडन, ब्रिटेन, अमरीका, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ, आई. एम. एफ., ट्रस्ट फण्ड आदि हैं। भारत सहायता क्लब से भारत को प्रयुक्त कुल विदेशी सहायता 1980-81 में 1,999 करोड़ रुपए, 1990-91 में 5,796.5 करोड़ रुपए, 1995-96 में 8,904 करोड़ रुपए तथा 1997-98 में 9,208 करोड़ रुपए थी।

रूस और पूर्वी यूरोपीय देशों से भारत को प्रयुक्त कुल विदेशी सहायता 1980-81 में 32.9 करोड़ रुपए, 1990-91 में 312.8 करोड़ रुपए तथा 1992-93 में 34.8 करोड़ रुपए थी। वर्ष 1993-94 के बाद से भारत को रूस संघ और पूर्वी यूरोपीयन देशों से विदेशी सहायता प्राप्त नहीं हुई। अन्य स्रोत से प्रयुक्त कुल विदेशी सहायता 1980-81 में 129.9 करोड़ रुपए, 1990-91 में 595 करोड़ रुपए तथा 1997-98 में 2,536.6 करोड़ रुपए थी। अन्य स्रोतों में भारत को प्रयुक्त कुल विदेशी सहायता सर्वाधिक एशियाई विकास बैंक और यूरोपीयन आर्थिक समुदाय से प्राप्त होती है। वर्ष 1997-98 में इस दोनों संस्थाओं से क्रमशः 2,230 करोड़ रुपए तथा 227.5 करोड़ रुपए की कुल विदेशी सहायता प्रयुक्त हुई।

विदेशी सहायता के खतरे

विदेशी सहायता से विश्व के देशों को आर्थिक विकास में मदद मिली है। किन्तु विदेशी सहायता के अनेक खतरे भी हैं। विदेशी पूंजी का उपयोग एक सीमा तक ही राष्ट्र के हित में होता है। अधिक विदेशी सहायता से अर्थव्यवस्था के संकटग्रस्त होने की संभावना रहती है। नब्बे के दशक में दक्षिण पूर्व एशियाई देश "एशियन टाइगर्स" के रूप में उभरे किन्तु इन देशों में अधिक विदेशी पूंजी निवेश से अर्थव्यवस्था धराशाई हो गई। विदेशी पूंजी निवेश के बारे में वेनर के विचार सारगर्भित हैं। उनके अनुसार निरन्तर बड़े पैमाने पर विदेशी सहायता मिलने से प्राप्तकर्ता राष्ट्र का आत्मसम्मान नष्ट हो जाता है और उसमें आत्मनिर्भरता की सच्ची भावना का उदय नहीं हो पाता। विदेशी पूंजी निवेश के कुछ खतरे इस प्रकार हैं -

स्वतंत्र आर्थिक नीति को खतरा : स्वातन्त्र्योत्तर आर्थिक विकास को गति देने वास्ते भारत ने नियोजित विकास का मार्ग चुना। भारत की

मिश्रित अर्थव्यवस्था मे सार्वजनिक क्षेत्र के विकास को सर्वोपरि रखा गया। आज भारत स्वतत्रता के पाच दशक पूरे कर चुका है। पचवर्षीय योजनाओं मे विकासगत आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए विदेशी पूजी निवेश पर अधिक निर्भरता बढी। भारत में दीर्घावधि तक आत्मनिर्भरता को प्राप्त नहीं किया जा सका। विश्व के अनेक देशो से भारत ने विदेशी सहायता प्राप्त की। विदेशी सहायता से भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार की प्रवृति दृष्टिगोचर हुई। किन्तु अनेक कठिनाईयो का भी भारत को सामना करना पडा। विदेशी सहायता से भारत की अर्थव्यवस्था पर परोक्ष प्रभाव पडा। पचवर्षीय योजनाओ के लक्ष्य प्राथमिकताओ के हिसाब से बदलने पडते हैं। भारत ने विदेशी पूजी निवेश को आकर्षित करने के लिए मौद्रिक और राजकोषीय नीतियो मे परिवर्तन किया है। बजट घाटे को कम करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक का दवाव रहा है। अनेक बार केन्द्रीय बजट विदेशी पूजी निवेशको के दवाव मे आकर बनाने की बात भी कही जाती रही है। सकट की घडी मे विदेशी पूजी निवेश के कटु अनुभव रहे हैं। वर्ष 1965 व 1971 मे भारत-पाक युद्ध के दौरान अमरीका ने अचानक आर्थिक सहायता बद की जिसका भारत के आर्थिक विकास पर विपरीत प्रभाव पडा। विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करने वास्ते भारत ने 1991-92 से आर्थिक उदारीकरण की नीतियो को आत्मसात किया। विकास के क्षेत्र में पचवर्षीय योजनाओ की भूमिका घटी है। भारत ने मई 1998 मे राजस्थान के पोखरण मे परमाणु विस्फोट किए इसके परिणामस्वरूप अमरीका ने भारत के खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्धों की घोषणा की। आर्थिक प्रतिबन्धो का भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पडा है। जून 1999 मे भारत कश्मीर मे कारगिल समस्या से जूझा। भारत-पाक सीमा पर तनाव की स्थिति है। भारत ने पाक घुसपैठियों को खदडने के लिए सैनिक कार्यवाही की। भारत ने सैनिक कार्यवाही सीमा रेखा के भीतर तक सीमित रखी। हर्ष की बात है कि भारत की सीमा के भीतर सैनिक कार्यवाही का विश्व की पाच "वीटो" शक्तियो में से चार ने समर्थन किया। भारत को पाकिस्तान के नापाक इरादो को नैस्तनाबूद करने की आवश्यकता है। चाहे विदेशी पूजी निवेश के कमी की सभावना का खतरा ही क्यो न झेलना पडे।

बढता विदेशी ऋण : विदेशी सहायता ऋण और अनुदान के रूप मे प्राप्त होती है। भारत को अधिकाश विदेशी सहायता ऋणों के रूप में प्राप्त हुई। पचवर्षीय योजनाओ में विकासगत जरूरतो के लिए भारी भरकम पूजी विनियोजन की आवश्यकता थी। भारत मे बचत दर कम होने के कारण वित्तीय ससाधनो का अभाव था। परिणामस्वरूप विदेशों से भारी कर्ज लिया

की उम्मीद है तथा यह राशि 2003 तक 12 36 अरब डॉलर हो सकती है।[2]

भारत को विदेशी ऋण चुकाने के लिए कई बार विदेशो से ऋण लेना पडा है जो चिंतनीय बात है। विदेशी सहायता का पूरा उपयोग नहीं होने से भारत पर विदेशी ऋण बढा है।

कडी प्रतिस्पर्धा भारतीय उद्यमी विदेशी पूजी निवेश जनित प्रतिस्पर्धा का सामना करने की स्थिति मे नही है। भारतीय उत्पाद आधुनिकतम तकनीकी से सुसज्जित नहीं है। विदेशी पूजी निवेश सामान्यतया विकसित राष्ट्रो द्वारा किया जाता है। उनके पास आधुनिक तकनीक होती है। विदेशी उत्पाद देश की अर्थव्यवस्था पर छा जाते हैं। स्वदेशी उद्योगो का प्रतिस्पर्धा मे नहीं टिकने के कारण पतन होता है। विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य मे विदेशी पूजी निवेश को आकर्षित करने मे भी भारी प्रतिस्पर्धा है। आज विश्व के अधिकाश देश विदेशी पूजी को आकर्षित करने के लिए प्रयासरत हैं। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे प्रयासों के बावजूद भारत अधिक विदेशी पूजी आकर्षित नहीं कर सका है। राजनीतिक अस्थिरता और समसामयिक घटनाओ के कारण विदेशी पूजी निवेश मे अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई। विदेशी पूजी निवेश को एक सीमा तक जनविरोध का सामना करना पडता है। आज विदेशी पूजी निवेश राष्ट्रो के विकास की आवश्यकता है ऐसी स्थिति मे विदेशी पूजी निवेश का राजनीतिक विरोध समाचीन नहीं है।

विदेशी पूजी निवेश के खतरो को दृष्टिगत रखते हुए भारत को आत्मनिर्भरता की महती आवश्यकता है। स्वतत्रता के पाच दशक बीत जाने के बाद भी विदेशी पूजी पर आश्रितता चिताप्रद है। भारत को विदेशी पूजी के स्थान पर आन्तरिक वित्तीय संसाधनो से विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। चाहे विकास की गति थोडी धीमी हो जाए। विदेशी सहायता के मामले मे चीन से सीख ले सकते हैं। चीन ने स्वदेशी मध्यवर्ती तकनीक विकसित करके साठ के दशक मे ही विदेशी सहायता से मुक्ति पा ली। आज चीन विदेशी पूजी का निर्यातक देश है। भारत विदेशी पूजी का अनुकूलतम उपयोग भी नहीं कर सका है। विदेशी पूजी बहुत महगी होती है इससे देश के आर्थिक साधनो का शोषण भी होता है। अत विदेशी पूजी का उपयोग उत्पादन मे वृद्धि मे होना चाहिए। विदेशी पूजी की प्रासगिकता इसके उपयोग से राष्ट्र की आर्थिक सुदृढता मे निहित है। भारत की आर्थिक मजबूती से बाहरी सहायता की अदायगी आसान होगी।

सन्दर्भ

1 *मथली इकोनॉमिक रिपोर्ट*, मई 1999, एन एन एस
2 *राजस्थान पत्रिका*, 10 जून, 1999

7

भारत में जनाधिक्य की समस्या

वर्तमान में भारत जनाधिक्य की स्थिति में है। बढ़ती जनसंख्या के कारण ढेरों समस्याएं मुंहबाए खड़ी हैं। देश की आर्थिक प्रगति जनसंख्या रूपी बाढ़ में बह जाती है। डा. राधाकृष्णन के अनुसार "अनियंत्रित जनसंख्या सभी प्रकार के लाभों को सोख लेगी।" परिवार की खुशी दरिद्रता के वातावरण से नहीं निकल सकती है। आर्थिक विकास के लिए छोटे परिवार का होना अति आवश्यक है। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1985 में नई दिल्ली में आयोजित जनसंख्या और विकास के बारे में सांसद विदों के एशियाई फोरम के पहले सम्मेलन में कहा कि विकासशील देशों के लिए जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना बहुत जरूरी है ताकि विकास से मिलने वाले लाभों पर प्रतिकूल असर नहीं पड़े। विगत दशकों में भारत में जनसंख्या तीव्रता से बढ़ी। भारत की जनसंख्या 1951 में 36.1 करोड़ थी जो बढ़कर 1971 में 54.8 करोड़ तथा 1981 में और बढ़कर 68.3 करोड़ हो गई। वर्ष 1991 में भारत की जनसंख्या 84.6 करोड़ तक जा पहुंची। वर्तमान में भारत की जनसंख्या एक अरब को पार कर चुकी है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.14 थी। यदि भारत की जनसंख्या इसी गति से बढ़ती रही तो यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि आगामी कुछेक दशकों में जनसंख्या के मामले में भारत, चीन को पीछे छोड़ देगा अर्थात् भारत जनसंख्या की विकरालता की दृष्टि से विश्व का सिरमौर होगा।

भारत में जनसंख्या के तीव्रता से बढ़ने का एक प्रमुख कारण परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपेक्षित सफलता नहीं मिलना है। निरक्षरता जनाधिक्य का बड़ा कारण है। जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए शिक्षा

का विकास आवश्यक है। शैक्षिक विकास के साथ लोगों की मनोवृत्ति मे भी बदलाव जरुरी है। भारत में शैक्षित विकास विशेषकर साक्षरता वृद्धि के लिए पहले गरीबी की समस्या पर निजात पाना होगा क्योकि गरीब को "आखर ज्ञान" से पहले रोटी चाहिए। केन्द्र सरकार को सर्वाधिक ध्यान गरीबी उन्मूलन पर केन्द्रित करना चाहिए। देश मे नियोजित काल मे ढेरो गरीबी उन्मूलन की योजनाए चालू की गई, किन्तु योजनाओ के उचित क्रियान्वयन के अभाव मे गरीबी कम नहीं हो सकी। सबसे पहले सरकार को गरीबी उन्मूलन की योजनाओं को प्रासगिक बनाना होगा। गरीबों के लिए आज नई योजनाओ की आवश्यकता नहीं है। योजनाए तो बहुत घोषित की जा चुकी है। जरुरत उनके कारगर क्रियान्वयन की है। गरीबी उन्मूलन की योजनाओ के उचित क्रियान्वयन से गरीबो की सख्या कम हो सकेगी। जब गरीबो को रोजी-रोटी मिलेगी तो वह पढना लिखना भी चाहेगा, उसका जीवन स्तर भी सुधरेगा और अन्तत जनसख्या वृद्धि भी कम होगी। किन्तु खेद की बात है नियोजन के पाच दशक बाद भी 48 80 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। देश की लगभग 30 प्रतिशत जनसख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन के लिए अभिशप्त है। नतीजतन भारत मे निरक्षर, अस्वस्थ, दरिद्र लोगों की सख्या बढती जा रही है जो भारत के आर्थिक विकास का सबसे बडा ऋणात्मक पहलू है। जनाधिक्य की समस्या केवल सरकार के लिए ही चिन्ता का विषय नहीं है कि वह इसको नियत्रित करने के लिए कानून बनाए बल्कि जनता में छोटे परिवार के लिए भी चेतना का उत्पन्न होना आवश्यक है। परिवार कल्याण से गरीबी मे जीवन यापन करने वाली जनसख्या के प्रतिशत मे कमी आएगी तथा देश के आर्थिक विकास मे मदद मिलेगी।

हाल के वर्षो में भारत ने विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ अर्थव्यवस्था को समयोजित करने के वास्ते आर्थिक सरचना में मूलभूत बदलाव किया है। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया। सामाजिक विकास क्षेत्र उपेक्षित रहा। उदारीकरण जनित आर्थिक विकास का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पडा जिससे पहले से ही अपेक्षित सामाजिक विकास क्षेत्र की स्थिति और बिगड गई। गरीब और गरीब हुआ। गरीबो का स्वास्थ्य आज भी दयनीय है। देश मे निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम जारी है। साक्षरता पर भारी राशि खर्च की जा रही है। किन्तु साक्षरता की प्रगति आकडो तक सीमित है। विश्व विख्यात अर्थशास्त्री तथा हाल ही नोबेल पुरस्कार से सम्मानित डॉ अमर्त्य सेन के अर्थव्यवस्था के सबध में विचार महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार विकासशील देशों विषेषकर भारत, पाकिस्तान आदि ने अपनी अर्थव्यवस्था को अचानक खोल दिया, जिससे इन देशो के लोग विश्व प्रतिस्पर्धा में पिछड

गए। संरक्षण के वातावरण मे पनपे उद्यमियो को अत्यधिक प्रतिस्पर्धा की स्थिति मे पहुंचा दिया गया। यदि कोई देश सम्भावित तेज गति से वैश्वीकरण शुरू कर देता है और *सामाजिक अवसरो की कमी, निरक्षरता, स्वास्थ्य की* ओर ध्यान नहीं देता है तो वह स्वयं समस्याएं पैदा कर लेता है। भारत ने शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल एव भूमि सुधारो की उपेक्षा की। सरकार उद्योग के क्षेत्र मे दखल के लिए सक्रिय थी, जो कि परिणामहीन सिद्ध हुआ। वैश्वीकरण से जिन देशो मे समस्याए पैदा हुई, वे ऐसे देश है, जहा कि मानव विकास काफी कम है। भारत मे लोगो के हितो की रक्षा के लिए पश्चिम की भाति सामाजिक ढांचा खडा किया जाए। इण्डोनेशिया ने मानव विकास और वृद्धि दर की दृष्टि से अच्छा काम किया, किन्तु सामाजिक सुरक्षा ढाचे के अभाव के कारण वित्तीय सकट पैदा हुआ। चीन की आर्थिक स्थिति भारत की तुलना मे बेहतर है। चीन खाद्य वितरण, जनस्वास्थ्य की देखभाल और शिक्षा का प्रसार भारत के मुकाबले अधिक गति से कर रहा है। यही कारण है कि चीन मे जनसख्या की वार्षिक वृद्धि दर कम हुई है जबकि भारत अति जनाधिक्य की ओर बढ रहा है।

भारत मे जनाधिक्य के सबध मे मतैक्य का अभाव है। भारत की *अर्थव्यवस्था मे मुँहबाए खडी ढेरो समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए धनाधिक्य* के होने की सहज पुष्टि होती है। इसके विपरीत भारत प्राकृतिक ससाधनों की दृष्टि से एक समृद्ध देश है। विगत वर्षों मे अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों मे प्रगति दृष्टिगोचर हुई है जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि भारत मे अभी जनाधिक्य नहीं है। अत भारत मे जनाधिक्य सबंधी विचारो को दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है। पहले भाग मे भारत के जनाधिक्य होने तथा दूसरे भाग मे जनाधिक्य नहीं होने सबंधी विचारो को सम्मिलित कर सकते है। भारत मे धनाधिक्य सबंधी विचार इस प्रकार हैं ·

बेरोजगारी : भारत मे बेरोजगारी सुरसा के मुह के तरह बढती जा रही है। स्वतत्रता के पचास वर्षो और पचवर्षीय योजनाओ मे भारी विनियोजन के बावजूद बेरोजगारी की समस्या से निजात नहीं मिला है। बढती बेरोजगारी का कारण जनाधिक्य की स्थिति है। देश मे जिस गति से जनसंख्या बढ रही है उस गति से रोजगार के अवसर सृजित नहीं हो रहे हैं। वर्तमान में बेरोजगारो के आंकडे चौका देने वाले हैं। रोजगार कार्यालयो के चालू रजिस्टरो मे दर्ज व्यक्तियों की संख्या कुछ सीमा तक बेरोजगारो की प्रवृत्ति की जानकारी देते हैं। रोजगार कार्यालय मुख्यत शहरी क्षेत्रो मे होते है। इन कार्यालयो मे सभी बेरोजगार अपने नाम पजीकृत नहीं करवाते हैं। इसके अलावा, पहले से रोजगार मे लगे कुछ व्यक्ति भी बेहतर रोजगार पाने के उद्देश्य से अपने नाम इन कार्यालयों मे पंजीकृत करवाते हैं। रोजगार

कार्यालयो मे रोजगार के इच्छुक व्यक्तियो के दर्ज नामो की सख्या 31 दिसम्बर, 1981 तक 178.36 लाख थी जो 31 दिसम्बर 1992 तक बढकर 368 लाख हो गई। वर्तमान (1998) मे रोजगार कार्यालयो मे बेरोजगारो की सख्या 450 लाख से भी अधिक है।

गरीबी भारत मे गरीबी की समस्या भयावह है। पचवर्षीय योजनाओ मे गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो पर भारी भरकम राशि खर्च कर दी गई, किन्तु लाभ 'अपेक्षी' तक नहीं पहुच पाने के कारण गरीबी की समस्या कम नहीं हो सकी। देश मे चहुओर गरीबी का ताण्डव आज भी मोजूद है। बढती झुग्गी झोपडिया बढती गरीबी की दर्दनाक स्थिति को दर्शाती हैं। देश मे कानून बने होने के बावजूद बाल श्रमिको की समस्या कम नहीं हो सकी। देश मे चहुओर भिखारी देखे जा सकते हैं। गरीबी की समस्या गावो मे विषम है। शहरो मे तो जैसे-तैसे छोटे-मोटे रोजगार के अवसर लोगों को मुहैया हो जाते हैं। गावो मे रोजगार के अवसरो का अभाव है। गावो की बहुसख्यक जनसख्या कृषि कार्य मे लगी हुई है। कृषि क्षेत्र में पहले से ही अदिछिन्न बेरोजगारी की समस्या व्याप्त है। कृषि का बडा क्षेत्र सिचाई सुविधाओ के अभाव के कारण मानसून का जुआ बना हुआ है। जहा पर्याप्त वर्षा होती है। वहा अतिवृष्टि तथा बेमौसम बरसात के कारण बहुत नुकसान होता है। देश के समूचे परिवेश मे गरीबी दृष्टिगोचर होती है। वर्ष 1996-97 मे देश की कुल जनसख्या का 29.18 प्रतिशत भाग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने के लिए अभिशप्त था। गावो मे शहरो की तुलना मे गरीबी अधिक है। ग्रामीण परिवेश मे गरीबी 30.55 प्रतिशत तथा शहरों मे गरीबी 25.58 प्रतिशत थी। बीसवीं शताब्दी के अत तक देश मे गरीबी की समस्या मुखर बनी रहेगी।

खाद्यान्न अभाव भारत गावो का देश है। अधिकाश जनसख्या गावो मे जीवन बसर करती है। 1991 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण जनसख्या का भाग 74 प्रतिशत था। कृषि प्रधान देश होने के बावजूद भारत लम्बे समय तक खाद्यान्न के मामले मे आत्मनिर्भर नहीं हो सका। वर्तमान में खाद्यान्न आत्मनिर्भरता का ढिढोरा पीटा जा रहा है। हाल के वर्षो मे खाद्यान्न उत्पादन मे अवश्य वृद्धि हुई है। इसका श्रेय बडी सीमा तक अनुकूल मानसून को जाता है। खाद्यान्न उत्पादन मे उच्चावचन की प्रवृत्ति व्याप्त है। देश के करीब 30 प्रतिशत लोगों के गरीबी रेखा से ऊपर उठने पर अतिरिक्त खाद्यान्न की आवश्यकता होगी। भारत मे खाद्यान्न उत्पादन की तुलना मे जनसख्या वृद्धि दर अधिक है। परिणामस्वरुप विगत वर्षो मे खाद्यान्न का आयात करना पडा है। वर्ष 1974-75 मे खाद्यान्न सकट था। वर्ष 1979-80 मे अकाल के कारण खाद्यान्न कीमतो मे भारी वृद्धि हुई। भारत ने 1993-94 मे 290 करोड रुपए, 1994-95 मे 92 करोड रुपए तथा 1995-96 मे 80 करोड रुपए का खाद्यान्न

और खाद्यान्न उत्पादन का आयात किया।

जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि : भारत मे तीव्र जनसख्या वृद्धि दर के कारण जनसख्या घनत्व मे भारी वृद्धि हुई है। भारत का जनसख्या घनत्व विश्व के देशों से तुलनात्मक रूप से अधिक है। भारत का जनसख्या घनत्व 1951 मे केवल 113 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जो बढकर 1981 मे 230 तथा 1991 मे 273 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। बढता हुआ घनत्व जनाधिक्य का परिचायक है। भारत मे जनसख्या की वार्षिक वृद्धि दर 2.14 प्रतिशत है। यहा हर डेढ सैकेण्ड मे एक बच्चा जन्म लेता है। एक मिनिट मे 40 बच्चे तथा एक घण्टे मे 2,400 बच्चे जन्म लेते हैं। एक दिन और एक रात मे 57,600 बच्चे जन्म लेते हैं। देश की जनसख्या मे हर महीने 17.3 लाख बच्चे बढ जाते है। वर्ष 1981-91 के दौरान भारत की जनसख्या मे 16.3 करोड की वृद्धि हुई। यह आस्ट्रेलिया की जनसख्या का दस गुना और जापान की जनसख्या से अधिक है।

भारत मे जन्म व मृत्यु दर विश्व मे तुलनात्मक रूप से अधिक है। भारत मे 1994 मे जन्म दर 28.7 प्रति हजार, मृत्यु दर 9.3 प्रति हजार तथा शिशु मृत्यु दर 74 प्रति हजार थी। वर्णित विवरण से भारत मे जनाधिक्य होने की पुष्टि होती है। जनाधिक्य की समस्या से निपटने के लिए भारत ने परिवार नियोजन को सरकारी स्तर पर अपनाया। गौरतलब है भारत सरकारी स्तर पर परिवार नियोजन को अपनाने वाला विश्व का पहला देश है।

भारत में जनाधिक्य नहीं है

अतीत मे भारत "सोने की चिड़िया" था। देश मे चहुंओर समृद्धि थी। विश्व के देशो की भारत की समृद्धि पर लालचभरी दृष्टि पडी। भारत को आर्थिक और राजनीतिक रूप से गुलाम बनाया गया। गुलामी के दिनो मे विदेशियो ने भारत का मनमाफिक दोहन किया और भारत को गरीब देश बनाकर छोडा। वर्ष 1947 मे भारत को स्वतत्रता मिली। भारतीयो ने विरासत मे मिली बिगडी अर्थव्यवस्था की दशा सुधारने के लिए पचवर्षीय योजनाओ के माध्यम से विकास की व्यूहरचना तैयार की। भारत स्वतत्रता के पाच दशक पूरे कर चुका है। हमने हाल ही स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाठ उल्लास से मनाई।

बीते पचास वर्षो मे आठ पचवर्षीय योजनाए तथा छह एक वर्षीय योजनाए सम्पन्न हुईं। वर्तमान मे नौवीं पचवर्षीय योजना का कार्यकाल (अप्रैल 1997 से मार्च 2002) है। यद्यपि राजनीतिक बदलाव के कारण नौवीं पचवर्षीय योजना नियत समय पर मूर्त रूप नहीं ले सकी। नियोजित विकास के पाच दशको मे भारत ने अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रो मे महत्त्वपूर्ण प्रगति

की। विश्व मे हाल के वर्षो मे घटित ताजातरीन घटनाक्रमो को दृष्टिगत रखते हुए भारत की उपलब्धि आर्थिक सकट उत्पन्न नहीं होना माना जा सकता है। विदित है पिछले कुछ वर्षो मे एशिया मे उपजे 'एशियन टाइगर्स' देशो की आर्थिक दशा हाल के वर्षों (1997-98) में बिगडी दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशो ने अर्थव्यवस्था का तीव्र गति से वैश्वीकरण किया। इन देशो ने भारी विदेशी पूजी निवेश को आमत्रित किया तथा मुद्रा को पूजी खाते मे पूर्ण परिवर्तनीय घोषित किया नतीजतन दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशो को घोर आर्थिक सकट का सामना करना पडा। इण्डोनेशिया मे मुद्रास्फीति तीव्रता से बढी, वहा की सरकार बिगडी अर्थव्यवस्था के कारण बदल गई। विश्व की आर्थिक ताकत जापान की मुद्रा येन का भारी अवमूल्यन हुआ। रूस को रुबल सकट का सामना करना पडा। भारत में दक्षिण पूर्व एशियाई देशो के जैसा आर्थिक सकट उत्पन्न नहीं हुआ, यद्यपि रुपए का अवमूल्यन अवश्य हुआ है किन्तु भारतीय रुपए मे स्थायित्व की प्रवृत्ति बनी हुई है। मुद्रास्फीति भी इकाई अक तक सीमित है, किन्तु 1998 मे प्याज की बढती कीमतो के कारण समूचे देश मे बावेला मचा हुआ था। प्याज की बढी हुई कीमतो का कारण इसकी पैदावार कम होना तथा प्याज के निर्यात को खुली छूट देना था।

खाद्यान्न उत्पादन लगभग एक अरब जनसख्या के लिए खाद्यान्न मुहैया कराना कम महत्वपूर्ण उपलब्धि नहीं है। आज ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता कि खाद्यान्न के अभाव मे किसी की मृत्यु हो। देश मे 30 प्रतिशत जनसख्या अवश्य गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर कर रही है। गरीब आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण अनिवार्यताओं की पूर्ति करने की स्थिति मे नहीं होते हैं। गरीबो की दशा सुधारने के लिए सरकार को कारगार पहल करनी ही होगी। गरीबी उन्मूलन की नीतियाँ बनाते समय सरकार को गरीबो को जॉत-पॉत के दायरे मे नहीं लपेटना चाहिए। भारत मे गरीबी सभी समुदाय के लोगो मे विद्यमान है। देश के सभी गरीबो को सरकारी सरक्षण की आवश्यकता है। सरकार की कल्याण की नीतियो का लाभ अपेक्षी तक नहीं पहुचा। राजकीय सहायता का लाभ चद जातियाँ ही बटोर ले गई। देश मे जो लोग सरकारी सहायता से आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध हो चुके हैं उन्हे सुविधाए समाप्त कर आर्थिक सहायता ऐसे लोगो को मुहैया कराई जाए जो समृद्धि से वचित हैं। ऐसा होने पर ही कम समय मे लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठ सकते हैं। गरीबो के उत्थान सबधी निर्णयो को राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए।

भारत ने खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र मे उपलब्धि अर्जित की है। इसका श्रेय बडी सीमा तक किसानो को जाता है। सरकार ने कृषि क्षेत्र मे

आत्मनिर्भरता के लिए कारगर पहल की। उदारीकरण के वर्षो मे डकल प्रस्तावो को स्वीकार किया। भारत ने विश्व व्यापार सगठन की सदस्यत ग्रहण की जिसके अभाव मे भारत के विश्व के देशो से अलग पड जाने क भय था। भारत मे खाद्यान्न के उत्पादन मे आत्मनिर्भरता का श्रेय हरित क्राति को जाता है। हरित क्राति और कृषि क्षेत्र मे आधुनिकतम तकनीक से देश मे खाद्यान्न उपलब्धता तो बढी, किन्तु सभी ग्रामीण जनो की आर्थिक स्थिति सुधर नहीं सकी। गावो मे घोर आर्थिक विषमता व्याप्त है। गरीबी की समस्या भी गावो मे अधिक है। गाव सामाजिक विकास की दृष्टि से भी पिछडे हुए है। आज बजट के बडे भाग का प्रावधान ग्रामीण विकास के लिए किया जाता है। ग्रामीण बजट के खर्च के समय सरकार को इसके सदुपयोग पर ध्यान रखना चाहिए। कहीं ऐसा नहीं हो कि ग्रामीणो की जागरुकता के अभाव मे बजट के भाग को भ्रष्ट अधिकारी और राजनेता हडप कर जाए। सरकार को वित्तीय ससाधन जुटाने के लिए बडे किसानो को आयकर के दायरे मे लेने के लिए विचार करना चाहिए। ग्रामीण परिवेश से एकत्रित की गई राशि को कृषि के उत्थान और ग्रामीण औद्योगीकरण पर खर्च की जानी चाहिए। इससे ग्रामीण क्षेत्रो का आर्थिक विकास होने से गरीबी की समस्या कम हो सकेगी। ग्रामीण विकास से खाद्यान्न उत्पादन मे वृद्धि होगी। भारत मे खाद्यान्न का उत्पादन 1993-94 मे 184 3 मिलियन टन था जो बढकर 1996-97 मे 191 2 मिलियन टन (प्राविजनल) हो गया। खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर 1993-94 मे 2.7 प्रतिशत तथा 1996-97 मे 3 3 प्रतिशत (प्राविजनल) थी जो भारत की वार्षिक जनसख्या वृद्धि दर 2 14 प्रतिशत से अधिक है। खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर के जनसख्या वृद्धि दर से अधिक होने के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत मे जनसख्या का माल्थस सिद्धात खरा नहीं उतरता है, किन्तु भारत मे खाद्यान्न उत्पादन मे उच्चावचन की प्रवृत्ति व्याप्त है। वर्ष 1995-96 मे खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर ऋणात्मक 3 4 प्रतिशत थी। भारत मे तीव्रता से बढती जनसख्या के लिए खाद्यान्न मुहैया कराने के लिए आवश्यक है कि कृषि क्षेत्र मे खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि के प्रभावोत्पादक प्रयास हो। देश के खाद्यान्न उत्पादन को आन्तरिक माग की पूर्ति तक नहीं सीमित नहीं रखा जाए अपितु खाद्यान्न निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जानी चाहिए।

प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि : आर्थिक विकास के लिए सरकार की नीतिगत पहल, पंचवर्षीय योजनाओ के क्रियान्वयन, वर्तमान मे आर्थिक उदारीकरण की नीतियो को आत्मसात किया जाना तथा देशवासियो की कडी मेहनत के परिणामस्वरूप सकल राष्ट्रीय उत्पाद, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि हुई। भारत जेसे जनसख्या बहुल देश मे प्रति व्यक्ति

आय का बढना महत्त्वपूर्ण बात है। क्योंकि प्रति व्यक्ति आय की गणना के लिए राष्ट्रीय आय मे जनसख्या का भाग दिया जाता है। विश्व परिप्रेक्ष्य मे प्रगति के मापदड को निर्धारित करने के लिए प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से भारत की तुलना विकसित राष्ट्रों से करना समीचीन नहीं है। चीन से इस मामले मे तुलना की जा सकती है। जनसख्या की विकरालता के बावजूद भी भारत की प्रति व्यक्ति आय निरन्तर बढ रही है। प्रति व्यक्ति आय वृद्धि दर विश्व के देशो की तुलना मे अवश्य कम है। वर्ष 1980-81 के मूल्यो पर भारत का सकल घरेलू उत्पाद 1994-95 में 252 3 हजार करोड रुपए था जो बढकर 1997-98 मे 307 हजार करोड रुपए (प्राविजनल) हो गया। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1994-95 मे 7.8 प्रतिशत तथा 1997-98 मे 5 2 प्रतिशत (प्राविजनल) थी। सकल घरेलू उत्पाद के बढने से प्रति व्यक्ति आय भी बढी। वर्ष 1980-81 के मूल्यो पर भारत की प्रति व्यक्ति आय 1,841 रुपए थी जो बढकर 1992-93 मे 2,216 रुपए हो गई। वर्तमान मूल्यो पर प्रति व्यक्ति आय 1985-86 में 2,730 रुपए थी जो बढकर 1992-93 मे 6,248 रुपए हो गई। वर्तमान मूल्यों पर राष्ट्रीय आय 1985-86 मे 2,06,133 करोड रुपए थी जो बढकर 1992-93 मे 5,44,935 करोड रुपए हो गई। बढती राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत मे जनाधिक्य की समस्या नहीं है।

प्राकृतिक संसाधनो की प्रचुरता : भारत प्राकृतिक ससाधनो की दृष्टि से विश्व का एक धनी देश है। भारत मे बिहार और राजस्थान को खनिजो का अजायबघर कहा जाता है। भारत मे धात्विक, अधात्विक तथा शक्ति उत्पादक खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। भारत मे खनिज—लोहा, मैंगनीज, टगस्टन, क्रोमाइट, ताबा, जस्ता, बाक्साइट, सोना व चादी, सीसा, लाइमस्टोन, अभ्रक, खनिज तेल, यूरेनियम, थोरियम, बेरीलियम, जिरकोनियम आदि खनिज पाए जाते हैं। भारत मे प्राकृतिक ससाधनो का विवेकपूर्ण विदोहन किया जाए तो लम्बे समय तक अधिक जनसख्या का स्तरीय भरण-पोषण किया जा सकता है। किन्तु वित्तीय ससाधनो के अभाव में उपलब्ध प्राकृतिक सपदा का विदोहन नहीं किया जा सका। वर्तमान मे स्थिति मे बदलाव आया है। भारत ने प्राकृतिक ससाधनों के आधार पर औद्योगीकरण का ढाचा खडा किया है।

मानव संसाधन : भारत मे तकनीकी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियो की सख्या बहुत अधिक है। विश्व का सस्ता श्रम भारत मे उपलब्ध है। भारत का मानव ससाधन न केवल देश मे अपितु विश्व के अनेक देशो के आर्थिक विकास में कारगर भूमिका निभा रहा है। प्राकृतिक ससाधनो के अतिरिक्त सस्ते श्रम की उपलब्धता के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत मे प्रवेश के लिए उत्सुक हैं।

भारत ने तकनीकी कौशल के बूते पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे उपलब्धिया अर्जित की हैं। भारत ने मई 1998 मे परमाणु परीक्षण कर विश्व को चौंका दिया है। रक्षा और अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भी भारत महत्त्वपूर्ण देश बन गया है। अक्टूबर 1998 मे डा अमर्त्य सेन को अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया, जो भारत के लिए गर्व की बात है। जन्म लेने वाला बच्चा खाने के लिए मुह ही नहीं लेकर आता बल्कि काम करने के लिए दो हाथ और सोचने के लिए मस्तिष्क भी साथ लेकर आता है। भारत मे प्रतिभाए बिखरी पडी हैं, आवश्यकता उनकी दशा सुधारने और सही दिशा देने की है।

भारत जनसख्या की 2.14 प्रतिशत औसत वार्षिक वृद्धि दर, जनसख्या की दृष्टि से दुनिया का दूसरा बडा देश, निरक्षता का अधकार, गरीबी का ताण्डव, बेरोजगारी, महगाई, नीची आर्थिक वृद्धि दर, घटते आवास, चहुओर भीड आदि बाते भारत मे जनाधिक्य की पुष्टि करते हैं। देश मे प्राकृतिक ससाधनो की बहुलता अवश्य है। किन्तु जनसख्या मे गरीबी के बढने के कारण बचत व पूजी निर्माण की दर नीची रहने से वित्तीय ससाधनो का अभाव रहा, नतीजतन प्राकृतिक ससाधनो का उपयोग विकास की गति बढाने मे नहीं हो सका। जनाधिक्य ही एक ऐसा प्रमुख कारण है जिसकी वजह से भारत विश्व के देशो की तुलना में आर्थिक विकास की दृष्टि से पिछड गया। तीव्र आर्थिक विकास के लिए जनाधिक्य पर नियत्रण आवश्यक है। जनाधिक्य की समस्या से निपटने के लिए केन्द्र सरकार को निरक्षरता और गरीबी को दूर करने के लिए नीतिगत पहल करनी होगी। गरीबी उन्मूलन की योजनाए प्रासगिक हों तथा उनका उचित क्रियान्वयन हो। इसके अभाव मे देश की आर्थिक प्रगति बढते निरक्षर लोगों की बाढ में बह जाएगी।

भारत में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

राष्ट्र विशेष के अर्थतत्र मे जनसख्या की व्यावसायिक सरचना का प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। जनसख्या के अधिकांश भाग का कृषि व्यवसायो मे लगे होना आर्थिक दृष्टि से पिछडेपन तथा जनसख्या के अधिक भाग का उद्योग व अन्य व्यवसायो मे लगे होना आर्थिक दृष्टि से विकसित होने का परिचायक है। भारतीय जनसख्या की व्यवसायवार सरचना विकसित देशो की तुलना मे अलग है। भारत मे 72 प्रतिशत व्यक्ति कृषि मे लगे है जबकि जापान मे केवल 19 4 प्रतिशत ही कृषि में लगे है, ब्रिटेन मे 5 प्रतिशत तथा अमरीका मे 12 5 प्रतिशत ही कृषि मे लगे हैं। उद्योगो मे लगे व्यक्ति अमरीका मे 30 प्रतिशत तथा ब्रिटेन मे 43 प्रतिशत हैं।

विभिन्न देशों में जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण

(प्रतिशत)

व्यवसाय	अमरीका	ब्रिटेन	जापान	भारत
कृषि	12 5	5 0	19 4	72 0
उद्योग	30 6	43.0	29 3	9 7
निर्माण उद्योग	6 4	6.2	6 6	1 1
यातायात और सचार	19 [illegible]	14.1	16 5	5 1
अन्य सेवाए	23 8	23 8	20 8	10 8

कार्यशील जनसंख्या : देश की समूची जनसख्या कार्यशील नहीं होती है, उसका कुछ भाग ही कार्यशील जनसख्या होता है। आर्थिक दृष्टि से कार्य में सक्रिय व्यक्तियों को कार्यशील जनसख्या में सम्मिलित किया जाता है। एक व्यक्ति जो वर्ष में 183 दिन अथवा अधिक आर्थिक उत्पादन गतिविधि में सहभागिता करता है वह मुख्य श्रमिक माना जाता है तथा जो व्यक्ति वर्ष में 183 दिनों से कम आर्थिक गतिविधि में सलग्न रहता है वह सीमात श्रमिक माना जाता है। इसके अलावा वह व्यक्ति जो वर्ष म किसी समय कोई कार्य नहीं करता वह गैर श्रमिक माना जाता है। इस श्रेणी में छात्र, सेवानिवृत व्यक्ति, भिखारी, किसी पर निर्भर व्यक्ति और गृह कार्यों में सलग्न व्यक्ति आदि को सम्मिलित करते हैं।

भारत में कार्यशील जनसंख्या

(प्रतिशत)

वर्ष	कार्यशील जनसख्या	गैर कार्यशील जनसख्या
1901	46 6	53 4
1911	48 1	51 9
1921	46 9	53.1
1931	43 3	56.7
1951	39.1	60 9
1961	43 0	57 0
1971	32 9	67.1
1981	35 3	64 7
1991	37.5	62.5

भारत में विगत दो दशकों में कार्यशील जनसख्या में वृद्धि हुई है। कार्यशील जनसख्या 1971 में 32 9 प्रतिशत थी जो बढकर 1981 मे 35.3 प्रतिशत तथा 1991 में और बढकर 37.5 प्रतिशत हो गई। वर्ष 1991 की

जनगणना के अनुसार भारत में 62.5 प्रतिशत जनसख्या गैर कार्यशील थी जिनका आर्थिक उत्पादन गतिविधियों मे कोई सहभागिता नहीं थी। देश के कुछ राज्य तो ऐसे हैं जिनमे गैर कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत भारत की गैर कार्यशील जनसंख्या से अधिक है। पजाब में गैर कार्यशील जनसख्या का भाग 69.12 प्रतिशत है। इसके अलावा केरल मे 68.57 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 67 80 प्रतिशत, पश्चिम बंगालप में 67 81 प्रतिशत तथा हरियाणा मे 69 प्रतिशत गैर कार्यशील जनसंख्या है। राजस्थान मे गैर कार्यशील जनसंख्या भारत के औसत से कम है। राजस्थान मे कुल जनसख्या का 31 62 प्रतिशत मुख्य श्रमिक 7.25 प्रतिशत सीमान्त श्रमिक तथा 61 13 प्रतिशत गैर श्रमिक है।

वर्ष 1991 में भारत की जनसख्या 84 6 करोड थी इसमे पुरुष 43 9 करोड तथा महिलाए 40 7 करोड थीं। पुरुषो की कुल सख्या का 51.55 प्रतिशत तथा महिलाओ की कुल सख्या का 22 25 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसंख्या था। राजस्थान की जनसख्या 4 40 करोड थी। राजस्थान की कुल जनसख्या का 38 87 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसख्या था। कुल पुरुषों का 49.30 प्रतिशत तथा कुल महिलाओ का 27 40 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसंख्या था।

कार्यशील जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण

(प्रतिशत)

जनगणना वर्ष	प्राथमिक क्षेत्र	द्वितीयक क्षेत्र	तृतीयक क्षेत्र
1951	72.1	10 6	17.3
1961	72 8	11.2	16.0
1971	72.1	11.2	16.7
1981	70.0	12.8	17.2
1991	67.0	13.0	20.0

ताजी जनगणना (1991) मे मुख्य श्रमिको की औद्योगिक श्रेणी को नौ भागों में विभक्त किया गया है जो इस प्रकार है :

(1) कृषि,
(2) कृषि श्रमिक,
(3) पशु पालन, वन व्यवसाय, मछली पालन, शिकार, पौधा रोपण आदि,
(4) खनन,
(5) (अ) घरेलू उद्योगो मे निर्माण, प्रोसेसिग, मरम्मत,

(व) घरेलू उद्योगो के अलावा अन्य उद्योगो मे निर्माण, प्रोसेसिग, सेवा मे मरम्मत,

(6) निर्माण,
(7) व्यापार और वाणिज्य,
(8) ट्रान्सपोर्ट, सग्रहण और सचार,
(9) अन्य सेवाएँ।

सुविधा की दृष्टि से कार्यशील जनसख्या के व्यावसायिक वितरण को तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है।

कार्यशील जनसख्या के व्यावसायिक वितरण मे प्राथमिक क्षेत्र मे कृषि, पशुपालन, वन व्यवसाय, मछली पालन तथा खनन सम्मिलित होते हैं। द्वितीयक क्षेत्र मे बडे व मझोले पैमाने के उद्योग सम्मिलित होते हैं तथा तृतीय क्षेत्र मे वाणिज्य, सचार, परिवहन, बीमा, वित्त, प्रवन्ध आदि सम्मिलित होते हैं।

विकासशील अर्थव्यवस्था - जनसख्या के व्यावसायिक वितरण की दृष्टि से भारत को विकसित अर्थव्यवस्था की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। भारत विकासशील देश है। वर्तमान में भारत अर्थव्यवस्था के सार्वभौमिकरण द्वारा व्यावसायिक ढाचे मे बदलाव के लिए प्रयासरत है। नियोजित विकास के गत चार दशको (1951-91) में भारत को व्यावसायिक ढाचे के बदलाव के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। वर्ष 1991 मे भारत की 74 3 प्रतिशत जनसख्या गावों में जीवन बसर के लिए अभिशप्त थी। इसके अलावा कुल कार्यशील जनसख्या का 67 प्रतिशत भाग व्यावसायिक ढाचे के प्राथमिक क्षेत्र में सलग्न था। जबकि कुल कार्यशील जनसख्या का केवल 13 प्रतिशत भाग द्वितीयक क्षेत्र में तथा 20 प्रतिशत भाग तृतीयक क्षेत्र मे सलग्न था।

प्रख्यात अर्थशास्त्री कोलिन क्लार्क के अनुसार प्रति व्यक्ति आय के कम होने का प्रमुख कारण अधिक जनसख्या का प्राथमिक क्षेत्र मे कार्यरत होना है। भारत की डॉलर मे प्रति व्यक्ति आय विकसित देशों की तुलना में ही नहीं अपितु विकासशील देशों की तुलना में भी बहुत कम है। भारत मे प्रति व्यक्ति आय के कम होने का कारण कार्यशील जनसख्या का 67 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र मे कार्यरत होना है। भारत मे द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र का अपेक्षित विकास नहीं हुआ है। विख्यात अर्थशास्त्री साइमन कुजनेट्स के अनुसार एक अविकसित अर्थव्यवस्था में 66 प्रतिशत जनसख्या कृषि क्षेत्र पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से भी भारत विकसित अर्थव्यवस्था मे सम्मिलित नहीं होता है क्योकि भारत की कुल जनसख्या का 72 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर है।

भारत के लिए चिन्ताप्रद बात यह है कि कार्यशील जनसख्या मे अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई। कार्यशील जनसख्या 1961 मे 43 प्रतिशत थी जो घटकर 1991 मे 375 प्रतिशत रह गई। यद्यपि कार्यशील जनसख्या मे 1981 की तुलना मे थोडी वृद्धि अवश्य हुई है तथापि विकसित देशो मे कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 50 प्रतिशत से अधिक होता है। दूसरी चिन्ता की बात यह है कि स्वतन्त्रता के पचास वर्षो मे कार्यशील जनसख्या के व्यावसायिक ढाचे मे विशेष बदलाव नहीं आया है। लगभग पाच दशको मे व्यावसायिक ढांचे के प्राथमिक क्षेत्र मे कमी नहीं आ सकी। द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र मे वृद्धि नगण्य रही। वर्ष 1951 मे द्वितीयक क्षेत्र का भाग 106 प्रतिशत तथा तृतीयक क्षेत्र का भाग 173 प्रतिशत था जो 1991 मे मामूली बढकर क्रमश 13 प्रतिशत और 20 प्रतिशत ही हो पाया। कार्यशील जनसंख्या के व्यावसायिक ढाचे से भारत का आर्थिक पिछडापन परिलक्षित होता है।

ढांचे में बदलाव की आवश्यकता

भारत मे कार्यशील जनसख्या का बडा भाग प्राथमिक क्षेत्र विशेषकर कृषि में नियोजित होना आर्थिक पिछडेपन का प्रतीक है। विश्व मे अनेक ऐसे देश है जिन्होने कृषि के आधार पर तीव्र आर्थिक विकास किया किन्तु भारत मे बीते पचास वर्षों में कृषि क्षेत्र की प्रगति उत्साहवर्द्धक नहीं रही। कृषि के पिछडेपन का प्रमुख कारण कम निजी और सार्वजनिक पूजी निवेश रहा है। कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ है और आज भी राष्ट्रीय आय मे कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान है किन्तु कृषि की दशा सुधारने मे अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। किसान और गरीब लोग सेठ साहूकारो के चंगुल मे फंसे रहे।

आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए कार्यशील जनसंख्या के व्यावसायिक ढांचे मे बदलाव आवश्यक है। इसके लिए व्यावसायिक संरचना के द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र का विकास किया जाना चाहिए। ग्रामीण औद्योगीकरण और कृषि आधारित उद्योगो का विकास करके कृषि पर जनसंख्या का भार कम किया जा सकता है तथा ग्रामीण परिवेश मे बेरोजगारी भी कम हो सकेगी। कृषिगत विकास के लिए ग्रामीण परिवेश मे आधारभूत सरचना का विकास किया जाना चाहिए। हाल के उदारीकरण मे आर्थिक विकास मे सरकार की भूमिका मे नियोजन काल की तुलना मे कमी आई है किन्तु व्यावसायिक संरचना को दृष्टिगत रखते हुए सार्वजनिक निवेश की आवश्यकता आज भी है। विकास की तीव्र गति वास्ते पूंजी निवेश को विशेषकर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आधारित संरचना की ओर मोडना चाहिए। केन्द्र सरकार को सामाजिक विकास क्षेत्र मे अधिक सार्वजनिक परिव्यय पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

8

कृषि की भूमिका में बदलाव

भारत गांवो का देश होने के कारण बहुसख्यक जनसख्या जीवन बसर के लिए कृषि पर निर्भर है। आर्थिक विकास मे कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय आय का बडा भाग कृषि से प्राप्त होता है। निर्यातित आय मे भी कृषि तथा संबंद्ध क्षेत्र की अच्छी भागीदारी है। हाल ही (1998) केन्द्र मे वाजपेयी सरकार सत्तारूढ हुई है। नई केन्द्र सरकार ने कृषि विकास पर ध्यान केन्द्रित किया है। अप्रैल 1998 मे जारी आर्थिक एजेन्डा मे कृषि निवेश बढाने पर बल दिया गया है। सरकार कृषि, ग्रामीण विकास, सिचाई तथा संबंधित ग्राम्य ढांचागत विकास मे सार्वजनिक निवेश के लिए पर्याप्त योजनागत कोष की व्यवस्था करेगी। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के पाच सूत्री विकास मार्ग मे कृषि को दूसरा सूत्र मानते हुए अगले दशक मे कृषि उत्पादन को दोगुना किए जाने का प्रावधान किया गया है। नई सरकार ने 1998-99 के बजट में कृषि विकास की नई पहल की है। वर्ष 1998-99 की वार्षिक योजना मे कृषि परिव्यय 2,854 करोड रुपए का प्रावधान किया है जो 1997-98 के सशोधित अनुमान 1,807 करोड रुपए की तुलना मे 58 प्रतिशत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार विकास शीर्ष पर भी परिव्यय मे वृद्धि की गई है। वर्ष 1997-98 मे ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार परिव्यय 8,356 करोड रुपए (संशोधित अनुमान) था जिसे बढाकर 1998-99 मे 9,912 करोड रुपए (बजट अनुमान) किया गया। ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार परिव्यय में 18 6 प्रतिशत की वृद्धि की गई। वर्ष 1998-99 मे नाबार्ड द्वारा प्रबन्धित ग्रामीण अवसरचना विकास निधि मे आवटन बढाकर 3,000 करोड रुपए कर दिया गया है। नाबार्ड की अंशपूजी मे 500 करोड रुपए की वृद्धि की गई है। बजट मे किसानो को कृषि आदानो और उत्पादन सबधी जरूरतो के लिए नकदी प्राप्त करने मे मदद के लिए नाबार्ड द्वारा "किसान क्रेडिट

कार्ड" योजना शुरु करने का प्रस्ताव किया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था मे कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। देश की बहुसख्यक जनसख्या जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर है।

(1) राष्ट्रीय आय में योगदान : भारत की राष्ट्रीय आय मे कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान मे राष्ट्रीय आय का 30 से 40 प्रतिशत भाग कृषि से प्राप्त होता है। विगत वर्षों मे राष्ट्रीय आय मे कृषि की उपादेयता घटी है फिर भी अन्य क्षेत्रो की तुलना मे इसका योगदान अधिक है।

सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भूमिका

(करोड रुपए)

वर्ष	सकल घरेलू उत्पाद साधन लागत (1980-81) की कीमतो पर)	कृषि एव सबद्ध क्षेत्र का उत्पाद	सकल घरेलू उत्पाद मे कृषि का प्रतिशत
1950-51	42871	24204	56 46
1960-61	62904	32793	52 13
1970-71	90426	41385	45 77
1980-81	122427	48536	39 64
1990-91	212253	69860	32 91
1991-92	213983	68480	32 00
1992-93	225268	72421	32.15
1993-94	238864	74965	31 38
1994-95	256095	78590	30.69
1995-96 (नई श्रृंखला)	926412	279204	30 14
1996-97	998978	303572	30 39
1997-98	1049191	301436	28 73
1998-99 (त्वरित अनुमान)	1081834	315415	29 16

स्रोत इकोनॉमिक सर्वे, 1996-97, 1998-99 तथा 1999-2000

वर्ष 1980-81 की कीमतों पर सकल घरेलू उत्पादन साधन लागत पर 42,871 करोड रुपए था जिसमे कृषि एव सम्बद्ध क्षेत्र का उत्पादन 24,204 करोड रुपए था जो सकल घरेलू उत्पादन का 56 46 प्रतिशत था। सकल घरेलू उत्पाद 1994-95 मे 2,56,095 करोड रुपए था जिसमे कृषि एव सम्बद्ध क्षेत्र का उत्पाद 78,590 करोड रुपए था जो सकल घरेलू उत्पाद का 30 69 प्रतिशत था। नब्बे के दशक मे सकल घरेलू उत्पाद मे कृषि की भूमिका बहुत घट गई है। इसका कारण कृषि एवम् सम्बद्ध क्षेत्र परिव्यय मे

कमी है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय का केवल 5.2 प्रतिशत कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र पर व्यय किया गया। नौवीं पंचवर्षीय योजना में भी कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र परिव्यय में वृद्धि नहीं की गई। इसके बावजूद भी सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। वर्ष 1994-95 में सकल घरेलू उत्पाद में निर्माण क्षेत्र का भाग 27.98 प्रतिशत, यातायात संचार और व्यापार का भाग 18.95 प्रतिशत, बैंकिंग बीमा व्यावसायिक सेवा आदि का भाग 11.59 प्रतिशत तथा सार्वजनिक प्रशासन, रक्षा व अन्य सेवाओं का भाग 10.79 प्रतिशत था जबकि कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का भाग 30.69 प्रतिशत है।

(2) रोजगार : भारत में जनसंख्या का बड़ा भाग जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर है। डा. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार खेती से इस देश के सबसे अधिक लोगों को रोजगार मिलता है जो बड़े तथा छोटे अन्य सब उद्योगों से प्राप्त सम्मिलित रोजगार से अधिक है। भारत की 74 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में जीवन बसर करती है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल कार्मिक 31.41 करोड थे, जिनमें 2.82 करोड सीमान्त कार्मिक तथा 28.59 करोड मुख्य कार्मिक थे। मुख्य कार्मिकों में काश्तकार 11.07 करोड, कृषि श्रमिक 7.46 करोड तथा पशुधन, वन आदि में 60 लाख कार्यरत थे। इस प्रकार मुख्य कार्मिकों का 66.9 प्रतिशत कृषि तथा संबंद्ध क्षेत्र में कार्यरत था। ग्रामीण मुख्य कार्मिक 22.23 करोड थे जिनमें से 18.28 करोड कृषि एवम् संबंद्ध क्षेत्र में कार्यरत थे जो मुख्य कार्मिकों का 82.2 प्रतिशत है। शहरी मुख्य कार्मिक 6.36 करोड थे जिनमें 85 लाख कृषि व संबंद्ध क्षेत्र में कार्यरत थे जो कि शहरी मुख्य कार्मिकों का 13.4 प्रतिशत था।

(3) खाद्यान्न उत्पादन : भारत जनाधिक्य वाला देश है तथा अधिकांश जनसंख्या शाकाहारी है। कृषि क्षेत्र द्वारा खाद्यान्न की मांग पूरी की जाती है। भारत में चावल, गेहूँ, मोटा अनाज तथा दालों का उत्पादन होता है। वर्ष 1996-97 में चावल का उत्पादन 81.3 मिलियन टन, गेहूँ का उत्पादन 69.3 मिलियन टन, मोटा अनाज का उत्पादन 34.3 मिलियन टन तथा दालों का उत्पादन 14.5 मिलियन टन था। खाद्यान्न उत्पादन 1996-97 में 199.3 मिलियन टन था। प्रमुख वाणिज्यिक फसलों में तिलहन, गन्ना, कपास, जूट और मेस्ता का उत्पादन होता है। वर्ष 1996-97 में प्रमुख वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन इस प्रकार था, तिलहन 25 मिलियन टन, गन्ना 277.3 मिलियन टन, कपास 14.3 मिलियन गाँठें तथा जूट व मेस्ता 8.8 मिलियन गाँठें।

भारत में खाद्यान्न उत्पादन

वर्ष	खाद्यान्न उत्पादन (मिलियन टन)	कृषि उत्पादन सूचकांक आधार 1982-83
1950-51	50 8	46 2
1960-61	82.0	68 8
1970-71	108 4	85.9
1980-81	129 6	102.1
1990-91	176 4	148 4
1991-92	168 4	145 5
1992-93	179 5	151 5
1993-94	184 3	157.3
1994-95	191.5	165 0
1995-96	180 4	160.7
1996-97	199 3	175 4
1997-98	192 4	164 9
1998-99	203 0	177 2
1999-2000 (प्रा)	199 1	173.3

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे*, 1996-97, 1997-98, 1999-2000.

कृषि क्षेत्र मे नवीन व्यूहरचना लागू किए जाने तथा सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय में वृद्धि के कारण खाद्यान्न उत्पादन मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। खाद्यान्न उत्पादन 1950-51 मे 50 8 मिलियन टन था जो बढकर 1990-91 में 176 4 मिलियन टन तथा 1998-99 में और बढकर 203 मिलियन टन हो गया। वर्ष 1981-82 को आधार मानते हुए कृषि उत्पादन सूचकांक 1950-51 में 46 2 था जो बढकर 1990-91 में 148 4 तथा 1998-99 में और बढकर 177.2 हो गया। विगत दशकों मे प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल, उत्पादन और पैदावार में वृद्धि हुई। कुल अनाज का क्षेत्रफल 1950-51 मे 782 30 लाख हैक्टेयर से बढकर 1989-90 में 1,033.58 लाख हैक्टेयर, उत्पादन 1950-51 में 424 14 लाख टन से बढकर 1989-90 मे 1,560 79 लाख टन तथा पैदावार 1950-51 मे 542 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर से बढकर 1989-90 में 1,530 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर हो गई। वर्ष 1989-90 मे कुल दलहन का क्षेत्रफल 234 15 लाख हैक्टेयर, उत्पादन 128 65 लाख टन तथा पैदावार 549 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर था।

खाद्यान्न का क्षेत्रफल 1950-51 मे 973 2 लाख हैक्टेयर था जो 1989-90 मे बढकर 1,267.73 लाख हैक्टेयर हो गया। खाद्यान्न पैदावार 1950-51 में 522 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर से बढकर 1989-90 मे 1,349 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर हो गई। वर्ष 1989-90 में कुल तिलहन क्षेत्रफल 228 लाख हैक्टेयर, उत्पादन 169 09 लाख टन तथा पैदावार 742 किलोग्राम

प्रति हैक्टेयर थी। इसके अलावा वाणिज्यिक फसलो यथा गन्ना, कपास, पटसन, मेस्ता के क्षेत्रफल, उत्पादन व पैदावार मे वृद्धि हुई।

खाद्यान्न का उत्पादन बढने से प्रति व्यक्ति अनाज की उपलब्धता बढी। वर्ष 1991 में प्रति व्यक्ति अनाज की उपलब्धता 510 ग्राम के स्तर तक पहुंच गई थी जबकि 1950 के दशक के प्रारम्भिक वर्षो मे प्रति व्यक्ति 395 ग्राम अनाज उपलब्ध था तथापि वर्ष 1993 मे एक अन्तिम अनुमान के अनुसार अनाज की प्रति व्यक्ति दैनिक उपलब्धि कुछ कम होकर 464 ग्राम हो गई। प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता 1993 मे 169 4 किलोग्राम वार्षिक थी जो बढकर 1994 मे 172 किलोग्राम, 1995 मे 185 3 किलोग्राम तथा 1997 मे 181 3 किलोग्राम वार्षिक हो गई।

(4) निर्यातित आय में योगदान : भारत के विदेशी व्यापार मे कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारत से बडी मात्रा मे कृषि एव सबद्ध उत्पादो का निर्यात किया जाता है। कृषिगत निर्यातों मे काफी, चाय, खली, काजू, मसाले, तम्बाकू, चीनी, कच्चा जूट, चावल, फल, सब्जी, दालें आदि मुख्य हैं। स्वतंत्रता के समय से लेकर 1980 तक भारत के निर्यातो मे कृषि व सबद्ध क्षेत्र की उल्लेखनीय भूमिका थी। वर्ष 1960-61 मे भारत का कुल निर्यात 642 करोड रुपए था। जिसमे कृषि एवं सबद्ध क्षेत्र का निर्यात 284 करोड रुपए था जो कुल निर्यात का 44 24 प्रतिशत था। बाद के दशको मे निर्यात में कृषि एव सबंद्ध क्षेत्र की भूमिका घटी। वर्ष 1980-81 मे कुल निर्यात 6,711 करोड रुपए था जिसमे कृषि एव सबंद्ध क्षेत्र का निर्यात 2,057 करोड रुपए था जो कुल निर्यात का 30 65 प्रतिशत था। नब्बे के दशक मे निर्यातो मे कृषि एव सबद्ध क्षेत्र की भूमिका उत्तरोत्तर कम हुई। कुल निर्यात मे कृषि एवम् सबद्ध क्षेत्र का भाग 1990-91 मे 19 40 प्रतिशत, 1992-93 मे 17 61 प्रतिशत, 1993-94 मे 18 67 प्रतिशत तथा 1994-95 मे 16 58 प्रतिशत था। वर्ष 1995-96 मे कुल निर्यात 1,06,353 करोड रुपए था जिसमे कृषि एवं सबद्ध क्षेत्र का निर्यात 21,138 करोड रुपए था जो कुल निर्यात का 19 87 प्रतिशत था। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। कृषिगत उत्पादन को बढाकर निर्यात व्यापार मे कृषि की भूमिका को बढाया जा सकता है। नोबल पुरस्कार विजेता डा नार्मन ई बोरलॉग के अनुसार "भारत मे खाद्यान्न उत्पादन को आगामी चालीस वर्षो मे चार गुना करने की क्षमता विद्यमान है।" खाद्यान्न उत्पादन का बडा भाग देश मे ही खप जाता है निर्यात के लिए अतिरेक खाद्यान्न बहुत कम बच पाता है। अत खाद्यान्न निर्यात वृद्धि के लिए भारत मे जनाधिक्य वृद्धि को रोकना आवश्यक है।

(5) कृषि परिव्यय में वृद्धि : भारत मे आर्थिक नियोजन की सफलता कृषि विकास पर निर्भर है। अर्थव्यवस्था मे कृषि की उपादेयता को दृष्टिगत

रखते हुए विभिन्न पचवर्षीय योजना मे कृषि परिव्यय मे वृद्धि की गई। तृतीय पचवर्षीय योजना मे कृषि एव सबद्ध क्षेत्र परिव्यय 1,088 9 करोड रुपए था जो बढकर सातवीं पचवर्षीय योजना मे 10,523 6 करोड रुपए हो गया। आठवीं पचवर्षीय योजना मे कृषि एव सबद्ध क्षेत्र परिव्यय 22,467 करोड रुपए था जो कुल योजना परिव्यय का 5 2 प्रतिशत था। नौंवी योजना मे कृषि एव सबद्ध क्षेत्र परिव्यय 36,658 करोड रुपए का प्रावधान है। विश्व आर्थिक फोरम द्वारा 29 नवम्बर 1998 को आयोजित भारत आर्थिक शिखर केन्द्र सरकार द्वारा घोषित बारह सूत्रीय मध्यकालीन आर्थिक एजेण्डा मे कृषि को प्रमुखता दी गई है। इसमे कृषि विकास सुनिश्चित करना और कृषि व कृषि प्रसस्करण उद्योग मे व्यापक निजी निवेश को बढावा देकर ग्रामीण समृद्धि का विस्तार करना सम्मिलित है। कृषि परिव्यय मे उत्तरोत्तर वृद्धि तथा आर्थिक एजेण्डा में कृषि को प्रमुख स्थान दिया जाना अर्थव्यवस्था मे कृषि की महत्ता को दर्शाता है।

(6) विश्व परिप्रेक्ष्य में भारतीय कृषि : भारत एक कृषि प्रधान देश है। आजादी के प्रारम्भिक वर्षो मे भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय थी। हाल ही के वर्षो मे भारत ने कृषि के क्षेत्र मे प्रगति की है। आज भारत न केवल विशाल आबादी के लिए खाद्यान्न उत्पादन कर रहा है अपितु विश्व के देशो को खाद्यान्न का निर्यात भी कर रहा है। वर्ष 1979-81 को आधार मानते हुए भारत का कृषिगत उत्पादन सूचकाक वर्ष 1989 में 141 86 था जो विश्व औसत 121 26 से अधिक था। वर्ष 1989 मे विश्व के अनेक देशो का कृषि उत्पादन सूचकाक इस प्रकार था - अर्जेन्टीना 96 20, आस्ट्रेलिया 113 48, कनाडा 111 99, मेक्सिको 121 39, ब्रिटेन 105 76, अमरीका 102 36 आदि। भारत मे 1989 में चावल, गेहूँ, मक्का व कपास बीज का उत्पादन अन्य देशो की तुलना मे अधिक था।

विश्व के देशों में कृषिगत फसलों का उत्पादन 1989

(हजार टन)

देश	कृषिगत उत्पादन सूचकाक (1979-81=100)	चावल	गेहूँ	मक्का	कपास बीज
भारत	141 86	107500	53995	7800	4430
आस्ट्रेलिया	113 48	748	14200	217	813
ब्राजील	131 87	11107	5407	26805	1855
चीन	146 50	179403	41002	75840	11757
मैक्सिको	121 39	441	3900	9900	600
अमेरिका	102 36	7007	55407	191197	6986

स्रोत इण्डिया, इकोनॉमिक इनफोरमेशन ईयर बुक, 1991-92, पृ 323

विश्व मे अनेक देश विशेषकर विकासशील देश ऐसे हैं जहा श्रम शक्ति (लेबर फोर्स) का बडा भाग कृषि मे सलग्न है। वर्ष 1981 मे श्रम शक्ति का भारत मे 71 प्रतिशत, बांग्लादेश मे 74 प्रतिशत, चीन मे 74 प्रतिशत, केन्या मे 78 प्रतिशत, नेपाल मे 93 प्रतिशत, पाकिस्तान मे 57 प्रतिशत, श्रीलका मे 54 प्रतिशत कृषि कार्य में सलग्न था जबकि श्रम शक्ति का आस्ट्रेलिया मे केवल 6 प्रतिशत, कनाडा मे 5 प्रतिशत, फ्रास मे 8 प्रतिशत, जर्मनी मे 4 प्रतिशत, कुवैत में 2 प्रतिशत, अमरीका मे 2 प्रतिशत, ब्रिटेन मे 2 प्रतिशत कृषि कार्य मे सलग्न था। स्पष्ट है कि विकसित देशो मे श्रम शक्ति का अल्पत्य भाग कृषि कार्य मे लगा हुआ है। विकसित देशो मे कृषि कार्य मे यत्रीकरण का अधिक प्रयोग होता है। वर्ष 1986 मे अमेरिका मे 4676 हजार ट्रेक्टर, जापान मे 1,834 हजार ट्रेक्टर, फ्रास मे 1,527 हजार ट्रेक्टर, अर्जेन्टीना मे 1,174 हजार ट्रेक्टर उपयोग मे थे, जबकि भारत मे केवल 649 हजार ट्रेक्टर, बाग्लादेश मे 1 हजार ट्रेक्टर, केन्या मे 9 हजार ट्रेक्टर उपयोग मे थे। भारत मे हरित कृषि लागू किये जाने के बाद कृषिगत क्षेत्र मे यंत्रीकरण का उपयोग बढता जा रहा है। भारत मे आज कृषि आधुनिकतम उपकरणो से की जाने लगी है। हाल के वर्षों में कृषि और ग्रामीण विकास पर बल दिए जाने के कारण भविष्य मे कृषिगत क्षेत्र मे यत्रीकरण वृद्धि की सभावना है।

(7) औद्योगिक कच्च माल - भारत मे कृषि औद्योगिक विकास का आधार है। कृषि से अनेक उद्योगो को कच्चा माल उपलब्ध होता है। मानसून के प्रतिकूल होने की दशा मे कृषिगत उत्पादन कम होने का सीधा प्रभाव औद्योगीकरण पर पडता है। कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि तीव्र औद्योगिक विकास मे सहायक होती है। भारत मे कृषि आधारित उद्योगो की बहुलता है। ऐसी स्थिति मे कृषि का महत्त्व और भी बढ जाता है। भारत मे सूती वस्त्र उद्योग, वनस्पति उद्योग, जूट, चाय, रबर, कागज उद्योगो के लिए कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। भारत मे वर्ष 1997-98 मे तिलहन का उत्पादन 23 7 मिलियन टन, गन्ने का उत्पादन 260 2 मिलियन टन, कपास उत्पादन 11.4 मिलियन गांठे, जूट और मेस्ता उत्पादन 9 8 मिलियन गांठे था।

(8) राजनीतिक महत्त्व : भारत मे कृषि का राजनीतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। जनसख्या का बडा भाग गांवों मे जीवन बसर करता है। गावो मे अत्यधिक राजनीतिक जागरुकता है। लोकसभा और विधान सभा सदस्यों के चुनाव में ग्रामीणजनो की बडी भूमिका होती है। अच्छे कृषि उत्पादन का राजनीति पर सीधा प्रभाव पडता हे। कृषिगत उत्पादन के अनुकूल होने के दशा मे मूल्य स्तर भी सामान्य रहता है। ग्रामीण परिवेश की

उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए आज बजट का बड़ा भाग ग्रामीण विकास पर खर्च किया जाता है। 25 नवम्बर 1998 को राजस्थान, मध्यप्रदेश दिल्ली मे सम्पन्न हुए विधान सभा चुनावो मे कृषिगत उत्पादन यथा आलू व प्याज की बेतहाशा कीमतो ने प्रमुख चुनावी मुद्दे का रूप लिया। महंगाई के कारण दिल्ली व राजस्थान की सरकारें बदली। भारत में महगाई का सीधा असर राजनीति पर पड़ता है और महगाई कृषिगत उत्पादन से प्रभावित होती है। भारत में गरीब किसानो के दस हजार रुपये तक ऋण माफ करना राजनीतिक निर्णय था। ग्रामीणो को लुभाने के लिए वोट आधारित राजनीतिक निर्णय लिए जाते हैं। किसानो को नि शुल्क बिजली, उर्वरक, सब्सिडी, कम दरों पर सिंचाई सुविधा आदि निर्णय राजनीति प्रेरित होते हैं। कृषि की भूमिका मे बदलाव के बावजूद भारत मे प्रति व्यक्ति कम होती भूमि की उपलब्धता कृषि की मुखर समस्या है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति भूमि की मात्रा घटती जा रही है। नियोजन काल में कृषिगत क्षेत्र में अवश्य प्रगति हुई। भारत के खाद्यान्न आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढे। किन्तु भारतीय कृषि समस्याओं से अछूती नहीं है। आज भी अनेक समस्याएं मुहबाएँ खडी है। ग्रामीण परिवेश मे गरीबी की समस्या व्याप्त है। किसान सेठ साहूकारों के चंगुल से पूरी तरह मुक्त नहीं हुए हैं। गावो में निरक्षरता के कारण परम्परावादी दृष्टिकोण की समस्या विकट है। किसान आय का बड़ा भाग अनुत्पादक कार्यों मे खर्च करते हैं। छोटे किसानों की बहुलता है। कृषि जोत का आकार निरन्तर कम होता जा रहा है। कृषि सब्सिडी का अधिकाश भाग बडे किसान हडप जाते हैं। हरित क्राति का लाभ सीमित क्षेत्र विशेष कर सिंचित भागो को ही मिला। सिचाई सुविधाओं का नितान्त अभाव है।

भारतीय कृषि के विकास में बाधाएं

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान होने के बावजूद भी कृषि विकास पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र मे उल्लेखनीय सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं हुई। किसान की माली हालत में भी विशेष बदलाव नहीं आया। भारत प्रति हैक्टेयर कृषिगत उत्पादन और ग्रामीण अद्य सरचना की दृष्टि से विश्व के अनेक देशों की तुलना मे पीछे है। गावों मे न्यूनतम बुनियादी सुविधाओ का अभाव है। पेयजल सुविधाओ के अभाव के कारण ग्रामीणजन प्रदूषित पानी पीने के लिए अभिशप्त है। बहुतेरे गाव सडको से जुडे हुए नहीं हैं। चिकित्सा सुविधाओं का नितात अभाव है। ग्रामीण परिवेश मे निरक्षरता आज भी अभिशाप है। गांवो की दशा सुधारने के लिए अनेक योजनाए बनी। ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए भारी भरकम पूजी का प्रावधान किया गया। योजनाए

कागजो तक ही सिमट कर रह गई। योजनाओ के लिए आवटित राशि खर्च मद मे दिखा दी गई। पचास सालो मे गांव और किसान की दशा सुधर नहीं सकी। भारत मे कृषि के पिछडेपन के अनेक कारण हैं जिनमे प्राकृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, संस्थागत आदि मुख्य है। कृषि के पिछडेपन के कारण निम्नलिखित हैं -

(1) कम पूंजी निवेश : पचवर्षीय योजनाओ मे कृषि क्षेत्र मे कम पूजी निवेश किया गया। आर्थिक उदारीकरण मे विकास क्षेत्र मे सरकार की भूमिका घटने के कारण कृषि निवेश और कम हो गया। तृतीय पचवर्षीय योजना मे योजना परिव्यय का 12 7 प्रतिशत कृषि एव संबद्ध क्षेत्र पर व्यय किया गया जो घटकर आठवीं पचवर्षीय योजना मे केवल 5.2 प्रतिशत रह गया। नौवीं पंचवर्षीय योजना मे कृषि व संबंद्ध क्षेत्र परिव्यय पर 36,658 करोड रुपए व्यय का प्रावधान है जो नौवीं योजना परिव्यय 8,75,000 करोड रुपए का केवल 4 2 प्रतिशत है। कृषि क्षेत्र मे सार्वजनिक निवेश उत्तरोत्तर घटने के कारण कृषि विकास गति नहीं पकड सका। कृषि निवेश घटने के कारण कृषि वृद्धि दर भी घटी। कृषि वृद्धि दर 1955-56 में ऋणात्मक 3 प्रतिशत तथा 1997-98 मे भी ऋणात्मक 2 प्रतिशत रही जो भारत सरीखे कृषि प्रधान देश के लिए चिन्ताप्रद बात है।

(2) साख सुविधाओं का अभाव : देश के ग्रामीण परिवेश मे लम्बे समय तक साख सुविधाओ का अभाव रहा। किसानो की साख सुविधाओ की पूर्ति वास्ते आज भी बडी सीमा तक सेठ साहूकारो पर निर्भरता बनी हुई है। सेठ साहूकार गरीब किसानो की दयनीय स्थिति का लाभ उठाते हैं। वे किसानों से अधिक ब्याज वसूली के अलावा उनका मनमाफिक शोषण करते हैं। तत्कालीन सरकार ने गरीब किसानो के दस हजार रुपए तक के ऋण माफ करके वाह-वाही लूटी, किन्तु इस निर्णय से बैंको की स्थिति बिगडी। भारत के निरक्षर किसानो को बैंको की पेचीदगी ऋण-प्रणाली से असुविधा होती है। वह ऋण लेने मे बिचौलिए के चक्कर मे फंस जाता है। हाल के वर्षों मे बैंको मे भी भ्रष्टाचार बढा है। ऋणो की स्वीकृति मे रिश्वत ली जाने लगी है। दूर-दराज के क्षेत्रो मे बैंक शाखाओ का नितात अभाव है। गरीबी के कारण किसान इस स्थिति मे नहीं होते कि वे बुआई के समय स्वय के संसाधनो से बीज व खाद खरीद सकें। सिचाई के लिए भी किसानो को अधिक वित की आवश्यकता होती है। मजबूरन किसान प्रभावी लोगो के चगुल मे फस जाता है।

(3) अनुत्पादक व्यय : बहुसंख्यक किसानो की माली हालत दयनीय है। गरीबी मनुष्य का बडा दुःख है। भारत के किसान गरीबी की समस्या से

ग्रसित तो है ही इसके अलावा वह रूढ़िवादिता से भी घिरा हुआ है। कम आय के बावजूद किसानों और गरीबों को कर्ज लेकर सामाजिक रीति-रिवाजो पर व्यय करना पडता है। इनके अभाव मे समाज उन्हे जीने नहीं देता है। कर्ज की बडी राशि अनुत्पादक व्ययो मे खर्च हो जाती है। कर्ज राशि का कृषि मे निवेश नहीं हो पाता इसके भयकर परिणाम किसान को भुगतने पडते हैं। अनुत्पादक व्ययो की दोहरी मार किसानो पर पडती है। एक तो इस व्यय से आय प्राप्ति नहीं होती दूसरी और उसकी कृषि पिछड जाती है। नतीजतन किसान कर्ज में डूब जाता है।

(4) मूल्य वृद्धि का कम लाभ : हाल के वर्षो मे कृषिगत उत्पादो की कीमतों मे भारी वृद्धि हुई। किन्तु बढी हुई कीमतो का लाभ किसानो को नहीं मिला। बढी हुई कीमतों का लाभ दलाल, बिचौलिए आदि हडप जाते हैं। किसान गरीबी के कारण बढी हुई कीमतों का लाभ उठाने की स्थिति में नहीं होते हैं। किसानों के कर्ज मे डूबे होने के कारण उसकी उपज का अधिकाश भाग खलिहान से ही सेट साहूकार उठा ले जाते हैं। फिर किसान का परिवार अपेक्षाकृत बडा होता है। वर्ष भर खाने के लिए अधिक अनाज की आवश्यकता होती है। इसके बाद जो कुछ फसल बचती है उसे धन की महती और शीघ्र आवश्यकता होने के कारण बाजार में बेचनी पडती है। उसके पास सग्रहण क्षमता का अभाव होता है। किसान के पास बेचने योग्य उपज कम होने तथा कृषि उपज मडियों के दूर होने के कारण वह सस्ते दामो पर उपज को बेच देता है। कृषि उत्पादो की बडी हुई कीमतो से उल्टा किसानो का शोषण होता है। वर्ष 1998 (अक्टूबर-नवम्बर) मे आलू प्याज की कीमते बेतहाशा बढी। क्या बढी हुई कीमतो का लाभ किसानो को मिला। बढी हुई कीमतो के कारण किसान आलू प्याज खाने तक के लिए तरस गया। प्याज के बीज की कीमतें भी तीव्रता से बढीं। नतीजतन किसान बुआई के लिए बीज नहीं खरीद सके। बढी हुई कीमतो का लाभ तो बिचौलिए ले उडे किसान तो ताकता रह गया। सरकार कालाबाजारी को रोकने मे सफल नहीं हो सकी।

(5) यंत्रीकरण का अभाव : भारत गावो का देश है। गावो के लोग अधिकतर निरक्षर है तथा उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है। गावो मे साख सुविधाओ का अभाव है। सरकार ने कृषि विकास की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया। कृषि प्रधान देश मे कृषि नीति की घोषणा वर्ष 1999 तक नहीं की गई। कृषि को उद्योग का दर्जा प्राप्त नहीं है। भारत मे बडे पैमाने पर खेती पशुओ से की जाती है। भारतीय कृषि मे यत्रीकरण का अभाव है। समय पर ओर उचित तरीके से जमीन तैयार करने, फसल की कटाई के बाद

के कार्यों तथा एक साथ कई फसले प्राप्त करके उत्पादन और उत्पादकता बढाने मे कृषि संबंधी यंत्र और मशीने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाकि हाल ही के वर्षो मे खेती बाडी मे कृषि संबंधी यंत्रो तथा उपकरणो का बडे पैमाने पर उपयोग होने लगा है। लेकिन यह स्थिति आम तौर पर उत्तर प्रदेश मे और सिचाई की सुविधा वाले कुछ क्षेत्रो तक ही सीमित रही है। जहा तक ट्रेक्टरो का सवाल है। 1992-93 मे 1,44,330 ट्रेक्टरो की बिक्री हुई। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश मे कुल सख्या के 70 प्रतिशत ट्रेक्टर बिके। इसी प्रकार 1992-93 में 8,642 पावर टिलर बेचे गए जिनमें से 81 प्रतिशत असम, पश्चिम बगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और महाराष्ट्र मे बिके। वर्तमान मे भारत मे 12 लाख से अधिक कुल ट्रेक्टर है और पावर टिलर भी 53,000 से अधिक है। फिर भी कृषि यत्रो की दृष्टि से भारत कई एशियाई देशो से भी पीछे है।'

(6) सिंचाई के साधनों का अभाव : सिचाई सुविधाओ के अभाव के कारण भारतीय कृषि पिछड़ी हुई दशा मे है। आजादी के पाच दशक बाद भी किसान सिचाई के लिए बादलो की ओर देखने को मजबूर है। देश में समग्र सिचित क्षेत्र का अभाव है। समग्र सिचित क्षेत्र 1991-92 में 7.6 करोड हैक्टेयर तथा 1996-97 मे 8.9 करोड हैक्टेयर था। समग्र बुआई क्षेत्र की तुलना मे समग्र सिचित क्षेत्र भी कम है। समग्र बुआई क्षेत्र 1996-97 मे 19.1 करोड हैक्टेयर था। समग्र बुआई क्षेत्र की तुलना मे समग्र सिचित क्षेत्र 1991-92 मे 41.5 प्रतिशत तथा 1996-97 मे 46.9 प्रतिशत था। देश के जल ससाधनो का विकास और समुचित उपयोग महत्त्वपूर्ण है। अक्टूबर 1985 मे सिंचाई विभाग का नाम बदलकर जल ससाधन मत्रालय रखा गया तथा सितम्बर 1987 मे राष्ट्रीय जल नीति अपनाई गई। आठवीं पचवर्षीय योजना मे सिचाई और बाढ नियंत्रण पर 32,525.3 करोड रुपए व्यय का प्रावधान किया गया। इसके बावजूद सिंचाई क्षमता का अपेक्षित विकास नहीं हुआ और जो कुछ सिचाई क्षमता का विकास हुआ, उसका पूरा उपयोग नहीं किया जा सका। नतीजतन कृषि की दशा मे उल्लेखनीय सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं हुई। योजना पूर्व (1951 तक) सिचाई क्षमता 226 लाख हैक्टेयर वार्षिक थी जो बढकर 1992-93 तक 835 लाख हैक्टेयर वार्षिक ही हो सकी। 1992-93 तक सिचाई क्षमता का उपयोग 751 लाख हैक्टेयर था। स्पष्ट है 10 प्रतिशत सिचाई क्षमता का उपयोग नहीं किया गया। देश मे वैसे ही सिचाई सुविधाओ का अभाव है ऐसी स्थिति उपलब्ध सिचाई क्षमता का उपयोग नहीं किया जाना चिन्ताप्रद बात है।

(7) रासायनिक खाद की कमी : भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर

आधारित है। कृषि की उत्पादन क्षमता में वृद्धि के लिए खाद आवश्यक है। भारत मे खाद का नितात अभाव है। परम्परागत खाद जैसे गोबर को जलाकर राख कर दिया जाता है। रासायनिक खाद का उत्पादन मांग की तुलना मे कम है। देश मे बुआई के समय रासायनिक खाद की किल्लत रहती है। बडे पैमाने पर खाद की कालाबाजारी होती है। किसानों को महगे दामो पर खाद खरीदना पडता है। राजस्थान में अक्टूबर-नवम्बर 1998 में रबी फसल बुआई के समय रासायनिक उर्वरकों का अभाव और उसकी कालाबाजारी के कारण किसानों में आक्रोश था इसका प्रभाव 25 नवम्बर 1998 के राज्य के विधान सभा चुनाव पर पडा। वर्ष 1990-91 में उर्वरक उत्पादन 9,045 हजार टन, उर्वरक आयात 2,758 करोड रुपए तथा उर्वरक सब्सिडी 4,389 करोड रुपए थी। वर्ष 1995-96 में उर्वरक उत्पादन 11,335 हजार टन, उर्वरक आयात 1,935 करोड रुपए तथा उर्वरक सब्सिडी 6,235 करोड रुपए थी। रासायनिक खाद का उपयोग 1990-91 में 12.5 मिलियन टन तथा 1995-96 में 13.9 मिलियन टन था। भारत की तुलना में प्रति एकड रासायनिक खादों का उपयोग इंग्लैण्ड, जापान, जर्मनी, बेल्जियम, नीदरलैण्ड आदि देशों मे कई गुना अधिक होता है।

भारत में रासायनिक उर्वरकों की कमी के साथ उत्तम बीजों व कीटाणुनाशक औषधियों का भी अभाव है। यद्यपि भारत में हरित क्रांति की शुरुआत काफी पहले की जा चुकी है। किन्तु इसका लाभ सीमित क्षेत्र को ही प्राप्त हो सका है। उत्तम बीजो की उपलब्धि और पौध सरक्षण औषधिया सामान्य किसान की पहुच से बाहर है।

(8) संगठनात्मक बाधाएं : स्वतंत्रता से पूर्व भारत की भूमि व्यवस्था दोषपूर्ण थी। अंग्रेजों के शासन काल मे जागीरदारी और जमींदारी प्रथा प्रचलित थी। दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था के कारण भारत की कृषि पिछड गई। जागीरदारों तथा जमींदारो ने भारत के किसानो का मनमाफिक शोषण कर के उन्हें इतना कमजोर बना दिया कि दशको तक किसान आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हो सका। स्वतंत्र भारत में अब जमींदारी और जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन हो चुका है किन्तु इसका परोक्ष प्रभाव आज भी दृष्टिगोचर होता है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भूमि सुधार कार्यक्रमों को गति नहीं मिल सकी। आज भी देश में भूमिहीन किसानों की बहुलता है। कुछ कृषक परिवारों के पास आवश्यकता से अधिक भूमि है। भूमि की असमानता कृषि विकास में बाधा है। कानूनों का सही क्रियान्वयन नहीं हो पाने के कारण भूमि सुधार कार्यक्रमो को गति नहीं मिली। भूमि का उपखडन और उपविभाजन कृषि विकास में बाधक है। भारत के खेत छोटे-छोटे टुकड़ों मे विभाजित हो

गए हैं और विभाजन का क्रम जारी है। खेतो के छोटे-छोटे टुकडो मे श्रम व पूजी का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता है। भारत मे वर्ष 1980-81 मे कुल जोतो मे 56 5 प्रतिशत सीमान्त जोतो (एक हैक्टेयर से कम) का, 18 प्रतिशत लघु जोतो (एक से 2 हैक्टेयर तक) का, 14 प्रतिशत अर्द्ध मध्यम जोतो (2 से 4 हैक्टेयर तक) का, 9.1 प्रतिशत मध्यम जोतो (4 से 10 हैक्टेयर तक) का तथा 2 4 प्रतिशत बडी जोतो (10 हैक्टेयर व अधिक) का था। भूमि के उपविभाजन और उपखडन की बुराई को चकबदी के माध्यम से रोका जाना चाहिए।

(9) सामाजिक कुरीतियॉ : भारत की बहुसख्यक जनसख्या निरक्षर होने के कारण रूढियादिता मे डूबी हुई है। देश का किसान भाग्यवादिता और परम्परागत दृष्टिकोण के कारण खेती के आधुनिकतम तरीको को नहीं अपनाता है। अधिकतर किसान रीति रिवाजो को निभाने मे वित्तीय कठिनाईयो का शिकार हो जाता है। किसान कृषि विकास पर पूरा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। भारत जनसख्या विस्फोट की स्थिति मे पहुच चुका है। बढती जनसख्या आर्थिक विकास मे बडी बाधा है। बहुत सी जनसख्या जीवन बसर के लिए कृषि पर निर्भर है। स्वतत्रता के पाच दशक पश्चात् भी जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना में कृषि तथा सबधित क्षेत्र की अधिक भागीदारी है। प्रोफेसर स्मेल के अनुसार भारत मे प्रति सो एकड भूमि पर 148 व्यक्ति आश्रित है। जबकि पौलेण्ड मे 31 व्यक्ति तथा ब्रिटेन मे 6 व्यक्ति ही आश्रित है। कृषि विकास के पिछडेपन मे निम्न उत्पादकता, ग्रामीण ऋणग्रस्तता, अपर्याप्त परिवहन साधन, भण्डारण क्षमता का अभाव, निरक्षरता, ग्रामीण परिवेश मे लघु एव कुटीर उद्योगों का अभाव, मूल्यो मे उच्चावचन आदि कारण भी बाधक है। भारत मे कृषि की दशा सुधारने के लिए ग्रामीण अवसरचना का विकास आवश्यक है। इसके लिए कृषि क्षेत्र मे अधिक पूजी निवेश की आवश्यकता है। अर्थव्यवस्था मे कृषि की उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए पचवर्षीय योजनाओ मे कृषि व सबद्ध क्षेत्र परिव्यय वर्तमान स्तर (4.2%) से दो गुना किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

1. भारत, 1994.

9

हरित क्रांति में बदलाव की आवश्यकता

भारत मे असख्य गरीब किसानो को हरित क्राति का अपेक्षित लाभ नहीं मिला है। हरित क्राति से पूंजीवादी कृषि को बढावा मिला है। बडे किसानो के दबाव मे तथा कृषि उत्पादों की बढी लागतो के कारण प्रत्येक वर्ष फसलो के न्यूनतम समर्थन मूल्य बढा दिए जाते हैं। इससे बडे किसान तो लाभान्वित होते हैं, किन्तु गरीब किसानो की रीढ टूट जाती है। उसका खेत तो इतना छोटा है कि कडी मेहनत के बावजूद परिवार के वर्ष पर्यन्त उदरपूर्ति के लिए खाद्यान्न उत्पादन नहीं हो पाता है। उसकी पूर्ति बाजार से खरीद कर पूरी करनी पडती है। कृषि उत्पादो की बढी हुई कीमतो की मार गरीबो को सहनी पडती है। गरीब किसानो के हितो को दृष्टिगत रखते हुए खाद्यान्नो और उर्वरको पर सब्सिडी का प्रावधान किया हुआ है तथा समय-समय पर सब्सिडी मे बढोतरी भी की गई है। किन्तु सब्सिडी का लाभ गरीब तबको को नहीं मिला। हरित क्राति से देश मे क्षेत्रीय और आर्थिक विषमता को बढावा मिला है। हरित क्राति से कुछ ही फसलो का उत्पादन बढा है और बढा हुआ उत्पादन भी विश्व स्तर से पीछे है। हरित क्राति से समृद्ध क्षेत्रो मे और समृद्धि बढी जबकि कृषि विकास की विपुल सभावनाए वाले क्षेत्र आज भी प्यासे है। स्पष्ट है हरित क्राति के क्रियान्वयन मे खामी रही है। हरित क्राति को लागू किए जाते समय समूचे देश के हित को ध्यान मे नहीं रखा गया है। नतीजन अनेक क्षेत्र के किसानो मे आक्रोश है तथा वे आन्दोलन की ओर उन्मुख है। भारत कृषि प्रधान देश है यहा की भोगोलिक स्थिति विविध फसलो के उत्पादन के लिए अनुकूल है और उत्पादन होता भी है, किन्तु हरित क्राति मे सर्वोच्च प्राथमिकता गेहू के उत्पाद वृद्धि पर ही दी गई। वाणिज्यिक फसलें हरित क्राति से कम लाभान्वित हुई. इसका विपरीत प्रभाव

अर्थव्यवस्था पर पड़ा। कृषि आधारित उद्योगो के लिए कच्चे माल की कमी बनी रही इसके अलावा खाद्य तेल का बडे पैमाने पर आयात जारी है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिस गेहू फसल को हरित क्राति में प्रमुखता से सम्मिलित किया गया है इसके निर्यात की स्थिति में भारत नहीं पहुच पाया है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य मे भारतीय कृषि

विश्व परिप्रेक्ष्य मे भारत की कृषि आज भी बहुत पीछे है। हरित क्राति की ढेरो विफलताए अर्थव्यवस्था मे दृष्टिगोचर होती हैं। भारत मे हरित क्राति को लागू किए तीन दशक से अधिक का समय बीत चुका है। किन्तु विश्व के देशों से तुलना करे तो भारत अनेक फसलो के प्रति हैक्टेयर उत्पादन के मामले मे पिछडा हुआ है। भारत मे फसलो का उत्पादन विश्व और एशिया औसत से कम है। भारत फसलों के उत्पादन मे जनाधिक्य वाले देश चीन से भी पीछे है। वर्ष 1995 मे भारत मे चावल का प्रति हैक्टेयर औसत उत्पादन 29 क्विटल था, जबकि विश्व औसत 37 क्विटल, एशिया औसत 38 क्विटल, चीन मे 60 क्विटल तथा जापान मे 68 क्विटल था। गेहूँ का प्रति हैक्टेयर औसत उत्पादन 25 क्विटल था जबकि विश्व औसत 25 क्विटल, एशिया औसत 26 क्विटल, चीन में 35 क्विटल तथा जापान में 36 क्विटल था। भारत ने हरित क्राति के कारण गेहूँ के प्रति हैक्टेयर उत्पादन मे विश्व और एशिया के औसत उत्पादन की बराबरी कर ली है। किन्तु चावल का उत्पादन विश्व और एशिया के औसत उत्पादन से कम है। गेहू का उत्पादन बढने के कारण भारत मे हरित क्राति को गेहू क्राति के नाम से जाना जाने लगा है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद मे कृषि की भागीदारी अधिक है जो पिछडेपन की स्थिति को दर्शाती है। विश्व के विकसित देशो की अर्थव्यवस्थाओ मे निर्माण क्षेत्र की भूमिका अधिक है। विकासशील देशो मे कृषि की भूमिका अधिक है और कृषि क्षेत्र मे सिचाई सुविधाओं का अभाव है। परिणामस्वरुप मानसून के अनुकूल नहीं होने की दशा मे विकासशील देशो की अर्थव्यवस्था लडखडा जाती है। वर्ष 1991 में सकल घरेलू उत्पाद मे कृषि उत्पादन का योगदान भारत में 31 प्रतिशत, बाग्लादेश मे 30 प्रतिशत, केन्या मे 29 प्रतिशत, पाकिस्तान में 25 प्रतिशत, जाम्बिया मे 34 प्रतिशत था। जबकि मैक्सिको मे 8 प्रतिशत ही था। भारत मे प्रति व्यक्ति खाद्य उत्पादन सूचकाक विश्व के अनेक देशो की तुलना मे कम है। वर्ष 1978-81 को आधार वर्ष मानते हुए 1991 मे भारत मे खाद्य उत्पादन सूचकाक 119 था जबकि यह ब्राजील मे 132, चीन में 138, इण्डोनेशिया में 135 तथा नेपाल मे 127 था। हरित क्राति लागू होने के बाद भी खाद्य आयात निर्भरता दर अधिक है। वर्ष

1988-90 के दौरान भारत में खाद्य आयात निर्भरता दर 18 4 प्रतिशत थी जबकि यह अर्जेन्टीना मे 0 4 प्रतिशत, ब्राजील मे 3 1 प्रतिशत, चीन मे 4 7 प्रतिशत तथा इण्डोनेशिया मे 5 7 प्रतिशत थी।

सीमित दायरा

हरित क्राति समूचे देश मे लागू नहीं की गई। हरित क्राति का लाभ केवल ऐसे क्षेत्रों को मिला जहा सिचाई सुविधा पर्याप्त मात्रा मे है। हरित क्राति का लाभ पजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश एव मध्य प्रदेश के कुछ चुने हुए क्षेत्रो को ही मिला। पिछडे हुए क्षेत्र आज भी हरित क्राति के लाभ से वचित है। इसके अलावा हरित क्राति मे कुछ ही फसलो को सम्मिलित किया गया है। हरित क्राति मे गेहूँ उत्पादन वृद्धि पर विशेष बल दिया गया है। नतीजन खाद्यान्न उत्पादन मे गेहूँ का भाग बढता गया। प्रति हेक्टेयर गेहूँ उत्पादन मे वृद्धि हुई। खाद्यान्न उत्पादन मे गेहूँ का भाग *1960-61 मे 13 41 प्रतिशत था जो बढकर 1991-92 मे 33 07 प्रतिशत* तक जा पहुचा। हरित क्राति "गेहूँ क्राति" के नाम से चर्चित हुई। हरित क्राति का थोडा लाभ चावल, ज्वार, बाजरा तथा मक्का को भी मिला। जबकि हरित क्राति मे वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन पर कम ध्यान दिया गया। भारत मे तिलहन, दलहन व वाणिज्यक फसलो के उत्पादन का अभाव है।

खाद्यान्न आयात

हरित क्राति के बाद भी भारत मे खाद्यान्न उत्पादन मे उच्चावचन की प्रवृत्ति व्याप्त है। मानसून के अनुकूल नहीं होने की दशा मे खाद्यान्न अभाव का सामना करना पडता है। खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के लिए लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पडी है। हाल के वर्षो मे खाद्यान्न का आयात हरित क्राति की सफलता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। भारत मे अनाज और अनाज उत्पाद का आयात 1993-94 मे 290 करोड रुपए, 1994-95 मे 92 करोड रुपए तथा 1995-96 मे 80 करोड रुपए था। हरित क्राति लागू किए जाने के बाद देश मे उन्नत बीज, कीटनाशको तथा रासायनिक उर्वरको की माग तीव्रता से बढी है। किन्तु इन पदार्थों का उत्पादन माग के अनुरूप नहीं बढा। भारत रासायनिक उर्वरको का बडे पैमाने पर आयात करता है। उर्वरक आयात 1990-91 मे 2,758 हजार टन था जो बढकर 1995-96 मे 4,008 हजार टन तक जा पहुचा। इसी प्रकार उन्नत बीज व कीटनाशको का भी देश मे अभाव है।

बदलाव की आवश्यकता

हरित क्राति की अनेक खामियो के बावजूद भारत कृषि की नवीन

व्यूहरचना को आत्मसात करके खाद्यान्न उत्पादन को बढाने मे सफल हो सका है। भारत मे खाद्यान्न का उत्पादन हरित क्राति लागू किए जाने से पूर्व 1960-61 मे केवल 82 मिलियन टन था जो बढकर 1997-98 मे 194 मिलियन टन तक जा पहुचा। आज भारत हरित क्राति के कारण देश के एक अरब से अधिक लोगो के लिए खाद्यान्न मुहैया कराने की स्थिति मे पहुच सका है। यह कम महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं है। किन्तु कृषि प्रधान देश होने के नाते खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरता अधिक महत्त्व नहीं रखती। नियोजन काल के पाच दशक पूरे होने के बाद भी कृषि भारत की अर्थव्यवस्था को अधिक मजबूती नहीं दे सकी। अर्थव्यवस्था की सुदृढता तो दूर की बात खेत जोतने वाले किसान की माली हालत तक मे अपेक्षित सुधार नहीं आया है। ऐसी स्थिति मे हरित क्राति के क्रियान्वयन मे कारगर बदलाव की महती आवश्यकता है। गरीब किसान के लाभान्वित हुए बिना हरित क्राति की प्रासगिकता नहीं है।

गरीब किसानो को प्रोत्साहन

देश मे गरीबी की समस्या विषम है। शहरो की तुलना मे गावो मे गरीबी अधिक है। भूमिहीन और सीमान्त कृषको की स्थिति दयनीय है। इन्हे हरित क्राति का अपेक्षित लाभ नहीं मिला। हरित क्राति में प्रयास ऐसे होने चाहिए कि गरीब किसान की आर्थिक स्थिति सुधरे। हरित क्राति मे गरीब किसानो को सस्ते दामो पर बीज, खाद मुहैया कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए। गरीब के खेत में सिचाई वास्ते पानी पहुचाने की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। गरीबी के कारण बहुसख्यक किसानो को कृषि सबधी नवीन तकनीक की जानकारी नहीं होती है। ग्राम पचायतो मे नियुक्त कृषि अधिकारी किसानो की मदद कर सकते हैं। कृषि अधिकारियो को समय–समय पर हरित क्राति से सम्बन्धित जानकारी किसानो को देनी चाहिए।

सिचाई सुविधा बिना हरित क्राति की सफलता सदिग्ध है। भारत मे सिचाई विकास की विपुल सभावनाए हैं किन्तु सिचाई विकास को अपेक्षित गति नहीं मिली। विगत वर्षो मे मानसून अनुकूल रहा है इससे कृषि उत्पादन भी बढा है। भारतीय कृषि की मानसून पर निर्भरता को कम करने की आवश्यकता है। ग्राम पचायते सिचाई विकास मे कारगर भूमिका निभा सकती हैं। गावो मे तालाबों के निर्माण पर बल दिया जाना चाहिए। इससे गावो के लोगो को बहुत से लाभ प्राप्त होगे। तालाबो के निर्माण से गाव के लोगो को रोजगार मिलेगा। नतीजन उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा। सिचाई सुविधाओ के विस्तार के साथ गावों के पेयजल सम्बन्धी समस्या भी बडी सीमा तक हल हो सकेगी।

देश मे छोटी-बडी नदियो की कमी नहीं है। अनेक नदियो का पानी बिना उपयोग के बह जाता है। छोटी नदियो के पानी को बाध बनाकर रोका जा सकता है। ग्रामीण विकास पर वर्तमान सरकारो का ध्यान बढा है। बजट मे भी ग्रामीण विकास पर परिव्यय मे वृद्धि का प्रावधान किया जाने लगा हैं। गांवो के लिए आवटित बजट का उपयोग आधारभूत सरचना के विकास के लिए किया जाना चाहिए। किसान की खुशी लहलहाती फसलो पर निर्भर करती है। मानसून और नदियो के पानी से कृषिगत उत्पादन मे क्रातिकारी बदलाव किया जा सकता है। किन्तु उपलब्ध सिचाई सुविधा खामियो से परे नहीं है। नहरो द्वारा सिचाई में बडे किसान लाभ उठा ले जाते हैं। नहरो की छोटी शाखाओ द्वारा सिचाई मे आखिरी छोर वाले किसान अनेक बार सिचाई से वंचित रह जाते हैं। अत व्यवस्था ऐसी हो जिससे सभी किसानो को सिचाई सुविधा मुहैया हो।

कृषि वित्त व्यवस्था

भारत के ग्रामीण परिवेश की गरीबी जगजाहिर है। बैंको के राष्ट्रीयकरण से पूर्व ग्रामीण परिवेश मे बैंकिग सुविधाओ का अभाव था। पंचवर्षीय योजनाओं मे गांवों में बैंक शाखाओ का विस्तार हुआ है। किन्तु बैंको से ऋण प्राप्ति मे भारत का किसान आज भी कठिनाई महसूस करता है। इसका बडा कारण किसानों का निरक्षर होना तथा उनकी गरीबी है। इसके अलावा बैंकों की ऋण प्रक्रिया जटिल है। नतीजन किसान ऋण प्राप्ति मे मध्यस्थो के चंगुल मे फस जाता है। बैंको की जटिल प्रक्रिया और व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण गावो में आज भी सेठ-साहूकारो का प्रभाव है। देश मे सहकारी आन्दोलन को भी अपेक्षित सफलता नहीं मिली। किसानो की आर्थिक स्थिति मे सुधार किए बिना हरित क्रांति का गति पकडना कठिन है। आज किसान को पग-पग पर वित्त सुविधा की आवश्यकता है। आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भ होने के बाद गावो मे बैंक शाखाओ का विस्तार थम गया है। इस प्रवृत्ति के चलते निकट भविष्य मे ग्रामीण परिवेश में साख सुविधाओ का अभाव उत्पन्न हो सकता है। जिसका प्रभाव ग्रामीण परिवेश पर पडे बिना नहीं रहेगा। बदले आर्थिक परिवेश में गावो मे कृषि वित्त की अधिक आवश्यकता होगी। कृषि परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक है कि सरकार ग्रामीण वित्त के क्षेत्र मे अपनी भूमिका को कम नहीं करे तथा निजी वित्त को भी बढावा दिया जाना चाहिए।

सहकारी कृषि पर बल

भारत मे कृषि जोत का आकार बहुत छोटा है। जिससे कृषि मे

यंत्रीकरण तथा नवीन तकनीक का कारगर उपयोग नहीं हो पाता है। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे 1992 के अनुसार ग्रामीण परिवेश मे 11 प्रतिशत परिवार पूर्ण रूप से भूमिहीन है और 31 प्रतिशत ऐसे परिवार हैं जिनके पास 0 2 हैक्टेयर से कम भूमि है अर्थात् 42 प्रतिशत परिवार या तो भूमिहीन हैं या उनके पास 0 2 हैक्टेयर से कम भूमि है। छोटी कृषि जोत वाले किसान सहकारी कृषि को आत्मसात कर हरित क्रांति का लाभ अर्जित कर सकते हैं। सहकारी कृषि मे कृषि पद्धतो का क्रय एव उपयोग आसान होता है।

रासायनिक उर्वरकों की पूर्ति

हरित क्राति की सफलता के लिए उर्वरको का उपयोग आवश्यक है। देश मे उर्वरको की माग व पूर्ति मे अन्तराल है। फसलो की बुआई के समय उर्वरको का अभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इससे उर्वरको की कालाबाजारी को बल मिलता है। इन समस्याओ से निपटने के लिए आवश्यक है कि देश मे उर्वरक उत्पादन को बढावा दिया जाए। आज देश मे आर्थिक उदारीकरण का दौर जारी है। निजी क्षेत्र मे उर्वरक उद्योगो की स्थापना को प्रोत्साहित कर उर्वरक उत्पादन मे वृद्धि की जा सकती है। उर्वरक उत्पादन मे वृद्धि के साथ सरकार द्वारा उर्वरको के वितरण की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि निर्धन किसान उचित मूल्यों पर रासायनिक उर्वरको की खरीद कर सके।

भारत मे मिट्टी की विविधता है। हरित क्राति लागू किए जाने से पूर्व किसान परम्परागत खाद का उपयोग बेहिचक करता था किन्तु कृषि मे नवीन प्रौद्योगिकी लागू किए जाने के बाद किसान की अज्ञानता और निरक्षरता कृषि विकास मे बाधा है। आज किसानो को इस बात की जानकारी बहुत कम है कि किस मिट्टी मे कोनसी उर्वरक अधिक उपयोगी है। उपयुक्त रासायनिक उर्वरको का उपयोग नहीं होने पर कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पडता है। इन समस्याओ से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कृषि मिट्टी की जाच की जानी चाहिए। मिट्टी के जाच की जानकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमो के अन्तर्गत किसानो को दी जानी चाहिए। साथ ही किसानो को यह भी बताया जाना चाहिए कि मिट्टी की किस किस्म मे कौनसी रासायनिक उर्वरक का प्रयोग लाभप्रद है। क्षेत्र विशेष की मिट्टी की किस्म और उर्वरको के प्रयोग सबधी जानकारी मीडिया द्वारा प्रचारित की जानी चाहिए। रेडियो और दूरदर्शन द्वारा भी किसानो को अधिकाधिक जानकारी दी जानी चाहिए।

ग्रामीण औद्योगीकरण पर बल

ग्रामीण परिवेश मे बेरोजगारी की समस्या पहले ही गभीर थी। हरित

क्राति लागू किए जाने के बाद यह समस्या और मुखर हो गई। कृषि मे यत्रीकरण को बढावा देने से भी बेरोजगारी बढी। यत्रीकरण के बढने से पहले गावो मे बेरोजगारो के लिए रोजगार के अल्पकालिक अवसर थे। फसलो की कटाई, बुआई, लदान आदि मे श्रमिको को बहुतायत से रोजगार मिलता था। हरित क्राति से समृद्ध किसानो की स्थिति बहुत मजबूत हो गई है किन्तु गरीबो की दयनीयता बढ गई है। ग्रामीण औद्योगीकरण के द्वारा गांवो मे लोगो को रोजगार मुहैया किया जा सकता है। गावो मे कृषि उत्पादो पर आधारित लघु एव कुटीर उद्योगो की स्थापना को बढावा दिया जा सकता है। इसके अलावा गावो मे बडे उद्योगो की भी स्थापना की जानी चाहिए। ग्रामीण औद्योगीकरण के अनेक लाभ दृष्टिगोचर होगे। सबसे बडा लाभ गांवों से शहरो की ओर लोगो का पलायन थमेगा। गावो मे समृद्धि की लहर दौडेगी। गांवों में चहलकदमी बढेगी। गावो मे गैर प्रदूषणकारी इकाइयो की स्थापना अधिक हो। प्रदूषणकारी इकाइयो से गावो की हरियाली पीली पड सकती है।

गांवों की समृद्धि और गरीबो की खुशहाली मे भारत का विकास निहित है। देश के सभी गावो को हरित क्राति का लाभ मिले तो भारत का कायाकल्प होने मे वक्त नहीं मिलेगा।

10

आर्थिक उदारीकरण का बदलता स्वरूप

भारत स्वतत्रता के पचास वर्ष पूरे कर चुका है। इन पचास वर्षों मे आर्थिक नियोजन की आठ पचवर्षीय योजनाए तथा छह वार्षिक योजनाए सम्पन्न हो चुकी। इसमे आर्थिक उदारीकरण के भी दस वर्ष पूरे हो चुके है। पचवर्षीय योजनाए और आर्थिक उदारीकरण की नीतिया देशवासियो को गरीबी और बेरोजगारी की समस्या से निजात नहीं दिला सकी। दुनिया के सर्वाधिक निरक्षर भारत मे है। देश भारी विदेशी कर्ज के बोझ तले दबा हुआ है। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे सामाजिक विकास का क्षेत्र उपेक्षित है।

भारत में 1996-97 मे 29 18 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने क लिए अभिशप्त थी। ग्रामीण क्षेत्रो में 30 55 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रो मे 25 58 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे है। तत्कालीन योजना एवं कार्यक्रम कार्यान्वियन मन्त्री राम नाईक के लोक सभा के लिखित उत्तर अनुसार 1993-94 मे देश में 32 करोड 3 लाख 70 हजार लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे थे। यह सख्या तत्कालीन कुल जनसख्या का 35.97 प्रतिशत बैठती है। वे लोग गरीबी रेखा से नीचे माने जाते है, जिनकी वार्षिक आय 11,000 रुपए से कम है। भारत में गरीबी का बडा कारण बढती बेरोजगारी है। वर्ष 1980 म भारत 1 15 करोड व्यक्ति बेरोजगार थे। बेरोजगारों की सख्या बढकर 1985 में 1.27 करोड व्यक्ति, 1992 में 1 70 करोड व्यक्ति तथा 1995 मे और बढकर 1 87 करोड व्यक्ति हो गई।[1] बेरोजगारी की दर 1992 में 5 33 प्रतिशत तथा 1995 में 5.51 प्रतिशत थी। भारत में 1995 मे रोजगार कार्यालयों की सख्या 895, रोजगार हेतु पंजीकृत व्यक्तियों की संख्या 45841 हजार, रोजगार प्राप्त व्यक्तियो की सख्या 173.3 हजार तथा चालू रजिस्टर में आवेदको की सख्या 37,738 3

हजार थी।[2]

देश मे बेरोजगारो की वास्तविक सख्या कही अधिक है क्योकि सभी बेरोजगार रोजगार कार्यालयों मे पजीकरण नहीं कराते हैं। भारत मे निरक्षरो की भरमार है। वर्ष 1991 मे कुल जनसख्या 84 6 करोड थी जिसमे साक्षर 44 2 करोड तथा निरक्षर 40 4 करोड थे। भारत मे साक्षरता का प्रतिशत 52 21 है। पुरुष साक्षरता 63 8 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 39 4 प्रतिशत है। देश की जनसख्या मे 47 79 प्रतिशत लोग निरक्षर है। पचवर्षीय योजनाओ मे शिक्षा पर कम व्यय किया गया। सातवीं पचवर्षीय योजना मे शिक्षा पर व्यय सकल घरेलू उत्पाद का केवल 3 5 प्रतिशत तथा आठवीं पचवर्षीय मे 3 7 प्रतिशत व्यय किया गया। देश मे निरक्षरो की सख्या को देखते हुए सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम 6 प्रतिशत शिक्षा पर व्यय किया जाना चाहिए।

सयुक्त मोर्चा सरकार का कार्यकाल (1996-97 और 1997-98) राजनीतिक अस्थिरता से ओत-प्रोत रहा। फरवरी 1999 मे बारहवीं लोक सभा चुनाव सम्पन्न हुए। मार्च 1998 मे भाजपा गठबधन सरकार केन्द्र मे सत्तारूढ हुई। 19 मार्च 1998 को अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमत्री पद की शपथ ली। वाजपेयी सरकार को पूर्ववर्ती सरकार से अच्छी अर्थव्यवस्था विरासत मे नहीं मिली। बारहवीं लोकसभा चुनाव तथा केन्द्र मे नई सरकार के सत्तारूढ होने के कारण 1998-99 का केन्द्रीय बजट नियत समय पर पेश नहीं किया जा सका। इसके स्थान पर चार माह के खर्च के लिए 25 मार्च 1998 को लोक सभा मे अन्तरिम बजट पेश किया गया। 28 मार्च 1998 को वाजपेयी सरकार ने विश्वास मत हासिल किया।

नई केन्द्र सरकार ने बिगडी अर्थव्यवस्था की दशा सुधारने के लिए निर्यात वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित किया। इसे दृष्टिगत रखते हुए तत्कालीन वाणिज्य मन्त्री रामकृष्ण हेगडे ने 13 अप्रैल, 1998 को सशोधित निर्यात-आयात नीति की घोषणा की, जिसमे 20 प्रतिशत वार्षिक निर्यात वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है। रिजर्व बैंक ने 1998-99 को पहली छमाही की ऋण व मौद्रिक नीति की घोषणा की। नई नीति में बैंक दर मे 1 प्रतिशत की कटौती कर उसे 9 प्रतिशत कर दिया गया है। नकद सुरक्षित अनुपात (सी आर आर) मे कोई परिवर्तन नही किया गया है। बैंको को जमा तथा ऋण गतिविधियो के सचालन मे ज्यादा आजादी दी गई है। पिछले छह माह से भी कम समय मे बैंक दर 11 प्रतिशत से घटकर 9 प्रतिशत तक आ गई है। बैंक दर मे कमी से व्यावसायिक बैंको की प्रमुख ऋण दरें भी स्वत कम हो

जाएगी जिससे उद्योगों के लिए कर्ज लेना सस्ता हो जाएगा। अब हर बैंक को मियादी जमाओं के आकार के हिसाब से अलग-अलग ब्याज दर की पेशकेश की आजादी रहेगी।

रिजर्व बैंक ने निर्यात के लिए ऋण पुर्नवित्त पूरा सौ फीसदी बहाल कर दिया है। इसके साथ ही मियादी जमाओ की न्यूनतम परिपक्वता अवधि भी 30 दिन से घटाकर 15 दिन कर दी है। सशोधित निर्यात ऋण पुर्नवित्त सुविधा 9 मई 1998 से लागू है। इसके अलावा जहाज दर लदान से पूर्व माल पर दिए जाने वाले 180 दिन तक के निर्यात ऋण की ब्याज दर 12 प्रतिशत से घटाकर 11 प्रतिशत कर दी गई है। भारतीय रिजर्व बैंक ने 30 अक्टूबर 1998 को वित्त वर्ष (1998-99) की दूसरी छमाही की मौद्रिक और ऋण नीति की घोषणा की। नई नीति मे अल्पकालिक उपायो मे किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया है। बैंकिग क्षेत्र मे सुधार के लिए नरसिम्हा समिति की ,दूसरी रिपोर्ट के आधार पर कई दूरगामी सिफारिशे की हैं। बैंकिंग क्षेत्र मे सुधार के संबंध में बैंक ने जोखिम भरी परिसपत्तियो के मुकाबले न्यूनतम पूजी का अनुपात वर्तमान 8 प्रतिशत से बढाकर मार्च 2000 तक 9 प्रतिशत करने की घोषणा की। मुद्रा बाजार को और गहरा बनाने तथा बैंको तथा प्राथमिक डीलरो को ब्याज के उतार-चढाव के जोखिम से निपटने मे समर्थ बनाने के लिए 31 अक्टूबर, 1998 से रैंपो के वायदा मे हाजिर सौदो यानी रेडी फार्वड डील पर न्यूनतम अवधि की पाबन्दी खत्म करने की घोषणा की है। नई नीति मे बैंक ब्याज दरो, नकद सुरक्षित अनुपात (सी आर. आर.) और रैंपो दरो मे किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया है। नई मौद्रिक और ऋण नीति का भारत की अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पडने की सभावना है। वर्ष 1998 मे विश्व आर्थिक मदी से ग्रसित था। इससे पूर्व विश्व 1995, 1980 तथा 1990 मे भी आर्थिक मदी की चपेट मे था। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर डा. विमल जालान के अनुसार वर्ष 1998-99 के दौरान देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर ऊँची थी। भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति दक्षिण-पूर्व एशियाई देशो की तुलना मे बेहतर थी।

केन्द्र सरकार ने 24 अक्टूबर 1998 को अर्थव्यवस्था मे सुधार के लिए नए आर्थिक पैकेज की घोषणा की। आर्थिक पैकेज की महत्त्वपूर्ण बाते इस प्रकार है - भारतीय प्रतिभूति एव विनिमय बोर्ड (सेबी) के दिशा निर्देशो के तहत कम्पनियो को शेयरो की पुर्नखरीद की अनुमति प्रदान करना, कम्पनियो के आपस मे निवेश संबंधी प्रतिबन्धो को हटाना, कम्पनियो के अधिग्रहण के बारे मे न्यायाधीश भगवती की सिफारिशो के अनुरुप कम्पनियो को अधिग्रहीत किये जाने वाले शेयरो की सीमा बढाने की अनुमति प्रदान

करना, सार्वजनिक उपक्रमो के शेयरो की बिक्री के बाद एक महीने मे पारदर्शी विनिवेश योजना की घोषणा, बीमा क्षेत्र मे विदेशी कम्पनियो को अल्पमत की हिस्सेदारी देना, शेयर बाजारो में कागज रहित डीमैट कारोबार और निपटान की वर्तमान प्रणाली मे सुधार, नई कम्पनी अधिनियम और विदेशी मुद्रा प्रबन्ध अधिनियम को शीघ्र पारित कराना तथा प्रस्तावित मनी लाड्रिंग कानून के बारे मे उद्योगो के साथ विचार विमर्श, भारतीय यूनिट ट्रस्ट के वर्तमान (1998) सकट के बावजूद सरकार का पूर्ण समर्थन, देश मे बुनियादी सुविधाओ के विकास के लिए कन्या कुमारी से कश्मीर और सिल्चर से सौराष्ट्र तक सात हजार किलोमीटर के सडक नटवर्क पर 28 हजार करोड रुपए का निवेश, तीन महीने के भीतर नई दूर सचार नीति, देश के ऐसे पाच शहरो की पहचान जहा शत-प्रतिशत विदेशी निवेश से हवाई अड्डो का निर्माण किया जाए, तेल खोज के लिए नई निविदाएँ, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त व्यवस्था मे परिवर्तन के लिए छह सूत्रीय अवधारणा पत्र को तैयार करना, अन्तर्राष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग एजेन्सियो और अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक बैंकों की कार्यप्रणाली मे आमूलचूल सुधार कराने का प्रयास करना, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के पुनर्गठन का प्रयास करना, दोषी प्रवर्तको के खिलाफ तीन माह मे दडात्मक कार्यवाही आदि। सरकार ने 30 अक्टूबर 1998 को बडी परियोजनाओ के माध्यम से करीब 20 हजार मेगावाट क्षमता तक की बिजली घरो की स्थापना के लिए ऊर्जा नीति को मजूरी दी। इसके अलावा सार्वजनिक क्षेत्र की आठ बीमार इकाइयो के करीब ग्यारह हजार कर्मचारियो के लिए स्वैच्छिक सेवा निवृत योजना के तहत 517 करोड रुपए देने की घोषणा की। केन्द्रीय मत्रीमडल ने बी आई एफ आर की सार्वजनिक क्षेत्र की आठ कम्पनियो को बद करने और कर्मचारी देयताए करने के बाद उन्हे निजी उद्यमियो को बेच देने का फैसला किया गया।

नौवीं पचवर्षीय योजना के सशोधित मसौदे मे (10 नवम्बर 1998 को पेश) देश की आर्थिक दशा उत्साहजनक नहीं होने के कारण विकास की औसत दर को 7 प्रतिशत से घटाकर 6 5 प्रतिशत कर दिया गया है। गौरतलब है नौवीं योजना के पहले दो वर्ष (1997-98 और 1998-99) बिना योजना के ही बीत गए। नौवीं योजना दिसम्बर 1998 तक मूर्त रुप नहीं ले सकी थी। योजना के पहले वर्ष 1997-98 मे विकास दर 5 1 प्रतिशत थी। वर्ष 1998-99 की स्थिति लक्ष्य के अनुरुप नहीं मानी जा रही। योजना के शेष तीन वर्षो मे यदि सात प्रतिशत या इससे अधिक की विकास दर पाई जा सकी तभी औसतन 6 5 प्रतिशत विकास दर हासिल की जा सकेगी। विकास दर का लक्ष्य घटाने के बावजूद सरकार ने राष्ट्रीय विकास परिषद्

द्वारा तय बजटीय समर्थन को जस का तस 3,74,000 करोड रुपए रखा है। योजना के संशोधित प्रारूप मे अनाज, कृषि, गृह निर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, ढांचागत सुविधाए व सूचना तकनीक आदि क्षेत्रों की ओर विशेष बल दिया गया है। सामाजिक क्षेत्र के लिए बजट का 60 प्रतिशत हिस्सा रखा जाएगा। विकास के लिए ऊर्जा आवश्यक है। नई ऊर्जा नीति के तहत नौवीं पंचवर्षीय योजना मे एक हजार मेगावाट की तापीय परियोजनाओ तथा 500 मेगावाट की जल विद्युत परियोजनाओं को बढावा दिया जाएगा। नई ऊर्जा नीति में 15 अरब डॉलर का पूंजी निवेश होगा इसका उद्देश्य माग और आपूर्ति के अन्तर को कम करना है।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 9 जनवरी 1999 को नौवीं योजना के मसौदे को मंजूरी दी। नौवीं योजना मे योजनागत व्यय 8,59,000 करोड रुपए तय किया गया है। वर्तमान केन्द्र सरकार ने पूर्ववर्ती केन्द्र सरकार (सयुक्त मोर्चा सरकार) द्वारा पेश किए गए नौवीं योजना के मसौदे में बदलाव किया है। योजना राशि में 16,000 करोड रुपए की कटौती की गई है। योजना के अंतिम वर्ष मे (2002-03) में राजकोषीय घाटा 4 1 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा गया है। योजना के मसौदे मे बचत दर 26 1 प्रतिशत, निवेश दर 28 2 प्रतिशत, चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 2 1 प्रतिशत, निर्यात वृद्धि लक्ष्य वार्षिक आधार पर 11 5 प्रतिशत, आयात वृद्धि 12 2 प्रतिशत, सकल घरेलू उत्पाद के सदर्भ मे कृषि वृद्धि लक्ष्य 3 9 प्रतिशत, आर्थिक वृद्धि लक्ष्य 6 5 प्रतिशत निर्धारित किया है। भुगतान संतुलन के मोर्चे पर चालू खाते का घाटा योजना अवधि में 1,59,800 करोड़ रुपए होगा। नौवीं योजना के मसौदे मे प्रधानमंत्री की विशेष कार्ययोजना पर विशेष बल दिया गया है। विशेष कार्ययोजनाओ के पाच क्षेत्रो यथा खाद्य एवं कृषि, ढाचागत विकास, सूचना प्रौद्योगिकी, जल संसाधन नीति, स्वास्थ्य आवासन एव शिक्षा के लिए 22,300 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है। योजना मे अमर्त्य सेन के विचारो के आधार पर प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया गया है।

नौवीं योजना मे प्राथमिक शिक्षा पर जोर देना सही दिशा मे उठाया गया एक कदम है। किन्तु देश मे गरीबी की समस्या जटिल है। विगत वर्षो मे राजकीय प्रयासो से आकडो के हिसाब से गरीबो की सख्या अवश्य कम हुई है। देश मे चहुंओर नजर डालने पर गरीबी का ताण्डव आज भी दृष्टिगोचर होता है। बडी संख्या मे गरीब दो जून की रोटी मुश्किल से जुटा पाता है। गरीब लोग बचा-कुचा, सडा-गला भोजन खाने को अभिशप्त है। लोग भीख मांगने को मजबूर हैं। गरीब बच्चे रेल गाडियो में झाडू लगाकर

पेट भर रहे हैं। लूले-लगड लोग भीख मागते सब जगह नजर आते है। कडाके की ठड मे लोगों को ठिठुरते हुए देखा जा सकता है। गरीबो के पास आवास तो दूर की बात तन ढकने के लिए वस्त्र तक नहीं हैं। खुले आकाश तले लोग रात बिताते हैं। देश के गरीबो के लिए शिक्षा से पहले रोटी की व्यवस्था करनी होगी। जब गरीब को रोटी मिलेगी, उसका पेट भरेगा तो वह स्कूल जाने की बात सोचेगा। सरकार लाख कोशिश कर ले, गरीबी दूर किए बिना शिक्षा का प्रसार नहीं हो सकता है। गरीबी ही प्रमुख कारण है आजादी के पचास वर्ष बीत जाने के बाद भी आधी जनसख्या निरक्षर है। भारत को समस्याओं से निपटने के लिए सबसे पहले गरीबी पर प्रहार करना होगा। गरीबी कम होने पर शिक्षा का प्रसार होगा, जिससे जनसख्या भी कम हो सकेगी। जनाधिक्य कम होने पर देश विकास की राह पकडेगा।

केन्द्र सरकार ने 28 दिसम्बर, 1998 को उर्वरक सब्सिडी मे भारी वृद्धि की। देशी फास्फेट पर सब्सिडी 3,500 रुपए से बढाकर 4,400 रुपए प्रति टन, आयातित फास्फेट पर सब्सिडी 2,000 रुपए से बढाकर 3,400 रुपए प्रति टन, पोटाश पर सब्सिडी 2,000 रुपए प्रति टन से बढाकर 3,000 रुपए प्रति टन कर दी गई। सरकार के इस निर्णय से सब्सिडी पर होने वाले खर्च मे भारी वृद्धि होगी। उर्वरक सब्सिडी आर्थिक सुधारों से अछूती है। आर्थिक उदारीकरण के दस वर्षो में केन्द्र सरकार सब्सिडी जैसे सवेदनशील मसले पर कटौती सबधी निर्णय नहीं ले सकी। केन्द्र सरकार के उर्वरक सब्सिडी में वृद्धि के निर्णय से राजकोषीय घाटे मे वृद्धि होगी। बढता राजकोषीय घाटा सरकार के लिए पहले से ही सरदर्द बना हुआ है। बढी उर्वरक सब्सिडी का लाभ बडे किसान हडप ले जाते हैं। देश के गरीबों में बडी सख्या भूमिहीन किसानों व सीमान्त कृषकों की है जिनकी माली हालत खस्ताहाल है। बडी सख्या में किसानों के पास जोतने के लिए जमीन ही नहीं है, देश में अनेक गरीब किसान तो बधुआ मजदूरों के रूप में काम करते हैं। ऐसी स्थिति में गरीबों को सब्सिडी का लाभ कहां मिल पाता है उल्टा राजकोषीय घाटे के बढने से बढती हुई महगाई की चपेट में आ जाते हैं। यदि अनावश्यक राजकीय सहायताओं में कमी कर दी जाए तो राजकोषीय घाटा कम होगा इससे मुद्रास्फीति भी नियंत्रित होगी। महगाई के कम होने का लाभ सब गरीबों को मिलता है।

केन्द्र सरकार का सर्वोपरि निर्णय देश की सामरिक सुरक्षा के सदर्भित रहा। भारत ने मई 1998 में राजस्थान के पोकरण में पांच परमाणु परीक्षण किए। भारत के परमाणु परीक्षणो को लेकर विश्व में वावेला मचा। अमरीका ने आर्थिक प्रतिबन्धों की घोषणा की तथा विश्व बैंक ने भारत को दी जाने

वाली आर्थिक सहायता स्थगित की। पाकिस्तान ने भी भारत के परमाणु परीक्षणो के बाद 28 मई, 1998 को परमाणु परीक्षण किए। भारत के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्धों से रुपए की विनिमय दर मे ऐतिहासिक गिरावट आई। परमाणु परीक्षण आच्छादित वातावरण मे वित्त मंत्री श्री यशवत सिन्हा ने एक जून 1998 को लोकसभा मे 1998-99 का केन्द्रीय बजट पेश किया। केन्द्रीय बजट मे कृषि तथा उद्योगो के विकास को प्राथमिकता दी गई। बजट मे स्वदेशी उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाने के प्रयास किए गए हैं। किन्तु नई सरकार राजकोषीय घाटे को नियत्रित करने में सफल नहीं हो सकी। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानो में राजकोषीय घाटा 91,025 करोड रुपए छोडा गया जो सकल घरेलू उत्पाद का 5 6 प्रतिशत है। यूरिया की बढी हुई कीमते वापस लेने तथा आयात शुल्को मे वृद्धि को 8 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत करने से राजकोषीय घाटे के और बढने की सभावना है। वर्ष 1998-99 के लिये कुल केन्द्रीय योजना परिव्यय 1,05,187 करोड रुपए निर्धारित किया गया है। जो 1997-98 के सशोधित योजना परिव्यय से 29 8 प्रतिशत अधिक है। योजना परिव्यय आवटन मे आधारभूत सरचना पर विशेष बल दिया गया है। केन्द्र सरकार ने बीमा क्षेत्र को स्वदेशी निजी कम्पनियो के लिए खोल दिया गया है। यह सरकार का उदारीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

26 जून 1998 को नई गठबधन सरकार ने सौ दिन पूरे किए। सौ दिनो मे नई सरकार ने कई साहसिक कदम उठाए है। इनमें कृषि के लिए योजना राशि मे 58 प्रतिशत की वृद्धि, शिक्षा के लिए 1998-99 के बजट मे 50 प्रतिशत वृद्धि, कमजोर वर्ग के लिए प्रत्येक वर्ष 20 लाख नई आवसीय इकाइयों का निर्माण, फिल्म व्यवसाय को उद्योग का दर्जा, भारतीय कम्पनियो को भारत से टी वी प्रसारण अपिलिंकिग सुविधा, राजस्व बढाने की सरल, समाधान और सम्मान जैसी योजनाए, लघु उद्योगो को अधिक सुविधाए, इस्पेक्टर राज की समाप्ति के लिए कदम, सरकारी नौकरी की पात्रता आयु में 2 वर्ष की वृद्धि आदि मुख्य हैं।

परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य

वित्तीय वर्ष 1998-99 मे अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय थी। अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण आर्थिक सूचको मे गिरावट थी। विश्व बैंक ने भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर निराशाजनक भविष्यवाणी की है। वर्ष 1998-99 मे छह प्रतिशत से अधिक की निर्धारित वृद्धि दर के लक्ष्य को प्राप्त करने की विफलता भारत की अर्थव्यवस्था के समक्ष सबसे बडी चुनौतियां मे से एक

होगी। विश्व बैंक की नौवीं सालाना रिपोर्ट के अनुसार भारत की केन्द्र सरकार द्वारा आर्थिक नीतियों को लागू नहीं करने और कमजोर औद्योगिक प्रदर्शन के कारण भारत की अर्थव्यवस्था की प्रगति धीमी हो गई है। पूर्वी एशिया और जापान की निराशाजनक आर्थिक स्थिति का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ा। भारत के वर्ष 1998-99 के बजट में सार्वजनिक क्षेत्र के घाटे को और अधिक कम करने के सदचित ठोस प्रस्तावों का अभाव था। भारत सरकार ने वैकल्पिक रणनीति के तहत अधिक आबकारी शुल्क, उत्पाद शुल्क और आयात शुल्क के माध्यम से राजस्व बढ़ाने की नीति अपनाई गई है जो गलत दिशा में उठाया गया कदम है। भारत यदि 6 प्रतिशत से अधिक की निर्धारित वृद्धि दर प्राप्त नहीं कर सका तो सार्वजनिक क्षेत्र का कुल घाटा सकल घरेलू उत्पाद (जी. डी. पी.) का 9 प्रतिशत से अधिक बरकरार रह सकता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष पैदा होने वाली सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक होगा। वित्तीय वर्ष 1997-98 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर धीमी होकर 5 प्रतिशत हो गई जबकि इससे पहले के तीन वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था की औसत विकास दर 7.5 प्रतिशत रही थी। इसके लिए कृषि उत्पादन में गिरावट जिम्मेदार थी। वर्ष 1996-97 में गैर कृषि जी. डी. पी. वृद्धि में भी गिरावट शुरू हो गई थी।

वित्त वर्ष 1998-99 में औद्योगीकरण के क्षेत्र में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। वर्ष 1998-99 में औद्योगिक विकास दर 4 प्रतिशत रही। हालांकि प्रारम्भ में इसके करीब 7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया था लेकिन औद्योगिक क्षेत्र में मंदी के चलते ऐसा नहीं हो सका। मौजूदा वित्त वर्ष 1999-2000 के अप्रैल से दिसम्बर में औद्योगिक विकास की दर 6.2 प्रतिशत रही। महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जाने के बावजूद औद्योगिक विकास दर बढ़ नहीं सकी।

निर्यात के क्षेत्र में भारत की स्थिति दयनीय हो गई है। व्यापार घाटे में तीव्र वृद्धि चिन्ताप्रद है। अप्रैल-अक्टूबर 1998-99 में निर्यात 18.87 बिलियन डॉलर था जो गत वर्ष इसी समयावधि की तुलना में 5.08 प्रतिशत कम है। आयातों में तीव्र वृद्धि हुई। अप्रैल-अक्टूबर 1998-99 में आयात 24.67 बिलियन डॉलर था जो गत वर्ष इसी समयावधि की तुलना में 9.35 प्रतिशत अधिक है। अप्रैल-अक्टूबर 1998-99 में व्यापार घाटा 5.76 बिलियन डॉलर तक जा पहुंचा जबकि पिछले वर्ष (अप्रैल-अक्टूबर 1997-98) यह 2.67 बिलियन डॉलर ही था।[1]

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यू. ई. एफ.) के प्रबन्ध निदेशक क्लाउड स्मादजा ने भारतीय उद्योग परिसंघ (सी. आई. आई.) और आर्थिक मंच

द्वारा सयुक्त रूप से आयोजित आर्थिक बैठक मे भारतीय अर्थव्यवस्था की निराशाजनक तस्वीर पेश की। चालू वित्त वर्ष (1998-99) मे भारत का वित्तीय घाटा अनुमानित 5-6 प्रतिशत के मुकाबले 7 प्रतिशत तक पहुचने की संभावना है। सरकार के लिए सार्वजनिक उपक्रमो के शेयरो की बिक्री का लक्ष्य पाना भी संभव नहीं लगता है। भारत मे उत्पादित बिजली का 40 प्रतिशत हिस्सा ऐसे लोगो को उपलब्ध कराया जा रहा है जो इसके बदले कोई शुल्क नहीं देते हैं। कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था मे चहुंओर गिरावट की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक विकास के क्षेत्र की स्थिति तो और भी दयनीय है। प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने भी देश की दयनीय *सामाजिक विकास यथा निरक्षरता, अस्वस्थता, निर्धनता आदि की स्थिति* पर चिन्ता प्रकट की है। भारत की आर्थिक और सामाजिक विकास की दशा सुधारने के लिए प्रभावोत्पादक कदम उठाने की आवश्यकता है। योजनाओ का कुशल क्रियान्वयन बेहद जरुरी है।

भारत मे प्राकृतिक और मानवीय ससाधनो की बहुलता है। यहा विकास की विपुल संभावनाए है। किन्तु कोई देश महज प्राकृतिक संसाधनों के बूते पर तीव्र विकास नहीं कर सकता है। तीव्र विकास के लिए मानव ससाधन के बेहतर प्रबन्धन की आवश्यकता है। भारत मे मानव संसाधन के प्रबन्ध का अभाव है जिससे भारत मे विकास की गति धीमी है। भारत में आर्थिक उदारीकरण के दस वर्ष पूरे हो चुके हैं किन्तु भारत के गरीब और ग्रामीण अचल आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव से दूर हैं। शहरी जनसंख्या का थोडा भाग ही उदारीकरण से जुड पाया है। आर्थिक उदारीकरण के कारण 1998-99 में अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय हो गई है। विभिन्न आर्थिक सकेतको में अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगड गई है। अप्रैल-अक्टूबर 1998-99 में राजस्व व्यय मे 28 5 प्रतिशत वृद्धि, राजस्व आय में केवल 11.7 प्रतिशत वृद्धि, सकल व्यय में 29 प्रतिशत वृद्धि, विनिवेश से आय केवल 225 करोड रुपए, औद्योगिक उत्पादन मात्र 3 6 प्रतिशत वृद्धि, वित्तीय घाटा 7 प्रतिशत से कम, जी. डी पी वृद्धि ■ प्रतिशत से कम, करो से आय मे केवल 8 6 प्रतिशत वृद्धि हुई। भारत की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियो को दृष्टिगत रखते हुए आर्थिक उदारीकरण को गति दी जानी चाहिए। आर्थिक उदारीकरण के मामले में विश्व के देशो का अन्धानुगमन नहीं करना चाहिए। भारत की अर्थव्यवस्था में आन्तरिक मजबूती है। हमे किसी के दबाव मे आने की आवश्यकता नहीं है। आर्थिक सुधारो को सहजता से लागू किया जाना चाहिए। आर्थिक उदारीकरण का लाभ गरीब, अनपढ और बेरोजगारो को भी मिलना चाहिए। इसके अभाव में नवीन आर्थिक सरचना की भारतीय परिप्रेक्ष्य

में प्रासंगिकता नहीं है।

संशोधित निर्यात-आयात नीति और विदेशी व्यापार

बीसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों मे विश्व के अनेक देश आर्थिक संक्रमण के दौर से गुजरे। अधिकतर देशों ने आर्थिक सरचना में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए। आर्थिक सुधारों के कारण विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पडा। विगत वर्षों में मैक्सिको सकट, रूस का विघटन आदि घटनाए चर्चित रही। नब्बे के दशक में आर्थिक सुधारों के कारण दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश "एशियन टाईगर्स" के रूप मे उभरे किन्तु शीघ्र ही इन देशो की अर्थव्यवस्था की स्थिति नाजुक हो गई। इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाईलैण्ड आदि देशों की मुद्राओं का अभूतपूर्व अवमूल्यन हुआ। आर्थिक रूप से मजबूत जापान की मुद्रा "येन" का भी अवमूल्यन हुआ। वर्ष 1998-99 में विश्व आर्थिक मदी की चपेट मे रहा।

विश्व के प्राय सभी देशों ने आर्थिक सुधारों को न्यूनाधिक रूप से लागू किया। भारत ने भी विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करने वास्ते 1991-92 से आर्थिक सुधारों को लागू किया। भारत में आर्थिक सुधारों को लागू किए एक दशक पूरा हो चुका है। इस दौरान अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन किए गए हैं। भारत मे आर्थिक सुधारों के प्रारम्भिक पाच वर्षों में राजनीतिक स्थायित्व के कारण आर्थिक सुधारों को तीव्र गति मिली, किन्तु बाद के वर्षों में राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति रही, बार-बार केन्द्र में सरकारें बदलीं नतीजन आर्थिक सुधारों की गति प्रभावित हुई। किन्तु महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि केन्द्र में सत्तारूढ सभी राजनीतिक पार्टियों ने आर्थिक सुधारों को गति दी। भारत मे आर्थिक सुधारों को सूझ-बूझ के साथ लागू किया गया। आर्थिक सुधारों के लागू करने के मामले में राष्ट्र विशेष के दबाव मे भी भारत नहीं रहा। इसकी सुखद परिणति यह रही कि भारत की अर्थव्यवस्था मैक्सिको, ब्राजील, दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की भाति नहीं बिगडी।

आर्थिक सुधारों जनित विश्वव्यापी मदी का प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर अवश्य पडा है। कारगर प्रयासों के बावजूद भारत के निर्यातों में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप वृद्धि नही हुई। निर्यात में विफलता के कारण सरकार ने 1999-2000 के लिए निर्यात वृद्धि लक्ष्य निर्धारित नहीं किया। गौरतलब है, वर्ष 1998-99 के लिए 20 प्रतिशत निर्यात वृद्धि का लक्ष्य रखा गया जबकि निर्यात वृद्धि दर अप्रैल-जनवरी 1998-99 में केवल 041 प्रतिशत रही। निर्यातों के नहीं बढने से भारत की अर्थव्यवस्था को सकट की स्थिति का

सामना करना पड़ सकता है। भारत का निर्यात 1995-96 में 1,06,353 करोड़ रुपए, 1996-97 में 1,18,817 करोड़ रुपए, 1997-98 में 1,26,286 करोड़ रुपए तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में 1,01,850 करोड़ रुपए था। निर्यातों की तुलना में आयात अधिक बढ़े। आयात 1995-96 में 1,22,678 करोड़ रुपए, 1996-97 में 1,38,920 करोड़ रुपए, 1997-98 में 1,51,553 करोड़ रुपए तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में 1,32,447 करोड़ रुपए (प्राविजनल) था। हाल के वर्षों में व्यापार घाटे ने विगत सभी वर्षों के व्यापार घाटे के रिकार्ड तोड़ दिए। व्यापार घाटा 1996-97 में 20,103 करोड़ रुपए, 1997-98 में 25,268 करोड़ रुपए (प्राविजनल) तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में 30,597 करोड़ रुपए (प्राविजनल) रहा। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में निर्यात वृद्धि दर केवल 11.7 प्रतिशत थी जबकि आयात वृद्धि दर 23.2 प्रतिशत थी। डॉलर में भारत के विदेशी व्यापार की स्थिति और भी दयनीय है। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में निर्यात 24,287 मिलियन डॉलर, आयात 31,583 मिलियन डॉलर तथा व्यापार घाटा 7,296 मिलियन डॉलर था। इसी अवधि में निर्यात वृद्धि दर ऋणात्मक 2.9 प्रतिशत तथा आयात वृद्धि दर 7.1 प्रतिशत थी।

निर्यात आयात और व्यापार घाटा

(मिलियन डालर)

वर्ष	निर्यात	आयात	व्यापार घाटा	निर्यात वृद्धि दर	आयात वृद्धि दर
1995-96	31797	36670	-4881	20.7	28.0
1996-97	33470	39133	-5663	5.3	6.7
1997-98	35006	41484	-6478	4.6	6.0
1998-99 (प्रा)	33659	41858	-8199	-3.9	0.9
1999-2000 (अप्रैल-दिस.)	27419	34458	-7039	12.9	9.0

स्रोत, *इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99, 1999-2000, एस-82.

निर्यातों के तेजी से नहीं बढ़ने के कारण विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी घटी है। वर्ष 1996 में विश्व निर्यात 50,82,220 मिलियन डॉलर था जिसमें भारत का निर्यात 33,470 मिलियन डॉलर था। विश्व निर्यात में भारत का भाग केवल 0.7 प्रतिशत था। निर्यातों के आयातों की तुलना में तेजी से नहीं बढ़ने के कारण व्यापार घाटा बेतहाशा बढ़ा। इससे विदेशी मुद्रा

भण्डार पर दबाव बढ़ा है। यद्यपि वर्तमान मे विदेशी मुद्रा भण्डार सतोषप्रद स्थिति में है। जनवरी 2000 में भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार 31,941 मिलियन डॉलर था। निकट भविष्य मे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मे तेल की कीमते बढने की सभावना है। भारत तेल का बडा आयातक देश है। तेल की कीमते बढने से तेल पूल घाटा और बढेगा।

भारत से निर्यातो को बढाने के लिए समय-समय पर निर्यात-आयात नीति की घोषणा की गई। नियोजन काल के प्रारम्भिक वर्षों में निर्यात-आयात नीति की घोषणा वार्षिक आधार पर की जाती थी। "एक्जिम नीति" की वार्षिक आधार पर घोषणा से निर्यातको व आयातको मे अनिश्चितता बनी रहती थी। नब्बे के दशक मे पचवर्षीय एक्जिम नीति की घोषणा की जाने लगी। केन्द्र सरकार ने 1997 मे निर्यात-आयात नीति (एक्जिम नीति) 1997-2002 की घोषणा की। इस पचवर्षीय एक्जिम नीति मे 13 अप्रैल 1998 को महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो की घोषणा की। नीति मे परिवर्तनो का मुख्य उद्देश्य निर्यात वृद्धि तथा औद्योगिक उत्पादन में आई गिरावट को रोकना था। हाल ही 31 मार्च 1999 को तत्कालीन वाणिज्य मत्री रामकृष्ण हेगडे ने 1999-2000 के लिए सशोधित निर्यात-आयात नीति की घोषणा की। इसमें विदेशी व्यापार सबधी अनेक नीतिगत कदम उठाए गए हैं। विदेशी व्यापार मे उदारीकरण की प्रक्रिया को आगे बढाते हुए 894 मदो को आयात की मुक्त सूची में रखने और 414 अन्य मदों को विशेष आयात लाइसेस सूची में रखने का फैसला किया गया है। अब केवल 667 मदे ही प्रतिबधित सूची में बची हैं। गौरतलब है कि 1997 में 2,714 वस्तुऐ प्रतिबन्धित सूची में थी। प्रतिबधित सूची के घटने का प्रभाव स्वदेशी उद्योगो पर पड़ेगा। भारतीय उद्योगो की स्थिति पहले ही दयनीय है। उनमे अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता कम है। भारतीय उद्योगो को प्रतिस्पर्धा मे टिके रहने के लिए कडी मेहनत करनी होगी।

निर्यातो के मोर्चे पर स्थिति को सुधारने के लिए सभी निर्यात प्रसस्करण क्षेत्रो को मौजूदा विश्व व्यवस्था के अनुसार मुक्त व्यापार क्षेत्रों में बदल दिया जाएगा। इसके अलावा नीति में ग्रीन कार्ड, स्वर्णिम स्तर प्रमाण पत्र, अग्रिम लाईसेंस आदि का प्रावधान किया गया है। उत्पादन का 50 प्रतिशत या कम से कम एक करोड रुपए प्रतिवर्ष निर्यात करने वाले निर्यातकों को सुविधाए देने लिए "ग्रीन कार्ड" जारी किया जाएगा। जिन निर्यातको ने निर्यात घरानो, व्यापार घरानो, स्टार व्यापार घरानो, सुपर व्यापार घरानों का दर्जा लगातार तीन वर्षो तक प्राप्त कर लिया है उन्हे स्वर्णिम स्तर प्रमाण पत्र दिया जायेगा जिससे वे ऐसा स्तर प्राप्त करने पर

मिलने वाले लाभ निरन्तर प्राप्त करने के हकदार होंगे। चाहे बाद के वर्षों मे उनका निर्यात निष्पादन कम ही क्यो न हो। एक करोड से अधिक का कारोबार करने वाले निर्यात घरानों और विनिर्माताओ को वार्षिक अग्रिम लाइसेस जारी करने का प्रावधान किया गया है।

संशोधित एक्जिम नीति मे ड्यूटी एनटाइटलमेंट पास बुक योजना (डी. ई. पी. बी) तथा एक्सपोर्ट प्रमोशन केपिटल गुड्स (ई पी. सी जी) मे भी परिवर्तन किया गया है। पिछले वर्ष के कार्य निष्पादन के आधार पर निर्यात पूर्व डी. ई पी बी. क्रेडिट व हकदारी को 5 प्रतिशत से बढाकर 10 प्रतिशत कर दिया है। रसायन प्लास्टिक और कपडा क्षेत्रो मे निर्यात सवर्द्धन के लिए ई पी सी जी योजना के लिए प्रारम्भिक सीमा 20 करोड से घटाकर एक करोड रुपए कर दी गई। नई सशोधित निर्यात आयात नीति 1 अप्रैल 1999 से लागू हो गई है।

संशोधित एक्जिम नीति आर्थिक उदारीकरण की ओर बढा हुआ कदम है। इसमे किए गए परिवर्तनो से निर्यातो मे वृद्धि की आशा की जाती है। विगत वर्षों मे रुपए के निरन्तर अवमूल्यन के बावजूद निर्यातो मे वृद्धि नहीं होना चिन्ताप्रद बात है। इसका कारण अनेक देशों का आर्थिक सकट से नहीं उभर पाना रहा। दूसरे देशो की मुद्राओं के अवमूल्यन के कारण रुपए के अवमूल्यन का प्रभाव फीका पडा। हाल के दिनो मे (1998-99) निर्यातों मे धीमी वृद्धि भारत की जटिल समस्या है। निर्यातों मे वृद्धि के लिए निर्यात संवर्द्धन पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय उत्पादो को आधुनिकतम तकनीक से सुसज्जित किया जाना चाहिए। उत्पाद की कम कीमत और उच्च किस्म से निर्यातो को गति दी जा सकती है।

सन्दर्भ

1. *कुरुक्षेत्र*, मई 1998.
2. *वार्षिक रिपोर्ट*, 1996–97, श्रम मंत्रालय भारत सरकार।
3 *दी इकोनॉमिक टाइम्स*, नई दिल्ली, 4 दिसम्बर, 1998

11

विश्व व्यापार संगठन का भारतीय कृषि पर प्रभाव

हाल ही के वर्षों मे विश्व व्यापार सगठन का आविर्भाव विश्व की महत्त्वपूर्ण आर्थिक घटना है। विश्व के अनेक देशो की अर्थव्यवस्था पर विश्व व्यापार संगठन का प्रभाव पडने की संभावना है। विश्व व्यापार सगठन गैट की तुलना मे अधिक अधिकार प्राप्त और व्यापक सगठन है। वर्ष 1948 मे स्थापित गैट का कार्यक्षेत्र वस्तुओ के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा उसके विस्तार मे आने वाली बाधाओ को कम करने तक सीमित था। नव स्थापित (1995) विश्व व्यापार सगठन वस्तुओ के साथ-साथ सेवाओ के व्यापार का भी नियमन करेगा। इससे बैंकिग व बीमा सबधी सेवाओ का विश्वव्यापी विस्तार होगा। विश्व व्यापार सगठन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे बौद्धिक सम्पदा अधिकार की सुरक्षा करेगा। इसके द्वारा कापीराइट, पेटेण्ट, ट्रेड ब्राण्ड धारको के हितो की रक्षा की जाएगी। कृषि ओर कपडे का व्यापार भी विश्व व्यापार सगठन के दायरे मे सम्मिलित हो गया है। कपडे का वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी बहुतंतु समझौता वर्ष 2005 में चरणो में समाप्त हो जायेगा।

कृषिगत वस्तुओ के व्यापार को सुव्यवस्थित करने के लिए कृषि क्षेत्र मे दी जाने वाली सब्सिडी के लिए विशिष्ट नियमो का प्रतिपादन विश्व व्यापार संगठन के अन्तर्गत किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य मे विश्व व्यापार सगठन का भारत की कृषि अर्थव्यवस्था पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन आवश्यक है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ है। विश्व व्यापार संगठन से कृषि के प्रभावित होने की संभावना है।

कृषि सब्सिडी

विश्व व्यापार सगठन से भारत द्वारा कृषि सबधी नीतियो के पालन और कार्यक्रमों के अमल मे कोई बाधा नहीं पहुचती है। कृषि सबधी समझौते मे जिन अनुशासनों की व्यवस्था है उनमें से कोई भी देश की विकास विषयक योजनाओ पर लागू नहीं होता। कृषि से सबधित आर्थिक सहायता (कृषि सब्सिडी) (उत्पाद-उन्मुख आर्थिक सहायता और उत्पादेत्तर दोनों) की सीमा इतनी ऊची रखी गई है कि उस सीमा को पार करना तो दूर उस सीमा तक भारत के पहुचने की भी कोई सभावना नहीं है।

कृषि सब्सिडी की सीमा कृषि उत्पादन मूल्य के विकासशील देशो के लिए 10 प्रतिशत तथा विकसित देशों के लिए 5 प्रतिशत निर्धारित की गई है। विकासशील देशो को कृषि सब्सिडी में तभी कमी करनी होगी, अगर उनकी कृषि सब्सिडी कृषि उत्पादन मूल्य के 10 प्रतिशत से अधिक हो। इस दृष्टि से भारत को कृषि सब्सिडी में कमी करने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि भारत में दोनों तरह की कृषि सब्सिडी का जोड 10 प्रतिशत से कम है। यह 7 प्रतिशत (अनुमानित) के आसपास है। यदि भारत चाहे तो कृषि सब्सिडी मे वृद्धि कर सकता है। अत यह आशंका निराधार है कि विश्व व्यापार सगठन के अस्तित्व में आने से और डकल प्रस्तावो की स्वीकृति से कृषि सब्सिडी में कमी होगी। इसके विपरीत विकसित देशों को कृषि सब्सिडी में कमी करनी होगी क्योंकि विकसित देशों द्वारा दी जा रही कृषि सब्सिडी कृषि उत्पाद मूल्य के 5 प्रतिशत से अधिक है। विकसित राष्ट्रो द्वारा कृषि सब्सिडी में कमी करने से विकासशील राष्ट्रों को लाभ होगा।

किसानों द्वारा बीजों की बिक्री'

किसान को सुविदित किस्म के किसी भी किस्म के फालतू बीजो का दूसरे किसानो के साथ विनिमय करने की पूरी छूट होगी। किसान को अपने उत्पादन का मनमाफिक उपयोग की पूरी स्वतंत्रता होगी। सरकारी सस्थाए बीजो का विकास करती रहेगी। किसान को इन बीजों का मनचाहा उपयोग करने की पूरी छूट होगी।

बीजो के सबध में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रवानगी तौर पर अनुसधान करके विकसित बीज भी उपलब्ध रहेंगे लेकिन किसानो को इस कोटि के बीज खरीदने की कोई मजबूरी नहीं होगी। इसके अलावा उन्हें एक फसल के बीजों को अगली फसल के लिए बचाकर रखने की आजादी होगी। एकमात्र प्रतिबन्ध अनुसधान करके विकसित बीजो के बारे में होगा कि किसान को इस तरह के बीज स्वयं पैदा करके बेचने का खुला अधिकार नहीं

होगा। इसके लिए उसे उस बीज के आविष्कार करने वाले की अनुमति लेनी होगी।

भारतीय किसान पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के बीज खरीदने का कोई बन्धन नहीं है। विश्व व्यापार सगठन के अस्तित्व मे आने से पूर्व भी बीजो के आयात पर प्रतिबन्ध नहीं था। बीजो का आयात आज भी बिना किसी रुकावट के किया जा सकता है। गौरतलब है बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के पास उन्नत किस्म के बीज हैं जिनके उपयोग से कृषिगत उत्पादन मे बेतहाशा वृद्धि की जा सकती है। उत्कृष्ट किस्म के बीज की सहज उपलब्धता स्वयं भारतीय किसान के हक में है। भारत मे भी कृषि अनुसधान कार्य प्रगति पर है। भारत में कृषि विश्वविद्यालय और कृषि अनुसधान केन्द्र बीजों की नई किस्म विकसित करने के लिए प्रयासरत हैं। किसानो को उन्नत बीज बेरोकटोक उपलब्ध कराए जा रहे है।

कृषि निर्यात में वृद्धि

विश्व व्यापार सगठन की सदस्यता से भारत के कृषि उत्पादो के निर्यात के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा होगी। अब तक औद्योगिक राष्ट्रो द्वारा अधिक सब्सिडी के कारण कृषि उत्पादो का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विकृत अवस्था मे था। गैट समझौते के कारण औद्योगिक राष्ट्रों को कृषि सब्सिडी कम करनी पडेगी और दूसरे देशो के कृषि उत्पादो के लिए अपने द्वार खोलने पडेगे। इससे भारत सरीखे कृषि प्रधान देश अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मे प्रतिस्पर्द्धात्मक स्थिति मे आ जाएगे। विश्व बाजार मे कृषि प्रधान देशों के कृषि उत्पाद तथा कृषि उत्पादो से सम्बन्धित अन्य वस्तुओ की अधिक खपत होगी। औद्योगिक राष्ट्रो द्वारा सब्सिडी कम करने के कारण कृषि उत्पादो की कीमतों मे वृद्धि होगी इससे भारत के किसान निर्यात द्वारा उत्पादो के ऊचे दाम प्राप्त कर सकेगे।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली को खतरा नहीं

भारत मे गरीबो को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चलाई जा रही सार्वजनिक वितरण प्रणाली अथवा उचित दर की दुकानों द्वारा बेचे जा रहे खाद्यान्नों को मिलने वाली सहायता मे कोई कमी नहीं की जाएगी। सरकार गरीबों की सहायता के लिए पूर्व की भाति खाद्यान्नो की सरकारी खरीद, भडारण और बिक्री करती रहेगी।

खाद्यान्न आयात

गैट समझौते में खाद्यान्न व्यापार के लिए मंडी खोलने की व्यवस्था है। इसके अन्तर्गत घरेलू आवश्यकता नहीं होने पर भी खाद्यान्नो का न्यूनतम

आयात करना होगा। गैट समझौता लागू होने के पहले वर्ष में सदस्य देश को खाद्यान्न के घरेलू उपयोग का न्यूनतम 2 प्रतिशत आयात करना होगा। जो दस वर्ष के अन्त तक 3.33 प्रतिशत तक होगा। लेकिन यह व्यवस्था उन देशों पर लागू नहीं होगी जो भुगतान सतुलन की कठिनाइयों का सामना कर रहे है और जिन्होंने वस्तुओं के आयात पर मात्रा सबंधी प्रतिबन्ध लगा रखे है। भुगतान सन्तुलन के मोर्चे पर सकट का सामना कर रहे विकासशील देशों ने विदेशी मुद्रा का खर्च रोकने के लिए आयात पर मात्रा सबंधी प्रतिबन्ध लगा रखे हैं। गैट समझौते के बाद भारत को विदेशों से आयातित खाद्यान्न पर आयात शुल्क लगाने का अधिकार है। ये आयात शुल्क खाद्यान्नों पर 100 प्रतिशत, खाद्य ससाधित वस्तुओं पर 150 प्रतिशत और खाद्य तेलों पर 300 प्रतिशत के आस-पास होंगे। ऊंचे आयात शुल्कों की अदायगी के बाद देशी मडियों में आयातित खाद्यान्न के भाव बहुत अधिक हो जाएंगे। अत यह आशका निराधार है कि गैट समझौते के बाद देश में बडी मात्रा में खाद्यान्न का आयात होगा। गैट समझौते के बाद कुछ देशों यथा जापान, कोरिया को खाद्यान्नों के आयात के लिए अपने बाजार खोलने पडेंगे।

निर्यात सब्सिडी

गैट समझौते के प्रत्यक्ष अनुदान के रूप में दी जाने वाली निर्यात सब्सिडी में कटौती का प्रावधान है जिसके अन्तर्गत निर्यात सब्सिडी में कटौती बजट परिव्यय तथा मात्रा को ध्यान में रखकर निर्धारित करनी होगी। निर्यात सब्सिडी में बजट परिव्यय और मात्रा में 6 वर्ष की अवधि (1993-1999) में क्रमश 36 प्रतिशत तथा 24 प्रतिशत की कटौती करनी होगी। वर्ष 1994 में अमरीका और यूरोपीय आर्थिक समुदाय के बीच यह सहमति हुई कि मात्राओं के रूप में कटौती की प्रतिबद्धता 24 प्रतिशत से घटकर 21 प्रतिशत कर दी जाएगी। विकासशील देशों को आन्तरिक परिवहन और निर्यातों पर माल भाडे की वचनबद्धताओं से मुक्त रखा गया है। भारत में निर्यात सब्सिडी संबंधी ऐसी कोई अनुदान नीति नहीं है जिसमें ऐसी कोई सूची हो जिसमें कटौती की वचनबद्धता को लागू किया जाए। भारत विदेशी विनिमय संकट के कारण निर्यात सब्सिडी का लाभ उठाता रहेगा।

व्यापार से संबंधित बौद्धिक अधिकार की रक्षा

डंकल प्रस्तावों की बुनियादी जरुरत यह है कि तकनीक के हर विभाग में किए जो रहे आविष्कारों का पेटेन्ट कराना होगा जिसका उपयोग अनुमति व अनुबन्ध अन्तर्गत रॉयल्टी चुकाने पर ही करने तथा दुरुपयोग पर रोक की शर्त है। पेटेन्ट की अवधि 20 वर्ष तक मानी गई है। अनिवार्य

लाईसेंस प्रणाली की जो कडी शर्त है उनकी वजह से सीधे स्वत लाईसेंस देने का नियम निरस्त हो जाता है।

पौधों की प्रजातियो के मामले में अन्य सिद्धांतों को अपनाया जायेगा। इस संबंध में सदस्य देशो को दो विकल्प दिये गये है जो निम्नलिखित है -

1. समझौता करने वाले देश पौध किस्म की रक्षा पेटेंट से कर सकते है अथवा
2. "स्वे जेनेरिस" व्यवस्था से अथवा दोनो को मिलाकर कर सकते हैं।

अगर पौधों की किस्मे पेटेंट से सरक्षित की जाती हैं तो सरक्षित बीज की खरीद करने वाला किसान अपनी उपज से अगली फसल के लिए बीज नहीं रख सकता है। "स्वे जेनेरिस" व्यवस्था मे किसान अपनी उपज के एक भाग को अगली फसल के लिए बीज के रूप मे प्रयोग कर सकते है। स्वे जेनेरित व्यवस्था पेटेंट से पृथक् है। स्वे जेनेरिस सरक्षण का अर्थ पेटेंट जैसी प्रणाली से अलग किसी अन्य व्यवस्था से बौद्धिक सम्पदा की रक्षा करना है।

सारतः विश्व व्यापार संगठन के कारण भारत की कृषि पर फिलहाल विपरीत प्रभाव पडने की संभावना नहीं है। गैट समझौता लागू होने के बाद कृषि सब्सिडी में कमी नहीं होगी। औद्योगिक राष्ट्रों द्वारा कृषि सब्सिडी मे कमी करने से भारत से कृषि उत्पादो का निर्यात बढने की संभावना है। भारत को खाद्यान्नों के आयात के लिए मंडियो के द्वार नहीं खोलने पडेगे। सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर गैट व्यवस्था का कोई असर नहीं पडेंगे। खाद्य सुरक्षा के लिए पूर्व की भाति खाद्यान्न भंडार बनाए जाएगे। भारत द्वारा स्वे जेनेरिस प्रणाली आत्मसात करने के कारन किसान अपनी फसल से अगली फसल के लिए बीज रख सकेंगे, उसकी अदला-बदली कर सकेगे और फालतू बीज बेच सकेंगे।

सजग रहने की जरुरत

विश्व व्यापार सगठन के कारन भविष्य में भारत की अर्थव्यवस्था के प्रभावित होने की सभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। गैट समझौते के कारण घरेलू बाजार मे प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होगी। भारत की तकनीक अनेक क्षेत्रों मे बहुराष्ट्रीय कम्पनियो की चुनौती का सामना करने की स्थिति मे नहीं है। हाल ही के वर्षो मे भी भारत विश्व व्यापार संगठन के कारण उत्पन्न हुई अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाने में सफल नहीं हो सका है। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुए पांच वर्ष से अधिक का समय बीत चुका है। भारत की विश्व व्यापार सगठन की सदस्यता ग्रहण करते समय खाद्यान्न

निर्यात और भारत से निर्यात वृद्धि की संभावना व्यक्त की जा रही थी किन्तु गत पाच वर्षो (1995-2000) में निर्यात के मोर्चे पर अपेक्षित सफलता नहीं मिली। गैट समझौते के तहत विकसित राष्ट्र को कृषि सब्सिडी मे कमी करनी पड़ेगी इससे उनका कृषिगत उत्पाद अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में महगा होगा। भारत सरीखे विकासशील राष्ट्र कृषिगत निर्यातों मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा की स्थिति में होगे। किन्तु भारत जनाधिक्य वाला देश है और अर्थव्यवस्था तुलनात्मक रूप से पिछडी हुई है। अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है और कृषि क्षेत्र मे काम ली जाने वाली तकनीक विकसित देशो की तुलना मे कमजोर है। देश मे प्रति वर्ष जितना खाद्यान्न उत्पादन होता है, तीव्रता से बढी हुई जनसख्या हडप कर जाती है। बढती जनसख्या और कृषि के पिछडेपन के रहते हुए भारत विश्व व्यापार सगठन के कारण हाल ही उत्पन्न हुई अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाने की स्थिति मे नहीं है। इस बात की पुष्टि गत दो वर्षो (1997-98 तथा 1998-99) के निर्यात आकडो से सहज हो जाती है। भारत की निर्यात वृद्धि दर (डॉलर में) 1997-98 में 1 5 प्रतिशत तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में ऋणात्मक 2 9 प्रतिशत थी। कृषि और सबद्ध वस्तुओ की डॉलर में निर्यात वृद्धि दर 1997-98 मे ऋणात्मक 5 6 प्रतिशत तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में ऋणात्मक 6 4 प्रतिशत थी। अत. विश्व व्यापार संगठन के कारण भारत को बहुत ही सजग रहने की आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की कडी प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए भारतीय उत्पादो को गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ बनाये जाने की आवश्यकता है। देश में शोध और अनुसंधान को बढावा देकर उत्पादन में नवीन प्रौद्योगिकी को आत्मसात कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बखूबी मुकाबला किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1 योजना, 15 जुलाई 1994

12

परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य

भारत सांस्कृतिक विरासत और विविधताओं के कारण दुनिया मे प्रसिद्ध है। भारत ने स्वातन्त्र्योत्तर पचास वर्षो में बहुआयामी आर्थिक और सामाजिक प्रगति की है। वर्तमान मे भारत खाद्यान्न के क्षेत्र मे आत्मनिर्भर है तथा विश्व के औद्योगिक देशो मे इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। जनहित मे प्रकृति पर विजय पाने हेतु अंतरिक्ष मे जाने वाले देशो में भारत का छठा स्थान है। भारत विश्व की बडी अर्थव्यवस्था है। भौगोलिक रूप से भारत का क्षेत्रफल *31 मार्च 1982 को 32,87,263 वर्ग किलोमीटर था* जो हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों से लेकर दक्षिण के उष्ण कटिबंधीय सघन वनो तक फैला हुआ है। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक 3,214 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम तक 2,933 किलोमीटर है। इसकी भूमि सीमा लगभग 15,200 किलोमीटर है तथा समुद्र तट की कुल लम्बाई 7,517 किलोमीटर है। भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवा और जनसख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा बडा देश है। जनसंख्या और क्षेत्रफल भारत की विशालता के परिचायक हैं।

राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय

राष्ट्रीय आय सामान्य रूप से देश मे निवास करने वाले नागरिको द्वारा उत्पादन के साधनो से अर्जित वह आय है जिसमे से प्रत्यक्ष कर नहीं घटाए गए हैं। यह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की उत्पादन-लागत के बराबर होती है। भारत की राष्ट्रीय आय 1980-81 मे मूल्यो पर 1983-84 मे 1,29,392 *करोड रुपए थी* जो बढकर 1992-93 मे 1,93,222 करोड रुपए हो गई। भारत की राष्ट्रीय आय मे 1983-84 से 1992-93 के बीच 9 वर्षो मे 49.3

प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्तमान मूल्यों पर राष्ट्रीय आय 1983-84 में 1,66,550 करोड रुपए थी जो बढकर 1992-93 मे 5,44,935 करोड रुपए हो गयी। वर्तमान मूल्यो पर राष्ट्रीय आय मे 1983-84 से 1992-93 तक के 9 वर्षो मे 227 प्रतिशत की वृद्धि हुई। नई श्रृंखला (आधार वर्ष 1993-94) के अनुसार साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय आय (राष्ट्रीय उत्पाद) चालू मूल्यो पर 1997-98 मे 12,65,167 करोड रुपए तथा स्थिर मूल्यों पर 9,26,420 करोड रुपए था। भारत मे प्रति व्यक्ति आय का स्तर विकासशील राष्ट्रो से भी कम है। प्रति व्यक्ति आय कम ही नहीं अपितु इसकी वृद्धि धीमी एव अनियमित है। प्रति व्यक्ति आय कम होने का प्रमुख कारण तीव्र गति से बढ रही जनसख्या है। भारत में प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद वर्ष 1980-81 के मूल्यों पर 1950-51 मे 1,127 रुपए था जो बढकर 1990-91 मे 2,222 रुपए, 1991-92 मे घटकर 2,175 रुपए तथा 1992-93 मे थोडा बढकर 2,243 रुपए हो गया। नयी श्रृंखला 1993-94 आधार वर्ष के मूल्यो के अनुसार प्रति व्यक्ति शुद्ध घरेलू उत्पाद 1993-94 में 7,902 रुपए था जो बढकर 1997-98 में 13,193 रुपए (त्वरित अनुमान) हो गया।

चालू मूल्यों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद वृद्धि दर 1995-96 मे 17 1 प्रतिशत तथा 1997-98 मे 10 9 प्रतिशत (त्वरित अनुमान) थी। चालू मूल्यो पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद वृद्धि दर 1995-96 मे 14 7 प्रतिशत तथा 1997-98 में 9 प्रतिशत (त्वरित अनुमान) थी। स्थिर कीमतो पर 1997-98 मे शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद वृद्धि दर 3 प्रतिशत थी।

सकल घरेलू उत्पाद

सकल घरेलू उत्पाद 1993-94 के मूल्यो पर 1995-96 में 926 4 हजार करोड रुपए था जो बढकर 1997-98 मे 1,049.2 हजार करोड रुपए (त्वरित अनुमान) तथा 1998-99 मे 1,110 हजार करोड रुपए (अग्रिम अनुमान) हो गया। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर मे उच्चावचन की प्रवृत्ति व्याप्त है। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1995-96 मे 7 6 प्रतिशत थी जो 1997-98 मे घटकर 5 0 प्रतिशत (त्वरित अनुमान) रह गई। वर्ष 1998-99 के अग्रिम अनुमानों मे सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 5 8 प्रतिशत थी। नियोजन काल में कई बार सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1 प्रतिशत अथवा ऋणात्मक रही। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1957-58 मे ऋणात्मक 1 2 प्रतिशत, 1965-66 मे ऋणात्मक 3 7 प्रतिशत 1966-67 म 1 प्रतिशत, 1971-72 मे 1 प्रतिशत, 1972-73 में ऋणात्मक 0 3 प्रतिशत, 1979-80 मे ऋणात्मक 5 2 प्रतिशत थी। वर्ष 1965 तथा 1971 में भारत पाक युद्ध का

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पडा। आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भ मे खाडी युद्ध जनित आर्थिक सकट के कारण सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1991-92 मे 0 8 प्रतिशत रही। स्वातत्र्योत्तर सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि 1988-89 मे 10 6 प्रतिशत उल्लेखनीय रही। इससे पूर्व सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1983-84 मे 8 2 प्रतिशत तथा 1967-68 में 8 1 प्रतिशत रही थी। वर्ष 1975-76 मे भी घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 9 प्रतिशत उत्साहवर्द्धक थी।

वार्षिक विकास दर

औसत घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1970-1980 के बीच 3 2 प्रतिशत तथा 1980-1995 के बीच 5 5 प्रतिशत थी। भारत आर्थिक वृद्धि की दृष्टि से कई एशियाई देशो से पिछडा हुआ है। औसत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1980-1995 के बीच चीन मे 11 1 प्रतिशत, इण्डोनेशिया मे 6 6 प्रतिशत, कोरिया मे 8 7 प्रतिशत, मलेशिया मे 6 4 प्रतिशत तथा थाईलैण्ड मे 7 9 प्रतिशत थी जो भारत की 5 6 प्रतिशत वृद्धि की तुलना मे अधिक थी। भारत मे विभिन्न पचवर्षीय योजनाओ मे आर्थिक वृद्धि दर उत्साहवर्द्धक नहीं रही। पंचवर्षीय योजनाओ मे आर्थिक वृद्धि दर के निर्धारित लक्ष्य पाप्त नहीं किए जा सके। भारत मे पचवर्षीय योजनाओ और वार्षिक योजनाओ मे वार्षिक मिश्रित वृद्धि दर इस प्रकार रही - स्थिर मूल्यो पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद वृद्धि दर प्रथम योजना मे 3 7 प्रतिशत, द्वितीय योजना मे 4 1 प्रतिशत, तृतीय योजना मे 2 7 प्रतिशत, तीन वार्षिक योजनाओ (1966-69) मे 3.9 प्रतिशत, चतुर्थ योजना में 3 4 प्रतिशत, पाचवी योजना मे 5 प्रतिशत, वार्षिक योजना 1979-80 में ऋणात्मक 4 9 प्रतिशत, छठी याजना मे 5 5 प्रतिशत, सातवीं योजना मे 5 8 प्रतिशत, दो वार्षिक योजनाओ (1990-92) मे 2.9 प्रतिशत तथा आठवीं योजना मे 6 8 प्रतिशत थी।

कृपि की प्रधानता

आर्थिक नियोजन के लगभग पचास वर्षो बाद भी अर्थव्यवस्था मे कृपि की प्रधानता बनी हुई है। जनसख्या का बडा भाग गावो मे निवास करता है तथा कृपि आय का मुख्य स्रोत है। राष्ट्रीय आय का अधिक भाग कृपि से प्राप्त होता है। इसके अलावा निर्यातित आय मे भी कृपि की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यद्यपि भारत की अर्थव्यवस्था मे कृपि की कारगर भूमिका है किन्तु कृपि अन्य देशो की तुलना मे पिछडी है। भारत मे कृपि विकास की गति को तेज करने मे सफल नहीं हो सकी। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृपि तथा संबद्ध क्षेत्र के योगदान मे भारी कमी आई।

सकल घरेलू उत्पाद मे कृपि एव सवद्ध क्षेत्र का योगदान 1950-51

मे 56 4 प्रतिशत था जो घटकर 1995-96 मे 38 1 प्रतिशत तथा 1997-98 मे त्वरित अनुमानो मे 28 7 प्रतिशत रह गया। निर्यात व्यापार मे भी कृषि की भूमिका मे बदलाव आया है। निर्यात मे कृषि तथा सबद्ध क्षेत्र का योगदान 1960-61 में 44 2 प्रतिशत था जो घटकर 1995-96 मे 19 9 प्रतिशत तथा 1997-98 म घटकर 18 8 प्रतिशत रह गया। खाद्यान्न उत्पादन मे अवश्य वृद्धि हुई। खाद्यान्न उत्पादन 1950-51 मे 50 8 मिलियन टन था। आज कृषि देश की विशाल जनसख्या के लिए खाद्यान्न आपूर्ति मे सक्षम है। हाल के वर्षो म खाद्यान्नो का निर्यात भी होने लगा है। वर्ष 1996-97 मे खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन 199 4 मिलियन टन हुआ। किन्तु खाद्यान्न उत्पादन मे उत्तरोत्तर वृद्धि की प्रवृत्ति नहीं आ सकी। वर्ष 1997-98 मे खाद्यान्न का उत्पादन 192 4 मिलियन टन था जो गत वर्ष की तुलना मे 3 5 प्रतिशत कम थी। कृषि उत्पादन वृद्धि दर में भारी उच्चावचन है। कृषि उत्पादन वृद्धि दर 1996-97 मे 9 1 प्रतिशत, 1997-98 मे ऋणात्मक 6 प्रतिशत तथा 1998-99 मे 3 9 प्रतिशत (प्राविजनल) थी। उर्वरको का उपयोग बढने से प्रति हैक्टेयर उत्पादकता बढी है। उर्वरको का उपयोग 1970-71 मे 2 2 मिलियन टन था जो बढकर 1997-98 में 16 5 मिलियम टन (प्राविजनल) हो गया। खाद्यान्नो का प्रति हैक्टेयर उत्पादन 1960-61 मे 710 किलोग्राम से बढकर 1997-98 मे 1,551 किलोग्राम हो गया। भारत कृषि सभाव्यता का पूरा लाभ नहीं उठा सका है। सिचाई सुविधाओ का विकास करके कृषि की दशा को बेहतर बनाया जा सकता है।

औद्योगीकरण को प्राथमिकता

अर्थव्यवस्था के कृषि प्रधान होने के बावजूद उद्योगो को प्राथमिकता दी गई। स्वतत्रता के तुरन्त बाद 1948 मे औद्योगिक नीति की घोषणा की गई किन्तु पचास वर्षो के बाद भी कृषि नीति का आज तक (दिसम्बर 1999) मूर्त रूप नहीं दिया जा सका। नियोजन काल मे उद्योगो को प्राथमिकता देने से भारत की गिनती औद्योगिक विकास की दृष्टि से विश्व के प्रमुख देशो मे की जाती है। नियोजित विकास मे सार्वजनिक उपक्रमो की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। किन्तु सार्वजनिक उपक्रम विनियोजित पूजी पर अपेक्षित लाभ अर्जित नहीं कर पाने के कारण ये जनता पर बोझ सिद्ध हुए। वर्ष 1996-97 मे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो की सख्या 236, विनियोजित पूजी 2,020 2 बिलियन रुपए, सकल लाभ 305 7 बिलियन रुपए, कर पश्चात् लाभ 154 7 बिलियन रुपए था। सार्वजनिक उपक्रमो में 1996-97 मे विनियोजित पूजी पर सकल लाभ 15 1 प्रतिशत तथा शुद्ध पूजी (*Net Worth*) पर कर पश्चात् लाभ 9 4 प्रतिशत था। आज आर्थिक उदारीकरण मे सार्वजनिक

उपक्रमो मे विनिवेश की प्रक्रिया जारी है। वर्ष 1991 की औद्योगिक गति से अर्थव्यवस्था के दरवाजे विदेशी निवेशको के लिए खोल दिए गए है। पिछले कुछ वर्षो मे उदारीकरण की नीतियो के कारण विदेशी प्रत्यक्ष निवेश मे वृद्धि हुई है। भारत मे *विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का वास्तविक प्रवाह* 1991 मे 351 करोड रुपए था जो बढकर 1995 मे 6,820 करोड रुपए तथा 1997 मे और बढकर 16,425 करोड रुपए हो गया। जनवरी-अक्टूबर 1998 मे विदेशी प्रत्यक्ष नियेश का वास्तविक प्रवाह 11,821 करोड रुपए था। वर्ष 1991 से अक्टूबर 1998 तक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का वास्तविक प्रवाह 51,558 करोड रुपए था। भारत मे सर्वाधिक एफ डी आई निवेशक अमरीका, मारीशस, विट्रेन, दक्षिण कोरिया तथा जापान है। दक्षिण कोरिया ने जनवरी 1999 मे सर्वाधिक 30,850 11 मिलियन रुपए का भारत मे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश किया। जनवरी-दिसम्बर 1998 मे अमेरिका ने 35,619 6 मिलियन रुपए, मारीशस ने *31659.87 मिलियन रुपए, ब्रिटेन ने 32,008 44 मिलियन* रुपए, दक्षिण कोरिया ने 3,683 54 मिलियन रुपए तथा जापान ने 12,828 24 मिलियन रुपए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किया।[1] पूजी निवेश के बढने से औद्योगिक उत्पादन को बल मिला है। ओद्योगिक वृद्धि दर 1995-96 मे 12 8 प्रतिशत तक पहुची। औद्योगिक वृद्धि दर 1996-97 मे 5 6 प्रतिशत, 1997-98 मे 6 6 प्रतिशत तथा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 मे 3.5 प्रतिशत थी।

हाल के वर्षो मे भारत के आर्थिक परिदृश्य मे बदलाव की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है। नियोजन काल की तुलना मे आर्थिक उदारीकरण के दौर मे अधिक बदलाव आया है। सातवीं पंचवर्षीय योजना तक आर्थिक वृद्धि दर बहुत धीमी थी। वर्तमान मे आर्थिक विकास में विदेशी पूजी निवेश की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो गई है। किन्तु भारत ने विदेशी पूजी निवेश के मामले मे सावधानी बरती है जिसके परिणामस्वरूप भारत की स्थिति दक्षिण पूर्वी एशियाई देशो की भाति नहीं बिगडी। *भारत के तीव्र आर्थिक विकास के मार्ग* मे आधारभूत सरचना का अभाव बडी बाधा है। भारत आधारभूत ढाचे के विकास मे निजी क्षेत्र और विदेशी निवेशको को अधिक आकर्षित करने में सफल नहीं हो सका है। देश के आधारभूत ढाचे मे सार्वजनिक निवेश को बढाकर आर्थिक विकास की गति तेज की जा सकती है।

सन्दर्भ

1. *दी इकोनोमिक टाइम्स*, नई दिल्ली, 28 जून 1999

13

कारगिल संकट और भारतीय अर्थव्यवस्था

भारत को स्वतंत्रता के पचास वर्षों में पाच युद्धों का सामना करना पडा। स्वतंत्रता के तुरन्त बाद 1947-48 मे पाकिस्तान से युद्ध करना पडा। वर्ष 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया। चीनी आक्रमण से प्रभावित अर्थव्यवस्था का भारत पुनर्निर्माण भी नहीं कर पाया था कि पाकिस्तान ने 1965 में फिर भारत पर आक्रमण किया। वर्ष 1971 मे भारत का पाकिस्तान से तीसरी बार युद्ध हुआ, इसमे बाग्लादेश आजाद हुआ। भारत पर बार-बार युद्ध थोपे गए। जून-जुलाई 1999 में कारगिल मे भारत-पाकिस्तान सीमित युद्ध हुआ। पाकिस्तान सैनिको ने भारत के कश्मीर मे घुसपैठ की। पाक सैनिक भारत की सीमा मे चोरी-छिपे कारगिल, बटालिक, द्रास तक आ घुसे। पाकिस्तान सैनिको को सीमा पार खदेडने के लिए भारत को सैनिक कार्यवाही करनी पडी। विश्व की सर्वाधिक ऊंचाई वाली बर्फीली चोटियो पर भारतीय सेना को युद्ध लडना पड़ा। भारतीय सैनिको ने बहादुरी से लडाई लडी। पाकिस्तान को हर बार युद्ध मे मात खानी पडी, किन्तु उसके इरादे भारत के प्रति अच्छे नहीं है।

युद्ध के परिणाम भयावह होते हैं। अर्थव्यवस्था का हरेक पहलू युद्ध की चपेट मे आता है। विकासशील अर्थव्यवस्था में संसाधनो का अभाव होता है। युद्ध मे संलग्न देश को विकास के लिए निर्धारित किये गये संसाधनो को युद्ध की ओर मोडने पडते हैं। युद्ध सम्बन्धी खर्च के बढने से सामाजिक विकास का पहलू सर्वाधिक प्रभावित होता है। आर्थिक नियोजन के उद्देश्यों मे भी राजनीतिक घटकों को प्राथमिकता दी जाती है। आर्थिक विकास के सूचक प्रभावित होते हैं। युद्ध के कारण मुद्रास्फीति सुरसा के मुह की तरह बढ़ती है। आवश्यक वस्तुओ का अभाव उत्पन्न हो जाता है। कालाबाजारी को

बल मिलता है। युद्ध के भय के कारण लोग आवश्यक वस्तुओं का अधिक स्टॉक करने लगते हैं। अर्थव्यवस्था मे अफरा-तफरी मच जाती है। देश के निर्यात घटने लगते हैं। विदेशी विनिमय कोष खाली होने लगते हैं। कृषि तथा औद्योगिक विकास पर विपरीत प्रभाव पडता है। आधारभूत उद्योगों को तो युद्ध मे निशाना बनाया जाता है। कुल मिलाकर युद्ध से आर्थिक विकास की गति धीमी पड जाती है। अर्थव्यवस्था की बिगडी दशा को सुधारने के लिए सरकार को यौद्धिक पुनर्निर्माण पर बल देना पडता है वित्तीय ससाधनो के अभाव मे देश को विदेशी सहायता की ओर मुखातिब होना पडता है।

आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की बडी अर्थव्यवस्थाओं मे से एक है। किन्तु अर्थव्यवस्था छोटी हो या बडी, युद्ध का प्रभाव तो पडता ही है। किन्तु ऐसे देश जिनके पास युद्ध भार को वहन करने की क्षमता नहीं है उनकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित होती है। इस सदर्भ मे पाकिस्तान का उदाहरण ज्वलत है। कारगिल युद्ध के बाद पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था सकटग्रस्त हो गई है। पाकिस्तान का विदेशी विनिमय कोष रसातल की स्थिति मे पहुच गया।

पाकिस्तान ने भारत को राजनीतिक अस्थिरता के कारण कमजोर समझ लिया परिणामस्वरुप कारगिल मे घुसपैठ की। पाकिस्तान को यह याद रखना चाहिए कि भारत राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से तुलनात्मक रूप से मजबूत देश है। सकट की घडी मे तो भारत की एकजुटता का कोई मुकाबला नहीं। आज भारत किसी भी विदेशी आक्रमण का मुकाबला करने मे समर्थ है। कारगिल से पाक घुसपैठियों को खदेडने में दो माह से थोडा अधिक का समय लगा। भारत ने पाक घुसपैठियों को 26 जुलाई 1999 तक पूरी तरह खदेड दिया। कारगिल युद्ध में देश की रक्षार्थ अनेक सैनिक देश के काम आए। कारगिल युद्ध के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर वित्तीय बोझ बढा है। कारगिल युद्ध की कीमत 9,050 करोड रुपए (अनुमानित) है। इसमे कारगिल सघर्ष के 3,200 करोड रुपए, सियाचीन मे निगरानी 2,200 करोड रुपए (वार्षिक), कारगिल में निरन्तर निगरानी पर होने वाला खर्च 3,650 करोड रुपए सम्मिलित है।[1] भारत सरीखी विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए 9,050 करोड रुपए की रकम मामूली नहीं है। गैर योजनागत खर्च के बढने से पटरी पर लौट रही अर्थव्यवस्था को झटके लग सकते हैं। राजकोषीय घाटा तेज गति से बढ सकता है।

विदेशी युद्ध से अर्थव्यवस्थाए सामान्यतया लडखडा जाती हैं, किन्तु

कारगिल युद्ध के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था के अनेक सूचको विशेषकर मुद्रास्फीति, निर्यात वृद्धि, विदेशी विनिमय कोष, खाद्यान्न उत्पादन आदि मे सुधार की प्रवृत्ति आश्चर्यचकित है। कारगिल युद्ध से अर्थव्यवस्था विकास की पटरी से नहीं हटी। कारगिल युद्ध के बावजूद थोक मूल्य सूचकाक पर आधारित मुद्रास्फीति निरन्तर घटी। दिसम्बर 1998 मे मुद्रास्फीति 63 प्रतिशत थी जो 12 जून 1999 को घटकर 3 प्रतिशत पर आ गई। जुलाई 1999 के प्रथम सप्ताह मे यह 253 प्रतिशत थी। 10 जुलाई 1999 को 17 वर्ष के न्यूनतम स्तर पर मुद्रास्फीति दर 203 प्रतिशत दर्ज की गई। 17 जुलाई 1999 को मुद्रास्फीति की दर 162 प्रतिशत थी जो विगत 20 वर्षो मे सबसे कम थी। नई फर्मो के बाजार मे प्रवेश करने से प्रतिस्पर्धा के बढने के कारण कम्पनिया कीमते नहीं बढा सकीं। इसके अलावा विगत महीनो मे आयात दरो मे कमी की गई। कारगिल युद्ध के दौरान थोक मूल्य सूचकाक आधारित मुद्रास्फीति की दर मे कमी खुशी की बात थी। आम लोगो का वास्ता फुटकर मूल्य सूचकाक आधारित मुद्रास्फीति से होता है जिसमे तेजी का रुख बना हुआ है। शेयर बाजार मे तेजी से अर्थव्यवस्था मे उत्साह का वातावरण था। मुम्बई शेयर बाजार, राष्ट्रीय शेयर बाजार, मुम्बई शेयर बाजार का संवेदी सूचकाक मे उछाल की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई। मुम्बई शेयर बाजार 16 जुलाई 1999 को 4,81033 पर बद हुआ। मई 1999 के अतिम सप्ताह मे कारगिल युद्ध शुरू होने के बाद शेयर बाजार मे उच्चावचन की प्रवृत्ति थी। कारगिल मे आपरेशन विजय की कामयाबी के साथ-साथ शेयर बाजार उछलता रहा। 13 जुलाई 1999 को मुम्बई शेयर बाजार का संवेदी सूचकाक 4,678 28 तक पहुच गया था। इसके तीन दिन बाद उसने सारे रिकार्ड तोड डाले। 28 जुलाई 1999 को मुम्बई शेयर बाजार का सवेदी सूचकाक 4,598 18 तथा राष्ट्रीय शेयर सूचकाक 2,01781 था।

तत्कालीन वाणिज्य मत्री रामकृष्ण हेगडे के अनुसार कारगिल क्षेत्र मे सघर्ष के कारण निर्यात पर कुछ प्रभाव पडा। भारत को 1999-2000 के लिए निर्धारित 11 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कारगर प्रयास करने होगे। वित्त वर्ष 1998-99 के अतिम चार माह मे ही निर्यात मोर्चे पर प्रदर्शन कुछ सुधरा था। इससे पूर्व के महीनो मे नकारात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई थी। वित वर्ष 1998-99 के कुल निर्यात पिछले वर्ष की तुलना मे केवल 37 प्रतिशत ही बढे। मई, जून, जुलाई 1999 मे भारत कारगिल मे पाकिस्तान घुसपैठियो को खदेडने मे युद्धरत था। युद्ध के बावजूद भी इन महीनो मे भारत का निर्यात बढा। वित्त वर्ष 1999-2000 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) मे देश का निर्यात डॉलर मे 65 तथा रुपए मे 12 प्रतिशत बढा। वहीं

घटता हुआ तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसम्बर) तक 3630 करोड डॉलर पर आ गया।'

कारगिल सघर्ष जनित सकट की घडी मे अर्थव्यवस्था की मजबूत बात विदेशी विनिमय कोष का 30 अरब डॉलर से अधिक होना है। इसके अलावा खाद्यान्न उत्पादन भी भरपूर हुआ। वित्त वर्ष 1998-99 मे खाद्यान्न का उत्पादन 20 करोड टन से अधिक आका गया है।

प्रगति के सूचक (Gaining Momentum)

आर्थिक गतिविधियो पर आधारित साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पादन (अनुमानित)	पिछले वर्ष की तुलना मे प्रतिशत परिवर्तन	
	1997-98	*1998-99*
कृषि, वन और मछली	-1 0	7 6
खनन	2 7	-2 0
विनिर्माण	6 8	5.2
विद्युत, गैस और जलापूर्ति	6 6	6.3
निर्माण	4 1	2 1
व्यापार, होटल, यातायात, सचार	5 7	6 7
वित्त, बीमा, व्यापार सेवाए	8 4	6.2
समुदाय, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	13.3	5.4
सकल घरेलू उत्पादन (साधन लागत पर)	5.0	6 0

स्रोत *इकोनॉमिक टाइम्स*, 1 जुलाई 1999.

कृषि विकास से अर्थव्यवस्था मे मजबूती आई है। 30 जून 1999 को केन्द्रीय साख्यिकी सगठन (सी एस. ओ) ने सशोधित आकडे जारी किए हैं। वर्ष 1993-94 के मूल्यो पर 1998-99 मे साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 6 प्रतिशत थी जो पूर्व अनुमानो में 5.8 प्रतिशत आकी गई थी। वर्ष 1998-99 मे कृषि, वन और मछली क्षेत्र मे 7 6 प्रतिशत की अद्भुत वृद्धि हुई। गौरतलब है 1997-98 मे वृद्धि दर नकारात्मक 1 0 प्रतिशत थी। वित्त मत्री यशवत सिन्हा के अनुसार 1999 मे भारत मजबूती के साथ मदी के दौर से निकला। कारगिल सकट का केन्द्रीय बजट पर थोडा बहुत प्रभाव पडा लेकिन *अर्थव्यवस्था की गतिशीलता रुकेगी नहीं*। ब्याज दरो और कीमतो पर कारगिल सकट का प्रभाव नहीं पडा। चालू खाते का घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 1 प्रतिशत तक सीमित है। हाल के वर्षो मे भारत ने आर्थिक

मदी, अमरीकी आर्थिक प्रतिबन्ध, दक्षिण एशियाई सकट जैसी चुनौतिया का मुकाबला किया। वर्ष 1999-2000 के प्रारम्भिक महीनो में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धिया अर्जित की हैं। भारत ने निर्यात वृद्धि मे "एशिया टाइगर्स" को पीछे छोडा। अप्रैल-मई 1999-2000 मे भारत की निर्यात वृद्धि दर 8 प्रतिशत थी जो एशियाई देशो की तुलना मे अधिक थी। चीन मे निर्यात वृद्धि दर ऋणात्मक थी। मलेशिया और ताइवान मे निर्यात वृद्धि दर 4 प्रतिशत थी जबकि अन्य एशियाई देशो मे यह 1 से 2 प्रतिशत के बीच थी। फिलीपाइन्स मे इलैक्ट्रोनिक उद्योग के कारण निर्यात वृद्धि दर अवश्य अधिक थी।[4] कारगिल सकट के अभाव मे भारत की अर्थव्यवस्था बेहतर प्रदर्शन करती। कारगिल सकट का भारत के वित्तीय ससाधनो पर प्रभाव पडा। सीमा पर मडराते खतरे को दृष्टिगत रखते हुए भारत के लिए रक्षा खर्च मे वृद्धि करना जरुरी हो गया है। बढते रक्षा खर्च का आर्थिक विकास पर प्रभाव पडना स्वाभाविक है। विगत वर्षो मे भारत के रक्षा खर्च मे वृद्धि हुई है। किन्तु अनेक एशियाई देशो की तुलना मे भारत का रक्षा खर्च कम है।

भारत पर विदेशी आक्रमण का खतरा मडराता रहा है। ऐसी स्थिति मे देश की सुरक्षा सर्वोपरि है। पडोसी देशो ने यौद्धिक साजो-सामान का जखीरा खडा कर रखा है। पाकिस्तान ने अन्य देशों से परमाणु विस्फोट की तकनीक प्राप्त की। विदेशी आक्रमण के खतरे को मडराते देखकर भारत ने पोकरण मे मई 1998 को परमाणु विस्फोट कर विश्व को चौंका दिया। पाकिस्तान ने भी तुरन्त बाद परमाणु विस्फोट कर दिखाया ऐसी स्थिति मे रक्षा खर्च मे बढोत्तरी अपरिहार्य हो जाती है।

भारत सरकार का रक्षा खर्च

(करोड रुपए)

वर्ष	रक्षा खर्च	सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत
1990-91	10874	1.9
1994-95	16426	1 6
1995-96	18841	1 5
1996-97	20997	1 5
1997-98 (स अ)	26802	1.7
1998-99 (ब अ)	30840	1 7
1999-2000 (ब अ)	45694	---

स्रोत *इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99

केन्द्र सरकार का रक्षा खर्च 1990-91 मे 10,874 करोड रुपए था जो 1996-97 मे बढकर 20,997 करोड रुपए हो गया। वर्ष 1999-2000 मे रक्षा खर्च 45,694 करोड रुपए (बजट अनुमान) था। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत मे रक्षा खर्च घटा है। वर्ष 1990-91 मे रक्षा खर्च सकल घरेलू उत्पाद का 1 9 प्रतिशत था जो घटकर 1996-97 मे 1 5 प्रतिशत तथा 1998-99 मे 1.7 प्रतिशत (बजट अनुमान) रह गया। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानों मे रक्षा खर्च मे गत वर्ष की तुलना मे 48 प्रतिशत की वृद्धि की गई।

भारत में केन्द्र सरकार के खर्च का 14 5 प्रतिशत रक्षा (Defence) पर खर्च किया जाता है। जबकि यह पाकिस्तान में 26 9 प्रतिशत तथा अमरीका मे 19 3 प्रतिशत है। गौरतलब है भारत मे केन्द्र सरकार के कुल खर्च का केवल 2 2 प्रतिशत शिक्षा पर और 1.9 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च किया जाता है। भारत मे 1995 मे सकल घरेलू उत्पाद का 2 5 प्रतिशत रक्षा पर खर्च किया गया जबकि यह पाकिस्तान में 6.5 प्रतिशत, चीन में 5 7 प्रतिशत था। प्रति व्यक्ति रक्षा खर्च भारत मे 9 डॉलर, पाकिस्तान मे 28 डॉलर तथा चीन में 26 डॉलर था। स्पष्ट है भारत की तुलना में चीन और पाकिस्तान मे रक्षा व्यय ज्यादा है। भारत मे रक्षा खर्च बढाने की आवश्यकता है।

कुछ देशों के रक्षा खर्च, 1995

देश	रक्षा खर्च (मिलियन डालर मे)	सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत	प्रति व्यक्ति रक्षा खर्च, डालर मे
चीन	31738	5.7	26
पाकिस्तान	3642	6.5	28
भारत	8289	2.5	9
श्रीलका	624	4.9	35
ईराक	2700	14.8	128

Source : *Human Development Report*, 1997.

भारत मे प्रति व्यक्ति रक्षा खर्च दुनिया के देशो विशेषकर चीन व पाकिस्तान से बहुत कम है। भारत को सीमा पर बढते सकट को दृष्टिगत रखते हुए रक्षा खर्च मे बढोतरी करनी चाहिए। बढते रक्षा खर्च का देश के आर्थिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भारत के सामाजिक विकास के

क्षेत्र यथा शिक्षा, चिकित्सा उपेक्षित है। किन्तु देश की सुरक्षा बहुत जरुरी है।

कारगिल सकट से भारत उभर चुका है किन्तु राजनीतिक अस्थिरता का सकट मुहबाए खडा है। राजनीतिक अस्थिरता से विकास की गति धीमी पडती है। विदेशी निवेशको के कदम डगमगाने लगते हैं। बार-बार आम चुनावो से गरीब लोगो पर बोझ पडता है। भारत मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 1997-98 मे 30 लाख डॉलर था जो घटकर 1998-99 मे 20 लाख डॉलर रह गया। भारत में दिसम्बर 1989 से लेकर जून 1991 तक राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण रहा। इसके बाद वर्ष 1996 के बाद प्रारम्भ हुई राजनीतिक अस्थिरता अगस्त 1999 तक जारी थी। भारत राजनीतिक अस्थिरता के कारण विकास की दौड मे विश्व के देशो की तुलना मे पिछड गया।

भारत के तीव्र विकास के लिए राजनीतिक स्थायित्व जरुरी है। राजनीतिक स्थायित्व से देश आर्थिक और सामाजिक विकास की दृष्टि से अधिक मजबूत होगा। आर्थिक उदारीकरण में गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याओ से निपटने वास्ते कारगर पहल की आवश्यकता है। दयनीय आर्थिक दशा सुधारने के लिए सामाजिक विकास परिव्यय मे वृद्धि की जानी चाहिए। कुछ देशो के नापाक इरादो को दृष्टिगत रखते हुए रक्षा खर्च बढोत्तरी मे कोताही नहीं बरतनी चाहिए। हर्ष की बात है भारत आज अपनी सीमाओ की रक्षा करने में पूरी तरह सक्षम है।

सन्दर्भ

1 *राजस्थान पत्रिका*, 25 जुलाई 1999, रविवारीय।
2 *राजस्थान पत्रिका*, 3 अगस्त 1999
3 *राजस्थान पत्रिका*, 5 अगस्त 1999
4 *इकोनॉमिक टाइम्स*, 23 जुलाई 1999

14

केन्द्रीय बजट 1999-2000 : बिगड़ता वित्तीय अनुशासन

केन्द्रीय वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने 27 फरवरी 1999 को भाजपा गठबन्धन सरकार का लगातार दूसरा केन्द्रीय बजट 1999-2000 लोकसभा मे पेश किया। केन्द्रीय बजट सामान्यतया प्रत्येक वर्ष 28 फरवरी को साय पाच बजे पेश किया जाता रहा है किन्तु इस बार 28 फरवरी को रविवार होने के कारण बजट शनिवार को पेश किया गया। ताजे बजट का प्रात ग्यारह बजे पेश किया जाना गौरतलब बात है। समय के बदलाव के पक्ष मे यह बात कही जाना कि बजट पेश करने का साय पाच बजे का समय अंग्रेजो के द्वारा निर्धारित किया गया नतीजन इसमे बदलाव किया जाना चाहिए। इन आधार पर समय बदलाव अधिक प्रासगिक नहीं है।

यह कहने मे अतिशयोक्ति नही कि केन्द्रीय बजट अर्थव्यवस्था का दर्पण होता है। बजट में अर्थव्यवस्था की दिशा और दशा निर्धारित होती है। किन्तु भारत मे कितने प्रतिशत लोगो की बजट भाषण सुनने और प्रकाशित बजट को पढने मे रुचि होती है। भारत के लगभग 50 फीसदी लोग निरक्षर है। जनसंख्या का बडा भाग आज भी गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहा है। इन लोगो की बजट मे रुचि बहुत कम होती है। भारत मे बजट सामान्यतया अंग्रेजी मे पेश किया जाता है। जब देश की बहुसंख्यक जनसंख्या को अक्षर ज्ञान ही नहीं है तो कितने लोग अग्रेजी मे प्रस्तुत बजट भाषण को समझ पाते है। बजट के पाच बजे पेश किए जाने का समय अनेक दृष्टि से अनुकूल था। बजट में रुचि रखने वाले लोग दिन भर के कामकाज से मुक्त होने के बाद साय पांच बजे से सुविधापूर्वक बजट भाषण सुन सकते है।

बजट पूर्व घोषणाएं

आज केन्द्रीय बजट के प्रति लोगो का आकर्षण इसलिए भी कम हो गया है कि अर्थव्यवस्था सबधी अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय बजट पेश किए जाने से पूर्व ही ले लिये जाते हैं। सरकार प्राय बजट को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से ऐसा करती है किन्तु ऐसे निर्णयो से बजट की प्रासगिकता कम होती है। बजट की उपादेयता मे बढोतरी के लिए आवश्यक है कि नीतिगत आर्थिक निर्णय बजट में ही लिए जाए। वर्तमान केन्द्र सरकार ने अनेक महत्त्वपूर्ण आर्थिक निर्णय बजट पूर्व लिए है। केन्द्र सरकार ने 28 जनवरी 1999 को यूरिया का सरकारी मूल्य प्रति टन 400 रुपए बढा दिया। अब यूरिया की कीमत 3,600 रुपए प्रति टन से बढकर 4,000 रुपए प्रति टन हो गई है। कारखाने के बाहर यूरिया के एक बेग की कीमत 183 रुपए से बढकर 200 रुपए हो जायेगी। केन्द्र सरकार ने राशन का अनाज और चीनी की कीमते बजट पूर्व बढा दी। गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगो के लिए भी कीमतों मे वृद्धि कर दी गई। सार्वजनिक वितरण प्रणाली मे गरीबी की रेखा से नीचे वाले लोगो के लिए गेहूँ का नया मूल्य 75 पैसे प्रति किलो बढाकर 3 25 रुपए प्रति किलो कर दिया गया है। गरीबी की रेखा से ऊपर वाले लोगो के लिए गेहूँ के मूल्य मे भारी वृद्धि कर दी गई है। इन लोगो के लिए गेहूँ का मूल्य 4.50 रुपए से बढाकर 6 50 रुपए प्रति किलो कर दिया गया है। इसी प्रकार चावल का मूल्य गरीबो के लिए 3.50 रुपए के स्थान पर 4 25 रुपए तथा अन्य लोगो के लिए 5 50 रुपए के स्थान पर 9 05 रुपए कर दिया गया। सार्वजनिक वितरण प्रणाली की चीनी की कीमत 60 पैसे बढाकर 12 रुपए प्रति किलो कर दी गई है। वर्ष 1998-99 के बजट मे अनाज पर 7,500 करोड रुपए, चीनी पर 400 करोड रुपए तथा खाद पर 11,400 करोड रुपए की सब्सिडी का प्रावधान किया गया था। इसमे देशी यूरिया पर 7,600 करोड रुपए की राज सहायता रखी गई थी। गत वर्ष के बजट (1998-99) में यूरिया के दामो मे एक रुपया प्रति किलो बढाने की घोषणा की गई थी किन्तु बडे किसानो के द्वारा मचाये बावेला के कारण कीमत वृद्धि का फैसला वापस लेना पडा। इस बार भी (1999) राशन का अनाज और यूरिया के दामो मे वृद्धि से कम बवाल नहीं मचा है। भाजपा गठबन्धन दल के एक घटक दल ने कीमतो मे की गई वृद्धि के मामले मे सरकार से समर्थन वापस ले लिया था। किसानो के लाभ वास्ते केन्द्र सरकार ने 14 फरवरी 1999 को "किसान क्रेडिट कार्ड योजना" शुरू की। इस योजना का उद्देश्य किसानो को समय पर पर्याप्त ऋण मुहैया कराना है। योजना के अन्तर्गत किसान भू-स्वामित्व के आधार पर जब चाहे तब ऋण ले

सकते है। केन्द्र सरकार ने 28 दिसम्बर 1998 को उर्वरक सब्सिडी मे भारी वृद्धि की। देसी फास्फेट पर उर्वरक सब्सिडी को 3,500 रुपए से बढाकर 4,400 रुपए प्रति टन, आयातित फास्फेट पर सब्सिडी को 2,000 रुपए से बढाकर 3,400 रुपए प्रति टन तथा पोटाश पर सब्सिडी को 2,000 रुपए से बढाकर 3,000 रुपए प्रति टन कर दिया गया। सरकार ने रसोई गैस बजट से पहले महंगी की। सरकार ने 31 जनवरी 1999 को रसोई गैस के दाम प्रति सिलेंडर 16 रुपए से 18.40 रुपए के बीच बढा दिये। केन्द्र सरकार वर्ष 2002 तक प्रशासित मूल्य समाप्त करना चाहती है इसलिए चरणबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत रसोई गैस पर सब्सिडी में कमी की गई है। समायोजन के बाद उपभोक्ता को प्रति सिलेण्डर 60 रुपए सब्सिडी मिलेगी। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 17 फरवरी 1999 को लघु उद्योगों में निवेश की सीमा 3 करोड़ रुपए से घटाकर 1 करोड़ रुपए कर दी। केन्द्र सरकार इन नीतिगत आर्थिक निर्णयों की घोषणा केन्द्रीय बजट में भी कर सकती थी।

लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था

ताजा बजट (1999-2000) कठिन आर्थिक स्थिति में पेश किया गया है। महत्वपूर्ण आर्थिक सूचकों में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। भारत की अर्थव्यवस्था 1998-99 में विश्वव्यापी मंदी, पूर्वी एशियाई संकट और कृषि मोर्चे पर कमजोर ग्रामीण मांग से प्रभावित हुई। यद्यपि सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1998-99 के अग्रिम अनुमानों में 5.8 प्रतिशत रही जो 1997-98 के त्वरित अनुमानों में 5 प्रतिशत की वृद्धि दर की तुलना में अधिक है किन्तु सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि 1995-96 तथा 1996-97 की तुलना में कम है। वर्ष 1998-99 में कृषि उत्पादन वृद्धि दर 3.9 प्रतिशत (प्राविजनल), खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर 1.5 प्रतिशत (प्राविजनल) थी। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत तथा विद्युत उत्पादन वृद्धि दर 6.6 प्रतिशत रही। 30 जनवरी 1999 को थोक मूल्य सूचकांक वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत तथा औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक वृद्धि दिसम्बर 1998 में 15.3 रही।

विदेशी व्यापार के मोर्चे पर भारत की स्थिति सुधर नहीं सकी। निर्यातों की तुलना में आयातों की अधिकता बनी हुई है। अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में आयात वृद्धि दर रुपए में 23.2 प्रतिशत तथा डॉलर में 7.1 प्रतिशत थी जबकि इसी समयावधि में निर्यात वृद्धि दर रुपए में 11.7 प्रतिशत और डॉलर में ऋणात्मक 2.9 प्रतिशत थी। परिणामस्वरूप व्यापार घाटा अप्रैल-दिसम्बर 1998-99 में 7,296 मिलियन डॉलर तक जा पहुंचा। व्यापार घाटे के बढ़ने के कारण विदेशी विनिमय कोष में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो

सकी। जनवरी 1999 में डॉलर में विदेशी विनिमय कोष में केवल 5.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष (1997-98) में यह वृद्धि 16.1 प्रतिशत थी। भारत की अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन अच्छा नहीं होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में रुपए की विनिमय दर अप्रैल-जनवरी 1998-99 में 11.5 प्रतिशत गिरी। रुपए के अवमूल्यन का लाभ भी भारत नहीं उठा सका। अवमूल्यन से निर्यात वृद्धि में मदद मिलती है। विश्व में प्रतिस्पर्धी अवमूल्यन के कारण रुपए के अवमूल्यन का प्रभाव कम हुआ। सर्वाधिक चिंता की बात अर्थव्यवस्था के ऋण भार में डूबे होने की है। सितम्बर 1999 में भारत पर 95.20 बिलियन डॉलर का विदेशी ऋण चढ़ा था। भारत पर विदेशी ऋण अदायगी का भारी बोझ है। अर्थव्यवस्था के गति नहीं पकड़ने की स्थिति में भारत के लिए संकट गहरा सकता है। स्थिति से निपटने के लिए निर्यात वृद्धि के प्रयास करने होंगे।

बजट 1999-2000 : एक दृष्टि

(करोड़ रुपए)

क्र स.	मदें	1998-98 वास्तविक	1998-99 बजट अनुमान	1998-99 संशोधित अनुमान	1999-2000 बजट अनुमान
1	राजस्व प्राप्तियां	133901	161994	157665	182840
2	पूंजीगत प्राप्तियां	98167	105933	124247	101042
3	कुल प्राप्तियां	232068	267927	281912	283882
4	गैर योजनागत खर्च	172991	195925	213541	206882
5	योजनागत खर्च	59077	72002	68371	77000
6	कुल खर्च	232068	267927	281912	283882
7	राजस्व घाटा	46449	48068	60474	54147
8	राजकोषीय घाटा	88937	91025	103737	79955
9.	प्राथमिक घाटा	23300	16025	26489	8045

स्रोत *दी इकोनोमिक टाइम्स*, 28 फरवरी 1999.

बिगड़ा वित्तीय अनुशासन

वित्तीय अनुशासन के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता नहीं मिली। राजस्व घाटा बजट अनुमानों की तुलना में अधिक बढ़ा है। वर्ष 1997-98 में राजस्व घाटा 46,449 करोड़ रुपए था। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानों में राजस्व घाटा 48,068 करोड़ रुपए था जो संशोधित अनुमानों में 60,474 करोड़ रुपए तक जा पहुंचा। राजस्व प्राप्तियों में वृद्धि नहीं होने के कारण राजस्व

घाटे मे वृद्धि हुई। बढते राजस्व खर्च पर सरकार अकुश नहीं लगा सकी। वर्ष 1999-2000 मे राजस्व प्राप्तिया 1,82,840 करोड रुपए तथा राजस्व खर्च 2,36,987 करोड रुपए अनुमानित है। वर्ष 1999-2000 मे राजस्व घाटा 54,147 करोड रुपए होने का अनुमान है। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत में राजस्व घाटा बढा है। राजस्व घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 1997-98 मे 3 प्रतिशत तथा 1998-99 मे 3 4 प्रतिशत (सशोधित अनुमान) था। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानो मे राजस्व घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 2.7 प्रतिशत छोडा गया है।

बढता राजकोषीय घाटा अर्थव्यवस्था के लिए चिन्ताजनक बात है। राजस्व घाटे में वृद्धि राजकोषीय घाटे के बढने का प्रमुख कारण रहा है। राजकोषीय घाटा 1997-98 मे 88,937 करोड रुपए था। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानो में राजकोषीय घाटा 91,025 करोड रुपए था जो सशोधित अनुमानो मे 1,03,737 करोड रुपए तक जा पहुचा। वर्ष 1998-99 मे राजकोषीय घाटा तुलनीय सकल घरेलू उत्पाद अनुमानो के आधार पर 5 6 प्रतिशत के बजट लक्ष्य की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद के 6.5 प्रतिशत तक बढना सभावित है। अगर राज्यो और सघ राज्य क्षेत्रो को लघु बचत के लिए ऋणो के कारण बजट मे वृद्धि को छोड दिया जाए तो समायोजित राजकोषीय घाटा 5 9 प्रतिशत होगा। वर्ष 1999-2000 मे राजकोषीय घाटा 79,995 करोड रुपए दिखाया गया है जो कि 1998-99 के सशोधित अनुमानो के घाटे से 23,782 करोड रुपए कम है। बजट पत्रो के अनुसार राजकोषीय घाटे मे निवल लघु बचत संग्रहणो के हिस्से का अतरण, जिसे लोक खाते मे अदा किया जाएगा शामिल नहीं है। पिछले वर्षो के आधार पर राजकोषीय घाटा 1,04,956 करोड रुपए है। ताजे बजट मे देश की अर्थव्यवस्था की राजकोषीय स्थिति को बनाए रखने के लिए मध्यावधि कार्य नीति की परिकल्पना की गई है। बजट मे राजस्व और राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के क्रमवार 0 7 प्रतिशत और 0 6 प्रतिशत तक नीचे लाने का प्रस्ताव है। इसमें कमी की मोजूदा दर से राजस्व घाटे को चार वर्षो मे समाप्त कर लिया जाएगा तथा राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 2 प्रतिशत से नीचे जाएगा।

नब्बे के दशक मे केवल 1991-92 में ही राजकोषीय घाटा बजट अनुमानो की तुलना मे कम रहा। शेष सभी वर्षो में वास्तविक राजकोषीय घाटा बजट अनुमानो से अधिक रहा। वर्ष 1993-94 मे वास्तविक राजकोषीय घाटा 60,257 करोड रुपए तक जा पहुचा। बजट अनुमानो मे यह केवल 36,959 करोड रुपए ही था। केन्द्र सरकार के खर्च बजट अनुमानो की

तुलना मे अधिक रहे इस कारण भी राजकोषीय घाटा सीमा मे नहीं रह सका। नब्बे के दशक में 1991-92 में सरकार का खर्च बजट अनुमानों की तुलना मे कम था। इसके अलावा संयुक्त मोर्चा सरकार 1996-97 तथा 1997-98 मे खर्चों को बजट अनुमानों की तुलना में कम रखने में सफल हो सकी। शेष सभी वर्षो मे सरकार के खर्च बजट अनुमानों की तुलना में अधिक रहे।

बिगड़ता वित्तीय अनुशासन

(करोड़ रुपए)

वर्ष	राजकोषीय घाटा बजट अनुमान	राजकोषीय घाटा वास्तविक
1991-92	37727	36325
1992-93	34408	40173
1993-94	36959	60257
1994-95	54915	57703
1995-96	57634	60243
1996-97	62266	66733
1997-98	65454	88973
1998-99	91025	103737(स अ)
1999-2000 (ब अ)	104955	----

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे, 1998-99.*

गैर योजनागत खर्च

गैर योजनागत खर्च मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। गैर योजनागत खर्च 1997-98 मे 1,72,991 करोड रुपए था। वर्ष 1998-99 में गैर योजनागत खर्च मे कमी नहीं की जा सकी। गैर योजनागत खर्च 1998-99 के बजट अनुमानों में 1,95,925 करोड रुपए था जो संशोधित अनुमानो मे 2,13,541 करोड रुपए तक जा पहुचा। इस प्रकार सशोधित अनुमानों मे गैर योजनागत खर्च बजट अनुमानों की तुलना में 9 प्रतिशत अधिक रहा। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानो में गैर योजनागत खर्च और बढकर 2,06,882 करोड रुपए तक जा पहुचा। केन्द्र सरकार ने बजट में व्यय वित्तीय आयोग के गठन की घोषणा की तथा गैर विकासीय व्यय को कम करने के लिए सचिव स्तर के चार पदों को समाप्त करने का निर्णय लिया गया।

गैर योजनागत खर्च को नियंत्रित करने वास्ते सब्सिडी और रक्षा खर्च में कमी की जानी चाहिए। इसके अलावा ससाधन जुटाने मे उधार पर

निर्भरता कम की जानी चाहिए। गौरतलब है 1999-2000 में रुपए का 7 प्रतिशत सब्सिडी पर, 14 प्रतिशत रक्षा पर तथा 27 प्रतिशत ब्याज भुगतान पर खर्च होगा। हाल ही के दिनों (1998-99) मे भारत के पड़ौसी राष्ट्रो से संबध सुधरे हैं। प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी ने लाहौर बस यात्रा से इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण पहल की है। पडोसियो से सबध सुधार कर रक्षा खर्च को विकास के काम मे लिया जा सकता है। भारत का रक्षा खर्च 1998-99 के बजट अनुमानो मे 41,200 करोड रुपए था जिसे बढाकर 1999-2000 के बजट अनुमानो में 45,694 करोड रुपए कर दिया गया है। रक्षा खर्च मे गत वर्ष की तुलना में 10.9 प्रतिशत वृद्धि की गई है। वर्तमान (1998-99) मे भारत मे सकल घरेलू उत्पाद का 2.3 प्रतिशत भाग रक्षा पर खर्च होता है। इसके अलावा सकल घरेलू उत्पाद का 3.7 प्रतिशत ब्याज पर तथा 1.4 प्रतिशत सब्सिडी पर खर्च होता है।

वार्षिक योजना में कटौती

विकास को गति देने वास्ते योजना परिव्यय मे वृद्धि की आवश्यकता होती है। वर्ष 1999-2000 नौवीं पचवर्षीय योजना का तीसरा वर्ष है। वार्षिक योजना के आकार मे अपेक्षित वृद्धि नहीं होने से आर्थिक विकास की गति के प्रभावित होने की संभावना है। वर्ष 1999-2000 का केन्द्रीय योजना परिव्यय 1,03,521 करोड रुपए निर्धारित किया गया है जो 1998-99 के संशोधित योजना परिव्यय से 15,039 करोड रुपए अधिक है किन्तु 1998-99 के बजट अनुमानों से 1,666 करोड रुपए कम है। वर्ष 1998-99 का वार्षिक योजना परिव्यय 1,05,187 करोड रुपए (बजट अनुमान) था जो संशोधित अनुमानो में 88,482 करोड रुपए ही रहा। वर्ष 1999-2000 की योजना परिव्यय मे कुल बजटीय सहायता (केन्द्र और राज्यो को) के लिए 77,000 करोड रुपए का प्रावधान किया गया जो 1998-99 के संशोधित अनुमानों से 8,629 करोड रुपए अधिक तथा बजटीय अनुमानो से 5,000 करोड रुपए कम है। कुल बजटीय सहायता 77,000 करोड रुपए मे केन्द्रीय योजना परिव्यय के लिए 44,000 करोड रुपए तथा राज्यो और केन्द्र शासित प्रदेशो के लिए 33,000 करोड रुपए का प्रावधान है। वर्ष 1999-2000 की केन्द्रीय योजना परिव्यय 1,03,521 करोड रुपए के वित्त पोषण मे बजटीय समर्थन 44,000 करोड रुपए तथा सार्वजनिक क्षेत्र अशदान 59,521 करोड रुपए है सार्वजनिक क्षेत्र अशदान 1998-99 के सशोधित अनुमानो से 9,000 करोड रुपए अधिक किन्तु बजट अनुमान से 2,800 करोड रुपए कम है।[1]

ग्रामीणोन्मुखी

भारत की अर्थव्यवस्था मे आज भी कृषि महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 1998-99 में कृषि ने अर्थव्यवस्था की स्थिति को सभाले रखा। कृषि वृद्धि दर 1998-99 मे 3 9 प्रतिशत (प्राविजनल) तथा खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर 1.5 प्रतिशत रही। खाद्यान्न उत्पादन 1998-99 मे 195 3 मिलियन टन (प्राविजनल) था। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती वास्ते ताजे बजट मे नये कदम उठाए गए है। वर्ष 1999-2000 मे ग्रामीण आधारभूत सरचना विकास निधि (आर. आई डी एफ) की सचित निधि बढाकर 3,500 करोड रुपए कर दी गई। वर्ष 1998-99 मे किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम शुरू की गई थी। ये कार्ड किसानो को किफायती रूप से समय पर ऋण प्रदान करते हैं। वर्ष 1998-99 मे 6 लाख किसानों को क्रेडिट कार्ड जारी किए जा चुके है। वर्ष 1999-2000 में इस स्कीम का दायरा बढाए जाने का प्रस्ताव है जिससे 20 लाख किसान इस स्कीम का लाभ उठा सके। वर्ष 1998-99 में कृषि क्षेत्र के लिए सास्थानिक ऋण प्रवाह ने 20 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाई। कृषि विकास के लिए सिचाई आवश्यक है। ताजे बजट मे तीन वर्षों के भीतर 100 प्राथमिकता वाले जिलो मे नाबार्ड के साथ "जल सभरण विकास निधि" की स्थापना का प्रस्ताव है इसके लिए केन्द्रीय सरकार नाबार्ड को समतुल्य सहायता उपलब्ध कराएगी। फसलोत्तर भडारण और विपणन आधार सुविधा वास्ते शीत भण्डारो और गोदामों के निर्माण हेतु नई "ऋण सबद्ध पूजी सब्सिडी स्कीम" प्रारम्भ करने की घोषणा की गई है। यह स्कीम नाबार्ड की सहायता से कृषि मत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जावेगी।

ग्रामीण परिवेश की दशा सुधारने के लिए ग्रामीण औद्योगीकरण की आवश्यकता है। विगत दशको मे गावो मे औद्योगीकरण को अपेक्षित गति नहीं मिली। ताजे बजट मे गावो मे औद्योगीकरण के प्रयास दृष्टिगोचर हुए हैं ग्रामीण औद्योगीकरण को बढावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष 100 ग्रामीण समूह स्थापित करने का राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रस्ताव किया गया है। यह ग्रामीण दस्तकारो और बेरोजगारो के लाभ के लिए होगा। इस ग्रामीण समूह का विस्तार सारे देश मे किया जाएगा। इससे शहरी और ग्रामीण असमानता कम करने मे मदद मिलेगी।

उदारीकरण के कदम

नब्बे के दशक मे सभी बजटो मे आर्थिक सुधारो को न्यूनाधिक गति दी गई। अर्थव्यवस्था की दशा के बेहतर नहीं होने के कारण रुपए की पूर्ण परिवर्तनीयता को छुआ नहीं गया है। सीमा शुल्क की दर 1990-91 मे 47

प्रतिशत थी जो घटकर 1998-99 में लगभग 29 प्रतिशत रह गई। सीमा शुल्क में कमी से आयात सस्ते होते हैं तथा निर्यात में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ती है। सीमा शुल्क में कमी से भारत का निर्यात बढ़ा है। सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात की भूमिका बढ़ी है। वर्ष 1999-2000 के बजट में सीमा शुल्क की वर्तमान सात यथामूल्य दरों को कम करने पांच मूल दरें रखने का प्रस्ताव किया है। अपरिवर्तित रहने वाली 5 प्रतिशत और 40 प्रतिशत तथा पुरानी दरों के स्थान पर 15, 25 और 35 प्रतिशत रहेगी। इसके अलावा 5 प्रतिशत के विशेष सीमा शुल्क को समाप्त कर दिया गया है। उत्पाद शुल्कों में भी लगातार कमी की गई है। उत्पाद शुल्क की औसत दर 1990-91 में 28 प्रतिशत से घटकर 1997-98 में 18 प्रतिशत रह गई है। उत्पाद शुल्क में कमी से 1994-97 के बीच औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई। वर्ष 1999-2000 में उत्पाद शुल्क की वर्तमान 11 बडी यथामूल्य दरों को कम करके तीन करने का प्रस्ताव किया गया है। इसमें 16 प्रतिशत की केन्द्रीय दर, 8 प्रतिशत की मैरिट दर और 24 प्रतिशत की डिमेरिट दर शामिल है। उत्पाद शुल्कों में कमी से लागत और कीमत में कमी होती है।

ताजे बजट में सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश का बडा लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्ष 1999-2000 में विनिवेश कार्यक्रम के द्वारा 10,000 करोड रुपए जुटाने का प्रस्ताव किया गया है। इससे सरकार को सामाजिक तथा आधारभूत क्षेत्रों की आवश्यकताओं के लिए निधि प्रदान करने में मदद मिलेगी। विगत वर्षों में निर्धारित किए गए विनिवेश के लक्ष्य अर्जित नहीं किए जा सके हैं। विनिवेश का लक्ष्य 1991-92, 1994-95 तथा 1998-99 में ही प्राप्त किया जा सका है। वर्ष 1997-98 में 4,800 करोड रुपए विनिवेश लक्ष्य के मुकाबले केवल 912 करोड रुपए ही प्राप्त किए जा सके। विनिवेश से प्राप्त राशि का उपयोग राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए किया जाता रहा है जो उचित नहीं है। इसका उपयोग सार्वजनिक उपक्रमों की दशा सुधारने तथा आधारभूत संरचना के विकास में किया जाना चाहिए।

कठोर निर्णय

वर्ष 1999-2000 के बजट में लोगों पर 9,334 करोड़ रुपए के नये कर लगाए गए है। पांचवे वेतन आयोग की सिफारिशें लागू होने के बाद कर्मचारियों के वेतन भत्तों में वृद्धि हुई इस कारण आयकर छूट सीमा में वृद्धि की अपेक्षा थी किन्तु वित्त मंत्री ने आयकर में राहत की घोषणा नहीं की इसके विपरीत आयकर मतदाताओं पर 10 प्रतिशत अधिभार का बोझ और डाल दिया। आयकर की 10 प्रतिशत की स्लेप में अधिभार नहीं लगाया गया

है। अभी कुछ महीनो पहले डाक दरो मे वृद्धि की गई है। बजट में डाक दरो मे और वृद्धि करके जनता पर आर्थिक बोझ बढा दिया गया है। अन्तर्देशीय पत्र की कीमत 1.50 रुपए से बढाकर 2 रुपए कर दी गई है। बजट मे डीजल पर एक रुपए का उपकर आरोपित किया गया है। डीजल की कीमत मे वृद्धि दर से मुद्रास्फीति बढेगी। 20 फरवरी 1999 को समाप्त सप्ताह मे मुद्रास्फीति पहले की पाच प्रतिशत को पार कर चुकी है।

लोक लुभावन घोषणाएं

बजट में कुछेक लोक लुभावन घोषणाए की गई है। सरकार के द्वारा कई बार निर्णय बजट को लोकप्रिय बनाने अथवा राजनीतिक लाभ उठाने के लिए किए जाते है। ताजे बजट मे बेसहारा वृद्धो के लिए अन्नापूर्णा योजना की घोषणा की गई है। इस योजना के अन्तर्गत बिना आय वाले वृद्धो को हर महीने दस किलो अनाज दिया जाएगा। यदि यह योजना वास्तव मे क्रियान्वित होती है तो निश्चित रूप से बेसहारा वृद्ध बडी राहत महसूस करेंगे। भारत मे बेसहारा वृद्धो की कमी नहीं है। गरीब बेसहारा वृद्धो की स्थिति बहुत ही दयनीय है। सरकार की घोषणाओ का गरीबो को अपेक्षित लाभ नहीं मिला। शिक्षा के क्षेत्र मे "राष्ट्रीय शिक्षा गारण्टी योजना" की घोषणा की गई है। इस योजना के तहत सभी बस्तियों के लिए 1 किलोमीटर के दायरे मे प्राथमिक स्कूल खोले जायेगे। समस्या नये स्कूल खोले जने की नहीं है। मुसीबत इस बात की है कैसे गरीबो के बच्चो को स्कूलों मे भेजा जाये। गावो मे स्कूल खुले हुए है किन्तु छात्र सख्या का अभाव है। बीच मे ही स्कूल छोडकर चले जाने वाले छात्रो की अधिक सख्या जटिल समस्या है। दुनिया के सर्वाधिक निरक्षर भारत मे है। साक्षरता वृद्धि के लिए भारत को कारगर प्रयास करने होंगे।

केन्द्र सरकार ने "राष्ट्रीय मानव विकास पहल" की घोषणा की है जिसमे एक दशक मे सम्पूर्ण देश को भोजन, चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार, आश्रय, आवास मुहैया कराने की बात कही गई है। यह सरकार के द्वारा गरीबो के लिए छह तरफा रणनीति है। बुनियादी सुविधाओ को मुहैया कराना बेहद जरुरी है किन्तु इस दिशा मे भारत की स्थिति बदतर है। पिछली सरकारों ने भी इस तरह के वायदे जनता के साथ किए हैं किन्तु योजनाओं को वोट भुनाने तक ही काम मे लिया गया। गरीब तबका बुनियादी सुविधाओं से आज भी वचित है। गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर करने वाले लोग दो जून की रोटी मुश्किल से जुटा पाते हैं। जिस दिन गरीबो को दो वक्त भरपेट भोजन मुहैया होगा उस दिन खाद्यान्न आत्मनिर्भरता की बात खोखली

सिद्ध होगी। आज भी कचरे के ढेरो मे भिखारी, गरीब, बेसहारा लोग अनेक बार फैले हुए और सडे गले भोजन को तलाशते देखे जा सकते हैं। गरीबी की समस्या केन्द्र सरकार की बडी चुनौती है। केन्द्र सरकार द्वारा बजट मे गरीबो के लिए घोषित की गई छह तरफा रणनीति में देशवासियो को केवल रोजगार ही मुहैया करा दे तो बाकी पांच सुविधाऐं गरीब स्वयं जुटा लेगा। देशवासियो को रोजगार मुहैया कराने के लिए केन्द्र सरकार को आर्थिक विकास की गति तीव्र करनी होगी। इसके लिए सबसे पहले आधारभूत सरचना को विकसित करने की आवश्यकता है इसके अलावा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए ग्रामीण औद्योगीकरण पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। ग्रामीण परिवेश मे कृषि आधारित उद्योगो के विकास की विपुल सभावनाएँ है।

सन्दर्भ

1. इकोनॉमिक टाइम्स, 28 फरवरी 1999, पृ 16

15

रेल बजट 1999-2000 : बढ़ता बजटीय समर्थन

रेलवे महत्त्वपूर्ण आधारभूत सरचना है। रेलवे के विकास बिना आर्थिक विकास को गति देना बहुत मुश्किल है। भारत मे रेल सुविधा वाले क्षेत्रो मे अपेक्षाकृत तीव्र औद्योगीकरण हुआ है। भारत विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल वाला देश है। पचवर्षीय योजनाओ मे रेलवे विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। आर्थिक विकास मे रेलवे की महत्ता के कारण भारतीय रेलवे को सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानो मे सम्मिलित किया गया है। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे भी रेलवे विकास मे राजकीय भूमिका कम नहीं हुई है। यह बात रेलवे की उत्तरोत्तर बढती उपादेयता को दर्शाती है। देश के सभी क्षेत्रो मे रेलवे विकास की पुरजोर माग रहती है। रेलवे विकास के कारण राजनीतिज्ञो को राजनीति के क्षेत्र मे स्थायित्व को बल मिलता है। भारत मे रेलवे विकास के निर्णय राजनीति से ओत प्रोत रहे हैं। प्राय. सभी रेल मत्रियो ने राजनीतिक लाभ उठाने वास्ते अपने ससदीय क्षेत्र एवं राज्य मे रेल विकास को प्राथमिकता दी। हाल ही केन्द्र की भाजपा गठबंधन सरकार मे रेल मंत्रालय को लेकर खींचतान रही। पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस मे रेल मत्रालय के प्रति रुचि दृष्टिगोचर हुई थी। तृणमूल काग्रेस को संतुष्ट करने वास्ते रेल बजट से पूर्व बगाल पैकेज की घोषणा की गई जिसमे पश्चिम बगाल मे रैलवे विकास पर बल दिया गया है। रेलवे के अनेक महत्त्व हैं। सुरक्षात्मक दृष्टि से भी रेलवे का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रेलवे विकास सबंधी निर्णय राजनीति प्रेरित नहीं होकर क्षेत्र विशेष की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर लिए जाने चाहिए। रेलवे विकास की दृष्टि क्षेत्रीय विषमता आज भी

विद्यमान है। स्वतन्त्रता के पचास वर्षो बाद भी कोई क्षेत्र रेलवे विकास से उपेक्षित रहता है तो जन विरोध स्वाभाविक है। देश मे रेलवे के सतुलित विकास के लिए केन्द्र सरकार को भूमिका बढानी चाहिए। रेलवे की वार्षिक योजनाओ मे वृद्धि की जाने की आवश्यकता है। केन्द्र के पास वित्तीय ससाधनो के अभाव की दृष्टि मे रेलवे विकास मे निजी क्षेत्र का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

तत्कालीन रेल मत्री नीतिश कुमार ने 25 फरवरी 1999 को वर्ष 1999-2000 का भाजपा गठबधन सरकार का लगातार दूसरा रेल बजट लोकसभा मे पेश किया। ताजे बजट म ऊचे दर्जे की रेल यात्रा महगी कर दी गई है तथा माल भाडे मे वृद्धि की गई है। माल भाडे मे वृद्धि से मुद्रास्फीति के बढने की सभावना है। दूसरी श्रेणी के किराये मे वृद्धि नहीं किया जाना अवश्य प्रशसनीय बात है। इससे गरीब तथा मध्यमवर्गीय परिवारो को राहत महसूस हुई है। रेलवे मे भर्ती के लिए साक्षात्कार समाप्त करना अच्छा निर्णय है। इससे नियुक्तियो मे भ्रष्टाचार पर नियत्रण लगेगा। बजट मे बेटिकिट यात्रियो पर कडा प्रहार किया गया है। बिना टिकिट यात्रियो से न्यूनतम जुर्माना 50 रुपए से बढाकर 250 रुपए कर दिया गया है। अब यात्री बिना टिकिट रेल मे बैठने से पहले दस बार सोचेगा। रेल मत्री के इस निर्णय से रेलवे मे बेटिकट यात्रा नियत्रित होगी। किन्तु रेल मत्री ने उन रेलवे कर्मचारियो के खिलाफ कदम उठाने की बात नहीं की जो यात्रियो को बिना टिकिट यात्रा कराते हैं। ऐसे रेल कर्मचारियो के खिलाफ सरकार को सख्ती बरतने की आवश्यकता है।

रेल वित्त

रेल वित्त मे रेलवे की आर्थिक स्थिति की दशा और दिशा दृष्टिगोचर होती है। इसमे रेलवे की सकल यातायात प्राप्ति तथा कुल सचालन व्यय का उल्लेख होता है। इसके अलावा रेल वित्त मे शुद्ध विविध प्राप्ति, शुद्ध रेल राजस्व, लाभाश व अतिरेक भी दर्शाए जाते हैं। ताजे रेल वित्त की स्थिति को निम्न सारणी मे दर्शाया गया है -

रेल वित्त

(करोड रुपए)

क्र. सं	मदें	1997-98 वास्तविक अनुमान	1998-99 संशोधित अनुमान	1999-2000 बजट अनुमान
1	सकल यातायात प्राप्ति	28589 03	30416 16	33311 00
2	साधारण संचालन व्यय	20605 03	23375 00	25740.00
3	मूल्य ह्रास आरक्षित निधि में अंशदान	1904 00	1600 00	1589 00
4.	पेंशन निधि में अंशदान	3367 00	3425 00	2954 00
5.	कुल संचालन व्यय (2+3+4)	25876 03	28400 00	30283 00
6.	शुद्ध यातायात प्राप्ति (1-5)	2713 00	2016 16	3028 00
7.	शुद्ध विविध प्राप्ति	311 43	354 93	429 73
8.	शुद्ध रेल राजस्व (6+7)	3024 43	2371 09	3457 73
9.	सामान्य राजस्व लाभांश	1489 21	1751 70	1914 08
10	अतिरेक (8 - 9)	1535 22	619.39	1543 65

स्रोत दी इकोनोमिक टाइम्स, 26 फरवरी 1999.

रेलवे की सकल यातायात प्राप्ति 1997-98 में 28,589.03 करोड रुपए थी जो 1998-99 के संशोधित अनुमानों में बढकर 30,416.16 करोड रुपए हो गई। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानों में सकल यातायात प्राप्ति 33,311 करोड रुपए निर्धारित की गई है जो 1998-99 के संशोधित अनुमानों की तुलना में 9.52 प्रतिशत अधिक है। रेलवे का कुल संचालन व्यय बढा है। कुल संचालन व्यय 1997-98 में 25,876 करोड रुपए था जो बढकर 1998-99 में संशोधित अनुमानों में 28,400 करोड रुपए हो गया। कुल संचालन व्यय 1999-2000 के बजट अनुमानों में 30,283 करोड रुपए निर्धारित किया गया है। रेलवे के कुल संचालन व्यय में 1999-2000 में 1997-98 की तुलना में 17 प्रतिशत तथा 1998-99 की तुलना में 6.63 प्रतिशत वृद्धि हुई।

कुल संचालन व्यय में साधारण संचालन व्यय, मूल्य ह्रास आरक्षित निधि में अंशदान तथा पेंशन निधि में अंशदान को सम्मिलित किया जाता है।

हाल ही के वर्षों में कुल संचालन व्यय में साधारण संचालन व्यय का भाग बढ़ा है। वर्ष 1997-98 में कुल संचालन व्यय में साधारण संचालन व्यय का भाग 79.63 प्रतिशत था जो बढ़कर 1999-2000 के बजट अनुमानों में 85 प्रतिशत हो गया है जबकि कुल संचालन व्यय में मूल्य ह्रास आरक्षित निधि का भाग 5.25 प्रतिशत तथा पेंशन निधि का भाग 9.75 प्रतिशत था। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानों में शुद्ध यातायात प्राप्ति 3,028 करोड़ रुपए, शुद्ध विविध प्राप्ति 430 करोड़ रुपए, शुद्ध रेल राजस्व 3,458 करोड़ रुपए तथा सामान्य राजस्व को लाभांश 1,914 करोड़ रुपए निर्धारित किया गया है।

रेलवे के कुल वित्तीय परिणामों में उच्चावचन की प्रवृत्ति व्याप्त है। रेलवे का लाभ 1994-95 में 2,446.40 करोड़ रुपए था जो बढ़कर 1995-96 में 2,870.[illegible] करोड़ रुपए हो गया। बाद के वर्षों में रेलवे के लाभ में निरन्तर कमी हुई। रेलवे का लाभ घटकर 1996-97 में 2,117 करोड़ रुपए, 1997-98 में 1,535 करोड़ रुपए तथा 1998-99 के संशोधित अनुमानों में और घटकर 619 करोड़ रुपए रह गया। वर्ष 1999-2000 के बजट अनुमानों में रेलवे का अनुमानित लाभ 1,542.65 करोड़ रुपए दिखाया गया है। विगत वर्षों में माल ढुलाई एवं यात्रियों से रेलवे की आय में वृद्धि हुई है। माल ढुलाई से रेलवे की आय 1994-95 में 13,669.67 करोड़ रुपए थी जो बढ़कर 1999-2000 के बजट अनुमानों में 22,341 करोड़ रुपए हो गयी। वर्ष 1994-95 से 1999-2000 के बीच माल ढुलाई द्वारा रेलवे आय में 63.4 प्रतिशत की वृद्धि की हुई। यात्रियों द्वारा रेलवे आय में भी वृद्धि हुई। वर्ष 1994-95 में यात्रियों द्वारा रेलवे की आय 5,464 करोड़ रुपए थी जो बढ़कर 1999-2000 में 9,449 करोड़ रुपए (बजट अनुमान) हो गई। वर्ष 1994-95 से 1999-2000 के बीच यात्रियों द्वारा रेलवे आय में 73 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

रेलवे की माल ढुलाई में अपेक्षित नहीं हुई है। रेलवे माल ढुलाई 1995-96 में 391 मिलियन टन, 1996-97 में 409 मिलियन टन तथा 1997-98 में 429 मिलियन टन थी। वर्ष 1998-99 में माल ढुलाई 424 मिलियन टन थी जो गत वर्ष की तुलना में 5 मिलियन टन कम थी। वर्ष 1999-2000 में रेलवे माल ढुलाई का लक्ष्य 450 मिलियन टन (बजट अनुमान) निर्धारित किया गया है इसके अलावा यात्री यातायात में 8.5 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान रखा गया है।

वार्षिक योजना

नौवीं पंचवर्षीय योजना के दो वर्ष बीत चुके हैं। वर्ष 1999-2000

नौवीं योजना का तीसरा वर्ष है। नौवीं योजना की पहली रेलवे वार्षिक योजना 1997-98 मे वृद्धि नगण्य थी। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानो मे रेलवे वार्षिक योजना 9,500 करोड रुपए थी जो वर्ष 1997-98 की सशोधित रेलवे वार्षिक योजना 8,310 करोड रुपए से 14 3 प्रतिशत अधिक थी। वर्ष 1998-99 की रेलवे की वार्षिक योजना में कटौती की गई। वर्ष 1998-99 के सशोधित अनुमानो मे रेलवे वार्षिक योजना 8,755 करोड रुपए की रही जो बजट अनुमानो की तुलना में 745 करोड रुपए कम है। रेलवे की वार्षिक योजना मे कटौती से रेलवे विकास की गति प्रभावित हुई। वर्ष 1999-2000 की रेलवे वार्षिक योजना 9,700 करोड रुपए (बजट अनुमान) निर्धारित की गई है। रेलवे की 1999-2000 की वार्षिक योजना 1997-98 के सशोधित अनुमान से 16 7 प्रतिशत तथा 1998-99 के सशोधित अनुमान से 10 8 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 1999-2000 की वार्षिक योजना मे कटौती नहीं होने की स्थिति मे रेलवे विकास को बल मिलने की सभावना है। रेलवे वार्षिक योजना मे रेल लाईनो के नवीनीकरण, लाईनो के दोहरीकरण तथा रेल मत्रियो की सुविधाओ मे सुधार पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

बजटीय समर्थन

वार्षिक योजना का वित्त पोषण आन्तरिक संसाधनो, बजटीय समर्थन तथा बाजार ऋण से किया जाता है। रेलवे के आन्तरिक ससाधनो मे अपेक्षित वृद्धि नहीं होने के कारण वित्त पोषण वास्ते बाजार ऋणो पर निर्भरता बढी है। वार्षिक योजना के वित्त पोषण मे रेलवे की बजटीय समर्थन पर निर्भरता फिर बढने लगी है। वर्ष 1998-99 की रेलवे की 9,500 करोड रुपए की वार्षिक योजना मे बजटीय समर्थन 2,200 करोड रुपए (बजट अनुमान) था जो वार्षिक योजना का 23 2 प्रतिशत था। वर्ष 1999-2000 की रेलवे की वार्षिक योजना मे बजटीय समर्थन 2,540 करोड रुपए निर्धारित किया गया है जो 9,700 करोड रुपए की वार्षिक योजना का 26 2 प्रतिशत है। पांचवी पचवर्षीय योजना मे रेलवे योजना परिव्यय का बजटीय समर्थन 75 प्रतिशत था जो आठवीं पंचवर्षीय योजना मे घटकर केवल 18 प्रतिशत रह गया। आर्थिक उदारीकरण लागू किए जाने के बाद के वर्षों मे विशेषकर 1995-96 तथा 1996-97 में भी बजटीय समर्थन 18 प्रतिशत ही था। किन्तु बाद के वर्षों मे रेलवे की बजटीय समर्थन पर निर्भरता फिर बढने लगी। रेलवे का बजटीय समर्थन 1997-98 मे 24 प्रतिशत, 1998-99 मे 23 2 प्रतिशत (संशोधित अनुमान) था।

रेलवे बजटीय समर्थन (प्रतिशत में)

वर्ष	बजटीय समर्थन
1995-96	18 0
1996-97	18 0
1997-98	24 0
1998-99	23 2
1999-2000	26 2

स्रोत *इकोनॉमिक टाइम्स*, 26 फरवरी 1999

आधारित संरचना

भारत की स्वतन्त्रता के पाच दशक पूरे हो चुके है किन्तु अनेक क्षेत्र रेल विकास से अछूते हैं। भारत जनाधिक्य की स्थिति में पहुच चुका है। बढती जनसख्या के सामने रेलवे विकास के प्रयास अत्यल्प दृष्टिगोचर होते हैं। हरेक वर्ष नई रेलगाडिया चलाने के बावजूद रेल डिब्बों में बढती भीड कम होने का नाम नहीं लेती है। रेल बजट में 1999-2000 को "यात्री वर्ष" के रुप में मनाने की बात कही गई है किन्तु देश की आवश्यकता के अनुसार रेलवे विकास नहीं होने के कारण हरेक वर्ष यात्रियों के लिए यातना वर्ष के रुप मे बीतता हैं। ताजे बजट में रेलवे विकास की दिशा मे कुछ कदम अवश्य उठाए गए है। वर्ष 1999-2000 में 14 नई रेलगाडिया चलाने तथा 16 नई रेल लाइनें बिछाने का प्रस्ताव किया गया है। इसके अलावा चार रेल गाडियों के फेरे बढाने तथा नौ गाडियों का चालन क्षेत्र भी बढाया गया है। रेल बजट में 500 किलोमीटर रेल मार्ग का विद्युतीकरण करने के लिए 350 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है।

रेलवे विकास की दृष्टि से देश में क्षेत्रीय असतुलन की समस्या व्याप्त है। बजट पेश किए जाने से पूर्व विभिन्न क्षेत्रों से रेलवे विकास की माग उठती है। रेल विकास सबंधी निर्णय अनेक बार राजनीति प्रेरित होते हैं। राजस्थान सामरिक दृष्टि से देश का महत्त्वपूर्ण राज्य है। इसके बावजूद राजस्थान रेलवे विकास की दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछडा हुआ है। वर्ष 1999-2000 के रेल बजट में राजस्थान में रेलवे विकास पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। राजस्थान से केवल एक रेलगाडी जयपुर-बगलौर वाया सिकदराबाद (सप्ताह में दो बार) चलाने की घोषणा की गई है। एक रेलगाडी मीटर गेज की बीकानेर - जयपुर एक्सप्रेस का चालन क्षेत्र अजमेर तक बढाने की घोषणा की गई है। एक अन्य रेलगाडी दिल्ली-गाधी धाम राजस्थान होकर गुजरेगी। इसके अलावा राजस्थान से सबधित अनूपगढ-

बीकानेर, जैसेलमेर-काडला, रामगंजमंडी-झालावाडा-भोपाल मार्गो पर नई रेल लाईन के सर्वेक्षण की घोषणा की गई है। इनके अलावा राजस्थान को और कुछ नहीं मिला है। राजस्थान की महत्ता को दृष्टि मे रखते हुए अधिक नई रेल गाडियां चलाने, पुरानी गाडियो के फेरे बढाने, गेज परिवर्तन व अधिक विद्युतीकरण की आवश्यकता है। जयपुर-सवाईमाधोपुर रेल लाईन का विद्युतीकरण नहीं किया जाना राजस्थान की उपेक्षा दर्शाता है। जयपुर-चेन्नई एक्सप्रेस के फेरे बढाने की आवश्यकता है। इसके अलावा जयपुर-सवाईमाधोपुर रेलगाडी का चालन क्षेत्र कोटा तक बढाया जाना चाहिये। एक रेलगाडी जयपुर-भोपाल बाया बारा चलाने की आवश्यकता है।

अच्छे निर्णय

रेल बजट मे कुछ अच्छे निर्णय लिए गए है। प्लेटफॉर्म और रेलगाडियो मे 5 जून 1999 से सिगरेट, बीडी की बिक्री बन्द करने का निर्णय प्रशंसनीय है किन्तु साथ गुटके, जर्दे, तम्बाकू आदि की बिक्री बंद करने की आवश्यकता है। रेलगाडियो मे आजकल शराब पीकर यात्रा करने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। सरकार को ऐसे लोगो के खिलाफ सख्ती बरतने की आवश्यकता है। रेलमंत्री ने वर्ष 1999-2000 को यात्री वर्ष घोषित किया है। आशा की जाती है कि इस वर्ष यात्री सुविधाओं पर विशेष ध्यान रखा जाएगा। यात्रियो की सुविधाओं के लिए बजट मे राष्ट्रीय पूछताछ प्रणाली की स्थापना टेली बुकिंग के लिए पायलट परियोजना, कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली मे कस्टमर केयर इंस्टीट्यूट की स्थापना, यात्री आरक्षण प्रणाली मे चेन्नई को 31 मार्च 1999 तक नेटवर्क से जोडना, 150 स्टेशनो पर यात्रियों की शिकायत मोनीटरिंग कम्प्यूटर द्वारा की जाना, इंटर एक्टिव वायस रिस्पास प्रणाली की सुविधा का 44 स्टेशनो तक विस्तार किया जाना आदि महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गए है। इसके अलावा विकलांगो, पत्रकरो व कुलियों के लिए रियायतो में वृद्धि करना अच्छी बात है। किन्तु माल भाडे मे बढोतरी तथा ऊंचे दर्जे की यात्रा महगी करना बजट के कठोर कदम है। माल भाडे मे की गई बढोतरी से मुद्रास्फीति बढेगी जो पहले ही फरवरी 1999 के आखिरी सप्ताह मे 5 प्रतिशत को छू गई है। इसकी मार निश्चित रूप से गरीबो पर पडेगी। ऊंचे दर्जे की रेल यात्रा बहुत मंहगी होने से धनिको की जेब भी खाली होगी।

दृष्टिकोण

हरेक वर्ष पेश किए जाने वाले रेल बजट में आम आदमी उपेक्षित रह जाता है। यह बात अवश्य सही है कि विगत वर्षो मे रेलगाडियो के सामान्य

श्रेणी के किराये में ज्यादा वृद्धि नहीं की गई है, इससे आम आदमी को राहत मिली। किन्तु सवारी गाडियों की दशा सुधारने के कारगर प्रयास नहीं किए गए हैं। भारत की सवारी रेलगाडियों और तीव्र गति की रेलगाडियों के सामान्य कोच में यात्रा की दशा शोचनीय है। रेलगाडियों में गन्दगी का बडा कारण स्वयं रेल यात्री भी हैं। रेल यात्री चाहकर भी रेल सुधार में योगदान नहीं कर पाते है। रेलों का विकास देश की आवश्यकता के अनुसार नहीं हुआ है। कई रेलगाडियों में इतनी भीड होती है कि यात्रियों के लिए हिलना डुलना भी कठिन हो जाता है। रेलों में अपराध प्रवृत्ति तीव्रता से बढ रही है। कुली, कर्मचारी यात्रियों को लूटने पर तुले रहते हैं। रेलवे कर्मचारियों के द्वारा अनेक बार रेल डिब्बों के ताले रेल प्रस्थान समय के कुछ मिनट पूर्व ही खोले जाते है ऐसे मे यात्रियों का रेल डिब्बों मे प्रवेश बेहद कष्टप्रद होता है जेब कतरे न जाने कितने यात्रियों की जेबें साफ कर लेते हैं। फिर रेल डिब्बों के भीतर सीटों के लिए झगडे रेलवे की दैनन्दिनी समस्या है। यात्री परस्पर मारपीट पर उतारु रहते हैं। रेल डिब्बो में यात्रियों की सुरक्षा की उपयुक्त व्यवस्था नहीं होती है। समूह में चढने वाले यात्रियों की दादागिरी को आसानी से देखा जा सकता है। आज रेल यात्रा जोखिमपूर्ण हो गई है। व्यक्ति मजबूरी में ही रेलयात्रा करना पसन्द करता है।

सरकार को सबसे पहले रेल यात्रियों की सुरक्षा के वास्ते कडे कदम उठाने चाहिए। रेलवे सुरक्षा कर्मियों को सामान्यतया अपराध प्रवृत्ति वाले लोगों की जानकारी होती है। रेलवे पुलिस को चाहिए कि अपराध प्रवृत्ति वाले लोगों को कारागृह में बन्द करें। सुरक्षा कर्मियों को मूकदर्शक बने नहीं रहना चाहिए। रेल गाडियों का विलम्ब से पहुचना एक बडी समस्या है इसे नियंत्रित किया जाना चाहिए। लम्बी दूरी की तेज गति की सभी गाडियों में कम से कम चार सामान्य श्रेणी के कोच होने चाहिएं, चाहे बदले में स्लीपर कोच कम कर दिए जाए। सामान्य श्रेणी के कोच बढने पर रेल यात्रियों को बडी राहत महसूस होगी। रेलवे में टिकिट जाच करने वाले कर्मचारी रेलवे को आर्थिक नुकसान पहुचाने में पीछे नहीं हैं। इन कर्मचारियों ने स्वयं की ही आर्थिक स्थिति मजबूत की है। अनेक बार बिना टिकिट यात्रियों से रुपए वसूल कर रेलवे रसीद नहीं दी जाती है। कितने ही यात्री रेल कर्मचारियों की मदद से मुफ्त मे यात्रा करते है। रेलवे मे नियुक्त सुरक्षा प्रहरी भी टिकिट से थोडी कम राशि लेकर लोगो को यात्रा कराने लगे हैं। क्या रेल मत्रालय बिना टिकिट रेल यात्रियो और भ्रष्ट रेल कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कदम उठायेगा? रेलवे मे बढते भ्रष्टाचार को नियंत्रित करके रेल राजस्व मे वृद्धि की जा सकती है।

16

राजस्थान का बजट 1999–2000 : राजस्व घाटे से बढ़ता कर्ज भार

राजस्थान के तत्कालीन वित्तमंत्री चन्दनमल बैद ने 26 मार्च 1999 को राज्य विधान सभा में वर्ष 1999-2000 का बजट पेश किया। बजट पेश किए जाते समय भारतीय अर्थव्यवस्था समेत अनेक राज्यो की अर्थव्यवस्था की स्थिति दयनीय थी। राजस्थान की नई सरकार ने हाल ही (19 मार्च 1999) राज्य अर्थव्यवस्था पर श्वेत पत्र जारी किया है जिसमें अर्थव्यवस्था की माली हालत पर चिन्ता प्रकट की गई है। विगत वर्षों में विभिन्न आर्थिक सूचकों में राजस्थान के आर्थिक विकास की बात कही जाती रही है किन्तु वास्तविकता यह है कि राजस्थान आज भी विकास के क्षेत्र में देश के कई राज्यों से पीछे है तथा अर्थव्यवस्था संकट की चपेट में है। वर्ष 1998-99 में राज्य में प्रतिव्यक्ति आय में गिरावट आई है तथा शुद्ध घरेलू उत्पादन में नाम मात्र की वृद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति आय में राजस्थान के औसत का अनुपात राष्ट्रीय औसत की तुलना मे कम है। वर्ष 1992-93 मे राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आय तथा राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय में 268 रुपए का अन्तर था जो 1996-97 के अन्त मे बढकर 514 रुपए हो गया। स्थिर कीमतो पर राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय 1994-95 में 2,060 रुपए थी जो बढकर 1997-98 में 2,306 रुपए हो गई किन्तु 1998-99 में 1.3 प्रतिशत कम होकर 2,275 रुपए रह गई। प्रचलित कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय मे अवश्य वृद्धि हुई। प्रचलित कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय 1997-98 में 9,356 रुपए थी जो 1998-99 में 4.94 प्रतिशत बढकर 9,819 रुपए (अनुमानित) हो गई। शुद्ध घरेलू उत्पादन 1980-81 के स्थिर मूल्यो पर 1997-98 मे 11,599 करोड रुपए थे जो मामूली 0.42 प्रतिशत बढकर 1998-99 में 11,648 करोड रुपए

(अनुमानित) हो गया। प्रचलित मूल्यों पर शुद्ध घरेलू उत्पाद 1997-98 में 47,055 करोड रुपए था जो 6.84 प्रतिशत बढकर 1998-99 में 50,271 करोड रुपए हो गया।

कृषि के क्षेत्र में राज्य का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट आई है। खाद्यान्न उत्पादन 1997-98 में 140.33 लाख टन था जो 20 प्रतिशत घटकर 1998-99 में 112.25 लाख टन (संभावित) रह गया। अनाज के उत्पादन 1997-98 में 114 लाख टन से घटकर 1998-99 में केवल 92 लाख टन (सम्भावित) रह गया। अनाज के उत्पादन में गत वर्ष की तुलना में 19.3 प्रतिशत की कमी हुई। गन्ने का उत्पादन 1997-98 में 11.59 लाख टन था जो घटकर 1998-99 मे 9.54 लाख टन रह गया। केवल तिलहन के उत्पादन में मामूली वृद्धि हुई। तिलहन का उत्पादन 1997-98 में 32.96 लाख टन था जो बढकर 1998-99 में 35.58 लाख टन हो गया। तिलहन के उत्पादन में 1998-99 में 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। नब्बे के दशक में अर्थव्यवस्था में उत्तरोत्तर गिरावट आई। सिंचित क्षेत्र के नहीं बढने से कृषि विकास की गति प्राप्त नही कर सकी। कृषि के पिछडने के कारण औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि नही हुई। कृषि तथा उद्योगों को पिछडने से बेरोजगारी की समस्या जटिल हो गई। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 38वें चक्र के अनुसार राजस्थान में 1992-93 में 2.04 लाख लोग बेरोजगार थे। बेरोजगार लोगों की संख्या बढकर 1996-97 में 5.86 लाख हो गई। बेरोजगारी की बढती सख्या को देखते हुए सन् 2000 तक "सबके लिए रोजगार" का लक्ष्य प्राप्त करना जटिल है।

राज्य की अर्थव्यवस्था ऋण भार में डूबी हुई है। हाल के वर्षों में ऋण वृद्धि दर अत्यधिक रही है। ऋण पर ब्याज का भारी बोझ है। प्रदेश ऋण के जाल में फंसने के कगार पर पहुच चुका है। राजस्थान पर कुल ऋण भार 1995-96 में 14,103 करोड रुपए, 1996-97 में 16,775 करोड रुपए, 1997-98 में 19,834 करोड रुपए तथा 1998-99 में 23,840 करोड रुपए (अनुमानित) था। वर्ष 1998-99 में ऋण भार में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1995-96 में राजस्थान पर प्रति व्यक्ति ऋण 2,830 रुपए था। प्राप्त ऋण का विकास कार्यों में अपेक्षित उपयोग नहीं किए जाने के कारण राजस्थान विकास की दौड में दूसरे राज्यों से पिछडा हुआ। है। वर्ष 1991-92 से 1996-97 के 6 वर्षों में सकल घरेलू उत्पादन की औसत वृद्धि दर राजस्थान में 5.58 प्रतिशत थी जबकि यह गुजरात में 8.23 प्रतिशत, महाराष्ट्र में 7.96 प्रतिशत, आन्ध्र प्रदेश में 7.90 प्रतिशत, त्रिपुरा में 7.8 प्रतिशत, पश्चिम बगाल में 6.82 प्रतिशत, कर्नाटक में 6.11 प्रतिशत तथा तमिलनाडु

में 5.71 प्रतिशत थी।

ताजे बजट (1999-2000) में राजस्थान की बिगडी अर्थव्यवस्था को वापस पटरी पर लाने के प्रयास दृष्टिगोचर होते हैं। बजट में एक ओर आधारभूत संरचना के विकास पर बल दिया गया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विकास पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। राज्य की वित्तीय दशा को सुधारने के लिए बजट में कुछ कठोर कदम उठाये गये हैं। बिजली व सिंचाई दरों में वृद्धि की गई है। वेतन भोगियों पर व्यवसाय कर लगा दिया है जिन पर पहले ही आयकर का भार अधिक है।

बजट एक दृष्टि

(करोड रुपए)

क्र. सं.	मदें	1998-99 बजट अनुमान	1998-99 सशोधित अनुमान	1999-2000 बजट अनुमान
1.	राजस्व प्राप्तियां	10189.47	8838.10	10165.26
2.	राजस्व व्यय	11521.56	11771.55	13556.76
3.	राजस्व घाटा	-1332.09	-2933.45	-3391.90
4.	पूंजीगत प्राप्तियां	5758.41	8260.79	7195.86
5.	पूंजीगत व्यय	4198.12	6301.83	4405.95
6.	पूंजीगत खाते में आधिक्य	1560.29	1958.96	2789.91
7.	बजटीय अधिशेष/घाटा	228.20	-974.49	-601.59
8.	प्रारम्भिक घाटा	-227.34	-227.34	----
9.	अन्तिम अधिशेष/घाटा	86 00	-1201.83	----

स्रोत. राजस्थान राज्य बजटों से संकलित।

राजस्थान के राजस्व घाटे में तीव्र बढोतरी हुई है। राजस्व व्यय की तुलना में राजस्व प्राप्तियां कम हैं। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानों में राजस्व घाटा 1,332 09 करोड रुपए था जो संशोधित अनुमानों में 2,933 45 करोड़ रुपए तक जा पहुंचा। वर्ष 1999-2000 में राजस्व प्राप्तियाँ 10,165.26 करोड रुपए तथा राजस्व व्यय 13,556.76 करोड रुपए अनुमानित है जिससे राजस्व घाटे के 3,391.50 करोड रुपए तक पहुंचने की संभावना है। राजस्व घाटे के बढने से प्रदेश के ऋण भार में भारी वृद्धि हुई है तथा बजट घाटा भी बढा है। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानों में बजटीय अधिशेष 228.20 करोड रुपए आका गया था जो सशोधित अनुमानों में

974.49 करोड़ रुपए के बजट घाटे मे परिवर्तित हो गया। वर्ष 1999-2000 मे पूजीगत प्राप्तिया 7,195.86 करोड़ रुपए, पूजीगत व्यय 4,405.95 करोड़ रुपए तथा पूजीगत खाते मे आधिक्य 2,789.91 करोड़ रुपए अनुमानित है तथा 601.59 करोड़ रुपए का बजटीय घाटा छोड़ा गया है। वर्ष 1999-2000 के बजट मे वर्ष 1998-99 के अतिम घाटा के 1,201.83 करोड़ रुपए का कोई इतजाम नहीं किया गया है। इसकी पूर्ति के लिए राजस्थान सरकार को केन्द्र सरकार की सहायता का इतजार है। राज्य सरकार के 762 करोड़ रुपए के अतिरिक्त ससाधन जुटाने का प्रस्ताव किया है जिससे 601.59 करोड़ रुपए के घाटे का बजट 160.41 करोड़ रुपए के अधिशेष बजट मे बदल गया।

विकास की गति वार्षिक योजनाओ के आकार पर निर्भर करती है। राजस्थान की नौवीं पचवर्षीय योजना का आकार 27,650 करोड़ रुपए निर्धारित किया गया है। नौवीं योजना के दो वर्ष बीत चुके है। वर्ष 1997-98 की वार्षिक योजना 3,240.35 करोड़ रुपए (वास्तविक) थी। वर्ष 1998-99 की वार्षिक योजना 4,300 करोड़ रुपए स्वीकृत की गई थी जो 1997-98 की वार्षिक योजना परिव्यय से 32.70 प्रतिशत अधिक थी। किन्तु 1998-99 की वार्षिक योजना सशोधित अनुमानो मे 4,078 करोड़ रुपए रही। वार्षिक योजना बजट अनुमानो की तुलना मे 222 करोड़ रुपए अर्थात् 5.2 प्रतिशत कम है। नौवीं पचवर्षीय योजना के तीसरे वर्ष 1999-2000 की वार्षिक योजना का आकार 5,022 करोड़ रुपए निर्धारित किया गया है जो 1998-99 की सशोधित वार्षिक योजना की तुलना मे 23.15 प्रतिशत अधिक है। वार्षिक योजना मे उत्पादन व रोजगार मे वृद्धि, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओ में सुधार, बिजली व सिचाई परियोजनाओ का विकास व पेयजल आदि पर विशेष बल दिया गया है। वर्ष 1999-2000 की वार्षिक योजना परिव्यय का 31 प्रतिशत सामाजिक और सामुदायिक सेवाओ पर, 19 प्रतिशत विद्युत पर, 15 प्रतिशत परिवहन पर, 13 प्रतिशत सिचाई एव बाढ नियन्त्रण पर, 8 प्रतिशत ग्रामीण व विशेष क्षेत्रीय विकास पर, 7 प्रतिशत कृषि व सबद्ध सेवाओ पर, 4 प्रतिशत उद्योग व खनिज पर तथा 3 प्रतिशत विविध पर व्यय किए जाने का प्रावधान है। केन्द्र तथा राज्य की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं होने के बावजूद वार्षिक योजना के आकार में वृद्धि से राज्य मे विकास की गति तेज होगी।

औद्योगिक विकास के क्षेत्र में राजस्थान की प्रगति धीमी रही जबकि राजस्थान खनिजो का अजायबघर होने के कारण यहा औद्योगिक विकास की विपुल सभावनाएं है। औद्योगीकरण में पिछड़ने का प्रमुख कारण आधारभूत

सरचना का अभाव रहा हे। इसके अलावा आर्थिक उदारीकरण के दौर मे राजस्थान विदेशी निवेशको को अधिक आकर्षित नहीं कर सका। सार्वजनिक पूजी निवेश भी प्रान्त मे तुलनात्मक रूप से कम है। आर्थिक पिछडेपन को दूर करने के लिए औद्योगीकरण को गति देना आवश्यक है। ताजे बजट मे औद्योगीकरण और आधारभूत सरचना के प्रयास दृष्टिगोचर हुए हैं। औद्योगिक इकाइयो को प्रोत्साहन देने के लिए नवीन ब्याज अनुदान योजना प्रारम्भ करने की घोषणा की गई है। इसमे औद्योगिक इकाइयो को दीर्घकालीन ऋण लेने पर 2 प्रतिशत की दर से ब्याज सहायता उपलब्ध करायी जाएगी। इसके अलावा लघु उद्योगो को प्रोत्साहन हेतु 5 करोड रुपए का "रिवाल्विग फण्ड" स्थापित करने का प्रस्ताव है। इसमे छोटी से छोटी ग्रामीण उद्योग इकाइयो को ऋण और सहायता सुलभ होगी।

सडकें और विद्युत प्रमुख आधारभूत सरचना और विकास का प्रमुख माध्यम है। सडक विकास के लिए 1999-2000 मे 515 84 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है। बजट मे 1,350 किलोमीटर सडको का निर्माण कर 265 पचायत मुख्यालयो सडको से जोडने का लक्ष्य है। इसके अलावा विश्व बैंक की सहायता से राज्य मे हाइवे परियोजना शुरू किया जाना प्रस्तावित है। वर्ष 1999-2000 मे विद्युत क्षेत्र के लिए 948 80 करोड रुपए का प्रावधान किया गया है। ग्रामीण विद्युतीकरण के अन्तर्गत 700 ग्रामो का विद्युतीकरण तथा 30 हजार कुओ का उर्जीकरण किए जाने का लक्ष्य है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दशा को सुधारने मे मदद मिलेगी।

बजट मे शिक्षा के क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए है। राज्य की 16 हजार बस्तियो मे प्राथमिक शिक्षा केन्द्र की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है। इन केन्द्रो पर पढने वाले बच्चो को राज्य सरकार पुस्तके नि शुल्क देगी। इसके अलावा कुर्सी-टेबल, टाट पट्टी तथा भवन के रख-रखाव आदि व्यवस्था के लिए 8 हजार रुपए तक का एक मुश्त अनुदान दिया जाएगा। वर्ष 1999-2000 मे प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा पर 2,675 75 करोड रुपए व्यय किए जाने का प्रावधान है। बजट मे एक हजार प्राथमिक 400 उच्च प्राथमिक तथा 200 माध्यमिक विद्यालयो की क्रमोन्नति की घोषणा की गई है। राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र मे बहुत पीछे है। यहां निरक्षरता का अंधकार अभिशाप बना हुआ है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार 7 वर्ष और अधिक आयु की जनसख्या मे 61 45 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। पुरुषो मे निरक्षरता 45 प्रतिशत है। महिला निरक्षरता की समस्या तो बहुत ही विषम है। राज्य मे 80 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर है। बजट मे शिक्षा के क्षेत्र मे किए गए प्रयासो से शिक्षा की दशा मे सुधार की आशा की जा सकती है। किन्तु

राजस्थान मे नए विद्यालयो की स्थापना तथा पुराने विद्यालयो की क्रमोन्नति के साथ शैक्षिक अवसरचना में भी सुधार की महती आवश्यकता है। आज अधिकाश विद्यालयो मे शैक्षिक सामग्री नहीं है, अध्यापको का अभाव है, भवनो का अभाव है तथा भवन जर्जर अवस्था मे हैं, विद्यालयो के चारो और दीवारे नहीं है, आवश्यक सुविधाओ का अभाव है। राज्य सरकार को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा को स्तरीय बनाए रखने की आवश्यकता है। हाल ही (मार्च 1999) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक परीक्षाओ के लिए प्रश्न-पत्र "आउट" होने के कारण परीक्षाऐ स्थगित करनी पडी हैं। इन घटनाओ की पुनरावृत्ति रोकने के लिए राज्य सरकार को कठोर कदम उठाने होंगे।

विगत वर्षो मे उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे शैक्षिक गतिविधियाँ कम तथा राजनीति अधिक होने लगी। उच्च शिक्षा संस्थाएें राजनीति के अखाडे के रूप मे उभरीं। उच्च शिक्षा की बिगडी दशा सुधारना राज्य सरकार के लिए चुनौती है। उच्च शिक्षा के लिए 1999-2000 में 213 63 करोड रुपए व्यय किए जाने का प्रस्ताव है जो 1998-99 के बजट अनुमानो से 17 25 करोड रुपए अधिक है। प्रदेश में ग्यारह नए महाविद्यालय खोलने की घोषणा की गई है। जोधपुर में विधि विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है। इसके अलावा बढती छात्र सख्या को दृष्टिगत रखते हुए अनेक नए सकाय खोलने की भी घोषणा की गई है। राज्य सरकार उच्च शिक्षा की दशा बेहतर बनाने वास्ते सचेष्ट है।

ताजा बजट राजस्थान की विषम आर्थिक स्थिति मे पेश किया गया सतुलित बजट है। बजट मे आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास पर भी बल दिया गया है। समाज के कमजोर और उपेक्षित लोगो की दशा सुधारने के भी कदम उठाए गए है। इसके अलावा स्वतत्रता सेनानियो की भी सुध ली गई है। आर्थिक मोर्चे पर राजस्थान की स्थिति दयनीय है। रुपए का 48 प्रतिशत आयोजना भिन्न व्यय तथा 15 प्रतिशत ब्याज सदाय पर खर्च हो रहा है जबकि आयोजना व्यय पर केवल 20 प्रतिशत ही खर्च हो रहा है। बढता ऋण भार चिन्ताप्रद बात है। ससाधनो की प्राप्ति मे रुपए का 41 प्रतिशत केन्द्रीय ऋण और आन्तरिक उधार से प्राप्त होता है। राजस्व घाटे के बढने से ऋण भार मे और वृद्धि होगी। इसके अलावा राज्य मे बेरोजगारी, निरक्षरता, गरीबी, क्षेत्रीय विषमता आदि समस्याऐ मुहबाए खडी हैं। वर्तमान राज्य सरकार को प्रदेश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए प्रभावोत्पादक कदम उठाने होंगे।

17

दयनीय औद्योगिक स्थिति और सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश

औद्योगिक विकास आधुनिक युग की अनिवार्यता है। आज आर्थिक विकास औद्योगीकरण पर निर्भर है। आर्थिक और सामरिक दृष्टि से सम्पन्न और विकसित कहे जाने वाले देश औद्योगीकरण द्वारा ही विकास के शिखर तक पहुंचे हैं। आज विश्व के सभी विकासशील देश तीव्र औद्योगिक विकास के लिए प्रयासरत है। भारत में स्वातन्त्र्योत्तर औद्योगिक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन का सूत्रपात हुआ। औद्योगिक वातावरण को सुदृढ करने के वास्ते 6 अप्रैल, 1948 को राष्ट्रीय सरकार द्वारा औद्योगिक नीति की घोषणा कर आधारभूत उद्योगों पर जोर दिया गया। फलस्वरूप सातवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ होने तक औद्योगिक विकास सबंधी व्यापार आधारभूत ढाचा तैयार हो चुका था।

भारत ने विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करते 1991 से आर्थिक सुधारो की शुरुआत की। आर्थिक सुधारों के दौरान अर्थव्यवस्था मे अनेक संरचनात्मक बदलाव किए गए। औद्योगिक नीति मे किए गए परिवर्तन उल्लेखनीय है। नयी नीति में औद्योगिक लाइसेंसीकरण, विदेशी निवेश, विदेशी प्रौद्योगिकी, सार्वजनिक क्षेत्र, एकाधिकार तथा प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम तथा लघु उद्योगों के संबंध मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए गए। औद्योगिक नीति में किए गए परिवर्तनो से देश में औद्योगिक विकास का वातावरण बना।

नियोजित विकास की एक उपलब्धि सार्वजनिक उपक्रमो का तीव्र विकास है। पंचवर्षीय योजनाओ मे सार्वजनिक उपक्रमो मे भारी पूंजी निवेश किया गया, जिससे अर्थव्यवस्था मे सार्वजनिक उपक्रमों की भूमिका बढी।

प्रतिशत, खान एव खदान मे 5.6 प्रतिशत तथा बिजली में 9.3 प्रतिशत थी। आठवीं पचवर्षीय योजना मे औसत औद्योगिक वृद्धि दर 8.02 प्रतिशत रही।

नौवीं योजना में सार्वजनिक क्षेत्र का उपरिव्यय 8,75,000 करोड रुपए निर्धारित किया गया है। इसमें उद्योग तथा खनन क्षेत्रक का परिव्यय 71,684 करोड रुपए प्रस्तावित है जो कुल सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय का 8.2 प्रतिशत है। नौवीं योजना में उद्योगों के विकास के लिए बुनियादी ढाचे के विकास पर जोर दिया जाएगा। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगो को व्यावसायिक आधार पर चलाने, बुनियादी सेवाओ के क्षेत्र मे निजी पूजी निवेश को आकृष्ट करने और दोनों में परस्पर प्रतिस्पर्धाओं को बढावा देने तथा दरो के निर्धारण के लिए नियामक एजेंसियो के गठन की रणनीति पर अमल किया जाएगा।

आर्थिक उदारीकरण में औद्योगिक विकास

भारत मे आर्थिक उदारीकरण के दस वर्ष पूरे हो चुके हैं। इन वर्षो मे आर्थिक सुधारो के दस परिचायक बजट पेश किए जा चुके हैं। एक जून 1998 को वित्त मत्री यशवत सिन्हा ने स्वदेशी उद्योगों को बढावा देने वाला बजट लोकसभा मे पेश किया। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे औद्योगीकरण को गति देने का प्रयास किया गया है। वर्ष 1991-92 मे कृषि आधारित उद्योगो को उत्पादन शुल्क से मुक्त किया गया, इस निर्णय से कृषि आधारित उद्योगो के उत्पाद सस्ते हुए। वर्ष 1993-94 में औद्योगिक पुनरुत्थान पर बल दिया गया। देश मे विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने व उनके लिए उत्साहवर्द्धक वातावरण बनाने के लिए आयात शुल्क मे अप्रत्याशित कमी की। आयात शुल्कों मे भारी कटौती से भारतीय उद्योगो को विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पडा। भारतीय उद्योगो को प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाने के लिए उत्पाद शुल्क मे छूट दी गई। वर्ष 1994-95 मे आयात शुल्क की उच्च दरो को 85 प्रतिशत से घटाकर 65 प्रतिशत किया गया लेकिन यात्री सामान और शराब पर शुल्क की ऊंची दर अपरिवर्तित रखी। उद्योगो के लिए कच्ची सामग्री के आयात पर उल्लेखनीय छूट दी गई। सीमा शुल्क की अधिकतम दरें 85 प्रतिशत से घटाकर 50 प्रतिशत की गईं। मशीनो, औजारों पर लगने वाले 40 प्रतिशत, 60 प्रतिशत और 80 प्रतिशत की दरो के स्थान पर सीमा शुल्क की केवल दो दरें 35 प्रतिशत और 45 प्रतिशत लागू की गईं। नियमित कर ढाचे मे भी सुधार किया गया। बहुजनाधारित कम्पनियों पर 45 प्रतिशत तथा अन्य कम्पनियो पर 50 प्रतिशत कर के भेद को समाप्त कर दोनो दरो को कम कर के 40 प्रतिशत की एकल दर लागू की गई।

सरकार ने उद्योगों को करो के जबरदस्त बोझ से मुक्त करने की पहल की। भारतीय उद्योग विदेशी उद्योगों से प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति मे आए। वर्ष 1995-96 मे आयात शुल्क की अधिकतम सीमा घटाकर 50 प्रतिशत की गई। मशीनी औजारो पर आयात शुल्क की 35 प्रतिशत तथा 45 प्रतिशत की दर से घटाकर 25 प्रतिशत किया गया। आयात शुल्को में की गई कमी से स्वदेशी उद्योगो को प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति मे टिकने में कठिनाई हुई। देशी उद्योगो की दशा सुधारने के लिए उत्पाद शुल्कों मे कटौती की गई। औद्योगीकरण की व्यापक सम्भावनाओ को देखते हुए उच्च कोटि के आधारभूत ढाचे के विस्तार के लिए राजमार्गो, तीव्रगामी मार्गों, नये विमान पत्तनो, नो पत्तनो और तीव्र गामी जल परिवहन प्रणालियो के क्षेत्र में आधारभूत ढाचे सबधी सुविधाएं निर्मित और प्रचलित करने वाले उद्यम को करावकाश का प्रावधान किया गया।

भारत में डा मन मोहन सिह आर्थिक सुधारों के शिल्पी कहे जाते है। डा सिह ने 1991-92 से 1995-96 तक लगातार पांच केन्द्रीय बजट लोक सभा मे पेश किए। इन सभी बजटों मे आर्थिक सुधारों की छाप परिलक्षित हुई। वर्ष 1991-92 से 1995-96 तक पाच वर्षों मे अर्थव्यवस्था की स्थिति में सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई। औद्योगिक विकास का वातावरण बना किन्तु कृषि तथा ग्रामीण क्षेत्र पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिए जाने के कारण ग्रामीण परिवेश की आर्थिक दशा में सुधार नहीं हुआ।

काग्रेस के बाह्य समर्थन से 1996-97 मे सयुक्त मोर्चा सरकार सत्तारूढ हुई। संयुक्त मोर्चा सरकार ने न्यूनतम फेरबदल के साथ काग्रेस की ही आर्थिक नीतियो को जारी रखा। औद्योगीकरण के लिए नीतिगत बदलाव नहीं किया गया। वर्ष 1996-97 मे आधारभूत ढाचे का विकास तथा विदेशी निवेश को आकर्षित करने का प्रयास किया गया। ढाचागत विकास को बढावा देने के लिए 5,000 करोड रुपए की प्राधिकृत शयर पूजी से आधारभूत सरचना विकास वित्त कपनी (आई. डी एफ सी) की स्थापना की गई। इसी वर्ष विनिवेश आयोग की स्थापना का निर्णय लिया गया तथा 1996-97 मे विनिवेश से 5,000 करोड रुपए एकत्रित करने का लक्ष्य रखा गया। उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढाने के लिए उद्योगो को तकनीक आयात करने की सीमा एक करोड रुपए से बढाकर सात करोड़ रुपए कर दी। सरकार ने 51 प्रतिशत विदेशी निवेश जुटाने में सक्षम 35 उद्योगो की सूची को बढाने का निर्णय किया।

उद्योग तथा खनन विकास शीर्ष पर 1997-98 की वार्षिक योजना मे 11,199 80 करोड रुपए परिव्यय का प्रावधान किया गया जो वार्षिक योजना

परिव्यय का 12 19 प्रतिशत था। वर्ष 1997-98 मे विदेशी निवेश के प्रवाह मे वृद्धि के लिए अनिवासी भारतीयो और विदेशी कम्पनियो द्वारा किसी भी कम्पनी मे निवेश की 24 प्रतिशत की वर्तमान सीमा को बढाकर 30 प्रतिशत कर दिया है। इसके अलावा उपक्रम पूजी निधियों द्वारा किसी भी कपनी ने अपनी संचित राशि के 5 प्रतिशत तक निवेश की सीमा को बढाकर 20 प्रतिशत किया गया। कर ढांचे मे भी व्यापक सुधार किया गया।

केन्द्रीय बजट 1998-99 और उद्योग

बारहवीं लोकसभा चुनाव बाद अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे भाजपा गठबंधन सरकार सत्तारूढ हुई। वित्त मत्री यशवत सिन्हा द्वारा एक जून 1998 को लोक सभा मे पेश किए गए 1998-99 के बजट में औद्योगिक विकास के लिए नयी पहल की। सभी आयातो पर 8 प्रतिशत आयात कर आरोपित किया गया जिसे बाद मे घटाकर 4 कर दिया गया। इससे घरेलू उद्योगो की दशा मे सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होगी। आयात कर मे वृद्धि होने से विदेशी उत्पाद महगे होगे जिससे घरेलू कम्पनिया प्रतिस्पर्धा मे टिक सकेंगी। केन्द्र सरकार ने औद्योगिक विकास को गति देने वास्ते आधारभूत सरचना क्षेत्र के योजना परिव्यय मे 35 प्रतिशत की वृद्धि की है तथा कोयला लिग्नाइट तथा पेट्रोलियम उत्पादो को लाइसेस से मुक्त करने का निर्णय लिया है। इसके अलावा विदेशी पूजी निवेश को आकर्षित करने के लिए कदम उठाए गए हैं। लघु उद्योगो की कार्यशील पूजी की सीमा को दोगुना 4 करोड रुपए कर दिया गया है।

वर्तमान औद्योगिक स्थिति

आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भ मे औद्योगिक वृद्धि मे भारी गिरावट थी। औद्योगिक उत्पादन मे गिरावट का प्रमुख कारण खाडी युद्ध जनित आर्थिक संकट था। बाद के वर्षो मे आर्थिक संरचना मे किए गए मूलभूत बदलावो के कारण औद्योगिक विकास मे सुधार की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई। 1995-96 की औद्योगिक वृद्धि उल्लेखनीय थी, किन्तु अगले ही वर्ष 1996-97 मे औद्योगिक उत्पादन मे भारी गिरावट दर्ज की गई है। औद्योगिक वृद्धि दर *1991-92 मे केवल 0 6 प्रतिशत थी जो बढकर 1992-93 मे 4 2* प्रतिशत, 1993-94 मे 6 6 प्रतिशत तथा 1994-95 मे 10 4 प्रतिशत हो गई। औद्योगिक वृद्धि दर 1995-96 मे 12.5 प्रतिशत तक जा पहुची थी, किन्तु बाद के वर्षो मे यह घटी। औद्योगिक वृद्धि दर 1996-97 मे घटकर 5 6 प्रतिशत तथा 1998-99 मे और घटकर केवल 4 प्रतिशत रह गई।

उपयोगिता आधारित वर्गीकरण अनुसार औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर

(प्रतिशत वृद्धि)

उद्योग समूह	1991-92	1993-94	1994-95	1995-96	1997-98	1998-99
1 मूल उद्योग	6.2	9.4	5.5	8.7	7.0	1.4
2 पूंजीगत वस्तु उद्योग	-12 8	-4 1	24 8	17 8	4 0	12 7
3 मध्यवर्ती वस्तु उद्योग	-0 7	11 7	3 7	10 2	6 9	5 9
4 उपभोग वस्तु उद्योग	-1 8	4 0	8 7	12 5	4.6	2 4
(1) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	-12 5	16 1	10.2	37.1	7 8	4 7
(2) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	1 2	1.3	8 4	6 4	5 2	1 8

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे, 1996-97, तथा 1999-2000, पृ 116, दी इकोनॉमिक टाइम्स* 29 मई 1998

उपयोगिता आधारित औद्योगिक उत्पादन मे गिरावट हुई। वर्ष 1994-95 मे पूंजीगत वस्तु उद्योग मे 24 8 प्रतिशत की महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई थी। मूल उद्योग की वृद्धि दर 1995-96 मे 8 7 प्रतिशत से घटकर 1997-98 में 7 प्रतिशत, पूंजीगत वस्तु उद्योग वृद्धि दर 1995-96 मे 17 8 प्रतिशत से घटकर 1997-98 में 4 प्रतिशत, मध्यवर्ती वस्तु उद्योग में वृद्धि दर 1995-96 मे 10 2 प्रतिशत से घटकर 1997-98 मे 6 9 प्रतिशत तथा उपभोग वस्तु उद्योग की वृद्धि दर 1995-96 मे 12 5 प्रतिशत से घटकर 4 6 प्रतिशत रह गई।

प्रमुख आधारभूत औद्योगिक क्षेत्र मे विद्युत, कोयला, इस्पात, कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद तथा सीमेंट को सम्मिलित किया जाता है। आर्थिक उदारीकरण के वर्षो मे प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि दर मे उच्चावचन की प्रवृत्ति रही। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि दर 1991-92 मे 4 6 प्रतिशत थी जो 1992-93 मे घटकर 3 1 प्रतिशत रह गई। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि दर 1993-94 मे 5 3 प्रतिशत, 1994-95 मे 7 8 प्रतिशत तथा 1995-96 में 7 9 प्रतिशत थी। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र वृद्धि दर 1996-97 मे घटकर 3 4 प्रतिशत (प्राविजनल) तथा अप्रैल-फरवरी 1997-98 में 4 6 प्रतिशत रह

गई। वर्ष 1995-96 मे विद्युत वृद्धि दर 8 3 प्रतिशत, कोयला वृद्धि दर 6 4 प्रतिशत, इस्पात वृद्धि दर 8 9 प्रतिशत, कच्चा तेल वृद्धि दर 9.1 प्रतिशत, पेट्रोलियम उत्पाद वृद्धि दर 3 9 प्रतिशत तथा सीमेंट वृद्धि दर 11 2 प्रतिशत थी। अप्रैल-फरवरी 1997-98 मे प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि दर इस प्रकार रही - विद्युत 6 7 प्रतिशत, कोयला 3 9 प्रतिशत, इस्पात 0 5 प्रतिशत, कच्चा तेल 3 3 प्रतिशत, पेट्रोलियम उत्पाद 3 6 प्रतिशत तथा सीमेंट 9 4 प्रतिशत। अप्रैल-फरवरी 1997-98 मे गत वर्ष इसी समयावधि की तुलना मे विद्युत, कच्चा तेल और सीमेंट उत्पादन मे वृद्धि हुई जबकि कोयला, इस्पात, पेट्रोलियम उत्पाद में कमी दर्ज की गई।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में बदलाव

मई 1998 में औद्योगिक उत्पादन के सूचकाक का आधार वर्ष 1980-81 से बदलकर 1993-94 किया गया था। औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक की गणना के लिए 191 और वसतुओ को सम्मिलित किया गया, जिससे वस्तुओं की सख्या 352 से बढकर 543 हो गई है। औद्योगिक उत्पादन के सूचकाक की गणना के लिए 543 वस्तुओ मे 478 वस्तुएं निर्माण क्षेत्र, 49 वस्तुए खनन तथा एक वस्तु विद्युत क्षेत्र से ली गई है। आधार वर्ष बदलने के कारण औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक से वर्ष 1997-98 की सकल औद्योगिक विकास की सशोधित वृद्धि दर 6 6 प्रतिशत हो गई। सूचकांक मे बदलाव के कारण उत्पादन और खनन क्षेत्र की वृद्धि दर के समंक भी बदल गए है। खनन क्षेत्र वृद्धि दर पहले 4.9 प्रतिशत अब 5 6 प्रतिशत तथा उत्पादन क्षेत्र वृद्धि दर पहले 3.6 प्रतिशत अब 6 6 प्रतिशत हो गए। विद्युत क्षेत्र दर मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश

योजनाबद्ध विकास मे सार्वजनिक उपक्रमो ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सार्वजनिक उपक्रमो की स्थापना का मुख्य ध्येय सरकारी आय का महत्त्वपूर्ण स्रोत तथा द्रुतगति से औद्योगिक विकास का मार्ग प्रशस्त करना था। पंचवर्षीय योजनाओ मे सार्वजनिक उपक्रमों का तीव्र विकास हुआ। पहली पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ मे (एक अप्रैल 1951) सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों की संख्या 5 थी तथा उनमे कुल पूजी निवेश 29 करोड रुपए था। 31 मार्च 1997 को सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों की संख्या बढकर 236 तथा पूंजी निवेश 2,02,000 करोड रुपए हो गया। वर्ष 1970-71 मे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो मे 6 60 लाख लोगो को रोजगार मिला हुआ था। इन उपक्रमो को 145 करोड रुपए का सकल लाभ हुआ। पूंजी पर सकल लाभ

का प्रतिशत 4 था। वर्ष 1995-96 मे रोजगार बढकर 20.51 लाख हो गया। सकल लाभ 27,990 करोड रुपए तक जा पहुंचा। पूजी पर सकल लाभ का प्रतिशत 16.1 था।

सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में 1993-94 मे लाभ अर्जित करने वाले उपक्रमों की संख्या 120 तथा घाटा देने वाले उपक्रमो की सख्या 117 थी। विनियोजित पूंजी 1,59,307 करोड रुपए थी। सकल उपात (Gross Margin) 27,600 करोड रुपए, सकल लाभ 18,438 करोड रुपए तथा शुद्ध लाभ 4,435 करोड रुपए था। लाभ देने वाले उपक्रमों का लाभ 9,722 करोड रुपए तथा घाटा देने वाले उपक्रमों का घाटा 5,287 करोड रुपए था। विनियोजित पूंजी पर सकल उपांत की दर 17.33 प्रतिशत तथा विनियोजित पूजी पर सकल लाभ का प्रतिशत 11.59 था। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में विगत दशक में प्रत्याय दर में विशेष वृद्धि नहीं हुई है। विनियोजित पूजी पर शुद्ध लाभ 1981-82 में 2.03 प्रतिशत था जो थोडा बढकर 1990-91 में 2.23 प्रतिशत हो गया। विनियोजित पूंजी पर शुद्ध लाभ 1991-92 में 2 प्रतिशत, 1992-93 में 2.33 प्रतिशत तथा 1993-94 में 2.78 प्रतिशत रहा। वर्ष 1996-97 में 245 सार्वजनिक उपक्रम ऐसे थे जिन्हें पर्याप्त लाभकारी बनाने के लिए 17 खरब 30 अरब रुपए के निवेश की आवश्यकता थी। इनमें से 130 उपक्रमों का मुनाफा करीब 1 खरब 20 अरब का था। ये सरकारी खजाने में 260 अरब रुपए का योगदान देते थे और निर्यात में 1 खरब 40 अरब रुपए की आय करते थे। करीब 109 उपक्रम 50 अरब रुपए के भारी घाटे में चल रहे थे। यह घाटा कुल मिलाकर 70 अरब रुपए वार्षिक बैठता है, जिसके कारण सरकार को सभी सार्वजनिक उपक्रमों के संबंध में सोचना पड रहा है।[1]

केन्द्र सरकार आशान्वित थी कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम नियोजित विकास के उद्देश्यों की पूर्ति के वास्ते गुरुत्तर दायित्व निभा सकेंगे किन्तु समय के बीतने के साथ ससाधन जुटाना तो दूर, ये उपक्रम अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए सरकारी सहायता की ओर मुखातिब होने लगे। सार्वजनिक उपक्रमों को दी जाने वाली बजटीय सहायता में भारी वृद्धि हुई। आज घाटे में चल रहे सार्वजनिक उपक्रम केन्द्र सरकार पर भार बने हुए हैं। घाटा देने वाले उपक्रमों की सख्या और घाटा दोनों में वृद्धि हुई। घाटा दने वाले उपक्रमों की सख्या 1981-82 में [illegible] थी जो बढकर 1990-91 मे 111 तथा 1993-94 में और बढकर 117 हो गई। इन उपक्रमों का घाटा 1981-82 में 848 करोड रुपए था जो बढकर 1990-91 मे 3,122 करोड रुपए तथा 1993-94 में 5,287 करोड रुपए तक जा पहुचा।[2]

आर्थिक उदारीकरण मे सार्वजनिक उपक्रमो की भूमिका मे बदलाव आया है। गौरतलब है नियोजित विकास के प्रारम्भिक चार दशको मे सार्वजनिक उपक्रमो की सख्या और उनमे विनियोजित पूजी मे उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सार्वजनिक उपक्रमो के विकास पर आर्थिक उदारीकरण लागू होने के बाद विराम लग गया है। जुलाई 1991 मे घोषित की गई औद्योगिक नीति मे सार्वजनिक उपक्रमो के सम्बन्ध में नीतिगत फैसले किए गए हैं जिनमे निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :

1 नई औद्योगिक नीति, 1991 में सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी को मात्र 8 क्षेत्रो तक सीमित कर दिया गया है। उनमे भी निजी क्षेत्र प्रवेश पा सकेगा। अन्य क्षेत्रो मे सार्वजनिक क्षेत्र को अब निजी क्षेत्र से टक्कर लेनी होगी।

2. सार्वजनिक क्षेत्र के लिए सुरक्षित क्षेत्रो मे रक्षा से सम्बन्धित उत्पाद और संयत्र, परमाणु ऊर्जा, धातु, कोयला, तेल व अन्य खनिजो का खनन, अत्यधिक उन्नत तकनीक से बनी वस्तुएं और रेल परिवहन ही रह गया है। अन्य सभी क्षेत्र निजी क्षेत्र के उद्यमियो के लिए खोले जा रहे हैं।

3. घाटे वाले सार्वजनिक उपक्रमों की जाच औद्योगिक वित्त और पुनर्निर्माण बोर्ड (बी. आई एफ आर.) करेगा।

4. सार्वजनिक उपक्रमो मे विनिवेश को बढावा।

सार्वजनिक उपक्रमो के सबध मे सरकार का सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय इस क्षेत्र की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचन का है। अब तक सरकार केवल 20 प्रतिशत ही अपने सार्वजनिक उपक्रमों की हिस्सेदारी बेच सकती थी।

सार्वजनिक उपक्रमो में विनिवेश - सार्वजनिक उपक्रमो मे गरीब लोगो की लगी अरबो रुपयों की पूजी पर लाभ की न्यूनतम दर होनी चाहिए। अधिकाश सार्वजनिक उपकर्मों के घाटे और आर्थिक दुर्दशा को दृष्टिगत रखते हुए सार्वजनिक उपक्रमो मे विनिवेश का निर्णय लिया गया। सार्वजनिक उपक्रमो मे निजीकरण और विनिवेश का सुझाव 1991 मे डॉ. मनमोहन सिह ने दिया था। उस समय इस सुझाव का भारी विरोध हुआ क्योकि अर्थव्यवस्था मे सार्वजनिक उपक्रमों की प्रासगिक भूमिका रही। वर्ष 1995-96 मे कुल औद्योगिक उत्पादन मे सार्वजनिक उपक्रमो का योगदान इस प्रकार रहा - कोयला उत्पादन मे 97 7 प्रतिशत, लिग्नाईट उत्पादन मे 100 प्रतिशत, पेट्रोलियम उत्पादन मे 98.2 प्रतिशत, तैयार इस्पात मे 41 प्रतिशत, एल्युमिनियम मे 53 6 प्रतिशत, कॉपर मे 100 प्रतिशत, जिक मे 81 7 प्रतिशत। ऐसी

स्थिति मे सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण का विरोध स्वाभाविक था। आर्थिक उदारीकरण मे जुलाई 1991 मे घोषित की गई औद्योगिक नीति मे सार्वजनिक उपक्रमो मे विनिवेश का प्रावधान किया गया। केन्द्र सरकार ने उदारीकरण के वर्षो मे सार्वजनिक उपक्रमो मे विनिवेश का निर्णय लिया।

सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में विनिवेश

(करोड रुपए)

वर्ष	लक्ष्य	विनिवेश
1994-95	4000	5607
1995-96	7000	1397
1996-97	5000	455
1997-98	7000	907
1998-99 (ब अ)	5000	5000
1999-2000 (ब अ)	10000	--

स्रोत *इकोनॉमिक टाइम्स*, नई दिल्ली, 28 अगस्त 1998 तथा *इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99.

सार्वजनिक उपक्रमो मे विनिवेश के निर्धारित लक्ष्य अर्जित नहीं किए जा सके। वर्ष 1994-95 को छोडकर बाद के वर्षो मे विनिवेश लक्ष्य और विनिवेश मे भारी अतराल बना रहा। वर्ष 1994-95 में बाजार चरम पर था इस कारण विनिवेश लक्ष्य से अधिक 5,607 करोड रुपए था। बाद के वर्षो मे केन्द्र सरकार को विनिवेश मे विफलता हाथ लगी। वर्ष 1996-97 में तो विनिवेश से केवल 455 करोड रुपए ही जुटाए जा सके जबकि लक्ष्य 5,000 करोड रुपए का था। वर्ष 1997-98 मे भी स्थिति सुधर नहीं सकी। इस वर्ष विनिवेश के 7,000 करोड रुपए लक्ष्य के मुकाबले केवल 907 करोड रुपए ही जुटाए जा सके। वर्ष 1998-99 मे चार मुनाफा कमाने वाले उपक्रमो इडियन ऑयल, गैस ऑथोरिटी, विदेश सचार निगम एव कटेनर कारपोरेशन के शेयरो को बेचकर 5,000 करोड रुपए उगाहने का लक्ष्य रखा गया। इडियन एयर लाइन्स के पूजी ढाचे मे परिवर्तन करके अगले तीन वर्षो मे इसकी आधी से अधिक पूजी (51%) को निजी हाथो मे सौंपना शामिल है। इसके अलावा साधारण मुनाफा वाले सार्वजनिक उपक्रमो की लगभग तीन-चौथाई तक की पूजी निजी हाथों मे सौंपना, घाटे मे चलने वाले उपक्रमो मे कर्मचारियों वास्ते आकर्षक "स्वैच्छिक अवकाश योजना" एव इसके लिए एक पुनर्गठन कोष बनाने का प्रस्ताव किया गया। वर्ष 1998-99 मे विनिवेश का लक्ष्य प्राप्त कर लिया किन्तु 1999-2000 के लिए विनिवेश का बडा लक्ष्य

10,000 करोड रुपए निर्धारित किया गया है। जो पूजी बाजार की खस्ता हालत को देखते हुए प्राप्त करना कठिन है। अर्थव्यवस्था पर जून-जुलाई 1999 के कारगिल सकट का प्रभाव पडना स्वाभाविक था। सितम्बर 1999 में देश को तेरहवीं लोक सभा चुनाव का सामना करना पडा। ऐसी स्थिति में लक्ष्य पूरा होने की सभावना न्यून है।

विनिवेश से प्राप्त राशि का कारगर उपयोग नहीं किया गया। प्राय बढते राजकोषीय घाटे को कम करने मे इसका उपयोग किया गया। डॉ रगराजन के सुझाव विनिवेश क सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार विनिवेश प्रक्रिया का इस्तेमाल उद्यम प्रभारी पर जिम्मेदारी बढाने के अलावा सरकार के लिए अतिरिक्त ससाधन जुटाने के लिए होना चाहिए जिससे कि शिक्षा, स्वास्थ्य और चिकित्सा जैसे सामाजिक क्षेत्र मे अधिक सुधार लाया जा सके। विनिवेश से जुटायी राशि का उपयोग सरकार के पुराने ऋणो के भुगतान करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। विनिवेश का उद्देश्य सरकार के बढते घाटे के बोझ को कम करना और वित्त ससाधनो में वृद्धि होना चाहिए।

यह कहने मे अतिशयोक्ति नहीं कि सार्वजनिक उपक्रम देश पर बोझ सिद्ध हुए हैं। केन्द्र सरकार ने ऋण लेकर सार्वजनिक उपक्रमो को खडा किया है। सरकार सार्वजनिक उपक्रमो से प्राप्त लाभ की तुलना मे अधिक ऋण पर ब्याज चुकाने मे खर्च करती है। कई अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि केन्द्र सरकार की आर्थिक बदहाली का एक मुख्य कारण सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हैं। रिजर्व बैंक के गवर्नर विमल जालान के अनुसार यदि सरकार ने ऋण लेकर उपक्रमो को खडा नहीं किया होता तो आज सरकार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब नहीं होती। अनेक राज्यो की आर्थिक बदहाली का प्रमुख कारण राज्य सार्वजनिक उपक्रमो का घाटा रहा है।

सार्वजनिक उपक्रमो के सम्बन्ध मे भारत मलेशिया और अर्जेन्टीना से सीख ले सकता है। मलेशिया मे 1983 मे 1,100 सार्वजनिक क्षेत्र के लोक उपक्रम थे। मलेशिया मे सरकारी खर्च बढने तथा लोक उपक्रमों मे घाटे के कारण सरकार ने 1991 मे सार्वजनिक क्षेत्र मे सुधार तथा बडे उपक्रमो मे आशिक निजीकरण की योजना बनाई। निजीकरण के कारण कम्पनियों के प्रबधन मे सुधार हुआ तथा कम्पनियां लाभ कमाने लगीं। इसी प्रकार अर्जेन्टीना आर्थिक समस्याओं से घिरा था। इसने 1986 से 1997 के बीच सरकारी उपक्रमो के निजीकरण का दौर चलाया और मोटे तौर पर अब आर्थिक खुशहाली मे है।[1]

भारत मे अगर सुनियोजित तरीके से सार्वजनिक उपक्रमों मे विनिवेश और निजीकरण किया जाए तो अर्थव्यवस्था में सुधार की प्रवृत्ति आ सकती है। फरवरी 1997 मे विश्व प्रसिद्ध पत्रिका "*इकोनोमिस्ट*" ने भारत पर सर्वे प्रकाशित किया है। उसमे इस बात पर बल दिया गया है कि भारत को कुछ खास क्षेत्रों को छोडकर शेष निजी क्षेत्र को दे देना चाहिए। भारत ने आर्थिक उदारीकरण के बाद तीव्र विकास की ओर कदम बढाया है। निजीकरण को प्राथमिकता देकर भारत अन्य एशियाई देशो से विकास की दौड में आगे निकल सकता है। लोक उपक्रमों मे विनिवेश से भारत की गरीब जनता को भी लाभ होगा क्योकि भारत में लोक उपक्रमो पर सब्सिडी शिक्षा परिव्यय से पाच गुना अधिक है।

अर्थव्यवस्था की दशा को सुधारने के लिए सार्वजनिक उपक्रमों को मिलने वाली बजटीय सहायता मे कमी की जानी चाहिए। सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश के निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने की आवश्यकता है। विनिवेश की सफलता निवेश पर आय, उद्यम में प्रौद्योगिकी सुधार और उपक्रम के बेहतर प्रदर्शन पर निर्भर करती है। अत सार्वजनिक उपक्रमों को लाभकारी बनाने के लिए कारगर प्रयास करने चाहिए। अच्छे मुनाफा वाले उपक्रमों मे विनिवेश से ससाधन जुटाना आसान है। सार्वजनिक उपक्रमो में 11 नवरत्न है जिनके नाम इस प्रकार है - इडियन ऑयल, आई पी सी एल., तेल एव प्राकृतिक गैस आयोग, भारत पेट्रोलियम, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, एन टी पी सी., भेल, सेल, विदेश सचार निगम। इन उपक्रमों को सरकार ने अधिक स्वायत्तता दी। विनिवेश से प्राप्त राशि का उपयोग घाटे वाले उपक्रमो की दशा सुधारने में किया जाना चाहिए। अभी बी आई एफ आर द्वारा घोषित मृतप्राय उपक्रमों को श्रमिकों की समस्या के कारण बन्द नहीं किया है। निर्णय राजनीतिक से परे होने चाहिए। सार्वजनिक उपक्रमो में विनिवेश और निजीकरण के मामले में आम सहमति बनाने का प्रयास होना चाहिए ताकि सरकार के बदलने का प्रभाव सार्वजनिक उपक्रमों की नीति पर नहीं पडे। अत्यधिक घाटे वाले सार्वजनिक उपक्रमों को धीरे-धीरे बन्द करने का निर्णय लिया जाना चाहिए। घाटे वाले सार्वजनिक उपक्रमों को बन्द करने से बेरोजगार होने वाले श्रमिकों के लिए रोजी-रोटी की मुकम्मल व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए।

भारत में लोहा एवं इस्पात उद्योग की प्रगति के आयाम

लोहा एव इस्पात उद्योग महत्त्वपूर्ण आधारभूत उद्योग है। राष्ट्र का आद्योगिक विकास लोहा एव इस्पान उद्योग के विकास पर निर्भर होता है।

अर्थव्यवस्था के कृषि, यातायात, आधारभूत सरचना, आवास निर्माण आदि क्षेत्रो के विकास मे लोहा एव इस्पात उद्योग की महत्ती भूमिका होती है। विश्व इतिहास मे लोहा एव इस्पात का उत्पादन सर्वप्रथम भारत मे हुआ। लोहे की गलाई एवं ढुलाई मे भारत विश्वविख्यात था। अतीत मे लोहे की टिकाऊ वस्तुए विश्व के अनेक देशो को निर्यात की जाती थी। समय के बदलाव के साथ भारत का लोहा एव इस्पात उद्योग पिछड गया।

भारत मे लोहा-इस्पात उद्योग के विकास के लिए आवश्यक प्राकृतिक ससाधन पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध हैं। विश्व के कुल लौह अयस्क के भण्डारो का एक चौथाई भाग भारत मे उपलब्ध है। इस्पात उद्योग मे प्रयुक्त होने वाला कच्चा माल यथा मैगनीज, लाइमस्टोन, डोलोमाइट भारत मे उपलब्ध है। लोहा इस्पात का सर्वाधिक उत्पादन अमरीका में होता है। भारत का भी इस दृष्टि से विश्व मे प्रमुख स्थान है। किन्तु लोहा इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत के मामले मे भारत पीछे है।

पंचवर्षीय योजनाओं में विकास : स्वातन्त्र्योत्तर लोहा इस्पात उद्योग के विकास को गति मिली। पहली औद्योगि नीति 1948 मे घोषित की गई इस नीति मे सरकार ने लोहा इस्पात उद्योग के विकास का दायित्व अपने ऊपर लिया। स्वतन्त्रता के समय भारत मे लोहा-इस्पात के केवल तीन कारखाने थे, जिनके नाम इस प्रकार है - टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (टिस्को), इडियन आयरन एण्ड स्टील कपनी (इस्को), मैसूर आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (मिस्को)। द्वितीय पंचवर्षीय योजना उद्योग प्रधान थी। इसमे लोहा इस्पात उद्योग के विकास को प्राथमिकता दी गई। बाद की पचवर्षीय योजनाओं मे (सातवी पचवर्षीय योजना तक) सार्वजनिक उपक्रमो का बोलवाला रहा। सार्वजनिक क्षेत्र मे लोहा-इस्पात उद्योग का तेजतर विकास हुआ। वर्तमान मे लोहा इस्पात के कारखाने की सख्या 9 है तथा कुछेक कारखाने निर्माणाधीन हैं। टाटा आयरन एण्ड स्टील, जमशेदपुर निजी क्षेत्र मे टाटा समूह का है। स्टील ऑथोरिटी ऑफ इडिया लिमिटेड (सेल) भारत सरकार के स्वामित्व मे है। भारत सरकार ने सेल का प्रबन्ध 14 जुलाई 1972 को अपने हाथ मे लिया। सेल भिलाई, राउरकेला, दुर्गापुरा, बोकारो, बर्नपुर एकीकृत इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर के मिश्रित इस्पात सयत्र सेलम इस्पात कारखाने के प्रबन्ध के लिए उत्तरदायी है। सेल ने एक अगस्त 1989 को विश्वश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड को अपने अधिकार मे लिया।

स्टील ऑथोरिटी ऑफ इडिया लिमिटेड (सेल) भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की नवरत्नो मे एक है जिस पर देश गर्व कर सकता है। सेल द्वारा 1995-96 मे 1,318 61 करोड रुपए का लाभ अर्जित किया, जबकि 1994-

95 मे 1,163 33 करोड रुपए का और 1993-94 मे 545 33 करोड रुपए का लाभ अर्जित किया गया था। 1995-96 के दौरान रेल द्वारा 3,91,523 टन इस्पात का निर्यात किया गया।

लोहा एवं इस्पात का उत्पादन

नियोजित विकास के चार दशको तथा आर्थिक उदारीकरण के प्रारम्भिक दस वर्षो मे इस्पात के उत्पादन मे वृद्धि हुई है। भारत मे इस्पात पिण्ड का उत्पादन 1950-51 मे 147 लाख टन था जो बढकर 1994-95 मे 159 लाख टन तथा 1997-98 मे 248 लाख टन (प्राविजनल) हो गया। तैयार इस्पात का उत्पादन 1950-51 मे 104 लाख टन से बढकर 1994-95 मे 178 लाख टन तथा 1997-98 मे 234 लाख टन (प्राविजनल) हो गया। इस प्रकार पैतालीस वर्षो मे इस्पात पिण्ड के उत्पादन मे सत्ररह गुना तैयार इस्पात के उत्पादन मे साढे बाइस गुना की महत्वपूर्ण बढोतरी हुई।

भारत में लोहा एवं इस्पात का उत्पादन

(लाख टन)

वर्ष	इस्पात पिण्ड	तैयार इस्पात
1950-51	14.7	10 4
1960-61	34.8	23 9
1970-71	61 4	46 4
1980-81	103 3	68.2
1990-91	--	135 3
1991-92	126 6	143 3
1992-93	132 5	152 0
1993-94	139 0	151 0
1994-95	159 0	178 0
1995-96	224 0	217.0
1996-97	238 0	227.0
1997-98 (प्रा)	248 0	234.0
1998-99 (प्रा)	231 0	238 0

प्रा = प्रोविजनल, स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे*, 1998-99, सारणी S-34

विगत वर्षो मे लोहा एव इस्पात के उत्पादन मे भारी वृद्धि हुई। किन्तु आन्तरिक माग की तुलना मे लोहा एव इस्पात का उत्पादन कम है, नतीजतन प्रतिवर्ष लोहा एव इस्पात का आयात करना पडता है। देश मे लोहा एव इस्पात उद्योग का तीव्र विकास नहीं होने के कारण प्रमुख कच्चा माल "लोहे अयस्क" का निर्यात किया जाता है। वर्ष 1985-86 मे कच्चे लोहे के कुल

उत्पादन का 55.2 प्रतिशत निर्यात किया गया। लोहे अयस्क पर आधारित उद्योग की स्थापना से लोहा एवं इस्पात के आयात को नियत्रित किया जा सकता है। भारत से हाल ही के वर्षो में लोहा एव इस्पात का निर्यात किया जाने लगा है।

लोहा एवं इस्पात का आयात-निर्यात

(करोड रुपए)

वर्ष	आयात	निर्यात
1960-61	123	--
1970-71	147	9
1980-81	852	70
1990-91	2113	1049
1992-93	2254	1104
1993-94	2494	1374
1994-95	3653	1297
1995-96	4838	1490
1996-97	6866	2396
1997-98	5281	2936
1998-99	4956	2509

स्रोत इकोनॉमिक सर्वे, 1998-99 तथा 1999-2000

भारत लोहा एवं इस्पात का आयातक राष्ट्र है। वर्ष 1960-61 में लोहा एवं इस्पात का आयात 123 करोड रुपए था जो बढकर 1990-91 में 2,113 करोड रुपए तथा 1997-98 में और बढकर 5,281 करोड रुपए हो गया। वर्ष 1995-96 में लोहा एव इस्पात का आयात 4,838 करोड रुपए था। इस वर्ष लोहा एव इस्पात के आयात में 32 43 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई। लोहा एवं इस्पात के आयात पर 1995-96 में 1,446 मिलियन डॉलर विदेशी मुद्रा खर्च हुई। भारत में थोडी मात्रा में लोहा एव इस्पात का निर्यात भी होता है। हाल ही के वर्षो मे इसके निर्यात में थोडी वृद्धि हुई है। वर्ष 1970-71 में लोहा एवं इस्पात का निर्यात केवल 9 करोड रुपए था जो बढकर 1990-91 में 1,049 करोड रुपए तथा 1994-95 में और बढकर 1,297 करोड रुपए हो गया।

लोहा एवं इस्पात उद्योग के विकास की अनुकूल दशाओ को दृष्टिगत रखते हुए लोहा एवं इस्पात का निर्यात बहुत कम है। इसका प्रमुख कारण लोहा अयस्क पर आधारित इस्पात संयंत्रों का अपेक्षित विकास नहीं होना है। नतीजतन लोहा एवं इस्पात के आयात में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई और इसका प्रभाव विदेशी विनिमय कोष पर भी पडा है। गौरतलब है भारत लम्बे अरसे

से बडी मात्रा मे लौह अयस्क का निर्यात करता रहा है। वर्ष 1995-96 मे ही 31.7 मिलियन टन लोहे अयस्क का निर्यात किया गया। लोहे अयस्क के निर्यात से अर्जित आय, लोहा इस्पात के आयात पर खर्च होने वाली राशि की तुलना मे लगभग नगण्य है। लौह अयस्क के निर्यात का कारण देश मे इसकी कम खपत माना जा सकता है। भारत मे इस उद्योग के विकास की विपुल सभावनाए हैं। भारत के औद्योगीकरण मे "सेल" की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। विनियोजित पूजी पर अर्जित आय भी पर्याप्त रही है। इसके बावजूद आर्थिक उदारीकरण के दौर मे लौह एव इस्पात उद्योग के क्षेत्र मे सार्वजनिक उपक्रमो की भूमिका को बहुत सीमित कर दिया गया है। भारत को परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य का लाभ उठाते हुए लोहा एव इस्पात के क्षेत्र मे सार्वजनिक उपक्रमो की उपेक्षा नहीं करते हुए इस क्षेत्र मे विदेशी पूजी निवेश को आकर्षित करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना होगा।

सार्वजनिक क्षेत्र के लोहा इस्पात उपक्रमो मे लगभग 15,000 करोड रुपए विनियोजित है जो कि केन्द्र सरकार के सार्वजनिक उपक्रमो में निवेश का 9 प्रतिशत है। सार्वजनिक उपक्रमो के अलावा निजी क्षेत्र के उपक्रमो में 5,000 करोड रुपए की पूजी विनियोजित है। देश में तैयार इस्पात का उत्पादन माग की तुलना में कम है। वर्ष 1994-95 मे तैयार इस्पात की माग 220 लाख टन थी जबकि उत्पादन केवल 178 लाख टन ही था। तैयार इस्पात की माग 1999-2000 मे 310 लाख टन होगी। तैयार इस्पात की बढती माग को देखते हुए लोहा एवं इस्पात उद्योग मे पूजी निवेश बढाने की आवश्यकता है। देश मे लघु इस्पात सयंत्रो की सख्या लगभग 210 है। ये निजी क्षेत्र मे सचालित हैं किन्तु इनकी उत्पादन क्षमता 80 लाख टन वार्षिक ही है। जो कि अधिक नहीं है।

लोहा इस्पात उद्योग और आर्थिक सुधार : भारत मे जुलाई 1991 से आर्थिक सुधारो की शुरुआत की गई। आर्थिक सुधारो के दस वर्ष बीत चुके है। इस दौरान देश की आर्थिक संरचना मे मूलभूत बदलाव किए गए। लोहा एव इस्पात उद्योग को भी आर्थिक उदारीकरण के दायरे मे सम्मिलित किया गया। जुलाई 1991 में घोषित की गई नई औद्योगिक नीति मे सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची मे से लोहा एव इस्पात उद्योग को हटा लिया गया है तथा लोहा एव इस्पात उद्योग को उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्र मे रखा गया है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार 10 लाख से अधिक जनसख्या वाले शहर की 25 किलोमीटर की सीमा से बाहर निजी क्षेत्र मे किसी भी क्षमता के लोहा एव इस्पात सयत्र की स्थापना के लिए किसी औद्योगिक लाइसेस की आवश्यकता नहीं है। सार्वजनिक क्षेत्र

रूस, इग्लैण्ड आदि देशो की तुलना मे भी कम है। लोहा एव इस्पात उद्योग की समस्याओ पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इस उद्योग के विकास से आर्थिक विकास की गति तीव्र की जा सकती है। भारत बडी सीमा तक आर्थिक पिछडापन की समस्या से निजात भी पा सकता है।

भारत मे सूती वस्त्र उद्योग - वर्तमान स्थिति और समस्याएं

सूती वस्त्र उद्योग भारत का प्राचीनतम उद्योग है। इस उद्योग का अतीत गौरवपूर्ण था। ढाका की मलमल विश्वविख्यात थी और इसे विदेशी बडे चाव से पहनते थे। अग्रेजो की इस उद्योग पर लालचभरी दृष्टि पडी। उनकी विद्वेषपूर्ण नीति के कारण समृद्ध सूती वस्त्र उद्योग पतन के गर्त मे डूब गया।

आज भारत की अर्थव्यवस्था मे सूती वस्त्र उद्योग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश के कुल औद्योगिक उत्पादन का 20 प्रतिशत सूती वस्त्र उद्योग द्वारा उत्पादित किया जाता है तथा देश के कुल निर्यात मूल्य का 46 प्रतिशत वस्त्र उद्योग द्वारा अर्जित किया जाता है। इस उद्योग मे दो करोड लोगो को रोजगार मिला हुआ है। सूती वस्त्र देश के सगठित क्षेत्र का सबसे बडा उद्योग है। बडी सख्या में सहायक उद्योगों का विकास सूती वस्त्र उद्योग के विकास पर निर्भर है। आठवें दशक के दौरान सूती वस्त्र उद्योग मे 2.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई।

पचवर्षीय योजनाओ मे सूती वस्त्र उद्योग के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया, जिससे सूती वस्त्र मिलो की सख्या तथा वस्त्र के उत्पादन मे वृद्धि हुई। सातवीं पचवर्षीय योजना मे सूती वस्त्र उत्पादन का कुल लक्ष्य 1,450 करोड मीटर निर्धारित किया गया। इसमे मिल क्षेत्र के लिए 450 करोड मीटर तथा विकेन्द्रित क्षेत्र के लिए 1,000 मीटर का लक्ष्य था। विकेन्द्रित क्षेत्र मे पावरलूम के लिए 540 करोड मीटर तथा हाथकरघा क्षेत्र के लिए 460 करोड मीटर निर्धारित था। योजनावधि मे सूती वस्त्र उद्योग के उन्नयन के वास्ते आधुनिकीकरण, निर्यात-सवर्द्धन, उत्पादन वृद्धि पर बल दिया गया। योजना के अत मे अर्थात् 1989-90 मे सूती वस्त्र का कुल उत्पादन 1,872 करोड मीटर हुआ, इसमे मिल क्षेत्र का 278 करोड मीटर तथा विकेन्द्रित क्षेत्र का 1,594 करोड मीटर उत्पादन था।

आठवीं पचवर्षीय योजना (1992-97) मे सूती वस्त्र उत्पादन का कुल लक्ष्य 2,250 करोड मीटर निर्धारित किया गया है। इसमे मिल क्षेत्र के लिए 157.5 करोड मीटर तथा विकेन्द्रित क्षेत्र के लिए 2,092.5 करोड मीटर निर्धारित है। सूती वस्त्र उत्पादन लक्ष्य मे मिल क्षेत्र 7 प्रतिशत, हाथकरघा

क्षेत्र 21 प्रतिशत तथा पावरलूम क्षेत्र का 72 प्रतिशत भाग निर्धारित है।

भारत में वस्त्र उत्पादन

(करोड वर्ग मीटर)

वर्ष	मिल क्षेत्र	विकेन्द्रित क्षेत्र पावरलूम एव हथकरघा	कुल उत्पादन	कुल उत्पादन मे हिस्सा प्रतिशत मे	
				मिल क्षेत्र	विकेन्द्रित क्षेत्र
1950-51	340	81	421	81	19
1960-61	465	209	674	6०	31
1970-71	405	355	760	53	47
1980-81	343	493	839	41	59
1990-91	186	1357	1543	12	88
1991-92	165	1300	1465	11	89
1992-93	145	1160	1305	11	89
1993-94	199	1580	1779	11	89
1994-95	227	1475	1702	13	87
1995-96	202	1688	1890	11	89
1996-97	196	1788	1984	10	90
1997-98	195	1804	1992	10	90
1998-99	179	1666	1795	10	90

स्रोत इण्डियन इकोनॉमिक सर्वे, 1998-99, 1999-2000

नियोजित विकास के पचास वर्षों में सूती वस्त्र के उत्पादन मे लगभग 4 गुना वृद्धि हुई। सूती वस्त्र का उत्पादन 1950-51 मे 421 करोड वर्ग मीटर था जो 1997-98 मे बढकर 1,992 करोड वर्ग मीटर हो गया। सूती वस्त्र उद्योग मे मिल क्षेत्र का उत्पादन घटा तथा विकेन्द्रित क्षेत्र के उत्पादन मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। वर्ष 1950-51 मे सूती वस्त्र के कुल उत्पादन मे मिल क्षेत्र का भाग 81 प्रतिशत तथा विकेन्द्रित क्षेत्र का भाग 19 प्रतिशत था। जबकि 1995-96 में सूती वस्त्र के उत्पादन मे मिल क्षेत्र का भाग घटकर 11 प्रतिशत रह गया और विकेन्द्रित क्षेत्र का भाग तीव्रता से बढकर 89 प्रतिशत हो गया। मिल क्षेत्र की तुलना मे विकेन्द्रित क्षेत्र मे उत्पादन बढने के पीछे प्रमुख कारण देश मे रोजगार के अवसरो मे वृद्धि करना है। सूती वस्त्र का उत्पादन अप्रैल-सितम्बर 1996-97 मे 1,529 8 करोड वर्ग मीटर था जो अप्रैल-सितम्बर 1995-96 के सूती वस्त्र उत्पादन 1,521 6 करोड वर्ग मीटर

की तुलना मे 0.5 प्रतिशत अधिक था। वर्ष 1997-98 मे सूती वस्त्र उत्पादन मे वृद्धि दर 0.4 प्रतिशत थी।

काते हुए धागे (स्पन यान) का उत्पादन

(मिलियन कि ग्रा)

वर्ष	सूती धागा	मिश्रित धागा	प्रतिशत गैर सूती धागा	कुल धागा
1990-91	1510	207	107	1824
1991-92	1450	234	122	1806
1992-93	1523	247	125	1895
1993-94	1622	305	140	2067
1994-95	1696	346	158	2200
1995-96	1894	395	196	2485
1996-97	2148	484	162	2794
1997-98	2213	583	177	2973
1998-99 (प्रा)	2022	595	191	2808

प्रा प्राविजल स्रोत — इकोनॉमिक सर्वे 1999-2000, एस-35

देश में काते हुए धागे का उत्पादन 1990-91 मे 1,824 मिलियन किलोग्राम था, इसमें सूती धागे का उत्पादन 1,510 मिलियन किलोग्राम मिश्रित धागे का उत्पादन 207 मिलियन किलोग्राम तथा सौ प्रतिशत गैर सूती धागे का उत्पादन 107 मिलियन किलोग्राम था। काते हुए धागे का उत्पादन बढकर 1995-96 मे 2,485 मिलियन किलोग्राम हो गया। इसमे सूती धागे का उत्पादन 1,894 मिलियन किलोग्राम तथा मिश्रित एव सौ प्रतिशत गैर सूती धागे का उत्पादन 591 मिलियन किलोग्राम था। सूती धागे के उत्पादन मे वर्ष 1995-96 म 11.67 प्रतिशत रिकार्ड वृद्धि हुई। मिश्रित धागे तथा सौ प्रतिशत गैर सूती धागे के उत्पादन में इसी वर्ष 17 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1998-99 मे काते हुए धागे का उत्पादन 2,808 मिलियन किलोग्राम था इसमे सूती धागे का उत्पादन 2,022 मिलियन किलोग्राम तथा मिश्रित धागे (सौ प्रतिशत गैर सूती धागे सहित) का उत्पादन 786 मिलियन किलोग्राम था।

सूती वस्त्र उद्योग मे स्थानीयकरण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। अधिकाश सूती वस्त्र मिलें महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, पश्चिम बगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यो में केन्द्रित हैं। राज्य विशेष मे भी सूती वस्त्रों का

असमान वितरण है। पावरलूम महाराष्ट्र के भिवाडी और मालगाव मे तथा गुजरात राज्य के सूरत मे केन्द्रित है।

देश मे मार्च 1995 तक सगठित क्षेत्र मे 1,395 सूती मिलें थी जिनमे से 267 मिले कम्पोजिट थीं। वर्ष 1980-81 के दौरान देश मे 415 कताई मिले थी और 278 कम्पोजिट मिले थीं। वर्ष 1981 मे 2123 करोड तकुए थे जिनकी सख्या बढकर मार्च 1995 मे बढकर 2901 करोड हो गई। एक तिहाई से अधिक तकुए कम्पोजिट मिलो मे थे। तकुओ की सख्या की दृष्टि से विश्व मे भारत का प्रथम स्थान है। भारत के बाद चीन, सयुक्त राज्य अमेरिका तथा रूस का स्थान आता है।

निर्यातित आय में वस्त्रों का योगदान

(करोड रुपए)

वर्ष	कुल निर्यात	वस्त्रो का निर्यात			कुल निर्यात मे वस्त्रो का योगदान प्रतिशत मे
		वस्त्र	सूती धागा	रेडीमेड वस्त्र	
1960-61	642	73	65	01	21.6
1970-71	1535	145	142	29	20 6
1980-81	6711	933	408	550	28 2
1990-91	32553	6832	2100	4012	39.8
1993-94	69751	14863	4821	8112	39 8
1994-95	82674	19945	7014	10305	45.0
1995-96	106353	24149	8619	12295	42.4
1997-98	126286	30001	12094	14032	44 4
1998-99	141604	35897	11039	18698	46.4

स्रोत *इकोनॉमिक सर्वे*, 1996-97, 1999-2000 प्रतिशत निकाले गए हैं।

भारत की निर्यातित आय मे वस्त्र निर्यात की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कुल निर्यातित आय मे वस्त्रो का योगदान 1960-61 मे 21.6 प्रतिशत था जो बढकर 1990-91 मे 39 8 प्रतिशत तथा 1997-98 मे और बढकर 44 4 प्रतिशत हो गया। पिछले कुछ वर्षो मे वस्त्रो के निर्यात मे तीव्र वृद्धि हुई है। वर्ष 1995-96 मे वस्त्र निर्यात मे 21 07 प्रतिशत, सूती धागे के निर्यात मे 23 59 प्रतिशत तथा रेडीमेड वस्त्रो के निर्यात मे 19.31 प्रतिशत महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई। भारत से वस्त्रो का निर्यात अमरीका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रास, नीदरलैण्ड, इटली, जापान, कनाडा, स्विट्जरलैंड, स्वीडन, आस्ट्रेलिया आदि देशो को किया जाता है। लेटिन अमेरिका और कैरिबियन देशो मे भी धीरे-

धीरे भारतीय वस्त्रो का निर्यात बढ रहा है।

जुलाई 1991 से प्रारम्भ आर्थिक उदारीकरण के दायरे मे सूती वस्त्र उद्योग को भी सम्मिलित किया गया। उद्योग की दशा सुधारने के लिए नीतिगत निर्णय लिए जा चुके हैं। इसमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्णय नई औद्योगिक नीति (अगस्त 1991) मे सूती वस्त्र उद्योग को लाइसेंस से मुक्त करना है। अब वस्त्र मिल और पावरलूम लगाने के लिए सरकार की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक नहीं है। किन्तु गैर-औद्योगिक इकाई स्थान के विषय मे अनुमति लेना आवश्यक है। दिसम्बर 1992 में वस्त्र नियत्रण आदेश 1986 समाप्त कर दिया गया और इसका स्थान वस्त्र (विकास एव नियमन) आदेश 1993 ने ले लिया।

वस्त्र उद्योग मे कच्चे माल के रूप में लगभग 65 प्रतिशत कपास का उपयोग किया जाता है। कपास का उत्पादन सत्र 1995-96 (सितम्बर 1995 से अगस्त 1996) मे 170 लाख गाठे (अनुमानित) था जो सत्र 1994-95 के कपास उत्पादन 138 5 लाख गाठे की तुलना मे 13 प्रतिशत अधिक था। कपास की कीमत नवम्बर 1994 मे तेजी से बढी थी जिसे सरकार ने शून्य तथा रियायती आयात शुल्को पर विस्कोस स्टेपल फ़िबे (वी एस एफ) (कपास का निकटतम् स्थानापन्न) के आयात द्वारा तथा घरेलू कपास की माग पूर्ति मे चयनित साख नियन्त्रण विधियों को कठोर करके नियत्रण किया। सरकार ने सत्र 1995-96 के लिए 15 90 लाख गाठो का निर्यात अश जारी किया। इसके अलावा अक्टूबर 1996 मे सरकार ने 5 लाख गाठो के निर्यात का आरम्भिक अभ्यश जारी किया।[4]

विगत वर्षों मे भारत की अर्थव्यवस्थ में सूती वस्त्र का योगदान तीव्रता से बढा। सूती वस्त्र का औद्योगिक उत्पादन मे हिस्सा, निर्यात मे भागीदारी, रोजगार मे भूमिका आदि क्षेत्रो मे प्रगति उल्लेखनीय रही। इन सबके बावजूद भी सूती वस्त्र उद्योग समस्याओ से अछूता नहीं है। वर्तमान मे सूती वस्त्र उद्योग के सामने अनेक समस्याए मुहवाए खडी हैं जिनमे कच्चे माल की कमी, मिल क्षेत्र और विकेन्द्रित क्षेत्र मे समन्वय का अभाव, रुग्णता, कुप्रवन्ध, विद्युत अभाव, श्रम असतोष, उत्पादन क्षमता का कम उपयोग, श्रमिको की नीची उत्पादकता, केन्द्रीयकरण, आधुनिकीकरण का अभाव आदि समस्याए प्रमुख हैं।

भारत मे सूती वस्त्र उद्योग का भविष्य उज्ज्वल है। वस्त्र मानव की आधारभूत आवश्यकता है। अभी भारत मे प्रति व्यक्ति वस्त्र उपभोग कम है। आर्थिक विकास मे वृद्धि के साथ-साथ लोगो के जीवन स्तर मे सुधार आ रहा

है। लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठ रहे हैं। अत भविष्य मे वस्त्रो की माग के बढने की सभावना है। देश मे वस्त्र उद्योग के विकास के लिए शोध व अनुसधान पर बल दिया जा रहा है। स्वचालित करघो का प्रयोग बढा है। देश मे लम्बी रेशे की कपास का उत्पादन बढने से उद्योग के सामने कच्चे माल का अभाव नहीं है।

विश्व मे वस्त्र उद्योग के क्षेत्र मे कडी प्रतिस्पर्धा है। बीते वर्षो मे भारत वस्त्र निर्यात के क्षेत्र मे अन्य देशो जैसे चीन, दक्षिण कोरिया, जापान आदि की तुलना मे पिछडा है। निर्यात मे वस्त्र की भागीदारी बढाने के वास्ते भारत को कारगर कदम उठाने होगे। वस्त्र की प्रतिस्पर्धी कीमते निर्धारित करके तथा उत्पाद की उच्च गुणवत्ता पर जोर देकर भारत विश्व के प्रतिस्पर्धात्मक बाजार मे भूमिका बढा सकता है। नये बाजार की खोज पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

राजस्थान की औद्योगिक स्थिति

राजस्थान विकासोन्मुखी भारतीय अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक रूप से कम विकसित राज्य है। राजस्थान की भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितिया देश के अन्य राज्यो की तुलना में विकट है। राज्य का 61.11 प्रतिशत भू-भाग रेत के धोरो से पटा है। जहा अकाल व सूखे की स्थिति सदैव मुहवाए खडी है। मानसून की प्रकृति सामान्यत अनियमित और अनिश्चित होने के कारण वर्षा की प्रतिकूल परिस्थितियो का सामना करना पडता है। राज्य गरीबी और बेरोजगारी की समस्या से भी ग्रसित है। विकास के विभिन्न सूचको यथा शुद्ध घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, आधारभूत सरचना, योजना परिव्यय आदि मे राजस्थान की स्थिति दयनीय है। प्राकृतिक ससाधनो की दृष्टि से राजस्थान समृद्ध है। खनिज सपदा की दृष्टि से बिहार के बाद राजस्थान का ही नाम आता है। राजस्थान खनिजो का अजायबघर है। हाल के वर्षो मे राज्य कृषि सपदा की दृष्टि से भी समृद्ध हुआ है। राज्य वर्तमान मे तिलहन क्रांति की ओर अग्रसर है। लेकिन राजस्थान वित्तीय ससाधनो के अभाव मे समृद्ध प्राकृतिक सपदा का भरपूर लाभ नहीं उठा सका है।

देश मे आर्थिक उदारीकरण को लागू हुए दस वर्ष बीत चुके हैं। आर्थिक सुधारो के कारण देश मे विदेशी पूजी निवेश बढा है। किन्तु राजस्थान नब्बे के दशक मे विदेशी निवेशको को आकर्षित करने मे अधिक सफल नहीं हो सका। परिणामस्वरूप राजस्थान औद्योगीकरण की दौड मे महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, हरियाणा आदि राज्यो की तुलना मे पिछड गया।

राज्य के पिछड़ेपन का अन्य प्रमुख कारण केन्द्रीय पूजी निवेश का अभाव है। राज्य में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का नितांत अभाव है। राज्य के अनेक उद्योग घाटे की समस्या से ग्रसित हैं। इसके अलावा राज्य सरकार ने विगत वर्षों (1991-98) मे विकास को गति देने वास्ते नीतिगत पहल नहीं की। विगत वर्षों में नीतिया तो खूब बनीं किन्तु प्रभावी क्रियान्वयन के अभाव में विकास गति नहीं पकड सका। राजस्थान राजनीतिक स्थायित्व के बावजूद विकास की दौड मे पिछड गया।

वर्तमान में राज्य सरकार औद्योगिक विकास को गति देने के लिए प्रयासरत है। राज्य की वर्ष 1999-2000 की वार्षिक योजना का आकार 5,022 करोड रुपए निर्धारित किया गया है जो 1998-99 की संशोधित वार्षिक योजना की तुलना में 23 15 प्रतिशत अधिक है। योजना परिव्यय का 4 प्रतिशत उद्योग व खनिज पर, 19 प्रतिशत विद्युत पर तथा 15 प्रतिशत परिवहन पर व्यय करने का प्रावधान है। आधारभूत संरचना के विकसित होने से विदेशी निवेशक आकर्षित होंगे जिससे औद्योगीकरण की गति को बल मिलेगा। वर्तमान में यह प्रमाणित हो चुका है कि तीव्र औद्योगिक विकास के बिना गरीबी निवारण संभव नहीं है। औद्योगिक विकास से गरीबी का दुष्चक्र थमता है। रोजगार के अवसरों में बढोतरी से चहुंओर खुशहाली का मार्ग प्रशस्त होता है।

राज्य में औद्योगीकरण के लिए उद्योग विभाग उत्तरदायी है। वर्तमान मे उद्योग विभाग के अधीन 33 जिला उद्योग केन्द्र एवं 8 उप जिला उद्योग केन्द्र कार्यरत हैं। वर्ष 1998-99 की राज्य आयोजना में 57.65 करोड रुपए का प्रावधान रखा गया है जिसके विरुद्ध उद्योग विभाग की विभिन्न योजनाओं में दिसम्बर 1998 तक 47.20 करोड रुपए की राशि व्यय की जा चुकी थी। राजस्थान में वर्तमान में सूती व सिंथेटिक रेशे की इकाइयां, ऊनी, चीनी, सीमेंट, नमक, कांच, टेलीविजन, टायर ट्यूब, वनस्पति तेल की मिलें, इजीनियरी की औद्योगिक इकाइया कार्यरत हैं।

राजस्थान में मार्च 1998 तक 531 वृहद् एवं मध्यम उद्योग स्थापित किए गए हैं, जिनमें 13,740 करोड रुपए की पूंजी विनियोजित है तथा 1 70 लाख व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है। वर्ष 1998-99 के दौरान लघु एवं दस्तकारी उद्योगों में आशातीत वृद्धि हुई। दिसम्बर 1998 तक 5,400 इकाइयों के लक्ष्यों के सामेक्ष 5,160 इकाइयां पजीकृत हुई जिनमें 224.33 करोड रुपए के विनियोजन से 22,350 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध हुआ। राजस्थान में चयनित मदों के औद्योगिक उत्पादन को निम्न

तालिका मे दर्शाया गया है।

चयनित मदों का औद्योगिक उत्पादन

मद	इकाई	1997	1998 प्रावैधानिक	1997 की तुलना मे 1998 मे % परिवर्तन
शक्कर	मै. टन	26375	58695	122.54
वनस्पति घी	मै. टन	24985	24936	-0.20
नमक	लाख मै टन	12	11	-8.33
यूरिया	000 मैं. टन	398	385	-3 27
सीमेन्ट	000 मै टन	6495	6206	-4 42
सूती कपडा	लाख वर्ग मीटर	305	472	-6.53
सूती धागा	000 मै टन	77	75	-2 60

स्रोत *आर्थिक समीक्षा*, 1998-99, राजस्थान सरकार।

राज्य मे 1998 के दौरान गत वर्ष की तुलना में कई मदो के उत्पादन में गिरावट आई है। राजस्थान मे केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के निर्देशानुसार वर्ष 1970 मे 26 औद्योगिक मदो का चयन किया गया। वर्ष 1998 मे गत वर्ष की तुलना में 16 मदो के उत्पादन मे गिरावट आई। केवल स्प्रिट, जस्ते की छडे, कैडिमियम अतिम उत्पाद, पानी के मीटर, कास्टिक सोडा, पी. वी सी कम्पाउण्ड, सल्फ्यूरिक एसिड और शक्कर के उत्पादन मे वृद्धि हुई। शक्कर के उत्पादन मे वृद्धि उललेखनीय रही। शक्कर का उत्पादन 1997 मे 26,375 टन था जो बढकर 1998 में 58,695 टन हो गया जो गत वर्ष की तुलना में 122 54 प्रतिशत अधिक था। जे के फैक्ट्री मे उत्पादन बंद होने के कारण नाइलोन और पोलिस्टर धागे का उत्पादन नहीं हुआ। सवाईमाधोपुर की सीमेंट फैक्ट्री वरसों से वन्द पडी है।

राजस्थान औद्योगिक विकास की दौड मे औद्योगिक रुग्णता, आधारभूत सरचना का अभाव, कम पूंजी निवेश, केन्द्रीय सार्वजनिक उपक्रमो का अभाव आदि कारणो से राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मे पिछड गया है। इस बात की पुष्टि भारत और राजस्थान के अग्रांकित तुलनात्मक विवरण से सहज हो जाती है।

शुद्ध घरेलू उत्पत्ति में उद्योगों का अंश : राजस्थान का 1997-98 मे साधन लागत पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद प्रचलित कीमतों पर 47,05,467 लाख रुपए था जिसमे विनिर्माण क्षेत्र (पजीकृत और गैर पजीकृत) का अशदान 3,72,785 लाख रुपए था। राज्य म शुद्ध घरेलू उत्पाद मे विनिर्माण क्षेत्र का योगदान 7 9 प्रतिशत था। भारत का साधन लागकत पर सकल घरेलू उत्पाद 1997-98 मे 10,49,191 करोड रुपए (त्वरित अनुमान) था। जिसमे निर्माण क्षेत्र का अशदान 2,59,426 करोड रुपए था। भारत के सकल घरेलू उत्पाद मे निर्माण क्षेत्र का योगदान 1997-98 मे 24 7 प्रतिशत था जो राजस्थान की तुलना मे लगभग तीन गुना अधिक है। स्पष्ट है विनिर्माण क्षेत्र की दृष्टि से राजस्थान राष्ट्रीय औसत से बहुत पीछे है।

शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद की दृष्टि से राजस्थान अन्य राज्यो की तुलना मे पिछडा हुआ है। चालू मूल्यो पर शुद्ध घरेलू राज्य उत्पाद (नयी श्रृखला) 1996-97 में राजस्थान मे 41,872 करोड रुपए (त्वरित अनुमान) था जबकि यह महाराष्ट्र मे 1,52,129 करोड रुपए, उत्तर प्रदेश मे 1,03,170 करोड रुपए, आन्ध्र प्रदेश मे 72,195 करोड रुपए, पश्चिम बगाल में 70,537 करोड रुपए तथा गुजरात मे 63,501 करोड रुपए था। राजस्थान शुद्ध घरेलू उत्पाद मे बिहार, आसाम, हरियाणा, केरल, उडीसा से आगे है।

उद्योगों से प्रति व्यक्ति आय वृद्धि उद्योगो से प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थान की स्थिति दयनीय है। वर्ष 1994-95 मे अखिल भारत स्तर पर उद्योगों से प्रति व्यक्ति आय वृद्धि 1,200 रुपए थी जबकि राजस्थान मे यह केवल 750 रुपए ही थी। उद्योग से प्रति व्यक्ति आय म वृद्धि की दृष्टि से राजस्थान का देश में दसवां स्थान है। उद्योगो से प्रति व्यक्ति आय वृद्धि महाराष्ट्र म 2,820 रुपए, गुजरात मे 2,806 तथा तमिलनाडु मे 2,021 रुपए थी।

प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग . राजस्थान मे प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग तुलनात्मक रुप से कम है जो औद्योगिक पिछडेपन को दर्शाता है। राजस्थान मे विद्युतीकृत ग्रामो का अभाव है। राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड घाटे की समस्या से ग्रसित है। राज्य मे विद्युत चोरी की समस्या विकट है। राजस्थान मे मार्च 1995 तक केवल 85 82 प्रतिशत ग्राम विद्युतीकृत थे जबकि आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, पजाब, तमिलनाडु मे सभी गाव विद्युतीकृत हो चुके। अखिल भारतीय स्तर पर प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग 1994-95 मे 310 10 किलोवाट था जबकि राजस्थान मे यह केवल 269 53 किलोवाट था। प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग

की दृष्टि से राजस्थान का देश मे दसवा स्थान है। प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग पजाब मे सर्वाधिक 759.37 किलोवाट है। इसके बाद गुजरात मे 608 43 किलोवाट, महाराष्ट्र मे 500 36 किलोवाट तथा हरियाणा मे 466 78 किलोवाट आदि का स्थान आता है।

प्रति व्यक्ति विकास व्यय : प्रति व्यक्ति विकास पर व्यय की दृष्टि से राजस्थान का देश मे नवां स्थान है। वर्ष 1998-99 के बजट अनुमानो मे राजस्थान का प्रति व्यक्ति विकास पर व्यय 1,359 88 रुपए था। प्रति व्यक्ति विकास पर व्यय के मामले मे राजस्थान अन्य राज्यो की तुलना मे पीछे है। प्रति व्यक्ति विकास पर व्यय 1997-98 मे हिमाचल प्रदेश मे 2,564 87 रुपए, वर्ष 1998-99 मे हरियाणा मे 2,431 90 रुपए, पजाब मे 1,964 47 रुपए तथा केरल मे 1,854 67 रुपए था।

अष्टम योजना उद्व्यय *(8th Plan Outlay)* - *अष्टम योजना उद्व्यय* (Outlay) की दृष्टि से राजस्थान की स्थिति सतोषप्रद मानी जा सकती है। भारत का अष्टम योजना उद्व्यय 1,86,235 करोड रुपए था। राजस्थान मे अष्टम योजना उद्व्यय (1992-97) 11,500 करोड रुपए रहा। अष्टम योजना उद्व्यय की दृष्टि से राजस्थान का देश में पाचवा स्थान रहा। उत्तर प्रदेश का अष्टम योजना उद्व्यय 21,000 करोड रुपए था जिसका देश मे प्रथम स्थान रहा।

धीमा आर्थिक विकास - औद्योगिक पिछडेपन का राजस्थान के आर्थिक विकास पर विपरीत प्रभाव पडा है। राज्य मे औद्योगीकरण के गति नहीं पकडने के कारण सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि और प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि धीमी रही। अखिल भारतीय स्तर पर प्रचलित कीमतो पर वर्ष 1995-96 की प्रति व्यक्ति आय 10,525 रुपए थी जबकि राजस्थान मे प्रति व्यक्ति आय 7,523 रुपए रही। प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से राजस्थान का देश मे ग्यारहवा स्थान रहा। पजाब मे प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक 16,053 रुपए थी।

वर्ष 1980-81 की स्थिर कीमतो पर राजस्थान मे सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1991-92 मे ऋणात्मक 6 04 प्रतिशत, 1992-93 मे 13.74 प्रतिशत, 1993-94 मे ऋणात्मक 6 44 प्रतिशत, 1994-95 मे 18 82 प्रतिशत, 1995-96 मे ऋणात्मक 3 10 प्रतिशत तथा 1996-97 मे 16 50 प्रतिशत थी। वर्ष 1991-92 से 1996-97 के बीच राज्य की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर तीन बार ऋणात्मक रही। जो कि चिन्ताप्रद बात थी। राजस्थान की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 1980-81 की स्थिर कीमतो पर 1991-92 से 1996-97 के बीच 5.58 प्रतिशत थी जो कई राज्यो की तुलना मे कम है।

राज्यवार सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर, स्थिर (1980-81) कीमतों पर

राज्य	वृद्धि दर प्रतिशत 1991-92 से 1996-97
गुजरात	8 23
महाराष्ट्र	7 96
आन्ध्र प्रदेश	7 90
त्रिपुरा	7 18
पश्चिम बगाल	6 82
कर्नाटक	6 11
तमिलनाडु	5 71
राजस्थान	5.58
पजाब	5.09
हरियाणा	4.75

स्रोत *आर्थिक समीक्षा*, 1998-99 राजस्थान सरकार।

आधारभूत संरचना का अभाव - राजस्थान के आर्थिक विकास और औद्योगीकरण मे पिछड़ेपन का प्रमुख कारण आधारभूत संरचना का अभाव है। नियोजन काल और आर्थिक उदारीकरण के दौर में आधारभूत सरचना यथा ऊर्जा, सडक, रेलवे, सिंचाई, सचार, शिक्षा, बैंक आदि का तुलनात्मक रूप से कम विकास हुआ। वर्ष 1998-99 के प्रारम्भ मे राजस्थान की विद्युत उत्पादन क्षमता 3,097 365 मेगावाट थी। राज्य मे 1998-99 मे विद्युत उत्पादन (शुद्ध) 10,223 23 मिलियन यूनिट तथा विद्युत क्रय 11,300 मिलियन यूनिट (अनुमानित) था। राजस्थान मे सड़को की कमी है। राजस्थान में सडको की लम्बाई प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर केवल 42 68 किलोमीटर है जिसके वर्ष 1998-99 के अन्त तक 43 67 किलोमीटर होने की सभावना है। जबकि देश मे प्रति 100 वर्ग किलोमीटर औसत सडको की लम्बाई 73 किलोमीटर है। राजस्थान में सडकें अखिल भारत की औसत सडक लम्बाई से बहुत कम है। राजस्थान मे कच्ची पक्की सभी प्रकार की सडको की लम्बाई 1998-99 मे 1,49,361 किलोमीटर थी। सितम्बर 1998 मे प्रति लाख जनसख्या पर बैंको की सख्या 6 4, प्रति व्यक्ति बैंक जमा 3,582 रुपए, तथा प्रति व्यक्ति बैंक ऋण 1,595 रुपए था। राजस्थान मे साक्षरता 1991 मे 38 55 प्रतिशत थी। रेलवे विकास की दृष्टि से-तो राजस्थान की स्थिति

अधिक दयनीय है। आय-व्यय अध्ययन 1994-95 के अनुसार राजस्थान मे प्रति हजार वर्ग किलोमीटर पर रेल मार्ग की लम्बाई केवल 17 02 किलोमीटर थी।

कुल मिलाकर राजस्थान ओद्योगिक विकास में तुलनात्मक रूप से कम विकसित राज्य है। विगत वर्षो में राजस्थान की औद्योगिक स्थिति सुधर नहीं सकी। वर्तमान मे राज्य सरकार को गरीबी की समस्या और आर्थिक पिछडेपन से निपटने के लिए औद्योगिक विकास को गति देने वास्ते प्रभावोत्पादक कदम उठाने होंगे। राज्य सरकार को न केवल नए उद्योगो को आकर्पित करना होगा अपितु बद पडे उद्योगो को भी सुध लेनी होगी। आर्थिक उदारीकरण के दौर मे राजस्थान स्वदेशी और विदेशी पूजी निवेश को अधिक आकर्पित करने मे सफल नहीं हो सका है। ऐसी स्थिति में औद्योगीकरण को गति देना राज्य सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है।

आज उदारीकरण के दौर मे विकास के क्षेत्र मे विशेपकर सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना में सरकार की भूमिका गौण हो गई है। सार्वजनिक उपक्रमो में विनिवेश की प्रक्रिया जारी है। नियोजन काल मे राजस्थान केन्द्र द्वारा सार्वजनिक उपक्रमो की स्थापना के मामले मे उपेक्षित रहा है। राजस्थान में आज सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना की आवश्यकता है। राज्य में प्राकृतिक संसाधनो का अभाव नहीं है। यहां विकास की विपुल संभावनाएं है। राज्य सरकार को वार्पिक योजनाओ में उद्योग व खनन पर परिव्यय में वृद्धि करनी चाहिए। राजस्थान की नौवीं पंचवर्पीय योजना 27,650 करोड रुपए की निर्धारित की गई है जिसमे उद्योग व खनिज क्षेत्र पर 2,154 09 करोड रुपए व्यय का प्रावधान है जो कुल योजना उद्व्यय का 7 79 प्रतिशत है। इसके अलावा ऊर्जा पर कुल योजना उद्व्यय का 23 63 प्रतिशत तथा यातायात पर 9.73 प्रतिशत व्यय का प्रावधान है। आशा की जाती है कि नौवीं योजना मे राजस्थान में औद्योगिक वातवरण सृजित होगा और औद्योगिक विकास गति पकडेगा।

सन्दर्भ

1. *राजस्थान पत्रिका*, फरवरी 1996.
2. इकोनोमिक सर्वे, 1994-95, पृ 109.
3 *आर्थिक जगत*, 28 अप्रैल, 1997.
4. *इकॉनोमिक सर्वे*, 1996-97 पृ. 728

18

साक्षरता से ही विकास की गति में वृद्धि संभव

भारत के आर्थिक विकास मे प्रमुख बाधा जनाधिक्य है। प्राकृतिक ससाधनो की बहुलता के बीच भी भारत की गिनती विश्व मे विकासशील राष्ट्र के रूप मे होती है। निरक्षरता देश की सबसे बडी समस्या है। यदि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर को नियत्रित कर दिया जाए तो यह देश विश्व का आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राष्ट्र हो सकता है। साक्षरता मे वृद्धि से ही जनसख्या को नियत्रित किया जा सकता है और जनसख्या के अनुकूलतम् स्तर पर बने रहने से आर्थिक विकास की गति तीव्र हो सकती है। साक्षरता की उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए प्रौढ शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। वर्तमान मे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन मे पौढ शिक्षा कार्यक्रम उत्कर्ष पर है। देश के 258 जिलो मे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान शुरू किए गए हैं जिनके अन्तर्गत 5 करोड 20 लाख से भी अधिक निरक्षरो को इसके दायरे मे लाया गया है तथा 80 जिलो मे साक्षरता के बाद के अभियान चलाए गए हैं। आठवीं पचवर्षीय योजना मे 345 जिलो को ऐसे अभियानो मे शामिल कर लेने का प्रस्ताव था।

प्रस्तुत लेख साक्षरता, जनसख्या तथा आर्थिक विकास पर केन्द्रित है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में साक्षरता वृद्धि से जनसख्या को नियत्रित किया जा सकता है और जनसख्या नियत्रण से आर्थिक विकास को गति दी जा सकती है।

भारत मे जनाधिक्य

जनसख्या का अनुकूलतम स्तर ही आर्थिक विकास में सहायक होता है इसके बाद अधिक जनसख्या विकास मे अवरोध सिद्ध होने लगती है। विकसित देशो मे जहां जनसख्या का अनुकूलतम स्तर आर्थिक विकास मे

सार्थक सिद्ध हुआ वहीं भारत सरीखे अनेक विकासशील राष्ट्र आबादी की विकरालता के नासूर से पीडित हैं।

अधिक आबादी भारत की विकट समस्या है। आज स्थिति यहा तक पहुच चुकी है कि जितनी आर्थिक प्रगति हम करते हैं बढ रही आबादी उसे हडप कर जाती है। हर घटे दो हजार चार सौ बच्चे जन्म लेते हैं। यदि यही रफ्तार बनी रही तो कोई शक नहीं बहुत ही जल्दी हम आबादी की विकरालता मे चीन को पीछे छोड देंगे। वर्तमान में भारत चीन के बाद सर्वाधिक आबादी वाला राष्ट्र है। प्रति वर्ष एक आस्ट्रेलिया हमारी आबादी में जुड जाता है।

यह सही है कि हर जन्म लेने वाला बच्चा खाने के लिए केवल मुह ही नही लाता अपितु काम करने के लिए दो शक्तिशाली हाथ और सोचने के लिए विशाल मस्तिष्क भी साथ लेकर आता है, मगर हाथो की उपादेयता तो तब है जब वे खाली न हो अर्थात् हर हाथ को काम हो। भारत में गरीब पिता सदैव भूखे-प्यासे बच्चों से घिरा रहता है, यदि कुछेक मेहमान और आ जाए तो उसकी स्थिति किंकर्त्तव्यविमूढ हो जाती है, ठीक यही स्थिति आज भारत की हो गई है। यहा के विशाल भू-भाग में अथाह प्राकृतिक सपदा भी बढ रही आबादी के सामने सीमित नजर आने लगी है। यह जनसख्या वृद्धि मात्र सख्यात्मक है। गुणात्मक का तो नितांत अभाव है। आजादी के कई बरस बीत चुके है फिर भी अधिसख्य लोग परम्परावादी है, इनमें सभी कुछ भगवान पर छोड देने की प्रवृति व्याप्त है। यदि जनसख्या में गुणात्मक दृष्टि से वृद्धि होती है, तो कर्त्तव्यपरायणता की भावना फलन्भूत होगी। आज देश मे मानव ससाधनो के विकास पर भारी भरकम विनियोजन किया जा रहा है फिर भी मानवों की गुणात्मकता मे अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पा रही है जिसका प्रमुख कारण जनाधिक्य है।

भारत की जनसंख्या

वर्ष	जनसख्या	दशकीय वृद्धि दर (प्रतिशत में)	औसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1951	361088090	+13 31	1 25
1961	439234771	+21.51	1 96
1971	548159652	+24.80	2.20
1981	683329097	+24.66	2.22
1991	846302688	+23 85	2.14

स्रोत . *इण्डिया, 1992, इकोनॉमिक सर्वे, 1994-95.*

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या वर्ष 1991 मे 84 करोड 63 लाख 2 हजार 688 थी इसमे पुरुषो की संख्या 43 करोड 92 लाख 30 हजार 438 तथा महिलाओं की संख्या 40 करोड 70 लाख 72 हजार 230 थी। वर्ष 1981-91 के बीच जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 23 85 प्रतिशत रही। औसत वार्षिक वृद्धि दर 2 14 प्रतिशत थी। वर्ष 1991 मे प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व 274 था। कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत 37.46 था। भारत की 74 29 प्रतिशत आबादी ग्रामीण है। उल्लेखनीय है कि 1991 में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 23 85 प्रतिशत (2 14% वार्षिक दर) रही जबकि इससे पूर्व 1981 की जनगणना के अनुसार यह वृद्धि 24 66 प्रतिशत (2.22% वार्षिक वृद्धि दर) थी। तेज गति से बढ रही जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर में 0 08 प्रतिशत की कमी आना निश्चित रुप से राहत का विषय है। जनसंख्या की वृद्धि दर को और भी कम किए जाने की आवश्यकता है।

तीव्रता से बढ रही आबादी के अनेक कारणों मे शिक्षा का अभाव, परम्परावादी दृष्टिकोण, निर्धनता आदि मुख्य है। निर्धनता की स्थिति में जन्म लेने वाले बच्चों को दायित्व के रुप में नहीं लिया जाता है, वे परिवार के आर्थिक इकाइयो के रूप में देखे जाते हैं। ग्रामीणों में इस तरह की प्रवृत्ति ज्यादा है, शहरी निर्धनों में भी कमोवेश यही हालात है। निर्धनो में जनसंख्या वृद्धि दर का आकडा शिक्षितों की तुलना में अधिक है।

आबादी की विकरालता ने देश के सामने ढेरों समस्याए खडी कर दी है। हम अथक प्रयास के बावजूद विकास की गति को आगे नहीं बढा पाए हैं। देश मे गरीबी की समस्या अभी भी विकट बनी हुई है। देश के कम विकसित राज्यों में अधिसंख्य आबादी गरीबी में जीवन बसर के लिए अभिशप्त है। ऐसी बात नहीं कि सरकार विशाल आबादी की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सचेष्ट नहीं, किन्तु सभी प्रयास बढती आबादी के सामने गौण पड जाते हैं।

बढ रही जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए यह आवश्यक है कि परिवार कल्याण कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुचाने की पुरजोर कोशिश की जाए। बढ रही आबादी को नियंत्रित करना अकेले सरकार के बूते की बात नहीं, जन सहयोग भी लाजिमी है। यदि समग्र राष्ट्र में साक्षरता का अलख जगाया जाए तो यह आबादी नियंत्रण में कारगर सिद्ध हो सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति का निर्णय तुलनात्मक रूप से अधिक विवेकपूर्ण होता है।

आज सरकार सावचेत है, लोगों में भी जागृति है। अधिकाश लोग

खुद-ब-खुद परिवार नियोजन को आत्मसात करने लगे है। राजकीय प्रयासों के अतिरिक्त कई स्वैच्छिक सगठन भी इस ओर सक्रिय हैं। हमारे पास अथाह प्राकृतिक सपदा है। आज सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पारिस्थितिकी सतुलन को बनाए रखते हुए प्राकृतिक ससाधनों का विवेकपूर्ण विदोहन तथा बढ रही आबादी को नियत्रित करने की है। ऐसा होने पर ही मानव पूंजी में वृद्धि सभव है तथा भावी पीढ़ी के हित भी सरक्षित रहेंगे। यदि हमें इसमें अपेक्षित सफलता मिलती है तो कोई सन्देह नहीं हम आने वाले वर्षों में आबादी में नहीं, आर्थिक प्रगति में सिरमौर होंगे।

बढती आबादी आर्थिक विकास में बाधक

भारत की राष्ट्रीय आय 1980-81 के मूल्या पर वर्ष 1984-85 मे 1,30,808 करोड रुपए थी जो बढकर 1993-94 मे 2,02,670 करोड रुपए हो गई। 1993-94 मे समाप्त नौ वर्षों मे राष्ट्रीय आय में 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जबकि प्रति व्यक्ति आय में इसी दौरान केवल 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति आय 1980-81 के मूल्यों में वर्ष 1984-85 मे 1,811 रुपए थी, जो बढकर 1993-94 मे 2,282 रुपए ही हो गई। देश की राष्ट्रीय आय मे तो तेजी से बढोत्तरी हो रही है किन्तु जनसख्या तेजी से बढने के कारण प्रति व्यक्ति आय अपेक्षित गति से नहीं बढ पा रही है। जाहिर है आबादी आर्थिक वृद्धि में बाधक बनी हुई है।

गरीबी पर निजात मुश्किल काम

भारत में गरीबी का मूल कारण अनुकूलतम स्तर को पार कर चुकी जनसख्या ही है। गरीबी प्रमुख राष्ट्रीय समस्या के रूप में उभरी है। देश म पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध प्राकृतिक ससाधनो का विवेकपूर्ण दोहन कर गरीबों की सख्या को अवश्य ही कम किया जा सकता है। ऐसी बात नहीं कि सरकार ने गरीबों के उत्थान वास्ते प्रयास नही किए हो। स्वतत्रता के प्रारम्भिक वर्षों से ही गरीबी उन्मूलन सबंधी अनेक कारगर योजनाएं घोषित की गई। आज भी वर्ष दर वर्ष नवीन योजनाओं की घोषणा की जा रही है। हाल ही वर्षों में ग्रामीण विकास व्यय में भारी बढोतरी की गई है। किन्तु जिस तरीके से गरीबी उन्मूलन योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है और बेतहाशा राशि खर्च की जा रही है उसे देखकर ऐसा नहीं लगता कि गरीब लोग लाभान्वित हो रहे हैं। यदि गरीबी उन्मूलन संम्बधी योजनाओं के क्रियान्वयन में सुधार नहीं आता है तो यह निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में राष्ट्र गरीबी पर निजात पा लेगा। नियोजित विकास के दौरान यद्यपि गरीबो की सख्या में कमी आई है किन्तु आज भी गरीबी के

आकडे चौकाने वाले हैं।

भारत मे वर्ष 1983-84 मे 27 10 करोड व्यक्ति गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहे थे। वर्ष 1987-88 मे गरीबो की सख्या कम होकर 23 77 करोड रह गई। वर्ष 1983-84 से 1987-88 के बीच गरीबी मे 14 फीसदी कमी आई है। फिर भी देश मे वर्ष 1987-88 मे 29 9 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने को अभिशप्त थी। कुछ राज्यो मे तो गरीबी का खुला ताण्डव नृत्य मौजूद है। उडीसा मे 44 7 प्रतिशत, बिहार मे 40 8 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश मे 35 प्रतिशत, तमिलनाडु मे 32 8 प्रतिशत, कर्नाटक मे 32 प्रतिशत, राजस्थान मे 24 4 प्रतिशत जनसख्या गरीबी की रेखा से नीचे है। समृद्ध राज्य भी गरीबी की समस्या से अछूते नहीं हैं। गुजरात मे 18 4 प्रतिशत, हरियाणा मे 11 6 प्रतिशत, पजाब मे 7 2 प्रतिशत, महाराष्ट्र मे 29.2 प्रतिशत जनसख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर कर रही है।

देश के गरीबो मे बहुसख्यक आबादी ग्रामवासियो की है। आजादी के अनेक बरस बीत जाने के बावजूद भी ग्रामवासियो की स्थिति बेहतर नहीं हो सकी है। गरीबो की संख्या तो शहरो मे भी कम नहीं है। किन्तु शहरो मे येन-केन प्रकारण गरीब लोग रोजी-रोटी की व्यवस्था कर ही लेते है। शहरी क्षेत्रों मे जो गरीब हैं, प्राय वे गावो से शहरो की ओर पलायन करके आए लोग ही है। गांवों मे ससाधनो के अभाव मे कष्टप्रद जीवन से छुटकारा पाने के लिए ये मजबूरन शहरो की ओर पलायन करते है किन्तु विडम्बना ही है कि शहरो मे भी गरीबी इनका पीछा नहीं छोडती। गरीबी की समस्या पर निजात पाने के लिए भारी भरकम विनियोजन को ग्रामीण भारत की ओर मोडना ही पर्याप्त नहीं, इसके साथ कारगर पहल की आवश्यकता भी है।

साक्षरता वृद्धि से आर्थिक विकास संभव

आजादी के तरेपन वर्ष बीत चुके है। देश की आर्थिक स्थिति पर दृष्टिपात करें तो स्थिति सतोषप्रद दृष्टिगोचर नहीं होती है, बहुसंख्यक आबादी गरीबी, बेकारी, बीमारी, आर्थिक पिछडेपन आदि समस्याओ से ग्रसित है। 30 फीसदी से अधिक आबादी गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर करने को अभिशप्त है। आर्थिक विकास की जरूरत के मुताबिक बुनियादी सुविधाओ यथा पानी, ऊर्जा, सडको आदि का विकास सीमित दृष्टिगोचर होता है। ग्राम्यजनो समेत समूचे देश मे घोर आर्थिक विषमता व्याप्त है। ग्रामीण क्षेत्रो मे सम्पत्ति वितरण की विषमता शहरी क्षेत्रो की तुलना मे कहीं अधिक है। रिजर्व बैंक आफ इंडिया के एक आंकलन के अनुसार ग्राम परिवारो मे 20 प्रतिशत परिवारो के पास 1,000 रुपये से कम

की परिसम्पत्ति थी इनका कुल ग्राम सपत्ति मे मात्र 0 7 प्रतिशत था, इसके विपरीत उच्चतम 4 प्रतिशत परिवार ऐसे थे जिनके पास ग्राम सपत्ति का 31 प्रतिशत भाग था।

दीर्घावधि आर्थिक नियोजन मे लोगो की माली हालत के अलावा अर्थव्यवस्था की स्थिति भी कम दयनीय नहीं है, हर पहलू की तस्वीर धुधली है। व्यापार घाटे के अन्तर को एक-दो वर्षो को छोड कभी पाट नहीं सके। भुगतान सतुलन की स्थिति विषम है। विदेशी मुद्रा भडार रसातल तक पहुचते रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित उच्चावचन अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते आए हैं। अर्थव्यवस्था हिलोरे लेने लगती है।

भारत सर्वाधिक ऋणी देशो मे है। विदेशी ऋण का बोझ निरन्तर बढता जा रहा है। रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट 1992-93 के अनुसार वर्ष 1990 मे भारत पर विदेशी ऋण का बोझ 74,856 मिलियन डॉलर था जो बढकर 1991 मे 81,901 मिलियन डॉलर, 1992 मे 82,245 मिलियन डॉलर तथा 1998 मे और बढकर 95,531 मिलियन डॉलर तक जा पहुचा। ऋण के इस भारी बोझ तले "आत्मनिर्भरता" की बात "पहुच के बाहर" प्रतीत होने लगी है।

पाच दशक के नियोजन काल मे आठ पचवर्षीय योजनाऐ तथा पाच एक-एक वर्ष की योजनाए सम्पन्न हो चुकी हैं। वर्तमान मे अप्रैल 1997 से नौवीं पचवर्षीय क्रियान्वयन मे है, इसके भी चार वर्ष पूरे हो चले हैं। यह मार्च 2002 मे सम्पन्न हो जाएगी। आर्थिक योजनाओ मे विकास की गति तेज करने वास्ते अरबो-खरबो रुपयो का विनियोजन किया जा चुका है।

भारी भरकम विनियोजन के बावजूद आर्थिक विकास की गति का अपेक्षित नहीं होने का मुख्य कारक "जनसख्या की विस्फोटक स्थिति" को माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। भारत की जनसख्या विगत दशको मे बेतहाशा गति से बढी। वर्ष 1901 मे जनसख्या 23 84 करोड थी जो बढकर 1951 मे 36 10 करोड तथा ताजी जनगणना 1991 मे 84 63 करोड हो गई। 1951 से 1991 के बीच चार दशको मे जनसख्या मे 134 फीसदी भयावह बढोतरी हुई। 1951 तथा बाद के दशको मे जनसख्या वृद्धि दर 20 प्रतिशत से अधिक रही है। 1971 में दशकीय वृद्धि दर 24 80 प्रतिशत, 1981 मे 24 66 प्रतिशत तथा 1991 मे 23 50 प्रतिशत रही। 1971 के बाद जनसख्या वृद्धि दर मे कमी आई है, किन्तु यह स्थिति ऐसी नहीं कि हर्षानुभूति कर सके।

विगत वर्षो मे जनसख्या मे हुई अत्यधिक वृद्धि ने भारत को एक खतरनाक स्थिति मे पहुचा दिया है। देश की प्रभावोत्पादक योजनाए भी बढ

रही आबादी के बीच कारगर ओर फलन्भूत साबित नहीं हो पा रही है। जितनी प्रगति प्रत्येक वर्ष होती है जनसख्या रूपी बाढ मे बह जाती है। भारत की भूमि दुनिया की कुल भूमि का मात्र 2 4 प्रतिशत है जबकि यहा विश्व के 16 प्रतिशत लोग रहते है। यदि जनसख्या इसी तरह से बढती रही तो आर्थिक प्रगति रेत पर खडे उस भवन की भाति होगी जिसकी जडे जनसख्या रूपी बाढ सतत् काटती रहती है। जनसख्या की विस्फोटक वृद्धि भारत के आर्थिक विकास को निगल रही है।

भारत के परिप्रेक्ष्य मे जनसख्या वृद्धि की ऊची दर और आर्थिक विकास मे विषम सबध है। तेज गति से बढ रही आबादी आर्थिक विकास मे अवरोध साबित हो रही है। लोगो के शैक्षिक स्तर मे वृद्धि करके जनसख्या को नियंत्रित किया जा सकता है। इसे इस तरह भी व्यक्त किया जा सकता है कि साक्षरता और जन्म दर मे विषम सबध है। भारत मे साक्षरता का कम होना ऊची जन्म दर का मुख्य कारक रहा है। सभी अर्थशास्त्री इस विचार से सहमत है कि जनसख्या वृद्धि दर को कम करने मे शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जहा महिलाए शिक्षित होती है वहा जन्म दर अपने आप कम हो जाती है।

भारत मे साक्षरता विशेषकर महिला साक्षरता की स्थिति शोचनीय रही है। महिलाओ मे नीची साक्षरता ने ही जनसख्या वृद्धि को बल दिया है नतीजतन दुष्परिणाम हमारे सामने है। योजनाबद्ध विकास मे मानवीय ससाधनो की गुणवत्ता वृद्धि बारते कोई कारगर पहल नहीं की गई, जिससे आबादी सहज सख्यात्मक दृष्टि से बढती ही चली गई। संख्यात्मक गति से बढी जनसख्या की तुलनात्मक रूप से कम उपादेयता होती है और यही जनसख्या आर्थिक प्रगति को हडप कर जाती है।

स्वातन्त्र्योत्तर साक्षरता की स्थिति पर नजर डाली जाए तो स्थिति घोर निराशाजनक परिलक्षित होती है। दुनिया के सर्वाधिक निरक्षर भारत मे है।

साक्षरता दर 1951-91

(प्रतिशत मे)

वर्ष	व्यक्ति	पुरुष	महिलाए
1951	18 33	27.16	8 86
1961	28.31	40 40	15.34
1971	34 45	45.95	21.97
1981	43 56	56.37	29 75
1991	52.11	63 86	39.42

स्रोत *इण्डिया*, 1992, पृष्ठ 13

वर्ष 1991 मे 7 वर्ष और अधिक की जनसख्या मे 47 89 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर थे। महिलाओ मे निरक्षरता 60 58 प्रतिशत थी। ज्ञातव्य है कि वर्ष 1981 मे पूर्व साक्षरता दर मे 5 वर्ष या अधिक की जनसख्या को सम्मिलित किया जाता था। वर्ष 1981 एव 1991 मे साक्षरता दर में 7 वर्ष और अधिक को जनसंख्या को सम्मिलित किया गया है। अत 1981 एव 1991 मे *बढ़ी हुई साक्षरता दर का मुख्य कारण यह भी रहा है।*

भारत की 60 58 प्रतिशत निरक्षर महिलाए मुख्य रूप से तेज गति से बढ रही जनसख्या के लिए उत्तरदायी है। रूढिवादिता और पुरातन परम्पराओ मे जकडी निरक्षर महिलाओ के विचार एवं सोच साक्षर और शिक्षित महिलाओ की भाति विवेकपूर्ण नहीं होते हैं। यही बात पुरुषो के सदर्भ मे भी लागू होती है।

शिक्षित महिलाए छोटे व बडे परिवार के लाभ व अलाभ को बखूबी समझती हैं और छोटे व सुखी परिवार के प्रति सचेष्ट रहती हैं। जहा शिक्षा का प्रसार है, महिलाए शिक्षित हैं वहा जन्म दर तुलनात्मक रूप से कम है। केरल इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जहा साक्षरता 89 81 प्रतिशत है और जन्म दर 1 4 प्रतिशत हो गई।

यहा भारत के कुछ ऐसे राज्यों की स्थिति पर दृष्टिपात किया जा रहा है जहा साक्षरता एव जन्म दर मे विषम संबध है।

साक्षरता एवं जन्म दर में विषम सम्बन्ध 1991

वर्ष	साक्षरता दर	जन्म दर दशकीय
केरल	89 81	14 32
गोवा	75.51	16 05
महाराष्ट्र	64 89	25 73
सिक्किम	62 66	28 47
बिहार	38 48	23 54
राजस्थान	38 55	28 44
अरुणाचल प्रदेश	41 59	36 83
उत्तर प्रदेश	41 60	25 48
आन्ध्र प्रदेश	44 09	24 20

स्रोत *द पापूलेशन ऑफ राजस्थान,* 1999 से सकलित।

हाल ही शिक्षा पर हुई अन्तर्राष्ट्रीय फोरम की एक बैठक मे भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत एक प्रबन्ध के अनुसार, एक निरक्षर महिला मे जहा प्रजनन 5.1 है, वहीं एक साक्षर किन्तु माध्यमिक स्कूल से कम शिक्षा प्राप्त महिला मे प्रजनन दर 4.5 है, माध्यमिक स्कूल तक किन्तु मैट्रिक से कम पढी महिला मे प्रजनन दर 4.0, मैट्रिक किन्तु स्नातक से कम महिला मे 3.1 तथा स्नातक मे 2.1 है।

भारत को यदि खुशहाल होना है तो सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ बढती आबादी को थामना होगा। बढती आबादी को नियन्त्रित करने वास्ते साक्षरता का विस्तार सर्वाधिक कारगर उपाय है, क्योंकि साक्षरता वृद्धि द्वारा ही ऊंची जन्म दर को रोका जा सकता है। बहुसख्यक आबादी गावो मे बसर करती है। जन्म दर का आंकड़ा भी उनमे अधिक है, निरक्षरता का अधकार भी ग्रामीण परिवेश मे है। अत ग्रामीण क्षेत्र मे मानवीय ससाधनो के विकास के लिए सरकार को अधिक सचेष्ट रहने की जरुरत है। बिना शैक्षिक प्रसार के परिवार नियोजन के लक्ष्यो की सफलता सदिग्ध है। अतः सरकार को चाहिए कि उस ओर अधिकाधिक पूजी विनियोजन की व्यवस्था करे तथा लाभ को जरुरतमद तक पहुचाने का मुकम्मल इन्तजाम हो। तभी सफलता संभावित है। मानवीय संसाधनो की गुणात्मकता वृद्धि मे ही आर्थिक प्रगति के नवीन आयाम समाहित है।

साक्षरता के बढते कदम

निरक्षरता समाज के लिए अभिशाप है। जहां निरक्षरता है वहां अनेकानेक समस्याए मुहबाएं खडी हैं। भारत मे अथाह प्राकृतिक सपदा आर्थिक जगत मे सिरमौर होने की क्षमता रखती है। किन्तु जनसख्या की विस्फोटक वृद्धि, जिसका मुख्य कारण व्याप्त निरक्षरता का अधकार ही है, प्रगति के पथ पर बढने मे प्रमुख बाधा है। यदि साक्षरता मे वृद्धि कर दी जाए तो कई समस्याए तो स्वत ही हल हो सकती हैं। जब लोगो की गुणात्मकता मे वृद्धि होगी तो लोगो की बढ रही बेकाबू भीड कम होगी। ससाधनो का अनुकूलतम उपयोग होगा, आर्थिक विकास भी आशानुरूप दृष्टिगोचर होगा।

साक्षरता की उपादेयता को दृष्टिकोण रखते हुए ही हरेक वर्ष 8 सितम्बर को दुनिया भर मे "अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस" मनाया जाता है। भारत मे भी प्रतिवर्ष इसका आयोजन किया जाता है। आजादी के पांच दशक बीत चुके है, किन्तु साक्षरता मे अपेक्षित बढोतरी नहीं हो सकी। धीमी गति से जो वृद्धि हुई, वह आज के बदले परिवेश में साक्षरता की उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए अत्यल्प है।

ताजी जनगणना के अनुसार 7 वर्ष और अधिक आयु की जनसंख्या मे 52.21 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। पुरुषो मे साक्षरता का प्रतिशत 64.13 है। महिलाओ मे साक्षरता की स्थिति बडी दयनीय है केवल 39.29 प्रतिशत महिलाए ही साक्षर हैं। जाहिर के 35.87 प्रतिशत पुरुष और 60.71 प्रतिशत महिलाए पढ लिख नहीं सकती है। साक्षरता की दृष्टि से कुछ प्रदेश सतोषजनक स्थिति में है तो कुछ के हालात काफी बदतर है और यही निरक्षरता उनके विकास की दृष्टि से पिछडेपन का मुख्य कारक बनी हुई है। केरल, मिजोरम, गोवा, तमिलनाडु सर्वाधिक साक्षरता वाले राज्य है। बिहार देश मे सर्वाधिक निरक्षरों वाला राज्य है। कमोबेश यही हालात राजस्थान के है। बिहार में 61.52 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। राजस्थान मे निरक्षरता 61.45 प्रतिशत है। राजस्थान महिलाओ की साक्षरता में सबसे नीचे है। यहा केवल 20.44 प्रतिशत महिलाए साक्षर है। जहा महिलाओ मे निरक्षरता इस कदर बढी हुई हो वहा समस्याए कितनी विकराल होगी। इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

देश मे निरक्षरता के अभिशाप को मिटाने वास्ते वर्ष 1993 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन शुरु हुआ। मिशन के अनुसार कुल निरक्षरों का 50 प्रतिशत देश के चार बडे हिन्दी भाषी राज्यो यथा बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तरप्रदेश मे है। यदि इन चार राज्यो मे महाराष्ट्र, पश्चिम बगाल और आन्ध्रप्रदेश को जोड दिया जाए तो देश के कुल निरक्षरों का 70 प्रतिशत इन सात राज्यो मे है। पूरी दुनिया मे जितने निरक्षर है उनमें करीब 15 प्रतिशत बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में है।

सरकार ने वर्ष 1994-95 मे शिक्षा के पाच प्रमुख क्षेत्रों यथा प्रौढ, शिक्षा, विकेन्द्रीकरण, व्यावसायिक एव तकनीकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। वर्ष 1994 में देश के 267 जिलों मे सपूर्ण साक्षरता अभियान चल रहा था। इसके अन्तर्गत 3 करोड व्यक्तियो से भी अधिक को शिक्षित किया गया था। आठवीं योजना के दौरान 345 जिलो को इस अभियान में शामिल करने और 10 करोड व्यक्तियों को साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा गया।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के साथ देश मे साक्षरता के लिए जन अभियान की शुरुआत हुई। प्रभावोत्पादक प्रयासो से 4 फरवरी, 1990 को केरल का एर्नाकुलम जिला सपूर्ण साक्षर घोषित किया गया। एर्नाकुलम की सफलता से प्रेरित होकर कई राज्यो ने निरक्षरता के अभिशाप को मिटाने का सकल्प किया। आज देश के काफी जिले सपूर्ण साक्षर हो गए हैं। इनमें पश्चिम बगाल के वर्धमान मिदनापुर, हुगली, बीरभूम कर्नाटक के

दक्षिणी कन्नड, महाराष्ट्र के वर्धा एवं सिंहदुर्ग और गुजरात के गांधीनगर, भावनगर, खेड़ा जिले।

राजस्थान यद्यपि यहा निरक्षरों की भरमार है किन्तु प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाएं और नागरिक निरक्षरता के अंधकार को मिटाने के लिए कटिबद्ध हैं। अजमेर जिला उत्तर भारत का पहला सपूर्ण साक्षर जिला घोषित हुआ है। राजस्थान का डूंगरपुर जिला देश का पहला जनजाति बहुल जिला है जिसने सम्पूर्ण साक्षर होने का गौरव प्राप्त किया है। अजमेर तथा डूँगरपुर जिले मे उत्तर साक्षरता कार्यक्रम चलाया गया। वर्तमान मे राजस्थान सरकार सपूर्ण राज्य को साक्षर बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

प्रयासों के बावजूद अभी देश के समूचे परिवेश में निरक्षरता का अंधकार है। ग्रामीण परिवेश के हालात बद से बदतर है। शहरी गरीबों की स्थिति भी बेहतर नहीं है। निरक्षरता के कारण असंख्य आबादी रूढ़िवादिता और अंधविश्वास में डूबी हुई है। अनेक शहरी भी रुढ़िवादिता से अछूते नहीं है। ऐसे वातावरण में निरक्षरता को मिटाना काफी पेचीदगीपूर्ण काम है। देश में गरीबी की समस्या भी कम भयावह नहीं है। जन्म लेने वाले बच्चे को "आर्थिक इकाई" के रूप में देखा जाता है। बहुसंख्यक बच्चे जीवन के बहुत की कम बसंत में दो जून रोटी की व्यवस्था में अभ्यस्त हो जाते है। चाहकर भी उनकी साक्षरता में रुचि नहीं होती। उनके निरक्षर अभिभावक भी उन्हें इस ओर प्रेरित नहीं कर पाते। आजादी के अनेक बरस बीत जाने के बावजूद भी देशवासियों में इस तरह की "सोच" कम चौंकाने वाली बात नहीं है।

साक्षरता में बढ़ोत्तरी के लिए सूझबूझ से काम लेने की जरुरत है। कारगर योजनाएं हों, साथ में उनका कारगर क्रियान्वयन हो। अकेले सरकार के बूते की बात नहीं है, जनसहयोग भी लाजिमी है। कर्मठ कार्यकर्ताओं की जरुरत है जो समर्पित भाव से काम को अंजाम दे सके। वित्तीय साधनों की भी कमी नहीं आने दी जानी चाहिए। सभी को साक्षर करने की मुहिम को आजादी की लडाई की भांति लडनी होगी। ऐसे राष्ट्र जो निरक्षरता उन्मूलन में काफी आगे बढ चुके है। उनसे प्रेरणा लेनी होगी। सभी देशवासी शिक्षा पाने को अपना कर्तव्य समझे तब कहीं जाकर हम निरक्षरों की बढ रही सख्या को थाम सकेंगे।

महिला साक्षरता में बढोतरी मुश्किल काम

समूचे देश में सर्वाधिक निरक्षर बिहार के बाद राजस्थान में हैं। हाल के वर्षों में राजस्थान ने प्रयास करके साक्षरता क मामले मे बिहार को पीछे धकेल दिया है किन्तु महिलाओं में साक्षरता की दृष्टि से राजस्थान देश का

सर्वाधिक पिछडा प्रांत है। यह एक प्रकार से राजस्थान पर काला धब्बा है जिसे मिटाना है। गौरतलब है कि राजस्थान मे महिलाओ में साक्षरता महज 20.44 प्रतिशत है। यह भारत मे महिलाओं में साक्षरता 39.29 प्रतिशत की तुलना में [illegible]। राज्य मे ग्रामीण महिलाओं के साक्षरता को देखे तो हालात और भी बदतर है। राज्य में ग्रामीण महिलाओं मे साक्षरता दर 11.59 प्रतिशत ही है।

अग्रणी जिलों के अनुभव से सीखें

सम्पूर्ण साक्षरता अभियान को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि ऐसे जिलों से सीख ली जाए जो सम्पूर्ण साक्षर हो चुके हैं। सवाईमाधोपुर जिले की अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की दृष्टि से स्थिति डूँगरपुर जिले जैसी है। बेहतर होगा डूँगरपुर जिले के मॉडल को सवाईमाधोपुर में आत्मसात किया जाय। सहरिया जनजाति बहुल बारां जिले में भी साक्षरता अभियान बखूबी क्रियान्वय मे है। भील बहुल डूँगरपुर तथा सहरिया बहुल बारा का मॉडल मीणा बहुल सवाईमाधोपुर के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है। शिक्षा अधिकारियों के दल परस्पर एक दूसरे के अनुभवों से सीखें और कारगर क्रियान्वयन मे रुचि लें तथा वित्तीय ससाधनों का बेहतर इस्तेमाल हो तो साक्षरता के आकडे कागजो तक ही सीमित नहीं रहेंगे वे सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर चहुंओर विकास की राह दर्शाएगे।